

MADANI PANJSURAH (HINDI)



मशहूर कुरआनी सूरतों, दुरूदों, रूहानी व तिब्बी इलाजों  
और खुशबूदार म-दनी फूलों का दिलचस्प म-दनी गुलदस्ता

# म-दनी पंजसूरह

इस का हर घर में होना जरूरी है ।

सूरए मुज्ज़मिल

सूरए रहमान

सूरए यासीन

दुआएं  
और  
बज़ाइफ़

दुरूदे पाक

सूरए मुल्क

शेख़े तरीक़त अमीरे अहले सुन्नत बानिये दावते इस्लामी हज़रत अल्लामा मौलाना अबू बिलाल  
मुहम्मद इल्यास अज़्ज़ार क़ादिरि २-जवी

مکتبۃ الدین  
(دعوتِ اسلامی)  
SC1288

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ط وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط  
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

## किताब पढ़ने की दुआ

अज : शैखे तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी,  
हज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अत्तार  
कादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَهُ

दीनी किताब या इस्लामी सबक पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई  
दुआ पढ़ लीजिये اِنْ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَاَنْشُرْ  
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَامِ

तर्जमा : ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इल्मो हिक्मत के दरवाज़े खोल दे  
और हम पर अपनी रहमत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ-ज़मत और बुजुर्गी  
वाले !

(अल मुस्ततरफ़, जि.1, स.40, दारुल फ़िक्क बैरूत)

नोट : अब्बल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये ।



तालिबे ग़मे मदीना  
व बक़ीअ  
व मग़िफ़रत

13 शव्वालुल मुकर्रम 1428

# “म-दनी पन्ज सूरह”

येह किताब ( “म-दनी पन्ज सूरह” )

शैखे तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी हज़रत  
अल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अत्तार कादिरि  
र-ज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَهُ ने उर्दू ज़बान में तहरीर फ़रमाई है।

मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी) ने इस किताब को हिन्दी  
रस्मुल ख़त में तरतीब दे कर पेश किया है और मक-त-बतुल मदीना से  
शाएअ करवाई है। इस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाएं तो मजलिसे  
तराजिम को (ब ज़रीअए मक्तूब, ई-मेईल या SMS) मुत्तलअ फ़रमा कर  
सवाब कमाइये।

**राबिता :** मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)

**मक-त-बतुल मदीना**

सिलेक्टेड हाउस, अलिफ की मस्जिद के सामने, तीन दरवाजा,

अहमद आबाद-1, गुजरात, फ़ोन : 079-25391168

MO. 9377111292, (FOR SMS ONLY)

e-mail : maktabahind@gmail.com

दौराने मुतालआ जरूरतन अन्दर लाइन कीजिये, इशारात लिख कर सफ़्हा नम्बर नोट फ़रमा लीजिये । اِنَّ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ इल्म में तरक्की होगी ।

[illegible]





मशहूर कुरआनी सूरतों, दुरूदों, रूहानी व तिब्बी इलाजों और  
खुशबूदार म-दनी फूलों का दिल चस्प म-दनी गुलदस्ता

# म-दनी पन्ज सूरह

मुअल्लिफ :

शैखे तरीक़त अमीरे अहले सुन्नत बानिये दा'वते इस्लामी  
हज़रत अल्लामा मौलाना

अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अन्तार  
कादिरी र-ज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَةِ

नाशिर :

मक-त-बतुल मदीना अहमद आबाद

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ ؕ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ؕ  
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

- नाम किताब : म-दनी पन्ज सूरह  
 मुअल्लिफ़ : शैख़े तरीक़त अमीरे अहले सुन्नत बानिये दा'वते  
 इस्लामी हज़रत अल्लामा मौलाना  
 अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अत्तार  
 कादिरी र-ज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَهُ  
 सिने तबाअत : मार्च सि. 2009 ई. / रबीउन्नूर सि.1430 हि.  
 नाशिर : मक-त-बतुल मदीना सिलेक्टेड हाउस,  
 अलिफ़ की मस्जिद के सामने खास बाज़ार  
 तीन दरवाज़ा अहमद आबाद-1 गुजरात इन्डिया

### मक-त-बतुल मदीना की मुख़्तलिफ़ शाख़ें

- मुम्बई : 19,20 मुहम्मद अली बिल्डिंग, मुहम्मद अली रोड,  
 फ़ोन : 022-23454429  
 देहली : मटिया महल, उर्दू मार्केट, जामेअ मस्जिद  
 फ़ोन : 011-23284560  
 कानपूर : मख़्दूम सिम्नानी मस्जिद, दीप्ती पांडव का चौराहा,  
 नज़्द गुर्बत पार्क, यूपी, फ़ोन : 09415982471  
 नागपुर : (C/O) जामिअतुल मदीना, मुहम्मद अली सराय  
 रोड, कमाल शाहबाबा दरगाह के पास मोमिनपुरा  
 फ़ोन : 0712 -2737290  
 अजमेर शरीफ़ : 19 / 216 फ़लाहे दारैन मस्जिद. नाला बाज़ार,  
 स्टेशन रोड, दरगाह,

तम्बीह : किसी और को येह किताब छापने की इजाज़त नहीं है ।

## फ़ेहरिस

उन्वान	सफ़हा	उन्वान	सफ़हा
कुछ इस किताब के बारे में		सू-रतुल मुजम्मिल	115
किताब पढ़ने की 19 नियतें		सूरए काफ़िरून के 3 फ़ज़ाइल	119
<b>फ़ैज़ाने बिस्मिल्लाह शरीफ़</b>		सू-रतुल इख़्लास के 7 फ़ज़ाइल	121
दुरूदे पाक की फ़ज़ीलत	1	सूरए फ़लक़ और नास के 5 फ़ज़ाइल	125
बिस्मिल्लाह शरीफ़ की फ़ज़ीलत	1	सू-रतुल ब-क़रह की आखिरी आयात के चार फ़ज़ाइल	128
अधूरा काम	2	सू-रतुल ह़शर की आखिरी आयात	131
“बिस्मिल्लाह शरीफ़” के 13 म-दनी फ़ूल	3	आ-यतुल कुरसी के 5 फ़ज़ाइल	132
बिस्मिल्लाह शरीफ़ के 8 अवराद	7	<b>फ़ैज़ाने ज़िक़ुल्लाह</b>	
(1) घर की हिफ़ज़त के लिये	7	दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	135
(2) दर्दे सर का इलाज	7	ईमाने मुफ़स्सल	135
(3) नक़सीर फूटने का इलाज	8	ईमाने मुजमल	136
(4) जिन्नात से सामान की हिफ़ज़त का तरीक़ा	8	अव्वल कलिमा तथ्यिब	136
(5) दुश्मनी ख़त्म करने का वज़ीफ़ा	8	दूसरा कलिमा शहादत	136
(6) मरज़ से शिफ़ा का वज़ीफ़ा	9	तीसरा कलिमा तम्मजीद	137
(7) चोर और अचानक मौत से हिफ़ज़त	9	चौथा कलिमा तौहीद	137
(8) आफ़तें दूर होने का आसान विर्द	9	पांचवां कलिमा इस्तिफ़ार	138
<b>फ़ैज़ाने तिलावत</b>		छटा कलिमा रद्दे कुफ़्र	138
दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	11	इस्तिफ़ार करने के 5 फ़ज़ाइल	139
सू-रतुल ह़शर की आखिरी आयात की फ़ज़ीलत	11	(1) दिलों के ज़ंग की सफ़ाई	139
सूरए ब-क़रह की आखिरी आयात पढ़ने के 3 फ़ज़ाइल	12	(2) परेशानियों और तंगियों से नज़ात	140
आ-यतुल कुरसी के 4 फ़ज़ाइल	14	(3) खुश करने वाला आ'माल नामा	140
आ-यतुल कुरसी की पांच ब-र-क़ते	15	(4) खुश ख़बरी !	140
आयते करीमा की फ़ज़ीलत	16	सय्यिदुल इस्तिफ़ार पढ़ने वाले के लिये	141
सोते वक़्त पढ़े जाने वाले 5 वज़ाइफ़	16	जन्नत की बिशारत	
सूरए फ़ातिहा के 4 फ़ज़ाइल	19	कलिमाए तथ्यिबा के 4 फ़ज़ाइल	142
सूरए यासीन शरीफ़ के 16 फ़ज़ाइल	21	(1) खुश नसीब कौन	142
सूरए कहफ़ के 4 फ़ज़ाइल	37	(2) अफ़ज़ल ज़िक़्र व दुआ	142
सूरए फ़ह्र के 3 फ़ज़ाइल	64	(3) आस्मानों के दरवाज़े खुल जाते हैं	143
सू-रतुदुख़ान के चार फ़ज़ाइल	76	(4) तज्दीदे ईमान	143
सूरए मुल्क के 9 फ़ज़ाइल	82	“سُبْحَانَ اللَّهِ وَبِحَمْدِهِ” के फ़ज़ाइल	143
सूरए रहमान के 4 फ़ज़ाइल	91	(1) गुनाह मिटा दिये जाते हैं	143
सूरए वाकिआ के फ़ज़ाइल	100	(2) सोने का पहाड़ स-दक़ा करने का सवाब	144
सू-रतुस्सज्दह	108	(3) जन्नत में ख़ज़ूर का दरख़्त	144

उन्वान	सफ़ह	उन्वान	सफ़ह
"लाहौल शरीफ़" पढ़ने के 3 फ़ज़ाइल	145	ग्यारह हज़ार दुरूद का सवाब	172
(1) जन्नत का दरवाज़ा	145	चौदह हज़ार दुरूदे पाक का सवाब	173
(2) निनानवे बीमारियों के लिये दवा	145	एक लाख दुरूदे पाक का सवाब	173
(3) ने'मत की हिफ़ाज़त का नुस्खा	146	हर किस्म की परेशानों से नजात के लिये	173
बेदार होते वक़्त के 3 अवराद	146	आबे कौसर से भरा प्याला	174
सुब्ह व शाम के 5 अज़्कार	148	दुरूदे ताज के 8 म-दनी फूल	174
क़लिमए तौहीद के 3 फ़ज़ाइल	150	दुरूदे ताज	175
ईमान पर ख़ातिमा के चार अवराद	152	दुरूदे तुनज्जीना के बारे में इमान	176
गुनाहों की बख़्शिश	153	अफ़रोज़ हिकायत	178
चार करोड़ नैकियां कमाएं	153	शिफ़ाए अमराज़	180
शैतान से बचने का अमल	153	दुरूदे माही के बारे में मछली की हिकायत	180
गीबत से बचने का म-दनी नुस्खा	154	<b>फ़ैज़ाने दुआ</b>	
पांच म-दनी फूल	155	दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	182
जादू और बलाओं से हिफ़ाज़त के लिये शश कुफल	155	दुआ की अहमियत	182
नमाज़ के बा'द पढ़े जाने वाले अवराद	157	दुआ दाफ़ेए बला है	183
मिन्दों में चार ख़तमे क़ुरआन का सवाब	161	इबादात में दुआ का मक़ाम	183
शैतान से महफूज़ रहने का अमल	161	दुआ के तीन फ़ाएदे	183
<b>फ़ैज़ाने दुरूद</b>		5 म-दनी फूल	184
दुरूद शरीफ़ के 7 फ़ज़ाइल		न जाने कौन सा गुनाह हो गया है ?	185
दुरूद शरीफ़ के 30 म-दनी फूल	162	नमाज़ न पढ़ना गोया ख़ता ही नहीं !	186
दोदारे सरकार के तलबगार के लिये तोहफ़ा	165	जिस दोस्त की बात न मानी	187
बख़्शिश व मग़्फ़िरत	167	क़बूलियत दुआ में ताख़ीर का एक सबब	188
माल में ख़ैरो ब-र-क़त	168	जल्दी मचाने वाले की दुआ क़बूल नहीं होती	189
कुव्वते हाफ़िज़ा मज्बूत हो	168	अफ़सरों के पास तो धक्क खाते हो मगर.....	190
शबे जुमुआ का दुरूद	169	दुआ की क़बूलियत में ताख़ीर तो करम है	193
तमाम गुनाह मुआफ़	169	म-दनी क़ाफ़िले में इक्बालिन्सा का इलाज हो गया	195
रहमत के सत्तर दरवाज़े	170	दुआ मांगने के 17 म-दनी फूल	196
एक हज़ार दिन की नैकियां	170	<b>15 क़ुरआनी दुआएं</b>	199
छ लाख दुरूद शरीफ़ का सवाब	170	दीन व दुनिया की भलाइयों वाली 49 दुआएं	203
कुबे मुस्तफ़ा ﷺ	171	दुआए मुस्तफ़ा ﷺ	203
दुरूदे र-ज़विय्या	171	सोते वक़्त की दुआ	203
दीन व दुनिया की ने'मतें हासिल कीजिये	171	नौद से बेदार होने के बा'द की दुआ	203
दुरूदे शफ़ाअत	172	बेतुल ख़ला में दाख़िल होने से पहले की दुआ	204
दुनिया व आख़िरत की सुरख़ुरूई	172	बेतुल ख़ला से बाहर आने के बा'द की दुआ	204

उन्वान	सफ़हा	उन्वान	सफ़हा
घर में दाखिल होते वक्त की दुआ	204	जहरीले जानवरों से महफूज़ रहने की दुआ	220
घर से निकलते वक्त की दुआ	205	किसी क़ौम से ख़तरों के वक्त की दुआ	220
खाना खाने से पहले की दुआ	205	सख़्त ख़तरों के वक्त की दुआ	221
खाना खाने के बा'द की दुआ	206	जबान की लुक्नत की दुआ	221
दूध पीने के बा'द की दुआ	206	कुफ़ व फ़क्क़ से पनाह की दुआ	222
आईना देखते वक्त की दुआ	206	इयादत करते वक्त की दो दुआएँ	222
किसी मुसलमान को मुस्कराता देख कर पढ़ने की दुआ	207	मुसीबत के वक्त की दुआ	222
शुक्रिया अदा करने की दुआ	207	ता'ज़िय्यत करते वक्त की दुआ	223
अदाए कर्ज़ की दुआ	207	कफ़न पर लिखने की दुआएँ	223
गुस्सा आने के वक्त की दुआ	208	दुआ बराए रोशनिये चश्म	224
इल्म में इज़ाफ़े की दुआ	208	फ़ज्र नमाज़ के बा'द की दुआएँ	225
शिआरे कुफ़्फ़ार को देखे या आवाज़ सुने तो येह दुआ पढ़े	208	<b>फ़ैज़ाने अवराद</b>	
मुसीबत ज़दा को देख कर पढ़ने की दुआ	209	रहमतों की बरसात	226
मुर्ग़ की बांग सुन कर पढ़ने की दुआ	210	बुजुर्गों से मन्कूल 38 म-दनी वज़ाइफ़	228
बारिश की ज़ियादती के वक्त की दुआ	210	डरावने ख़्वाबों से नजात	228
आंधी के वक्त की दुआ	211	जानवर के काटे का अमल	228
सितारा टूटता देखते वक्त की दुआ	211	बराए दफ़्फ़ बवासीर ख़ूनी व बादी	228
बाज़ार में दाखिल होते वक्त की दुआ	212	फ़ालिज व लक्वा	229
बाज़ार में नुक़सान न हो बल्कि फ़ाएदा हो	212	बराए कुव्वते हाफ़िज़ा	229
शबे क़द्र की दुआ	213	ज़ेहन खोलने के लिये	229
इफ़्तार के वक्त की दुआ	214	कोढ़ या पीलिया	230
आबे ज़मज़म पीते वक्त की दुआ	214	वुस्अते रिज़्क़	230
नया लिबास पहनते वक्त की दो दुआएँ	215	तलाश मआश	231
तेल लगाते वक्त की दुआ	215	कभी मोहताज न हो	231
लड़के के अक़ीके की दुआ	216	चोरी से महफूज़ रहे	232
लड़की के अक़ीके की दुआ	217	गुमशुदा शै के मिलने का अमल	232
सुवारी पर इल्मीनान से बैठ जाने पर दुआ	217	बराए क़ज़ाए हाजात	232
जब कोई शगुन दिल में खटके उस वक्त की दुआ	218	हर हाज़त व मुराद पूरी होगी	232
नज़रे बद लगने पर पढ़े	219	बर्फ़ बारी रोकने के लिये	233
जल जाने पर पढ़ने की दुआ	219	गाइब या भागे हुए शख़्स को बुलाने के लिये	233
		ज़हर का असर न हो	233
		बुख़ार से शिफ़ा	234
		जालिम और शैतान के शर से पनाह के लिये	234

उन्वान	सफ़हा	उन्वान	सफ़हा
दुआए साय्यदुना अनस رضى الله تعالى عنه	236	तहज्जुद गुज़ारों की 8 हिकायात	271
सुब्द व शाम की ता'रीफ़	237	सारी रात नमाज़ पढ़ते रहते	271
कुव्वत हाफ़िज़ा के लिये	237	नमाज़े इशराक़	277
बोनाई की हिफ़ाज़त के लिये	238	नमाज़े चाशत की फ़ज़ीलत	278
ज़बान में लुकनत	238	सलातुत्तस्बीह	278
पेट के दर्द के लिये	238	इस्तिख़ारा	280
तिल्ली बढ़ जाना	238	सलातुल अव्वाबीन की फ़ज़ीलत	282
नाफ़ उतर जाना	239	तहिय्यतुल वुजू	283
बुख़ार	240	सलातुल अस्मार	284
फ़ोड़ा फुन्सी	240	सलातुल हाजात	285
पागल कुत्ते का काट लेना	241	गहन की नमाज़	289
बोझ पन	241	नमाज़े तौबा	290
पैदाइश का दर्द	242	इशा के बा'द दो नफ़ल का सवाब	291
हैज़ा	242	ज़ेहर के आख़िरी दो नफ़ल के भी क्या कहने	292
कैं, दर्द, दर्द शिकम के लिये	242	<b>फ़ेज़ाने रोज़ा</b>	
दर्द आ'ज़ा के लिये	243	दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	293
एहतिलाम से हिफ़ाज़त	243	नफ़ल रोज़ों के दीनी व दुन्यवी फ़वाइद	293
आखें कभी न दुखें	243	नफ़ली रोज़ों के फ़ज़ाइल पर मुश्तमिल 11 रिवायात	294
घर में म-दनी माहौल बनाने का नुस्खा	244	जन्नत का अनोखा दरख़्त	294
शूगर का इलाज़	244	40 साल का फ़ासिला दोज़ख़ से दूरी	294
क़ज़ा उतारने का वज़ीफ़ा	245	दोज़ख़ से 50 साल मसाफ़त दूरी	295
99 अस्माउल हुस्ना और इन के फ़ज़ाइल	246	ज़मीन भर सोने से भी ज़ियादा सवाब	295
ख़त्मे कादिरिय्यह	260	जहन्नम से बहुत ज़ियादा दूरी	295
क़सीदए गौसिया	263	एक रोज़ा रखने की फ़ज़ीलत	296
फ़ज़ाइले क़सीदए गौसिया मु-तबरका	265	बेहतरीन अमल	296
ख़त्मे ख़वाजगान	266	रोज़े रखो तन्दुरुस्त हो जाओगे	297
<b>फ़ेज़ाने नवाफ़िल</b>		सोने के दस्तर ख़वान	297
दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	268	हड्डियां तस्बीह करती हैं	297
अल्लाह का प्यारा बनने का नुस्खा	268	रोज़े की हालत में मरने की फ़ज़ीलत	298
सलातुल्लैल	269	नेक काम के दौरान मौत की सआदत	298
तहज्जुद और रात में नमाज़ पढ़ने का सवाब	269	क़ालू चाचा की ईमान अपोज़ वफ़ात	299
तहज्जुद गुज़ार के लिये जन्नत के	270	हर माह तीन रोज़े रखने का सवाब	301
आलीशान बालाख़ाने		अय्यामे बीज के रोज़ों के मु-तअल्लिक़	302
		8 रिवायात	

## इलाज व अ-मलिय्यात के दलाइल व शराइत

हज़रते सय्यिदुना अनस رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है कि ख़ातिमुल मुर-सलीन, रहमतुल्लि आ-लमीन صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने नज़रे बद, डंक और फोड़े फुन्सियों की सूत में दम करवाने की इजाज़त दी।

(صحيح مسلم ص ۱۲۰۶ حديث ۲۱۹۶)

मुहक्किके अलल इल्लाक़, ख़ातिमुल मुहद्दीसीन, हज़रते अल्लामा शैख़ अब्दुल हक़ मुहद्दीसे देहलवी عليه رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي अशि'अतुल्लम्मात (फ़ारसी) जिल्द 3 सफ़्हा 645 पर इस हदीसे पाक के तहत लिखते हैं : “याद रहे कि तमाम बीमारियों और तकलीफ़ों में दम करना जाइज़ है, सिर्फ़ इन तीन के साथ मख्सूस नहीं, ख़ास तौर पर इन के जिक्र की वजह यह है कि दूसरी बीमारियों की निस्बत इन तीन में दम ज़ियादा मुनासिब और मुफ़ीद है।”

मेरे आका आ'ला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अहमद रज़ा ख़ान فَتَاوَا أَفْرِيكََا سَفْهَا 168 عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمَن पर फ़रमाते हैं : जाइज़ ता'वीज़ कि कुरआने करीम या अस्माए इलाहिय्यह या दीगर अज़्कार व दा'वात (या'नी दुआओं) से हो उस में अस्लन हरज नहीं बल्कि मुस्तहब है। रसूलुल्लाह صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने फ़रमाया : “مَنْ اسْتَطَاعَ مِنْكُمْ أَنْ يَنْفَعَ أَخَاهُ فَلْيَنْفَعْهُ” या'नी तुम में से जो शख्स अपने मुसलमान भाई को नफ़ा पहुंचा सके पहुंचाए।”

(صحيح مسلم ص ۱۲۰۸ حديث ۲۱۹۹)

हज़रते सय्यिदुना अबू सईद खुदरी رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाते हैं : सरवरे काएनात, शाहे मौजूदात صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ जिन्नात और इन्सानों



उन्वान	सफ़हा	उन्वान	सफ़हा
घर से निकलते वक्त की दुआ	205	किसी क्रिम से ख़तर के वक्त की दुआ	220
खाना खाने से पहले की दुआ	205	सख़्त ख़तरे के वक्त की दुआ	221
खाना खाने के बा'द की दुआ	206	ज़बान की लुक्नत की दुआ	221
दूध पीने के बा'द की दुआ	206	कुफ़ व फ़क़्र से पनाह की दुआ	222
आईना देखते वक्त की दुआ	206	इयादत करते वक्त की दो दुआएँ	222
किसी मुसल्मान को मुस्कराता देख कर पढ़ने की दुआ	207	मुसीबत के वक्त की दुआ	222
शुक्रिया अदा करने की दुआ	207	ता'ज़िय्यत करते वक्त की दुआ	223
अदाए क़र्ज़ की दुआ	207	कफ़न पर लिखने की दुआएँ	223
गुस्सा आने के वक्त की दुआ	208	दुआ बराए रोशनिये चश्म	224
इल्म में इज़ाफ़े की दुआ	208	फ़र्ज़ नमाज़ के बा'द की दुआएँ	225
शिशारे कुफ़्फ़ार को देखे या आवाज़ सुने तो येह दुआ पढ़े	208	अहद नामा	226
मुसीबत ज़दा को देख कर पढ़ने की दुआ	209	फ़ैज़ाने अवराद	
मुर्ग की बांग सुन कर पढ़ने की दुआ	210	रहमतों की बरसात	228
बारिश की ज़ियादती के वक्त की दुआ	210	बुजुर्गों से मन्कूल 38 म-दनी वज़ाइफ़	228
आँधी के वक्त की दुआ	211	डरावने ख़्वाबों से नजात	228
सितारा टूटता देखते वक्त की दुआ	211	जानवर के काटे का अमल	228
बाज़ार में दाख़िल होते वक्त की दुआ	212	बराए दफ़्फ़ बवासीर ख़ूनी व बादी	229
बाज़ार में नुक्सान न हो बल्कि फ़ाएदा हो	212	फ़ालिज व लक्वा	229
शबे क़द्र की दुआ	213	बराए कुव्वते हाफ़िज़ा	229
इफ़्तार के वक्त की दुआ	214	ज़ेह्न खोलने के लिये	230
आबे ज़मज़म पीते वक्त की दुआ	214	कोढ़ या पीलिया	230
नया लिबास पहनते वक्त की दुआएँ	215	बुस्अते रिज़्क	231
तेल लगाते वक्त की दुआ	215	तलाशे मआश	231
लड़के के अक़ीक़े की दुआ	216	कभी मोहताज न हो	231
लड़की के अक़ीक़े की दुआ	217	चोरी से महफूज़ रहे	231
सुवारी पर इल्मीनान से बैठ जाने पर दुआ	217	गुमशुदा शै के मिलने का अमल	232
जब कोई शगुन दिल में खटके उस वक्त की दुआ	218	बराए क़ज़ाए हाजात	232
नज़रे बद लगने पर पढ़े	219	हर हाजत व मुराद पूरी होगी	232
जल जाने पर पढ़ने की दुआ	219	बर्फ़ बारी रोकने के लिये	233
ज़हरीले जानवरों से महफूज़ रहने की दुआ	220	गाइब या भाग हुए शख़्स को बुलाने के लिये	233
		ज़हर का असर न हो	233
		बुख़ार से शिफ़ा	234
		ज़ालिम और शैतान के शर से पनाह के लिये	234

# A 10

उन्वान	सफ़हा	उन्वान	सफ़हा
दुआए सय्यिदुना अनस رَحِمَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ	236	तहज्जुद गुज़ारों की 8 हिक्कायात	271
सुबह व शाम की ता'रीफ़	237	सारी रात नमाज़ पढ़ते रहते	271
कुव्वते हाफ़िज़ा के लिये	237	नमाज़े इश्राक़	277
बीनाई की हिफ़ाज़त के लिये	238	नमाज़े चाशत की फ़ज़ीलत	278
ज़बान में लुक्मत	238	सलातुत्तस्बीह	278
पेट के दर्द के लिये	238	इस्तिख़ारा	280
तिल्ली बढ़ जाना	238	सलातुल अव्वाबीन की फ़ज़ीलत	282
नाफ़ उतर जाना	239	तहि्य्यतुल वुजू	283
बुख़ार	240	सलातुल अस्सार	284
फोड़ा फुन्सी	240	सलातुल हाजात	285
पागल कुत्ते का काट लेना	241	गहन की नमाज़	289
बांझ पन	241	नमाज़े तौबा	290
अगर पेट में बच्चा टेढ़ा हो गया हो तो !	242	इशा के बा'द दो नफ़ल का सवाब	291
हैज़ा	242	जौहर के आख़िरी दो नफ़ल के भी क्या कहने	292
क़े, दर्द, दर्दे शिकम के लिये	242	<b>फ़ैज़ाने रोज़ा</b>	
दर्दे आ'ज़ा के लिये	243	दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	293
एहतिलाम से हिफ़ाज़त	243	नफ़ल रोज़ों के दीनी व दुन्यवी फ़वाइद	293
आखें कभी न दुखें	243	नफ़ली रोज़ों के फ़ज़ाइल पर मुश्तमिल 11 रिवायात	294
घर में म-दनी माहोल बनाने का नुस्खा	244	जन्नत का अनोखा दरख़्त	294
शूगर के मरज़ से शिफ़ा	244	40 साल का फ़ासिला दोज़ख़ से दूरी	294
क़र्ज़ा उतारने का वज़ीफ़ा	245	दोज़ख़ से 50 साल की मसाफ़त दूरी	295
99 अस्माउल हुस्ना और इन के फ़ज़ाइल	246	ज़मीन भर सोने से भी ज़ियादा सवाब	295
ख़त्मे क़ादिरिय्यह	260	जहन्नम से बहुत ज़ियादा दूरी	295
क़सीदए ग़ौसिया	263	एक रोज़ा रखने की फ़ज़ीलत	296
फ़ज़ाइले क़सीदए ग़ौसिया मु-तबरक़ा	265	बेहतररीन अमल	296
ख़त्मे ख़्वाजगान	266	रोज़े रखो तन्दुरुस्त हो जाओगे	297
<b>फ़ैज़ाने नवाफ़िल</b>		सोने के दस्तर ख़्वांन	297
दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	268	हड्डियां तस्बीह करती हैं	297
अल्लाह का प्यारा बनने का नुस्खा	268	रोज़े की हालत में मरने की फ़ज़ीलत	298
सलातुल्लैल	269	नेक काम के दौरान मौत की सआदत	298
तहज्जुद और रात में नमाज़ पढ़ने का सवाब	269	कालू चाचा की इमान अफ़रोज़ वफ़ात	299
तहज्जुद गुज़ार के लिये जन्नत के	270	हर माह तीन रोज़े रखने का सवाब	301
आलीशान बालाख़्वांने		अय्यामे बीज के रोज़ों के मु-तअल्लिक़	302
		8 रिवायात	

उन्वान	सफ़हा	उन्वान	सफ़हा
घर से निकलते वक्त की दुआ	205	किसी क्रिम से ख़तर के वक्त की दुआ	220
खाना खाने से पहले की दुआ	205	सख़्त ख़तरे के वक्त की दुआ	221
खाना खाने के बा'द की दुआ	206	ज़बान की लुक्नत की दुआ	221
दूध पीने के बा'द की दुआ	206	कुफ़ व फ़क़्र से पनाह की दुआ	222
आईना देखते वक्त की दुआ	206	इयादत करते वक्त की दो दुआएँ	222
किसी मुसल्मान को मुस्कराता देख कर पढ़ने की दुआ	207	मुसीबत के वक्त की दुआ	222
शुक्रिया अदा करने की दुआ	207	ता'ज़िय्यत करते वक्त की दुआ	223
अदाए क़र्ज़ की दुआ	207	कफ़न पर लिखने की दुआएँ	223
गुस्सा आने के वक्त की दुआ	208	दुआ बराए रोशनिये चश्म	224
इल्म में इज़ाफ़े की दुआ	208	फ़र्ज़ नमाज़ के बा'द की दुआएँ	225
शिआरे कुफ़्फ़ार को देखे या आवाज़ सुने तो येह दुआ पढ़े	208	अहद नामा	226
मुसीबत ज़दा को देख कर पढ़ने की दुआ	209	फ़ैज़ाने अवराद	
मुग़ की बांग सुन कर पढ़ने की दुआ	210	रहमतों की बरसात	228
बारिश की ज़ियादती के वक्त की दुआ	210	बुजुर्गों से मन्कूल 38 म-दनी वज़ाइफ़	228
आँधी के वक्त की दुआ	211	डरावने ख़्वाबों से नजात	228
सितारा टूटता देखते वक्त की दुआ	211	जानवर के काटे का अमल	228
बाज़ार में दाख़िल होते वक्त की दुआ	212	बराए दफ़्फ़ बवासीर ख़ूनी व बादी	229
बाज़ार में नुक़सान न हो बल्कि फ़ाएदा हो	212	फ़ालिज व लक्वा	229
शबे क़द्र की दुआ	213	बराए कुव्वते हाफ़िज़ा	229
इफ़्तार के वक्त की दुआ	214	ज़ेह्न खोलने के लिये	230
आबे ज़मज़म पीते वक्त की दुआ	214	कोढ़ या पीलिया	230
नया लिबास पहनते वक्त की दुआएँ	215	बुस्अते रिज़्क	231
तेल लगाते वक्त की दुआ	215	तलाशे मआश	231
लड़के के अक़ीक़े की दुआ	216	कभी मोहताज न हो	231
लड़की के अक़ीक़े की दुआ	217	चोरी से महफूज़ रहे	231
सुवारी पर इल्मीनान से बैठ जाने पर दुआ	217	गुमशुदा शै के मिलने का अमल	232
जब कोई शगुन दिल में खटके उस वक्त की दुआ	218	बराए क़ज़ाए हाजात	232
नज़रे बद लगने पर पढ़े	219	हर हाजत व मुराद पूरी होगी	232
जल जाने पर पढ़ने की दुआ	219	बर्फ़ बारी रोकने के लिये	233
ज़हरीले जानवरों से महफूज़ रहने की दुआ	220	गाइब या भाग हुए शख़्स को बुलाने के लिये	233
		ज़हर का असर न हो	233
		बुख़ार से शिफ़ा	234
		ज़ालिम और शैतान के शर से पनाह के लिये	234

# A 10

उन्वान	सफ़हा	उन्वान	सफ़हा
दुआए सय्यिदुना अनस رضى الله تعالى عنه	236	तहज्जुद गुज़ारों की 8 हिक्कायात	271
सुबह व शाम की ता'रीफ़	237	सारी रात नमाज़ पढ़ते रहते	271
कुव्वते हाफ़िज़ा के लिये	237	नमाज़े इश्राक़	277
बीनाई की हिफ़ाज़त के लिये	238	नमाज़े चाशत की फ़ज़ीलत	278
ज़बान में लुक्मत	238	सलातुत्तस्बीह	278
पेट के दर्द के लिये	238	इस्तिख़ारा	280
तिल्ली बढ़ जाना	238	सलातुल अव्वाबीन की फ़ज़ीलत	282
नाफ़ उतर जाना	239	तहि्य्यतुल वुजू	283
बुख़ार	240	सलातुल अस्सार	284
फोड़ा फुन्सी	240	सलातुल हाजात	285
पागल कुत्ते का काट लेना	241	गहन की नमाज़	289
बांझ पन	241	नमाज़े तौबा	290
अगर पेट में बच्चा टेढ़ा हो गया हो तो !	242	इशा के बा'द दो नफ़ल का सवाब	291
हैज़ा	242	ज़ौहर के आख़िरी दो नफ़ल के भी क्या कहने	292
कै, दर्द, दर्दे शिकम के लिये	242	<b>फ़ैज़ाने रोज़ा</b>	
दर्दे आ'ज़ा के लिये	243	दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	293
एहतिलाम से हिफ़ाज़त	243	नफ़ल रोज़ों के दीनी व दुन्यवी फ़वाइद	293
आखें कभी न दुखें	243	नफ़ली रोज़ों के फ़ज़ाइल पर मुश्तमिल 11 रिवायात	294
घर में म-दनी माहोल बनाने का नुस्खा	244	जन्नत का अनोखा दरख़्त	294
शूगर के मरज़ से शिफ़ा	244	40 साल का फ़ासिला दोज़ख़ से दूरी	294
क़र्ज़ा उतारने का वज़ीफ़ा	245	दोज़ख़ से 50 साल की मसाफ़त दूरी	295
99 अस्माउल हुस्ना और इन के फ़ज़ाइल	246	ज़मीन भर सोने से भी ज़ियादा सवाब	295
ख़त्मे क़ादिरिय्यह	260	जहन्नम से बहुत ज़ियादा दूरी	295
क़सीदए ग़ौसिया	263	एक रोज़ा रखने की फ़ज़ीलत	296
फ़ज़ाइले क़सीदए ग़ौसिया मु-तबरक़ा	265	बेहतरीन अमल	296
ख़त्मे ख़्वाजगान	266	रोज़े रखो तन्दुरुस्त हो जाओगे	297
<b>फ़ैज़ाने नवाफ़िल</b>		सोने के दस्तर ख़्वान	297
दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	268	हड्डियां तस्बीह करती हैं	297
अल्लाह का प्यारा बनने का नुस्खा	268	रोज़े की हालत में मरने की फ़ज़ीलत	298
सलातुल्लैल	269	नेक काम के दौरान मौत की सआदत	298
तहज्जुद और रात में नमाज़ पढ़ने का सवाब	269	कालू चाचा की इमान अफ़रोज़ वफ़ात	299
तहज्जुद गुज़ार के लिये जन्नत के	270	हर माह तीन रोज़े रखने का सवाब	301
आलीशान बालाख़्वाने		अय्यामे बीज के रोज़ों के मु-तअल्लिक़	302
		8 रिवायात	

की नज़र से पनाह मांगा करते थे हत्ता कि सूरए फ़लक़ व नास नाज़िल हुई, फिर आप ﷺ ने इन को ले लिया और इन के मा सिवा (या'नी इलावा) को छोड़ दिया।

(سُنَنُ التِّرْمِذِيِّ ج ٤ ص ١٣ حديث ٢٠٦٥)

**हकीमुल उम्मत** हज़रते मुफ़ती अहमद यार ख़ान عَلَيهِ رَحْمَةُ الْخَنَانِ इस हदीसे पाक के तहत फ़रमाते हैं : “या'नी सूरए फ़लक़ और नास नाज़िल होने से पहले हुज़ूर ﷺ जिन्नो इन्स की नज़र से बचने के लिये मुख़लिफ़ दुआएं पढ़ा करते थे म-सलन اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الْجَانِّ वगैरा, फिर (सूरए फ़लक़ व नास नाज़िल होने के बा'द) दीगर दुआओं की कसरत छोड़ दी (और) ज़ियादा तर **सूरए फ़लक़** व नास ही से अमल फ़रमाया।”

(مرآة السائغ، ج ١ ص ٢٤٥)

كِتَابَةُ مُسْتَتَاب “म-दनी पन्ज सूरह” मशहूर कुरआनी सूरतों, दुरूदों, रूहानी तिब्बी इलाजों और खुशबूदार म-दनी फूलों का दिल चस्प म-दनी गुलदस्ता है, इस का हर घर में होना ज़रूरी है। कुरआनी आयात का तरजमा कन्जुल ईमान से लिया गया है। इस्लामी भाई और इस्लामी बहनें इस को न सिर्फ़ खुद पढ़ें बल्कि अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ दूसरों को भी तोहफ़े में पेश करें या हदिय्यतन ले कर पढ़ने का मशवरा दें। नीज़ मसाजिद व मज़ारते औलिया और आम दारुल मुता-लओं वगैरा में भी रखिये ताकि नमाज़ी, ज़ाइरीन और आम्मतुल मुस्लिमीन इस्तिफ़ादा कर सकें। याद रखिये कि अवरदो वज़ाइफ़ की तासीर के लिये कम अज़ कम 3 शराइत् का पाया जाना ज़रूरी है चुनान्वे मेरे आका आ'ला हज़रत عَلِيهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعَرْشِ फ़तावा र-ज़विय्या जिल्द 23 के सफ़हा 558 पर फ़रमाते हैं : “वज़ाइफ़ व आ'माल के असर करने में तीन

शराइत ज़रूरी हैं :

(1) हुस्ने ए'तिफ़ाद, दिल में दग्दगा (या'नी ख़दशा) न हो कि देखिये असर होता है या नहीं ? बल्कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के करम पर पूरा भरोसा हो कि ज़रूर इजाबत (या'नी क़बूल) फ़रमाएगा। हदीस में है, रसूलुल्लाह या'नी اُدْعُوا اللَّهَ وَأَنْتُمْ مُوقِنُونَ بِالْإِجَابَةِ : صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ फ़रमाते हैं : अल्लाह तआला से इस हाल पर दुआ़ करो कि तुम्हें इजाबत (या'नी क़बूलियत) का यकीन हो।

(سُنَنُ التِّرْمِذِيِّ ج ٥ ص ٢٩٢ حديث ٣٤٩٠)

(2) सब्रो तहम्मूल, दिन गुज़रें तो घबराएं नहीं कि इतने दिन पढ़ते गुज़रे अभी कुछ असर न हुवा ! यूँ इजाबत (या'नी क़बूलियत) बन्द कर दी जाती है बल्कि लिपटा रहे और लौ लगाए रहे कि अब अल्लाह व रसूल (عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ) अपना फ़ज़ल करते हैं।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है :

وَلَوْ أَنَّكُمْ رَضُوا مَا أَتَاهُمُ اللَّهُ  
وَرَسُولُهُ وَقَالُوا حَسْبُنَا اللَّهُ سَيُؤْتِينَا  
اللَّهُ مِنْ فَضْلِهِ وَرَسُولُهُ إِنَّا إِلَى  
اللَّهِ لَرَاغِبُونَ

(پ ۱۰، التوبة: ۵۹)

तर-जमए कन्जुल ईमान : और क्या अच्छा होता अगर वोह इस पर राज़ी होते जो अल्लाह व रसूल ने उन को दिया और कहते हमें अल्लाह काफी है, अब देता है हमें अल्लाह अपने फ़ज़ल से और अल्लाह का रसूल, अल्लाह ही की तरफ़ रग़बत है।

हदीस में है : يُسْتَجَابُ لِأَحَدِكُمْ مَا لَمْ يَعْجَلْ فَيَقُولُ قَدْ دَعَوْتُ فَلَمْ يُسْتَجَبْ :

या'नी तुम्हारी दुआ़एं क़बूल होती हैं जब तक जल्दी न करो कि मैं ने दुआ़ की और अब तक क़बूल न हुई।

(सहीह मुस्लिम, स. 1463, हदीस : 2735)

(3) मेरे (या'नी आ'ला हज़रत (عليه رضى الله عنه) यहां की जुम्ला इजाज़त व वज़ाइफ व आ'माल व ता'वीज़ात में शर्त है कि नमाज़े पन्जगाना बा जमाअत मस्जिद में अदा करने की कामिल पाबन्दी रहे। **وَبِاللهِ التَّوْفِيقُ**”

**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इस किताब के मुअल्लिफ़ और इस का मुता-लअ करने वालों को इस का ख़ूब नफ़अ पहुंचाए। **अल्लाह** शकूर عَزَّوَجَلَّ सगे मदीना عَنَّا की इस नाचीज़ सअूय को मशकूर फ़रमाए और इख़्लास की ला ज़वाल दौलत से मालामाल करे।

**मेरा हर अमल बस तेरे वासिते हो कर इख़्लास ऐसा अता या इलाही**  
**दुआए अत्तार : या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! जो इस किताब को अपने अज़ीज़ों के ईसाले सवाब के लिये नीज़ दीगर अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ शादी ग़मी की तक़रीबात व इज्तिमाअत वगैरा में तक्सीम करवाए, महल्ले में घर घर पहुंचाए उस का और उस के तुफ़ैल मेरा भी दोनों जहां में बेड़ा पार कर दे।

أَمِينَ بِجَاهِ النَّبِيِّ الْأَمِينِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ

तालिबे ग़मे मदीना

व

बकीअ

व

मग़िफ़रत



25 शव्वालुल मुकर्रम 1429 10-2008

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ ط  
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

“म-दनी पन्ज सूरह पढ़ा करें” के 19 हुरूफ़ की  
निस्बत से इस किताब को पढ़ने की 19 निय्यतें

फ़रमाने मुस्तफ़ा : “ يَا أَيُّهَا الْمُؤْمِنُونَ خَيْرٌ مِنْ عَمَلِهِ ” : صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ  
मुसल्मान की निय्यत उस के अमल से बेहतर है।”

(अल मो'जमुल कबीर लिच्-बरानी, अल हदीस : 5942, जि. 6, स. 185 बैरुत)

**दो म-दनी फूल :** (1) बिगैर अच्छी निय्यत के किसी भी अ-मले खैर  
का सवाब नहीं मिलता।

(2) जितनी अच्छी निय्यतें ज़ियादा, उतना सवाब भी  
ज़ियादा।

(1) हर बार हम्द व (2) सलात और (3) तअव्वुज व (4)  
तस्मिया से आगाज़ करूंगा। (इसी सफ़हे पर ऊपर दी हुई दो अ-रबी  
इबारात पढ़ लेने से चारों निय्यतों पर अमल हो जाएगा) (5) रिज़ाए  
इलाही عَزَّوَجَلَّ के लिये इस किताब का अव्वल ता आखिर मुता-लआ  
करूंगा। (6) हत्तल वस्अ इस का बा वुजू और (7) क़िब्ला रू मुता-  
लआ करूंगा। (8) कुआनी आयात और (9) अहादीसे मुबा-रका की  
ज़ियारत करूंगा। (10) जहां जहां “अल्लाह” का नामे पाक आएगा  
वहां عَزَّوَجَلَّ और (11) जहां जहां “सरकार” का इस्मे मुबारक आएगा वहां  
صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ पढ़ूंगा। (12) (अपने ज़ाती नुस्खे पर) इन्दज़ूररत  
खास खास मक़ामात पर अन्दर लाइन करूंगा। (13) (अपने ज़ाती नुस्खे  
के) “याद दाश्त” वाले सफ़हे पर ज़रूरी निकात लिखूंगा। (14) दूसरों को  
येह किताब पढ़ने की तरगीब दिलाऊंगा। (15) इस हदीसे पाक  
“نَهَادُوْا بَعْضُكُمْ بَعْضًا عَلٰى سَبِيْلِ اللّٰهِ وَرُوْطُوْا بَيْنَكُمْ بِحَبْلِ رَحْمَةِ اللّٰهِ” (मुअत्ता  
इमामे मालिक, जि. 2, स. 407, अल हदीस : 1731) पर अमल की निय्यत से



(एक या हस्बे तौफीक) येह किताब खरीद कर दूसरों को तोहफ़तन दूंगा ।  
 (16) जिन को दूंगा हत्तल इम्कान उन्हें येह हदफ़ भी दूंगा कि आप  
 इतने दिन (म-सलन 40 दिन) के अन्दर अन्दर मुकम्मल पढ़ लीजिये  
 (17) कम अज़ कम एक अ़दद म-दनी पन्ज सूरह किसी मस्जिद या  
 मज़ार शरीफ़ पर मुसल्मानों के पढ़ने के लिये रखूंगा (सिर्फ़ उसी  
 मस्जिद व मज़ार पर रखिये जहां पहले से मौजूद न हो) (18) इस  
 किताब के मुता-लए का सवाब सारी उम्मत को ईसाल करूंगा । (19)  
 किताबत वगैरा में शर-ई ग़-लती मिली तो नाशिरीन को तहरीरी तौर  
 पर मुत्तलअ़ करूंगा । (ज़बानी कहना या कहलवाना खास मुफ़ीद नहीं  
 होता)

### इमामा और साइन्स

जदीद साइन्सी तहक़ीक़ के मुताबिक़ मुस्तक़िल तौर पर  
 इमामा शरीफ़ सजाने वाला खुश नसीब मुसल्मान फ़ालिज  
 और खून की वजह से जनम लेने वाली बा'ज़ बीमारियों से  
 महफूज़ रहता है क्यूं कि इमामा शरीफ़ सजाने की ब-र-कत  
 से दिमाग़ की तरफ़ जाने वाली खून की बड़ी बड़ी नालियों में  
 खून का दबाव सिर्फ़ ज़रूरत की हद तक रहता है और ग़ैर  
 ज़रूरी खून दिमाग़ तक नहीं पहुंच पाता ! लिहाज़ा अमरीका में  
 फ़ालिज के इलाज के लिये इमामा नुमा “मास्क” (MASK)  
 बनाया गया है ।

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ  
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

## फै नाने बिस्मिल्लाह शरीफ

### दुस्ते पाक की फजीलत

अल्लाह عزوجل के महबूब, दानाए गुयूब, मुनज्जहुन अनिल उयूब صلى الله تعالى عليه وآله وسلم का इशादे मुश्कबार है : जिस ने मुझ पर सो<sup>100</sup> मर्तबा दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह तअला उस की दोनों आंखों के दरमियान लिख देता है कि येह निफाक और जहन्नम की आग से आजाद है और उसे बरोजे कियामत शु-हदा के साथ रखेगा ।

(مجمع الزوائد ج ١٠ ص ٢٥٣ حديث ١٧٢٩٨)

صَلُّوا عَلَى الْخَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

### बिस्मिल्लाह शरीफ की फजीलत

हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास رضى الله تعالى عنهما से रिवायत है कि अमीरुल मुअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उस्मान इब्ने अफ़फ़ान رضى الله تعالى عنه ने नबियों के सुल्तान, सरवरे ज़ी शान, सरदारो दो जहान (की) بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ سے صلى الله تعالى عليه وآله وسلم से (फजीलत) के बारे में इस्तिफ़सार किया, तो अल्लाह عزوجل के महबूब,

फरमाने मुस्तफा ﷺ जिसने मुझ पर एक बार दुरूद पाक पढ़ा **अल्लाह** तआला उस पर दस रहमते भेजता है।

दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अनिल उयूब ﷺ ने फरमाया,  
 “येह **अल्लाह** غَوْجَل के नामों में से एक नाम है और **अल्लाह** غَوْجَل  
 के इस्मे आ 'जम और इस के दरमियान ऐसा ही कुर्ब है जैसे आंख की  
 सियाही (पुतली) और सफेदी के दरमियान।”

(مستدرک للحاکم ج ۲ ص ۲۵۰ حدیث ۲۰۷۱)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! “इस्मे आ 'जम” की बहुत  
 ब-र-कतें हैं, इस्मे आ 'जम के साथ जो दुआ की जाए वोह क़बूल हो  
 जाती है। सरकारे आ 'ला हज़रत رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْهِ के वालिदे माजिद  
 हज़रत रईसुल मु-तकल्लिमीन मौलाना नकी अली खान  
 بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ने उ-लमा ने फरमाते हैं, “बा'ज उ-लमा ने  
 رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَنْهُ को इस्मे आ 'जम कहा। सरकारे बग़दाद हुजुरे गौसे पाक  
 से मन्कूल है, “बिस्मिल्लाह ज़बाने अरिफ़ (अरिफ़ या'नी **अल्लाह**  
 غَوْجَل को पहचानने वाला) से ऐसी है जैसे कलामे ख़ालिक्  
 “कुन”। (या'नी “हो जा।”) (أَحْسَنُ الرِّعَاء ص ۶۶)

## अधूरा काम

सरकारे मक्कए मुकर्मा, सरदारे मदीनए मुनव्वरह  
 ﷺ ने फरमाया : “जो भी अहम काम  
 بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ के साथ शुरू नहीं किया जाता वोह अधूरा  
 रह जाता है।” (الدَّرُ الْمَشْهُور ج ۱ ص ۲۶)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अपने नेक और जाइज़ कामों

फरमाने मुस्तफा ﷺ जो शख्स मुझ पर दुरुदे पाक पढ़ना भूल गया वोह जन्नत का रास्ता भूल गया ।

में ब-र-कत दाखिल करने के लिये हमें पहले  
 بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ जरूर पढ़ लेना चाहिये । खाने खिलाने,  
 पीने पिलाने, रखने उठाने, धोने पकाने, पढ़ने पढ़ाने, चलने (गाड़ी  
 वगैरा) चलाने, उठने उठाने, बैठने बिठाने, बत्ती जलाने, पंखा  
 चलाने, दस्तर ख़वान बिछाने बढ़ाने, बिछौना लपेटने बिछाने, दुकान  
 खोलने बढ़ाने, ताला खोलने लगाने, तेल डालने इत्र लगाने, बयान  
 करने ना'त शरीफ सुनाने, जूता पहनने इमामा सजाने, दरवाज़ा  
 खोलने बन्द फ़रमाने, अल गरज़ हर जाइज़ काम के शुरूअ में (जब  
 कि कोई मानेए शर-ई न हो) بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ पढ़ने की आदत  
 बना कर इस की ब-र-कतें लूटना ऐन सआदत है ।

صَلُّوا عَلَى الْخَبِيبِ ا صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

“बिस्मिल्लाह की ब-र-कत” के तेरह हुरफ़ की निखत से  
 “بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ” के 13 म-दनी फूल

﴿1﴾ हज़रते सय्यिदुना शैख़ अबुल अब्बास अहमद बिन अली बूनी  
 शम्सुल मआरिफ़ (मुतर्जम) के सफ़हा 37 पर लिखते  
 हैं : जो बिला नागा सात दिन तक “بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ” 786  
 बार (अव्वल आख़िर एक बार दुरुद शरीफ़) पढ़े اِنَّ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ उस की  
 हर हाज़त पूरी हो । अब वोह हाज़त ख़्वाह किसी भलाई के पाने की  
 हो या बुराई दूर होने की या कारोबार चलने की ।

(شمس المعارف مترجم، ص 37)

फरमाने मुस्तफा ﷺ जिसने मुझ पर एक बार दुरूद पाक पढ़ा **अल्लाह** तआला उस पर दस रहमतें भेजता है।

﴿2﴾ जो किसी ज़ालिम के सामने “**بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ**” 50 बार (अव्वल आखिर एक बार दुरूद शरीफ) पढ़े उस ज़ालिम के दिल में पढ़ने वाले की हैबत पैदा हो और उस के शर से बचा रहे।

(ऐज़न, स. 37)

﴿3﴾ जो शख्स तुलूए आफ़ताब के वक़्त सूरज की तरफ़ रुख़ कर के **بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ** 300 बार और दुरूद शरीफ़ 300 बार पढ़े **अल्लाह** उस को ऐसी जगह से रिज़क अता फ़रमाएगा जहाँ उस का गुमान भी न होगा। और (रोज़ाना पढ़ने से) **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** एक साल के अन्दर अन्दर अमीरो कबीर हो जाएगा।

(ऐज़न, स. 37)

﴿4﴾ कुन्द ज़ेहन अगर “**بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ**” 786 बार (अव्वल आखिर एक बार दुरूद शरीफ़) पढ़ कर पानी पर दम कर के पी ले तो **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** उस का हाफ़िज़ा मज़बूत हो जाए और जो बात सुने याद रहे।

(ऐज़न, स. 37)

﴿5﴾ अगर कहत साली हो तो “**بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ**” 61 बार (अव्वल आखिर एक बार दुरूद शरीफ़) पढ़ें, (फिर दुआ करें) **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** बारिश होगी।

(ऐज़न, स. 37)

﴿6,7﴾ **بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ** काग़ज़ पर 35 बार (अव्वल आखिर एक बार दुरूद शरीफ़) लिख कर घर में लटका दें **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** शैतान का गुज़र न हो और ख़ूब ब-र-कत हो। अगर दुकान में लटकाएं तो **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** कारोबार ख़ूब चमके।

(ऐज़न, स. 38)

(8) यकुम मुहर्मुल हुराम को “**بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ**” 130

फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ जिसने मुझ पर दस मरतबा दुरूदे पाक पढ़ा **अल्लाह** तआला उस पर सौ रहमते भेजता है।

बार लिख कर (या लिखवा कर) जो कोई अपने पास रखे (या प्लास्टिक कोटिंग करवा कर कपड़े, रेग्ज़ीन या चमड़े में सिलवा कर पहन ले) **ان شاء الله عزوجل** उम्र भर उस को या उस के घर में किसी को कोई बुराई न पहुंचे। (ऐज़न, स. 38)

**मस्अला :** सोने या चांदी या किसी भी धात की डिबिया में ता'वीज़ पहनना मर्द को जाइज़ नहीं। इसी तरह किसी भी धात की ज़न्जीर ख़्वाह उस में ता'वीज़ हो या न हो मर्द को पहनना ना जाइज़ व गुनाह है। इसी तरह सोने, चांदी और स्टील वगैरा किसी भी धात की तख़्ती या कड़ा जिस पर कुछ लिखा हुवा हो या न लिखा हुवा हो अगर्चे **अल्लाह** का मुबारक नाम या कलिमए तय्यिबा वगैरा खुदाई किया हुवा हो उस का पहनना मर्द के लिये ना जाइज़ है। औरत सोने चांदी की डिबिया में ता'वीज़ पहन सकती है।

﴿9﴾ जिस औरत के बच्चे ज़िन्दा न रहते हों वोह “**بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ**” 61 बार लिख कर (या लिखवा कर) अपने पास रखे (चाहे तो मोमजामा या प्लास्टिक कोटिंग कर के कपड़े, रेग्ज़ीन या चमड़े में सी कर गले में पहन ले या बाजू में बांध ले।) **ان شاء الله عزوجل** बच्चे ज़िन्दा रहेंगे। (ऐज़न स. 38)

﴿10﴾ घर का दरवाज़ा बन्द करते वक़्त याद कर के “**بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ**” पढ़ लीजिये शैतान (सरकश जिन्नात) घर में दाख़िल न हो सकेंगे। (माख़ुदाज़ صحيح البخارى ج 3 ص 591 حديث 5623)

﴿11﴾ रात को खाने पीने के बरतन बिस्मिल्लाह शरीफ़ पढ़ कर ढक

फरमाने मुस्तफ़ा ﷺ तुम जहाँ भी हो मुझ पर दुरद पढो कि तुम्हारा दुरद मुझ तक पहुँचता है।

दीजिये, अगर ढकने केलिये कोई चीज़ न हो तो “بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ”

कह कर बरतन के मुंह पर तिन्का वगैरा रख दीजिये। (ऐज़न)

मुस्लिम शरीफ़ की एक रिवायत में है, साल में एक रात ऐसी

आती है कि उस में वबा उतरती है जो बरतन छुपा हुवा नहीं है या मश्क का मुंह बंधा हुवा नहीं है अगर वहाँ से वोह वबा गुज़रती है तो उस में उतर जाती है। (صحیح مسلم ص ११० حديث २०१४)

﴿12﴾ सोने से क़ब्ल “بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ” पढ़ कर तीन बार बिस्तर झाड़ लीजिये, اِنْ شَاءَ اللَّهُ غُذِيَ (या'नी ईज़ा देने वाली चीज़ों) से पनाह हासिल होगी।

﴿13﴾ कारोबार में जाइज़ लैन दैन के वक़्त या'नी जब किसी से लें तो “بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ” पढ़ें और जब किसी को दें तो ख़ूब ब-र-कत होगी। اِنْ شَاءَ اللَّهُ غُذِيَ कहें بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

या रब्बे मुस्तफ़ा ﷺ हमें اِنْ شَاءَ اللَّهُ غُذِيَ

की ब-र-कतों से मालामाल फ़रमा और हर नेक व जाइज़ काम की इब्तिदा में “بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ” पढ़ने की तौफ़ीक़ अता फ़रमा।

اٰمِيْنَ بِجَاوِزِ النَّبِيِّ الْاٰمِيْنَ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

صَلُّوْا عَلٰى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

फरमाने मुस्तफा ﷺ जिसने मुझ पर दस मर्तबा सुबह और दस मर्तबा शाम दुरुदे पाक पढ़ा उसे किया मत के दिन मेरी शफाअत मिलेगी।

**“का'बुल्लाह” के आठ हुरूफ़ की निस्बत से बिस्मिल्लाह शरीफ़ के 8 अवरद**

**(1) घर की हिफाज़त के लिये**

हज़रते सय्यिदुना इमाम फ़ख़्ख़दीन राज़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي फ़रमाते हैं, “जिस ने अपने घर के बाहरी दरवाज़े (MAIN GATE) पर **بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ** लिख लिया वोह (सिर्फ़ दुन्या में) हलाकत से बे ख़ौफ़ हो गया ख़्वाह काफ़िर ही क्यूं न हो, तो भला उस मुसल्मान का क्या आलम होगा जो ज़िन्दगी भर अपने दिल के आबगीने पर इस को लिखे हुए होता है।” (تفسير كبير جلد اول ص ۱۰۲)

**(2) दर्दे सर का इलाज**

कैसरे रूम ने अमीरुल मुअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूके आ'ज़म رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ को ख़त लिखा कि मुझे दाइमी दर्दे सर की शिकायत है अगर आप के पास इस की दवा हो तो भेज दीजिये ! हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूके आ'ज़म رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने उस को एक टोपी भेज दी, कैसरे रूम उस टोपी को पहनता तो उस का दर्दे सर काफ़ूर हो जाता और जब सर से उतारता तो दर्दे सर फिर लौट आता। उसे बड़ा तअज्जुब हुआ। आख़िरे कार उस ने उस टोपी को उधेड़ा तो उस में से एक काग़ज़ बर आमद हुआ जिस पर **بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ** लिखा था।

(تفسير كبير جلد اول ص ۱۰۵)



फरमाने मुस्तफा ﷺ मुझ पर दुरदे पाक की कसूरत करो बेशक येह तुम्हारे लिये त्हा रत है ।

### (3) नक्सीर फूटने का इलाज

अगर किसी की नक्सीर फूट जाए और खून बहने लगे तो शहादत कब्दी उंगली से पेशानी पर से **بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ** लिखना शुरू कर के नाक के आखिर पर खत्म करे **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** खून बन्द हो जाएगा ।

### (4) जिन्नात से सामान की हिफाजत का तरीका

हजरते सय्यिदुना सफ़वान बिन सुलैम **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** फरमाते हैं, “इन्सान के साजो सामान और मल्बूसात को जिन्नात इस्ति’माल करते हैं । लिहाजा तुम में से जब कोई शख्स कपड़ा (पहनने के लिये) उठाए या (उतार कर) रखे तो “बिस्मिल्लाह शरीफ़” पढ़ लिया करे । इस के लिये **اَللّٰهُ** तआला का नाम मोहर है ।” (या’नी बिस्मिल्लाह पढ़ने से जिन्नात इन कपड़ों को इस्ते’माल नहीं करेंगे ।)

(كِتَابُ الْعَقْمَةِ، الْحَدِيثُ ١١٢٢، ص ٤٢٦)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इसी तरह हर चीज रखते उठाते वक़्त **بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ** पढ़ने की आदत बनानी चाहिये । शरीर जिन्नात की दस्त बुर्द से हिफाजत हासिल होगी ।

### (5) दुश्मनी खत्म करने का वजीफ़ा

अगर पानी पर 786 मर्तबा **بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ** पढ़ कर मुख़ालिफ़ (या’नी दुश्मन) को पिला दें तो **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** वोह मुख़ा-लफ़त छोड़ देगा और महबबत करने लगेगा और अगर मुवाफ़िक

फरमाने मुस्तफा ﷺ जिसने किताब में मुझ पर दुरुद पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फिरिश्ते उस के लिये इस्तिफ़ार करते रहेंगे ।

(या'नी दोस्त) को पिला दें तो महबूबत बढ़ जाएगी ।

(जन्नती ज़ेवर, स. 578)

## (6) मरज़ से शिफ़ा का वज़ीफ़ा

जिस दर्द या मरज़ पर तीन रोज़ तक सो मर्तबा

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ हुज़ूरे दिल से पढ़ कर दम किया जाए

उस से आराम हो जाएगा ।

(जन्नती ज़ेवर, स. 579)

## (7) चोर और अचानक मौत से हिफ़ाज़त

अगर रात को सोते वक़्त 21 मर्तबा بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

पढ़ लें तो مال व अस्बाब चोरी से महफूज़ रहेंगे और मर्गे

ना गहानी (या'नी अचानक मौत) से भी हिफ़ाज़त होगी ।

(जन्नती ज़ेवर, स. 579)

## (8) आफ़तें दूर होने का आशान विर्द

मौला मुशिकल कुशा हज़रते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तज़ा शरे

खुदा ﷺ से रिवायत है कि सुल्ताने मक्काए मुकर्रमा,

ताजदारे मदीनए मुनव्वरह, मकीने गुम्बदे खज़रा صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

ने इर्शाद फ़रमाया, “ऐ अली ! (كَرَّمَ اللَّهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيمِ) मैं तुम्हें ऐसे

कलिमात न बता दूँ जिन्हें तुम मुसीबत के वक़्त पढ़ लो ।” अज़

किया, “ज़रूर इर्शाद फ़रमाइये ! आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ पर मेरी

फ़रमान मुस्तफ़ा ﷺ मुझ पर कसूरत से दुरूद पाक पढ़ो बशक तुम्हारा मुझ पर दुरूद पाक पढ़ना तुम्हारा गुनाहों के लिये मग़िफ़रत है।

जान क़ुरबान ! तमाम अच्छाइयां मैंने आप ﷺ ही से सीखी हैं” । इर्शाद फ़रमाया, “जब तुम किसी मुश्किल में फंस जाओ तो इस तरह पढ़ो :-

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللَّهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيمِ  
 پس اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ इस की ब-र-कत से जिन बलाओं को चाहेगा दूर फ़रमा देगा ।  
 (عَمَلُ الْيَوْمِ وَاللَّيْلَةِ لَا بِنَسْتِي ص १२०)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जब भी बीमारी, कर्जदारी, मुक़द्दमे बाज़ी, दुश्मन की तरफ़ से ईज़ा रसानी, बे रोज़गारी या कोई सी भी आफ़ते ना गहानी आन पड़े, कोई चीज़ गुम हो जाए, किसी की बात सुन कर सदमा पहुंचे, कोई मारे, दिल दुख जाए, ठोकर लगे, गाड़ी ख़राब हो जाए, ट्राफ़िक़ जाम हो जाए, कारोबार में नुक़सान हो जाए, चोरी हो जाए, अल ग़रज़ छोटी या बड़ी कोई सी भी परेशानी हो  
 بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللَّهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيمِ  
 पढ़ते रहने की आदत बना लीजिये । निय्यत साफ़ होगी तो اِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ मन्ज़िल आसान होगी ।

صَلُّوْا عَلَي الْحَبِيْب ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ  
أَبَا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

## फैजाने तिलावत

بِسْمِ اللَّهِ

### दुरूद शरीफ की फज़ीलत

अमीरुल मुअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूके आ'ज़म  
رضی اللہ تعالیٰ عنہ ने फ़रमाया : “दुआ आस्मान व ज़मीन के दरमियान  
मुअल्लक रहती है उस में से कुछ भी ऊपर नहीं चढ़ता, जब तक तू  
अपने नबी पर दुरूद न भेजे ।” (سنن الترمذی ج ۲ ص ۲۹ حدیث ۴۸۶)

मुफ़स्सिरे शहीर हकीमुल उम्मत हज़रते मुफ़्ती अहमद यार  
ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْخَنَانِ इस हदीसे पाक के तहत फ़रमाते हैं : इस से मा'लूम  
हुवा (कि) दुरूद दुआ की कबूलियत बल्कि बारगाहे इलाही में पेश  
होने का ज़रीआ है । (مرآة الساجد ج ۲ ص ۱۰۸)

صَلُّوا عَلَى الْخَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

### सू-रतुल हश्र की आखिरी आयात पढ़ने की फज़ीलत

हज़रते सय्यिदुना मा'क़िल बिन यसार رضي الله تعالى عنه से  
मरवी है नबिय्ये करीम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने फ़रमाया : जो शख़्स  
सुब्ह के वक़्त तीन बार اَعُوذُ بِاللَّهِ السَّمِيعِ الْعَلِيمِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ कहे  
और सूरा हश्र की आखिरी तीन आयात पढ़े तो اَللّٰهُ عَلَّوْهُ उस  
के लिये सत्तर हज़ार फ़िरिशते मुक़र्रर कर देता है जो शाम तक उस के  
लिये दुआए रहमत करते हैं और अगर उस दिन मरे तो शहीद होगा

फरमाने मुस्तफा ﷺ जिसने मुझ पर एक बार दुरदे पाक पड़ा अल्लाह तआला उस पर दस रहमते भेजता है।

और शाम को पढ़े तो सुबह तक येही फ़ज़ीलत है।

(सُنَنِ التِّرْمِذِيِّ ج ४ ص ४२३-४२४-४२५-४२६-४२७-४२८-४२९-४३०-४३१-४३२-४३३-४३४-४३५-४३६-४३७-४३८-४३९-४४०-४४१-४४२-४४३-४४४-४४५-४४६-४४७-४४८-४४९-४५०-४५१-४५२-४५३-४५४-४५५-४५६-४५७-४५८-४५९-४६०-४६१-४६२-४६३-४६४-४६५-४६६-४६७-४६८-४६९-४७०-४७१-४७२-४७३-४७४-४७५-४७६-४७७-४७८-४७९-४८०-४८१-४८२-४८३-४८४-४८५-४८६-४८७-४८८-४८९-४९०-४९१-४९२-४९३-४९४-४९५-४९६-४९७-४९८-४९९-५००-५०१-५०२-५०३-५०४-५०५-५०६-५०७-५०८-५०९-५१०-५११-५१२-५१३-५१४-५१५-५१६-५१७-५१८-५१९-५२०-५२१-५२२-५२३-५२४-५२५-५२६-५२७-५२८-५२९-५३०-५३१-५३२-५३३-५३४-५३५-५३६-५३७-५३८-५३९-५४०-५४१-५४२-५४३-५४४-५४५-५४६-५४७-५४८-५४९-५५०-५५१-५५२-५५३-५५४-५५५-५५६-५५७-५५८-५५९-५६०-५६१-५६२-५६३-५६४-५६५-५६६-५६७-५६८-५६९-५७०-५७१-५७२-५७३-५७४-५७५-५७६-५७७-५७८-५७९-५८०-५८१-५८२-५८३-५८४-५८५-५८६-५८७-५८८-५८९-५९०-५९१-५९२-५९३-५९४-५९५-५९६-५९७-५९८-५९९-६००-६०१-६०२-६०३-६०४-६०५-६०६-६०७-६०८-६०९-६१०-६११-६१२-६१३-६१४-६१५-६१६-६१७-६१८-६१९-६२०-६२१-६२२-६२३-६२४-६२५-६२६-६२७-६२८-६२९-६३०-६३१-६३२-६३३-६३४-६३५-६३६-६३७-६३८-६३९-६४०-६४१-६४२-६४३-६४४-६४५-६४६-६४७-६४८-६४९-६५०-६५१-६५२-६५३-६५४-६५५-६५६-६५७-६५८-६५९-६६०-६६१-६६२-६६३-६६४-६६५-६६६-६६७-६६८-६६९-६७०-६७१-६७२-६७३-६७४-६७५-६७६-६७७-६७८-६७९-६८०-६८१-६८२-६८३-६८४-६८५-६८६-६८७-६८८-६८९-६९०-६९१-६९२-६९३-६९४-६९५-६९६-६९७-६९८-६९९-७००-७०१-७०२-७०३-७०४-७०५-७०६-७०७-७०८-७०९-७१०-७११-७१२-७१३-७१४-७१५-७१६-७१७-७१८-७१९-७२०-७२१-७२२-७२३-७२४-७२५-७२६-७२७-७२८-७२९-७३०-७३१-७३२-७३३-७३४-७३५-७३६-७३७-७३८-७३९-७४०-७४१-७४२-७४३-७४४-७४५-७४६-७४७-७४८-७४९-७५०-७५१-७५२-७५३-७५४-७५५-७५६-७५७-७५८-७५९-७६०-७६१-७६२-७६३-७६४-७६५-७६६-७६७-७६८-७६९-७७०-७७१-७७२-७७३-७७४-७७५-७७६-७७७-७७८-७७९-७८०-७८१-७८२-७८३-७८४-७८५-७८६-७८७-७८८-७८९-७९०-७९१-७९२-७९३-७९४-७९५-७९६-७९७-७९८-७९९-८००-८०१-८०२-८०३-८०४-८०५-८०६-८०७-८०८-८०९-८१०-८११-८१२-८१३-८१४-८१५-८१६-८१७-८१८-८१९-८२०-८२१-८२२-८२३-८२४-८२५-८२६-८२७-८२८-८२९-८३०-८३१-८३२-८३३-८३४-८३५-८३६-८३७-८३८-८३९-८४०-८४१-८४२-८४३-८४४-८४५-८४६-८४७-८४८-८४९-८५०-८५१-८५२-८५३-८५४-८५५-८५६-८५७-८५८-८५९-८६०-८६१-८६२-८६३-८६४-८६५-८६६-८६७-८६८-८६९-८७०-८७१-८७२-८७३-८७४-८७५-८७६-८७७-८७८-८७९-८८०-८८१-८८२-८८३-८८४-८८५-८८६-८८७-८८८-८८९-८९०-८९१-८९२-८९३-८९४-८९५-८९६-८९७-८९८-८९९-९००-९०१-९०२-९०३-९०४-९०५-९०६-९०७-९०८-९०९-९१०-९११-९१२-९१३-९१४-९१५-९१६-९१७-९१८-९१९-९२०-९२१-९२२-९२३-९२४-९२५-९२६-९२७-९२८-९२९-९३०-९३१-९३२-९३३-९३४-९३५-९३६-९३७-९३८-९३९-९४०-९४१-९४२-९४३-९४४-९४५-९४६-९४७-९४८-९४९-९५०-९५१-९५२-९५३-९५४-९५५-९५६-९५७-९५८-९५९-९६०-९६१-९६२-९६३-९६४-९६५-९६६-९६७-९६८-९६९-९७०-९७१-९७२-९७३-९७४-९७५-९७६-९७७-९७८-९७९-९८०-९८१-९८२-९८३-९८४-९८५-९८६-९८७-९८८-९८९-९९०-९९१-९९२-९९३-९९४-९९५-९९६-९९७-९९८-९९९-१०००)

## सू-रतुल ह३२ की आखिरी तीन आयात

هُوَ اللَّهُ الَّذِي لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ ۚ عَلِيمُ الْغُيُوبِ وَالشَّهَادَةِ ۚ  
هُوَ الرَّحْمَنُ الرَّحِيمُ ۝ هُوَ اللَّهُ الَّذِي لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ ۚ  
الْمَلِكُ الْقُدُّوسُ السَّلَامُ الْمُؤْمِنُ الْهَيِّبُ الْعَزِيزُ الْجَبَّارُ  
الْمُتَكَبِّرُ ۚ سُبْحَنَ اللَّهِ عَمَّا يُشْرِكُونَ ۝ هُوَ اللَّهُ  
الْخَافِقُ الْبَارِئُ الْمُصَوِّرُ لَهُ الْأَسْمَاءُ الْحُسْنَى ۚ يُسَبِّحُ لَهُ  
مَا فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ۚ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ۝

(प २८, २९, ३०, ३१, ३२, ३३, ३४, ३५, ३६, ३७, ३८, ३९, ४०, ४१, ४२, ४३, ४४, ४५, ४६, ४७, ४८, ४९, ५०, ५१, ५२, ५३, ५४, ५५, ५६, ५७, ५८, ५९, ६०, ६१, ६२, ६३, ६४, ६५, ६६, ६७, ६८, ६९, ७०, ७१, ७२, ७३, ७४, ७५, ७६, ७७, ७८, ७९, ८०, ८१, ८२, ८३, ८४, ८५, ८६, ८७, ८८, ८९, ९०, ९१, ९२, ९३, ९४, ९५, ९६, ९७, ९८, ९९, १००)

صَلُّوا عَلَى الْخَبِيبِ ا صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

“कर्म” के तीन हुरफ़ की निश्चत से सू-रतुल ब-करह की आखिरी आयात पढ़ने के ३ फ़ज़ाइल

(1) हज़रते सय्यिदुना नो'मान बिन बशीर رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है कि शहन्शाहे मदीना, करारे क़ल्बो सीना, साहिबे मुअत्तर पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना, फैज़ गन्जीना صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने फ़रमाया : اَللّٰهُ ने ज़मीन व आस्मान को पैदा करने से दो हज़ार साल पहले एक किताब लिखी फिर उस में से सूरए ब-करह की आखिरी दो आयतें नाज़िल फ़रमाई। जिस घर में तीन रातें इन दो

फ़रमाने मुस्त्फ़ा ﷺ जब तुम मुसलमानों पर दुरूद पाक पढ़ो तो मुझे पर भी पढ़ो बेशक मैं तमाम जहानों के रब का रसूल हूँ।

आयतों को पढ़ा जाएगा शैतान उस घर के करीब न आएगा।

(सُنَنِ التِّرْمِذِيِّ ج ४ ص ४०६ حديث २८१)

(2) हज़रते सय्यिदुना अबू ज़र रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहरो बर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने फ़रमाया : सूरए ब-क़रह के ख़ातिमा की दो आयतें **اَللّٰهُمَّ** کے उस ख़ज़ाने में से हैं जो अर्श के नीचे है **اَللّٰهُ** तअ़ाला ने मुझे येह दोनों आयतें दीं इन्हें सीखो और अपनी औरतों को सिखाओ कि वोह रहमत हैं और **اَللّٰهُمَّ** से नज़्दीकी और दुआ हैं।

(रौय़ी ج २ ص २०६ حديث ३३९)

(3) हज़रते सय्यिदुना अबू मस्ऊद رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है कि हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने फ़रमाया : जो शख्स सूरए ब-क़रह की आख़िरी दो आयतें रात में पढ़ेगा वोह उसे किफ़ायत करेंगी।

(صَحِيحُ الْبُخَارِيِّ ج ३ ص ४०५ حديث ५००९)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! सूरए ब-क़रह की दो आयतें किफ़ायत करने से मुराद येह है कि येह दो आयतें उस के उस रात के क़ियाम (रात की इबादत) के काइम मक़ाम हो जाएंगी या उस रात उसे शैतान से महफूज़ रखेंगी। एक कौल येह भी है कि उस रात में नाज़िल होने वाली आफ़त से बचाएंगी। واللّٰهُ تَعَالَى اعلم

(فتح الباری ج ९ ص ४८)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالَى عَلَی مُحَمَّد

फरमान मुस्तफा ﷺ जो मुझ पर राज जुमुआ दुरद शरीफ पढ़ेगा मैं कियामत के दिन उस को शफाअत करूंगा।

## “कुरआन” के चार हुरूप की निश्बत से आ-यतुल कुरसी के 4 फज़ाइल

(1) हदीस शरीफ में है कि येह आयत कुरआने मजीद की आयतों में बहुत ही अ-जमत वाली आयत है। (الْمُنْتَوَر ج २ ص १६)

(2) हज़रते सय्यिदुना उबय्य बिन का'ब رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है कि हुस्ने अख़्लाक के पैकर, नबियों के ताजवर, महबूबे रब्बे अक्बर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने फरमाया : ऐ अबू मुन्ज़िर ! क्या तुम्हें मा'लूम है कि कुरआने पाक की जो आयतें तुम्हें याद हैं उन में कौन सी आयत अज़ीम है ? मैं ने अर्ज किया : اَللّٰهُ لَا اِلٰهَ اِلَّا هُوَ اَلْحَيُّ الْقَيُّوْمُ : फिर रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने मेरे सीने पर हाथ मारा और फरमाया : ऐ अबू मुन्ज़िर ! तुम्हें इल्म मुबारक हो।

(صَحِيح مُسْلِم ص ६०० حَدِيث ८१०)

(3) मुस्तदरक की एक रिवायत में है कि “सूरए ब-करह” में एक आयत है जो कुरआने पाक की तमाम आयतों की सरदार है, वोह आयत जिस घर में पढ़ी जाए उस घर से शैतान निकल जाता है और वोह आ-यतुल कुरसी है।

(مُسْتَدْرَكُ لِلْحَاكِم ج २ ص ६६७ حَدِيث ३०८०)

(4) अमीरुल मुअमिनीन हज़रते अली कَرَّمَ اللهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيم फरमाते हैं कि मैं ने नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहरो बर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ को मिम्बर पर फरमाते

फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ जिसने मुझ पर रोज़े जुमुआ दो सौ बार दूरद पाक पढ़ा उस के दो सौ साल के गुनाह मुआफ़ होंगे।

हुए सुना जो शख्स हर नमाज़ के बा'द आ-यतुल कुरसी पढ़े उसे जन्नत में दाख़िल होने से मौत के सिवा कोई चीज़ नहीं रोकती और जो कोई रात को सोते वक़्त इसे पढ़ेगा **اللّٰهُ** उसे, उस के घर को और आस पास के घरों को **महफूज़** फ़रमा देगा।

(شُعَبُ الْإِيمَانِ ج ٢ ص ٤٥٨ ح ٢٣٩٥)

صَلُّوا عَلَى الْكَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّد

## आ-यतुल कुरसी की पांच ब-र-कतें

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जो शख्स हर नमाज़ के बा'द आ-यतुल कुरसी पढ़ेगा उस को हस्बे ज़ैल ब-र-कतें नसीब होंगी

- ﴿1﴾ वोह मरने के बा'द जन्नत में जाएगा। **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ**
- ﴿2﴾ वोह शैतान और जिन्न की तमाम शरारतों से महफूज़ रहेगा। **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ**

﴿3﴾ अगर मोहताज होगा तो चन्द दिनों में उस की मोहताजी और ग़रीबी दूर हो जाएगी।

﴿4﴾ जो शख्स सुबह व शाम और बिस्तर पर लेटते वक़्त आ-यतुल कुरसी और इस के बा'द की दो आयतें **خَلِدُونَ** तक पढ़ा करेगा वोह चोरी, ग़र्क़ आबी (पानी में डूबने) और जलने से महफूज़ रहेगा। **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ**

﴿5﴾ अगर सारे मकान में किसी ऊंची जगह पर लिख कर इस का क़त्बा आवेज़ां कर दिया जाए तो **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** उस घर में कभी फ़ाका न होगा बल्कि रोज़ी में ब-र-कत और इज़ाफ़ा होगा और उस मकान



फरमाने मुस्तफा ﷺ जो शख्स मुझ पर दुरुदे पाक पढ़ना भूल गया वोह जन्नत का रास्ता भूल गया ।

में कभी चोर न आ सकेगा । (जन्नती ज़ेवर, स. 589)

صَلُّوا عَلَى الْخَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

## आयते करीमा की फज़ीलत

हज़रते सय्यिदुना सा'द رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है कि शहन्शाहे खुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल, दाफ़ेए रन्जो मलाल, साहिबे जूदो नवाल, रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने फ़रमाया : हज़रते जुन्नून (या'नी हज़रते यूनुस عَلَيْهِ السَّلَام) ने मछली के पेट में येह कलिमात कहे : لَا إِلَهَ إِلَّا أَنْتَ سُبْحَانَكَ إِنِّي كُنْتُ مِنَ الظَّالِمِينَ ۝ (तर-ज-मए कन्जुल ईमान : कोई मा'बूद नहीं सिवा तेरे पाकी है तुझ को बेशक मुझ से बे जा हुवा) (प. १७, नबिया: ८७) लिहाज़ा जो मुसल्मान इन कलिमात के साथ किसी मक्सद के लिये दुआ मांगे **اَللّٰهُ** तआला उस की दुआ क़बूल फ़रमाता है ।

(مُسْنَدُ الزُّرْمَيْدِيِّ ج ५ ص ३०२ حديث ३०१६)

صَلُّوا عَلَى الْخَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

“मुस्तफ़ा” के पांच हुस्नफ़ की निश्बत से  
शोते वक़्त पढ़े जाने वाले 5 वज़ाइफ़

(1) हज़रते सय्यिदुना अनस رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से मरवी है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहरो बर صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने फ़रमाया : जब तुम अपना पहलू

फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ जिसेने मुझ पर एक बार दूरदे पाक पढ़ा **अव्बाह** तआला उस पर दस रहमतें भेजता है ।

बिस्तर पर रख कर सूरए फ़ातिहा और **قُلْ هُوَ اللَّهُ أَحَدٌ** (पूरी सूरत) पढ़ लोगे तो मौत के इलावा हर चीज़ से **अमान** में आ जाओगे ।

(مَجْمَعُ الزَّوَادِج ۱۰ ص ۱۶۵ حديث ۱۷۰۳)

(2) हज़रते सय्यिदुना इरबाज़ बिन सारिया رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से मरवी है कि हुस्ने अख़्लाक के पैकर, नबियों के ताजवर, महबूबे रब्बे अकबर صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ सोने से पहले **मुसब्बिहात** पढ़ा करते थे और फ़रमाया करते कि इन में एक ऐसी आयत है जो हज़ार आयतों से बेहतर है ।

(سُنَنِ أَبِي دَاوُدَ ج ۴ ص ۴۰۸ حديث ۵۰۵۷)

**हकीमुल उम्मत** हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْخَنَان इस हदीसे पाक के तहत फ़रमाते हैं : येह (या'नी **मुसब्बिहात**) सूरतें कुल सात हैं **सूरए असरा, सूरए हदीद, सूरए हशर, सूरए सफ़, सूरए जुमुआ, सूरए तगाबुन और सूरए आ'ला**, ज़ाहिर है कि सरकार (صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ) पूरी सूरतें न पढ़ते होंगे कि येह तो बहुत ज़ियादा हैं बल्कि इन की चीदा चीदा आयात तिलावत फ़रमाते होंगे ।

(مِرْآةُ السَّالِقِينَ ج ۳ ص ۳۲۷)

(3) हज़रते सय्यिदुना नौफ़िल رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाते हैं कि नबिये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम ﷺ ने मुझ से फ़रमाया : **قُلْ يَا أَيُّهَا الْكَافِرُونَ** पूरी पढ़ कर सोया करो क्यूं कि येह शिर्क से बराअत है ।

(سُنَنِ أَبِي دَاوُدَ ج ۴ ص ۴۰۷ حديث ۵०ॵॵ)

(4) हज़रते सय्यिदुना अबू सईद खुदरी رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से मरवी है कि ख़ातिमुल मुर-सलीन, रहमतुल्लिल आ-लमीन, शफ़ीउल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन, महबूबे रब्बुल आ-लमीन, जनाबे सादिक्को अमीन صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने फ़रमाया :

फरमाने मुस्तफा ﷺ जिसने मुझ पर दस मरतबा दुरुद पाक पढ़ा **ALLAH** तआला उस पर सो रहमतें भेजता है।

जो अपने बिस्तर पर आते वक़्त तीन मरतबा येह पढ़ ले :

(तरजमा : मैं **اَسْتَغْفِرُ اللهَ الْعَظِيمَ الَّذِي لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ الْحَيُّ الْقَيُّومُ** وَأَتُوبُ إِلَيْهِ **ALLAH** से बख़्शिश चाहता हूं जिस के सिवा कोई मा'बूद नहीं वोह ज़िन्दा और काइम रखने वाला है और मैं उसी की तरफ़ रुजूअ करता हूं।) **ALLAH** तआला उस के गुनाह बख़्श देता है अगर्चे समुन्दर की झाग के बराबर हों, अगर्चे दरख़्तो के पत्तो के बराबर हों, अगर्चे टीलों की रेत के ज़रात के बराबर हों, अगर्चे दुन्या के अय्याम के बराबर हों।

(مُسْنَدُ التِّرْمِذِيِّ ج ٥ ص ٢٥٥ حديث ٢٤٠٨)

(5) नीचे दी हुई सूरए कहफ़ की आखिरी चार आयतें या'नी **إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا** से ख़त्म सूरत तक रात में या सुबह जिस वक़्त जागने की नियत से पढ़ें आंख खुलेगी (إِنْ شَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ)

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ كَانَتْ لَهُمْ جَنَّاتُ الْفِرْدَوْسِ  
نُزُلًا ۖ خَالِدِينَ فِيهَا لَا يَبْغُونَ عَنْهَا حِوَلًا ۖ قُلْ لَوْ كَانَ  
الْبَحْرُ مِدَادًا لَكَلِمَتِ رَبِّي لَنَفَدَ الْبَحْرُ قَبْلَ أَنْ تَنْفَدَ كَلِمَتُ  
رَبِّي وَلَوْ جُنُودًا مُبْتَثَلَةً ۖ مَدَدًا ۖ قُلْ إِنَّمَا أَنَا بَشَرٌ مِثْلُكُمْ يُوحَى  
إِلَيَّ أَنَّمَا إِلَهُكُمُ إِلَهُ وَاحِدٌ ۖ فَمَنْ كَانَ يَرْجُوا لِقَاءَ رَبِّهِ  
فَلْيَعْمَلْ عَمَلًا صَالِحًا وَلَا يُشْرِكْ بِعِبَادَةِ رَبِّهِ أَحَدًا ۖ

(پ ۱۵ الكهف: ۱۰۷ تا ۱۱۰)

(مُسْنَدُ الدَّارِمِيِّ ج ۲ ص ۵۴۶ حديث ۳۴۰۶، الوظيفة الكريمة ص ۲۹)

फरमाने मुस्तफा ﷺ तुम जहां भी हो मुझ पर दुरूद पढ़ो कि तुम्हारा दुरूद मुझ तक पहुंचता है।

## “रुहमल्ल” के चार हुरूप की निश्चत से सूरउ फ़ातिहा के 4 फ़ज़ाइल

(1) हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़लाक

ﷺ ने फ़रमाया कि सूरए फ़ातिहा हर मरज़ की दवा है।  
(سُنَنِ الدَّارِمِيِّ حَدِيثُ ۳۳۷۰ ج ۲ ص ۵۳۸)

(2) मुस्नदे दारिमी में है कि 100 मर्तबा सूरए फ़ातिहा पढ़

कर जो दुआ मांगी जाए उस को **अल्लाह** तआला क़बूल फ़रमाता है।

(जन्नती ज़ेवर, स. 587)

(3) बुज़ुर्गों ने फ़रमाया है कि फ़ज़्र की सुन्नतों और फ़र्ज़

के दरमियान में 41 बार सूरए फ़ातिहा पढ़ कर मरीज़ पर दम करने से आराम हो जाता है और आंख का दर्द बहुत जल्द अच्छा हो जाता है और अगर इतना पढ़ कर अपना थूक आंखों में लगा दिया जाए तो बहुत मुफ़ीद है।

(ऐज़न, स. 587)

(4) सात दिनों तक रोज़ाना ग्यारह हज़ार मर्तबा सिर्फ़ इतना

पढ़िये **إِيَّاكَ كَعْبُدُ وَإِيَّاكَ نَسْتَعِينُ** अल्ल आखिर तीन तीन बार दुरूद शरीफ़ भी पढ़िये बीमारियों और बलाओं को दूर करने के लिये बहुत ही मुजरब अमल है।

(जन्नती ज़ेवर, स. 588)

फ़रमाने मुस्तफा ﷺ जिसने मुझ पर दस मर्तबा सुब्ह और दस मर्तबा शाम दूरद पाक पढ़ा उसे कियामत के दिन मेरी शफ़ाअत मिलेगी।

# سُورَةُ الْفَاتِحَةِ مَكِّيَّةٌ

सूरए फ़ातिहा मक्की है

وَهِيَ بِسَبْعِ آيَاتٍ

और इस में सात आयतें हैं। एक रुकूअ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

ALLAH के नाम से शुरूअ जो बहुत मेहरबान रहमत वाला

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ① الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ②

सब खूबियां ALLAH को जो मालिक सारे जहान वालों का बहुत मेहरबान रहमत वाला

مَلِكِ يَوْمِ الدِّينِ ③ إِيَّاكَ نَعْبُدُ وَإِيَّاكَ

रोजे जज़ा का मालिक हम तुझी को पूजें और तुझी से

نَسْتَعِينُ ④ اهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيمَ ⑤ صِرَاطَ

मदद चाहें हम को सीधा रास्ता चला रास्ता

الَّذِينَ أَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ⑥ غَيْرِ الْمَغْضُوبِ

उन का जिन पर तूने एहसान किया न उन का जिन पर ग़ज़ब हुआ

عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّالِّينَ ⑦

और न बहके हुआओं का

फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ मुझ पर दुरुदे पाक की कसूरत करो बेशक येह तुम्हारे लिये त्हास्त है।

**“यासीन शरीफ़ की ब-रक़ात” के सोलह हुरूफ़ की निश्बत से सूरए यासीन शरीफ़के 16 फ़ज़ाइल**

(1) हज़रते सय्यिदुना मा'क़िल बिन यसार رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है कि सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफीए रोज़े शुमार, दो आलम के मालिको मुख्तार, हबीबे परवर्दगार ﷺ ने फ़रमाया : सूरए यासीन कुरआन का दिल है जो इसे **अब्बाह** غَوْحَل की रिज़ा और आख़िरत की बेहतरी के लिये पढ़ेगा उस की मग़्फ़िरत कर दी जाएगी।

(المُسْنَدُ لِلْإِمَامِ أَحْمَدَ بْنِ حَنْبَلٍ، حَدِيثُ ٢٠٣٢٢ ج ٧ ص ٢٨٦ منقطعاً)

(2) हज़रते सय्यिदुना अनस رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है कि रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम ﷺ ने फ़रमाया : बेशक हर चीज़ का एक दिल है और कुरआन का दिल सूरए यासीन है और जो एक मर्तबा सूरए यासीन पढ़ेगा उस के लिये दस मर्तबा कुरआन पढ़ने का **सवाब** लिखा जाएगा।

(مُسْنَدُ التِّرْمِذِيِّ حَدِيثُ ٢٨٩٦ ج ٤ ص ٤٠٦)

(3) हज़रते सय्यिदुना हस्सान बिन अतिय्या رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है कि, सरदारो मक्कए मुकर्मा, सरकारे मदीनए मुनव्वरह ने फ़रमाया : तौरात में सूरए यासीन का नाम मुइम्मह है, क्यूं कि येह अपनी तिलावत करने वाले को दुन्या और आख़िरत की हर भलाई अता करती है, और दुन्या व आख़िरत की बलाएं इस से दूर करती है। और दुन्या व आख़िरत की होलनाकियों से नजात बख़्शाती है। और इस का नाम मुदाफ़ि-अतुल कादियह भी है, क्यूं कि येह अपनी तिलावत करने वाले से हर बुराई को दूर कर देती है और इस की हर हाज़त पूरी करती है, जिस शख़्स ने इस की तिलावत की येह उस के लिये बीस हज़ के बराबर है, और जिस ने इस को लिखा फिर इसे पिया

फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ जिसने किताब में मुझ पर दुरूद पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फ़िरिश्ते उस के लिये इस्तिफ़ार करते रहेंगे ।

तो उस के पेट में हज़ार दवाएं, हज़ार नूर, हज़ार यकीन, हज़ार ब-र-कतें और हज़ार रहमतें दाख़िल होंगी और इस से हर धोका और हर बीमारी दूर हो जाएगी । (अलְدُرُّ الْمُنْتَوَرُ، ج ७، ص ३७)

(4) हज़रते सय्यिदुना इब्ने अब्बास رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا से रिवायत है कि नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम, सरकारे दो आलम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने फ़रमाया : मेरी ख़्वाहिश है कि सूरए यासीन मेरी उम्मत के हर इन्सान के दिल में हो । (ऐज़न, स. 38)

(5) हज़रते सय्यिदुना अनस رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है कि हुजुरे अकरम, रसूले मुहत्तशम, शाहे बनी आदम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने फ़रमाया : जो शख्स हमेशा हर रात यासीन की तिलावत करता रहा फिर मर गया तो वोह शहीद मरेगा । (ऐज़न, स. 38)

(6) हज़रते सय्यिदुना अता बिन अबू रबाह ताबेई رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है कि शहन्शाहे मदीना, सुरूरे क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख्स दिन की इब्तिदा में सूरए यासीन की तिलावत करेगा, उस की तमाम हाजात पूरी कर दी जाएंगी । (ऐज़न, स. 38)

(7) हज़रते सय्यिदुना इब्ने अब्बास رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا फ़रमाते हैं : जो शख्स ब वक़्ते सुब्ह सूरए यासीन की तिलावत करे उस दिन की आसानी उसे शाम तक अता की गई, और जिस शख्स ने रात की इब्तिदा में इस की तिलावत की उसे सुब्ह तक उस रात की आसानी दी गई । (ऐज़न, स. 38)

(8) हज़रते सय्यिदुना मा'क़िल बिन यसार رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है कि बेशक हुजुरे पाक, साहिबे लौलाक صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने फ़रमाया : सूरए यासीन कुरआन का दिल है, जो शख्स इस सूरए

फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ पर कसरत से दुरूदे पाक पढ़ो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे गुनाहों के लिये मग़िफ़रत है।

मुबा-रका की **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और आख़िरत के लिये तिलावत करेगा, उस के पहले के गुनाह **बख़्श** दिये जाएंगे, तो तुम इस की तिलावत अपने मरने वालों के पास करो। (ऐज़न, स. 38)

(9) हज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है कि हुज़ूरे अकरम, शाहे बनी आदम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने फ़रमाया : जिस मरने वाले के पास सूरए यासीन तिलावत की जाती है, **अल्लाह** तबा-र-क व तअ़ाला उस पर (उस की रूह क़ब्ज़ करने में) **नरमी** फ़रमाता है। (ऐज़न, स. 38)

(10) हज़रते सय्यिदुना अबू क़लाबा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है, वोह फ़रमाते हैं : जिस ने सूरए यासीन की तिलावत की उस की मग़िफ़रत हो जाएगी, और जिस ने खाने के वक़्त उस के कम होने की हालत में तिलावत की तो वोह उसे **किफ़ायत** करेगा, और जिस ने किसी मरने वाले के पास इस की तिलावत की **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ (उस पर) मौत के वक़्त नरमी फ़रमाएगा, और जिस ने किसी औरत के पास उस के बच्चे की विलादत की तंगी पर सूरए यासीन की तिलावत की उस पर आसानी होगी, और जिस ने इस की तिलावत की गोया कि उस ने ग़यारह मर्तबा कुरआने पाक की तिलावत की, और हर चीज़ के लिये दिल है, और कुरआन का दिल **सूरए यासीन** है। (ऐज़न, स. 39)

(11) हज़रते सय्यिदुना अबू जा'फ़र मुहम्मद बिन अली رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है फ़रमाते हैं : जो शख्स अपने दिल में सख़्ती पाए तो वोह एक पियाले में जा'फ़रान से **لِسِّ وَالْقُرْآنِ الْحَكِيمِ** लिखे फिर उसे पी जाए। (उस का दिल नर्म होगा) (ऐज़न, स. 39)

(12) अमीरुल मुअमिनीन हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़



फरमान मुस्तफा ﷺ जो मुझ पर एक मरतबा दुरूद शराफ़ पढ़ता है **अल्लाह** तआला उस के लिये एक कीरात अज़्र लिखता है और कीरात उहद पहाड़ जितना है।

رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है कि सरकारे मदीना, राहते क़ल्बो सीना,  
 साहिबे मुअत्तर पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने  
 फ़रमाया : जिस ने हर जुमुआ को अपने वालिदैन्, दोनों या एक की  
 क़ब्र की ज़ियारत की और उन के पास यासीन की तिलावत की तो  
 اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ हर हर्फ़ के बदले उस की बख़्शिश व मग़्फ़िरत  
 (الدُّرُ الْمُنْثُور، ج ۷، ص ۴۰)

(13) हज़रते सय्यिदुना सफ़वान बिन अम्र رضي الله تعالى عنه फ़रमाते हैं : मशाइख़े किराम رضي الله تعالى عنهم फ़रमाते हैं कि जब आप करीबुल मर्ग शख़्स के पास सूरए यासीन की तिलावत करेंगे तो उस से मौत की सख़्ती को हलका किया जाएगा । (ऐज़न, स. 39)

(14) हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رضي الله تعالى عنه से रिवायत है कि **अब्बाह** عز وجل के महबूब, दानाए गूथूब, मुनज़्ज़हुन अनिल **उथूब** صلى الله تعالى عليه وآله وسلم ने फ़रमाया : जिस ने शबे जुमुआ सूरए यासीन की तिलावत की उस की **मग़्फ़िरत** कर दी जाएगी ।

(الترغيب والترهيب حديث: ٤، ج ١، ص ٢٩٨)

(15) **हज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिदीका** رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا से रिवायत है कि सरकारे मदीना, राहते कल्बो सीना صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने फ़रमाया : कुरआने हकीम में एक सूत है जिसे **अल्लाह** तअ़ाला के हां अज़ीम कहा जाता है, उस के पढ़ने वाले को **अल्लाह** तअ़ाला के हां शरीफ़ कहा जाता है, उस को पढ़ने वाला क़ियामत के रोज़ रबीअ और मुज़िर क़बाइल से जाइद अफ़राद की शफ़ाअत करेगा, वोह सुरए यासीन है ।  
(الْكَذُّ الْمَثُورُ، ج ٧، ص ٤٠)

(16) **शैखुल हदीस** मौलाना अब्दुल मुस्तफा आ'जमी

फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ जो शख्स मुझ पर दुरुदे पाक पढ़ना भूल गया वोह जन्नत का रास्ता भूल गया ।

قُوًى عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِی ने “जन्नती ज़ेवर” सफ़हा 594 पर सूरए यासीन पढ़ने की बहुत सी ब-र-कतें शुमार की हैं :

﴿1﴾ भूका आदमी इस को पढ़े तो आसूदा किया जाए । ﴿2﴾ प्यासा पढ़े तो सैराब किया जाए । ﴿3﴾ नंगा पढ़े तो लिबास मिले । ﴿4﴾ मर्द बे औरत वाला पढ़े तो जल्द उस की शादी हो जाए । ﴿5﴾ औरत बे शोहर वाली पढ़े तो जल्द शादी हो जाए । ﴿6﴾ बीमार पढ़े तो शिफ़ा पाए । ﴿7﴾ कैदी पढ़े तो रिहा हो जाए । ﴿8﴾ मुसाफ़िर पढ़े तो सफ़र में अल्लाह ﷻ की तरफ़ से मदद हो । ﴿9﴾ ग़मगीन पढ़े तो उस का रन्जो ग़म दूर हो जाए । ﴿10﴾ जिस की कोई चीज़ गुम हो गई हो वोह पढ़े तो जो खोया है वोह मिल जाए । सूरए यासीन की एक आयत ﴿58﴾ (आयत : 58) **سَلَامٌ قَوْلًا مِنْ رَبِّ رَحِيمٍ** को एक हज़ार चार सो उन्हत्तर बार पढ़ो, **إِنْ شَاءَ اللَّهُ تَعَالَى** जिस मक्सद से पढ़ोगे मुराद पूरी होगी, ख़्वाजा दैरबी लिखते हैं : येह मुजर्रब है । और **سَلَامٌ قَوْلًا مِنْ رَبِّ رَحِيمٍ** (आयत : 58) को पांच जगह एक कागज़ पर लिख कर ता'वीज़ बांधो तो ह्वादिमात और चोर वग़ैरा से हिफ़ज़त रहेगी, जो शख्स सुब्ह को सूरए यासीन पढ़ेगा उस का पूरा दिन अच्छा गुज़रेगा और जो शख्स रात में इस को पढ़ेगा उस की पूरी रात अच्छी गुज़रेगी । हदीस शरीफ़ में है कि यासीन कुरआन का दिल है ।

(जन्नती ज़ेवर, स. 594)

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ जो बहुत मेहरबान रहमत वाला

يَسَّ وَالْقُرْآنَ الْحَكِيمَ ۚ إِنَّكَ لَمِنَ الْمُرْسَلِينَ ۝

हिक्मत वाले कुरआन की कसम बेशक तुम

عَلَى صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ۖ تَنْزِيلَ الْعَزِيزِ الرَّحِيمِ ۝

सीधी राह पर भेजे गए हो इज्जत वाले मेहरबान का उतारा हुवा

لِتُنذِرَ قَوْمًا مَّا أُنْذِرَ آبَاؤُهُمْ فَهُمْ غَافِلُونَ ۝

ताकि तुम उस कौम को डर सुनाओ जिस के बाप दादा न डराए गए तो वोह बे खबर हैं

لَقَدْ حَقَّ الْقَوْلُ عَلَى أَكْثَرِهِمْ فَهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ ۝

बेशक उन में अक्सर पर बात साबित हो चुकी है तो वोह ईमान न लाएंगे

إِنَّا جَعَلْنَا فِيْ أَعْيُنِهِمْ غُرَابًا مِّمَّا إِلَى الْآذَانِ

हम ने उन की गरदनो में तौक कर दिये हैं कि वोह ठोड़ियों तक हैं तो येह

فَهُمْ مُّقْمَحُونَ ۝ وَجَعَلْنَا مِنْ بَيْنِ يَدَيْهِمْ

ऊपर को मुं उठाए रह गए और हम ने उन के आगे दीवार बना दी और

سَدًّا وَمِنْ خَلْفِهِمْ سَدًّا فَأَغْشَيْنَاهُمْ فَهُمْ

उन के पीछे एक दीवार और उन्हें ऊपर से ढांक दिया तो

لَا يَبْصُرُونَ ۝ وَسَاءَ عَلَيْهِمْ ءَأَنْذَرْتَهُمْ أَفَلَمْ

उन्हें कुछ नहीं सूझता और उन्हें एक सा है तुम उन्हें डराओ या न डराओ

تُنذِرُهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ ۝ إِنَّمَا تُنذِرُ مَنِ اتَّبَعَ الذِّكْرُ

वोह ईमान लाने के नहीं तुम तो उसी को डर सुनाते हो जो नसीहत

وَحَشَى الرَّحْمَنَ بِالْغَيْبِ فَبَشِّرْهُ بِغُفْرَةٍ وَأَجْرٍ

पर चले और रहमान से बे देखे डरे तो उसे बख्शिश और इज्जत के

كَرِيمٍ ۝ اِنَّا نَحْنُ نُحْيِي الْمَوْتَىٰ وَنَكْتُبُ مَا قَدَّمُوا

सवाब की बिशारत दो बेशक हम मुर्दों को जिलाएंगे और हम लिख रहे हैं जो

وَآثَارَهُمْ وَكُلَّ شَيْءٍ أَحْصَيْنَاهُ فِي إِمَامٍ مُّبِينٍ ۝

उन्होंने आगे भेजा और जो निशानियां पीछे छोड़ गए और हर चीज हम ने गिन रखी है एक बताने वाली किताब में

وَاضْرِبْ لَهُم مَّثَلًا أَصْحَابَ الْقَرْيَةِ ۚ اذْجَاءَهَا الْمُرْسَلُونَ ۝

और उन से निशानियां बयान करो उस शहर वालों की जब उन के पास फ़रिस्तादे आए

اِذْ ارْسَلْنَا إِلَيْهِمُ اثْنَيْنِ فَكَذَّبُوهُمَا فَعَزَّزْنَا

जब हम ने उन की तरफ दो भेजे फिर उन्होंने उन को झुटलाया तो हम ने तीसरे से जोर दिया

بِثَالِثٍ فَقَالُوا إِنَّا إِلَيْكُمْ مُّرْسَلُونَ ۝ قَالُوا مَا أَنْتُمْ

अब उन सब ने कहा कि बेशक हम तुम्हारी तरफ भेजे गए हैं बोले तुम तो नहीं

الْأَبَشَرُ مَثَلًا وَمَا أَنْزَلَ الرَّحْمَنُ مِنْ شَيْءٍ ۚ إِنْ

मगर हम जैसे आदमी और रहमान ने कुछ नहीं उतारा तुम निरे

أَنْتُمْ إِلَّا كَذِبُونَ ۝ قَالُوا رَبَّنَا عَلِّمْنَا لَئِنْ

झूटे हो। वोह बोले हमारा रब जानता है कि बेशक ज़रूर हम तुम्हारी

لَمْ رَسَلُونَا ۝ وَمَا عَلَيْنَا إِلَّا الْبَلَاغُ الْمُبِينُ ۝ قَالُوا

तुम्हारे भेजे गए हैं और हमारे जिम्मे नहीं मगर साफ़ पहुंचा देना बोले

إِنَّا نَطِيرُ نَابِكُمْ لَيْنٌ لَّمْ تَنْتَهُوا لِنَرْجُمْكُمْ

हम तुम्हें मन्हूस समझते हैं बेशक तुम अगर बाज न आए तो जरूर हम तुम्हें संगसार

وَلَيَسَّيْكُمْ مِّنَّا عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝ قَالُوا طَائِرُكُمْ مَعَكُمْ

करेंगे और बेशक हमारे हाथों तुम पर दुख की मार पड़ेगी उन्होंने ने फरमाया तुम्हारी नुहसत तो

إِن دُكِّرْتُمْ بَلْ أَنْتُمْ قَوْمٌ مُّسْرِفُونَ ۝ وَجَاءَ مِنْ

तुम्हारे साथ है क्या इस पर बिदकते हो कि तुम समझाए गए बल्कि तुम हृद से बढ़ने वाले लोग हो और शहर के परले

أَقْصَا الْمَدِينَةِ رَجُلٌ يَّسْعَىٰ قَالَ يَاقَوْمِ اتَّبِعُوا الْمُرْسَلِينَ ۝

किनारे से एक मर्द दौड़ता आया बोला ऐ मेरी कौम भेजे हुआओं की पैरवी करो

اتَّبِعُوا مَنِ لَّا يَعْصِيكُمْ أَجْرًا وَهُمْ مُّسْتَدُونَ ۝

ऐसों की पैरवी करो जो तुम से कुछ नेग नहीं मांगते और वोह राह पर हैं ।

وَمَا لِيَ لَا أَعْبُدُ الَّذِي فَطَرَنِي وَإِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ۝

और मुझे क्या है कि उस की बन्दगी न करूं जिस ने मुझे पैदा किया और उसी की तरफ़ तुम्हें पलटना है

ءَاتَاخُذُ مِنْ دُونِهِ إِلَهَةً إِنْ يُّرِدْنِ الرَّحْمَنُ

क्या अल्लाह के सिवा और खुदा ठहराऊं कि अगर रहमान मेरा कुछ बुरा चाहे तो उन की

بُضْرًا لَا تَغْنِي عَنِّي شَفَاعَتُهُمْ شَيْئًا وَلَا يُنْقِذُونِ ٢٢

सिफारिश मेरे कुछ काम न आए और न वोह मुझे बचा सकें

إِنِّي إِذَا الْفَقِي ضَلِلْتُ مُبِينٌ ٢٣ إِنِّي آمَنْتُ بِرَبِّكُمْ فَاسْمَعُونِ ٢٤

बेशक जब तो मैं खुली गुमराही में हूँ मुकर्रर मैं तुम्हारे रब पर ईमान लाया तो मेरी सुनो

قِيلَ ادْخُلِ الْجَنَّةَ قَالَ يَلَيْتُ قَوْمِي يَعْلَمُونَ ٢٥ بِمَا عَمِرْتُ

उस से फरमाया गया कि जन्नत में दाखिल हो कहा किसी तरह मेरी कौम जानती जैसी मेरे

لِي رِبِّي وَجَعَلَنِي مِنَ الْمَكْرُمِينَ ٢٦ وَمَا أَرْزَلْنَا عَلَى قَوْمِهِ

रब ने मेरी मग़ि़रत की और मुझे इज़्ज़त वालों में किया और हम ने इस के बा'द

مِنْ بَعْدِهِ مِنْ جُنْدٍ مِّنَ السَّمَاءِ وَمَا كُنَّا مُنْزِلِينَ ٢٧

उस की कौम पर आस्मान से कोई लश्कर न उतारा और न हमें वहां कोई लश्कर उतारना था

إِنْ كَانَتْ إِلَّا الصَّيْحَةُ وَاحِدَةً ٢٨ فَإِذَا هُمْ خِدُودٌ يَّجْحَرُونَ ٢٩

वोह तो बस एक ही चीख़ थी जभी वोह बुझ कर रह गए और कहा गया

عَلَى الْعِبَادَةِ مَا يَأْتِيهِمْ مِّن رَّسُولٍ إِلَّا كَانُوا بِهِ

कि हाए अफ़सोस उन बन्दों पर जब उन के पास कोई रसूल आता है तो उस से

يَسْتَهْزِءُونَ ٣٠ أَلَمْ يَرَوْا كَمَا أَهْلَكْنَا قَبْلَهُم مِّنَ الْقُرُونِ

ठट्ठा ही करते हैं क्या उन्होंने ने न देखा हम ने उन से पहले कितनी संगतें

أَنَّهُم إِلَيْهِمْ لَا يَرْجِعُونَ ﴿٣١﴾ وَإِنْ كُلُّ لِّسَانٍ جَمِيعٌ لَّدَيْنَا

हलाक फ़रमाई कि वोह अब उन की तरफ़ पलटने वाले नहीं और जितने भी हैं सब के सब हमारे

مُخَضَّرُونَ ﴿٣٢﴾ وَآيَةٌ لَهُمُ الْأَرْضُ الْبَيْتَةُ ۖ أَحْيَيْنَاهَا وَأَخْرَجْنَا

हुजूर हाज़िर लाए जाएंगे और उन के लिये एक निशानी मुर्दा ज़मीन है हम ने उसे ज़िन्दा किया और

مِنْهَا حَبًّا فَمِنْهُ يَأْكُلُونَ ﴿٣٣﴾ وَجَعَلْنَا فِيهَا جَنَّاتٍ مِّنْ تَحْتِهَا

फिर उस से अनाज निकाला तो उस में से खाते हैं और हम ने उस में बाग़ बनाए खजूरों

وَأَعْنَابٍ وَفَجْرْنَا فِيهَا مِنَ الْعُيُونِ ۖ لِيَأْكُلُوا مِنْ ثَمَرِهِ وَمَا

और अंगूरों के और हम ने उस में कुछ चश्मे बहाए कि उस के फलों में से

عَمَلَتْهُ أَيْدِيهِمْ أَفَلَا يَشْكُرُونَ ﴿٣٤﴾ سُبْحَنَ الَّذِي خَلَقَ الْأَزْوَاجَ

खाएं और येह उन के हाथ के बनाए नहीं तो क्या हक़ न मानेंगे पाकी है उसे जिस ने सब जोड़े

كُلَّهَا مِمَّا تُنْبِتُ الْأَرْضُ وَمِنْ أَنفُسِهِمْ وَمِمَّا لَا يَعْلَمُونَ ﴿٣٥﴾

बनाए उन चीज़ों से जिन्हें ज़मीन उगाती है और खुद उन से और उन चीज़ों से जिन की उन्हें ख़बर नहीं ।

وَآيَةٌ لَهُمُ اللَّيْلُ ۖ نَسْلَخُ مِنْهُ النَّهَارَ فَإِذَا هُمْ مُظْلِمُونَ ﴿٣٦﴾

और उन के लिये एक निशानी रात है हम उस पर से दिन खींच लेते हैं जबी वोह अंधेरे में हैं

وَالشَّمْسُ تَجْرِي لِمُسْتَقَرٍّ لَّهَا ۚ ذَلِكَ تَقْدِيرُ الْعَزِيزِ

और सूरज चलता है अपने एक ठहराओ के लिये येह हुक्म है ज़बर दस्त इल्म

الْعَلِيمُ ۝ وَالْقَسْرَ قَدْ رَزَقْنَاهُ مَنَازِلَ حَتَّىٰ عَادَ كَالْعُرْجُونِ

वाले का और चांद के लिये हम ने मन्ज़िलें मुक़र्रर कीं यहां तक कि फिर हो गया जैसे खजूर

الْقَدِيمِ ۝ لَا الشَّمْسُ يَنْبَغِي لَهَا أَنْ تُدْرِكَ الْقَسْرَ وَلَا

की पुरानी डाल सूरज को नहीं पहुंचता कि चांद को पकड़ ले और न रात दिन पर

الْجِلُّ سَابِقُ النَّهَارِ وَكُلٌّ فِي فَلَكٍ يَسْبَحُونَ ۝ وَإِلَهُمَّ

सब्कत ले जाए और हर एक एक घेरे में पैर रहा है और उन के लिये

أَنَّا حَمَلْنَا ذُرِّيَّتَهُمْ فِي الْفُلْكِ الْمَشْجُونِ ۝ وَخَلَقْنَا لَهُمْ

एक निशानी यह है कि उन्हें उन के बुजुर्गों की पीठ में हम ने भरी कश्ती में सुवार किया और उन के लिये वैसी ही

مِّنْ مِّثْلِهِ مَا يَرْكَبُونَ ۝ وَإِنْ نَّشَأْ نَعْرِفَهُمْ فَلَا صَرْبَخَ لَهُمْ

कश्तियां बना दीं जिन पर सुवार होते हैं और हम चाहें तो उन्हें डबो दें तो न कोई उन की फ़रियाद को पहुंचने

وَلَا هُمْ يُنْقَذُونَ ۝ إِلَّا رَحْمَةً مِنَّا وَمَتَاعًا إِلَىٰ حِينٍ ۝ وَ

वाला हो और न वोह बचाए जाएं मगर हमारी तरफ़ की रहमत और एक वक़्त तक बरतने देना और

إِذَا قِيلَ لَهُمُ اتَّقُوا مَا بَيْنَ أَيْدِيكُمْ وَمَا خَلْفَكُمْ لَعَلَّكُمْ

जब उन से फ़रमाया जाता है डरो तुम उस से जो तुम्हारे सामने है और जो तुम्हारे पीछे आने वाला है इस उम्मीद पर

تُرْحَمُونَ ۝ وَمَا تَأْتِيهِمْ مِّنْ آيَةٍ مِّنْ آيَاتِ رَبِّهِمْ إِلَّا كَانُوا

कि तुम पर मेहर हो तो मुंह फैर लेते हैं और जब कभी उन के रब की निशानियों से कोई निशानी उन के पास



عَنْهَا مَعْصِينٌ ۖ وَإِذَا قِيلَ لَهُمُ اتَّقُوا مَا رَزَقَكُمُ اللَّهُ

आती है तो उस से मुंह ही फैर लेते हैं और जब उन से फ़रमाया जाए अल्लाह के दिये में से कुछ उस की

قَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لِلَّذِينَ آمَنُوا أَنْطِعِم مِّنْ لَّوْثِئِ اللَّهِ

राह में खर्च करो तो काफ़िर मुसलमानों के लिये कहते हैं कि क्या हम उसे खिलाएं जिसे अल्लाह चाहता

أَطْعِمَهُ إِنَّ أَنْتُمْ إِلَّا فِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ۖ وَيَقُولُونَ مَتَى هَذَا

तो खिला देता तुम तो नहीं मगर खुली गुमराही में और कहते हैं कब आएगा

الْوَعْدُ إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ۖ مَا يَنْظُرُونَ إِلَّا صَيْحَةً وَاحِدَةً

येह वा'दा अगर तुम सच्चे हो राह नहीं देखते मगर एक चीख की, कि

تَأْخُذُهُمْ وَهُمْ يَخِصِّبُونَ ۖ فَلَا يُسْتَطِيعُونَ تَوْصِيَةً وَلَا

उन्हें आ लेगी जब वोह दुनिया के झगड़े में फंसे होंगे तो न वसियत कर सकेंगे और न अपने घर

إِلَىٰ أَهْلِهِمْ يَرْجِعُونَ ۖ وَنَفَخَ فِي الصُّورِ فَإِذَا هُم مِّنْ

पलट कर जाएं और फूँका जाएगा सूर जभी वोह कब्रों से

الْأَجْدَاثِ إِلَىٰ رَبِّهِمْ يُنْسَلُونَ ۖ قَالُوا الْيَوْمَ لَنَا مَن بَعَثَنَا

अपने रब की तरफ़ दौड़ते चलेंगे कहेंगे हाए हमारी ख़राबी किस ने

مِنْ مَّرْقَدِنَا هَذَا أَمَا وَعَدَ الرَّحْمَنُ وَصَدَقَ الْمُرْسَلُونَ ۖ

हमें सोते से जगा दिया येह है वोह जिस का रहमान ने वा'दा दिया था और रसूलों ने हक़ फ़रमाया

إِنْ كَانَتْ إِلَّا صَيْحَةً وَاحِدَةً فَإِذَا هُمْ جَمِيعٌ لَدَيْنَا مُحْضَرُونَ ﴿٥٣﴾

वोह तो न होगी मगर एक चिंघाड़ जभी वोह सब के सब हमारे हुजूर हज़िर हो जाएंगे

فَالْيَوْمَ لَا تُظْلَمُ نَفْسٌ شَيْئًا وَلَا تُجْزَوْنَ إِلَّا مَا كُنْتُمْ

तो आज किसी जान पर कुछ जुल्म न होगा और तुम्हें बदला न मिलेगा मगर अपने

تَعْمَلُونَ ﴿٥٤﴾ إِنَّ أَصْحَابَ الْجَنَّةِ الْيَوْمَ فِي شُغُلٍ فَاكِهُونَ

किये का बेशक जन्नत वाले आज दिल के बहलावों में चैन करते हैं

هُمْ وَأَزْوَاجُهُمْ فِي ظِلِّ عَلَى الْأَرَائِكِ مُتَكِئُونَ ﴿٥٥﴾ لَهُمْ فِيهَا

वोह और उन की बीबियां सायों में हैं तख्तों पर तकिया लगाए उन के लिये

فَاكِهَةٌ وَالَهُمْ مَا يَدَّعُونَ ﴿٥٦﴾ سَلَامٌ قَوْلًا مِنْ رَبِّ رَحِيمٍ ﴿٥٧﴾

उस में मेवा है और उन के लिये है उस में जो मांगें उन पर सलाम होगा मेहरबान रब का फ़रमाया हुवा

وَأَمَّا زُورُ الْيَوْمِ إِلَيْهَا الْمُجْرِمُونَ ﴿٥٨﴾ أَلَمْ أَعْمِدْ إِلَيْكُمْ يَبْنَئِي

और आज अलग फट जाओ ऐ मुजरिमो ऐ औलादे आदम क्या मैं ने तुम से अहद

أَدَمُ أَنْ لَا تَعْبُدُوا الشَّيْطَانَ إِنَّهُ لَكُمْ عَدُوٌّ مُبِينٌ ﴿٥٩﴾

न लिया था कि शैतान को न पूजना बेशक वोह तुम्हारा खुला दुश्मन है और

إِنْ اعْبُدُونِي هَذَا صِرَاطٌ مُسْتَقِيمٌ ﴿٦٠﴾ وَلَقَدْ أَضَلَّ مِنْكُمْ

मेरी बन्दगी करना येह सीधी राह है और बेशक उस ने तुम में

جِبَلًا كَثِيرًا أَفَلَمْ تَكُونُوا تَعْقِلُونَ ﴿٣٢﴾ هَذِهِ جَهَنَّمُ الَّتِي

से बहुत सी खल्कत को बहका दिया तो क्या तुम्हें अक्ल न थी यह है वोह जहन्म जिस का तुम

كُنْتُمْ تُوعَدُونَ ﴿٣٣﴾ إِصْلَاهَا الْيَوْمَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُونَ ﴿٣٤﴾

से वा'दा था आज इसी में जाओ बदला अपने कुफ़्र का

الْيَوْمَ نَخْتِمُ عَلَىٰ أَفْوَاهِهِمْ وَتُكَلِّمُنَا أَيْدِيهِمْ وَتَشْهَدُ

आज हम इन के मूहों पर मोहर कर देंगे और इन के हाथ हम से बात करेंगे

أَرْجُلُهُمْ بِمَا كَانُوا يَكْسِبُونَ ﴿٣٥﴾ وَلَوْ نَشَاءُ لَطَمَسْنَا عَلَىٰ

और इन के पाउं इन के किये की गवाही देंगे और अगर हम चाहते तो उन की आंखें मिटा देते

أَعْيُنِهِمْ فَاسْتَبِقُوا الصِّرَاطَ فَإِنِّي يُبْصِرُونَ ﴿٣٦﴾ وَلَوْ نَشَاءُ

फिर लपक कर रस्ते की तरफ़ जाते तो उन्हें कुछ न सूझता और अगर हम चाहते

لَسَخْنَاهُمْ عَلَىٰ مَكَانَتِهِمْ فَمَا اسْتَطَاعُوا مُضِيًّا وَلَا يَرْجِعُونَ ﴿٣٧﴾

तो उन के घर बैठे उन की सूरतें बदल देते न आगे बढ़ सकते न पीछे लौटते

وَمَنْ يُعْرِضْهُ نُفِيسُهُ فِي الْخَلْقِ أَفَلَا يَعْقِلُونَ ﴿٣٨﴾ وَمَا

और जिसे हम बड़ी उम्र का करें उसे पैदाइश में उल्टा फैरें तो क्या समझते नहीं और हम

عَلَّمْنَاهُ الشِّعْرَ وَمَا يَنْبَغِي لَهُ إِنْ هُوَ إِلَّا ذِكْرٌ وَقُرْآنٌ

ने उन को शे'र कहना न सिखाया और न वोह उन की शान के लाइक है वोह तो नहीं मगर नसीहत और

مُبِينٌ ۝ لِّيُنذِرَ مَن كَانَ جَبًا وَيُحَقِّقَ الْقَوْلَ عَلَى الْكَافِرِينَ ۝

रोशन कुरआन कि उसे डराए जो जिन्दा हो और काफिरों पर बात साबित हो जाए

أَوَلَمْ يَرَوْا أَنَّا خَلَقْنَا لَهُمْ مِنَّا عَمَلَتْ أَيْدِينَا أَنْعَامًا فَهُمْ

और क्या उन्होंने ने न देखा कि हम ने अपने हाथ के बनाए हुए चौपाए उन के लिये पैदा

لَهُمَا مَلِكُونَ ۝ ۴१ ۝ وَذَلَّلْنَاهَا لَهُمْ فَمِنْهَا رَكُوبُهُمْ وَمِنْهَا

किये तो येह उन के मालिक हैं और उन्हें उन के लिये नर्म कर दिया तो किसी पर सुवार होते हैं और किसी

يَاكُلُونَ ۝ ۴२ ۝ وَلَهُمْ فِيهَا مَنَافِعُ وَمَشَارِبٌ أَفَلَا يَشْكُرُونَ ۝ ۴३

को खाते हैं और उन के लिये उन में कई तरह के नफ़ा और पीने की चीज़ें हैं तो क्या शुक्र न करेंगे

وَاتَّخَذُوا مِنْ دُونِ اللَّهِ إِلَهَةً لَّعَلَّهُمْ يُبْصِرُونَ ۝ ۴४

और उन्होंने ने अल्लाह के सिवा और खुदा ठहरा लिये कि शायद उन की मदद हो

لَا يَسْتَطِيعُونَ نَصْرَهُمْ وَهُمْ لَهُمْ جُنْدٌ مُّحَضَّرُونَ ۝ ۴५

वोह उन की मदद नहीं कर सकते और वोह उन के लश्कर सब गरिफ़तार हाज़िर आएंगे

فَلَا يَحْزَنُكَ قَوْلُهُمْ إِنَّا نَعْلَمُ مَا يُسِرُّونَ وَمَا يُعْلِنُونَ ۝ ۴६

तो तुम उन की बात का ग़म न करो बेशक हम जानते हैं जो वोह छुपाते हैं और ज़ाहिर करते हैं

أَوَلَمْ يَرِ الْإِنْسَانُ أَنَّا خَلَقْنَاهُ مِنْ نُّطْفَةٍ فَذَاهُو خَصِيمٍ

और क्या आदमी ने न देखा कि हम ने उसे पानी की बूंद से बनाया जबी वोह सरीह झगड़ा

مُبِينٌ ۚ وَضَرَبَ لَنَا مَثَلًا وَنَسِيَ خَلْقَهُ ۖ قَالَ مَنْ

है और हमारे लिये कहावत कहता है और अपनी पैदाइश भूल गया बोला ऐसा कौन है

يُحْيِي الْعِظَامَ وَهِيَ رَمِيمٌ ۚ قُلْ يُحْيِيهَا الَّذِي أَنْشَأَهَا

कि हड्डियों को जिन्दा करे जब वोह बिल्कुल गल गई तुम फरमाओ उन्हें वोह जिन्दा करेगा जिस ने

أَوَّلَ مَرَّةٍ ۚ وَهُوَ بِكُلِّ خَلْقٍ عَلِيمٌ ۚ الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ

पहली बार उन्हें बनाया और उसे हर पैदाइश का इल्म है जिस ने तुम्हारे लिये रहे

مِّنَ الشَّجَرِ الْأَخْضَرِ نَارًا فَإِذَا أَنْتُمْ مِنْهُ تُوقَدُونَ ۚ

पेड़ में से आग पैदा की जभी तुम उस से सुलगाते हो

أَوَلَيْسَ الَّذِي خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ بِقَدِيرٍ عَلَىٰ

और क्या वोह जिस ने आस्मान और ज़मीन बनाए इन जैसे और नहीं बना सकता

أَنْ يَخْلُقَ مِثْلَهُمْ بَلَىٰ ۚ وَهُوَ الْخَلَّاقُ الْعَلِيمُ ۚ إِنَّمَا أَمْرُهُ

क्यूं नहीं और वोही है बड़ा पैदा करने वाला सब कुछ जानता उस का

إِذَا أَرَادَ شَيْئًا أَنْ يَقُولَ لَهُ كُنْ فَيَكُونُ ۚ فَسُبْحَانَ الَّذِي

काम तो येही है कि जब किसी चीज़ को चाहे तो उस से फरमाए हो जा वोह फौरन हो जाती है तो पाकी है उसे

بِيَدِهِ مَلَكُوتُ كُلِّ شَيْءٍ وَإِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ۚ

जिस के हाथ हर चीज़ का कब्ज़ा है और उसी की तरफ़ फैरे जाओगे

## “रुहमल्ल” के चार हुरफ़ की निश्बत से सूरए कहफ़ के 4 फ़ज़ाइल

(1) हज़रते सय्यिदुना बराअ बिन अज़िब رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ

फ़रमाते हैं कि एक शख्स सूरए कहफ़ की तिलावत कर रहा था, उन के घर में एक जानवर बंधा हुआ था अचानक वोह जानवर बिदकने लगा। उस शख्स ने देखा कि एक बादल ने उस को ढांपा हुआ है उस शख्स ने हुजुरे अकरम, **नूरे मुजस्सम** صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ से इस वाकिए का ज़िक्र किया, तो आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने फ़रमाया : ऐ फुलां ! तिलावत किया करो, कि येह सकीना है जो तिलावते कुरआन करते वक़्त नाज़िल होता है। (صَحِيحُ مُسْلِمٍ حَدِيثُ ११० ص ३११)

(2) हज़रते सय्यिदुना मुअज़ बिन अनस जुहनी رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ

से रिवायत है, रसूलुल्लाह صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इर्शाद फ़रमाया : जो सूरए कहफ़ की अव्वल और आखिर से तिलावत करेगा उस के सर ता पा **नूर ही नूर** होगा, और जो इस की मुकम्मल तिलावत करेगा, उस के लिये आस्मान और ज़मीन के दरमियान **नूर** होगा।

(الْمُسْنَدُ لِلْإِمَامِ أَحْمَدُ بْنُ حَنْبَلٍ حَدِيثُ مُعَاذِ بْنِ أَنَسٍ الْحَدِيثُ १०६२६ ج १ ص ३११)

(3) हज़रते सय्यिदुना अबू सईद खुदरी رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से

रिवायत है कि नबिय्ये मुकर्रम, **नूरे मुजस्सम** صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने फ़रमाया : “जो जुमुआ के दिन सूरए कहफ़ पढ़े उस के लिये दो जुमुओं के दरमियान एक **नूर** रोशन कर दिया जाता है।” एक रिवायत में है : “जो शबे जुमुआ को पढ़े उस के और बैतुल अतीक़ (या’नी का’बतुल्लाह शरीफ़) के दरमियान एक **नूर** रोशन कर दिया जाता है।”

(شُعَبُ الْإِيمَانِ حَدِيثُ २६६६ ج २ ص ६१६)

(4) हज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رضي الله تعالى عنه से रिवायत है, नबिय्ये करीम, رؤفुरहीम صلى الله تعالى عليه وآله وسلم ने फ़रमाया : जो सूरए कहफ़ की पहली दस आयतें याद करेगा दज्जाल से महफूज़ रहेगा और एक रिवायत में है, जो सूरए कहफ़ की आखिरी दस आयतें याद करेगा दज्जाल से महफूज़ रहेगा ।  
(صحيح مسلم، الحديث: ٨٠٩، ص ٤٠٤)



بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ



अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरबान रहमत वाला

الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي أَنْزَلَ عَلَى عَبْدِهِ الْكِتَابَ وَلَمْ

सब खूबियां अल्लाह को जिस ने अपने बन्दे पर किताब उतारी और उस में

يَجْعَلَ لَهُ عِوَجًا ۖ قَيِّمًا لِّيُنذِرَ بَأْسًا شَدِيدًا

अस्लन कजी न रखी अदल वाली किताब कि अल्लाह के सख़्त अज़ाब से

مَنْ لَدُنْهُ وَيُبَشِّرُ الْمُؤْمِنِينَ الَّذِينَ يَعْمَلُونَ

डराए और ईमान वालों को जो नेक काम करें बिशारत दे कि

الصَّالِحَاتِ أَنَّ لَهُمْ أَجْرًا حَسَنًا ۖ مَا كَثِيرٌ فِيهِ إِبْرَءٌ

उन के लिये अच्छा सवाब है जिस में हमेशा रहेंगे

وَيُنذِرُ الَّذِينَ قَالُوا اتَّخَذَ اللَّهُ وَلَدًا ۚ مَا لَهُمْ بِهِ

और उन को डराए जो कहते हैं कि अल्लाह ने अपना कोई बच्चा बनाया इस बारे में

مَنْ عَلِمَ وَلَا إِبْرَاهِيمَ كَبُرَتْ كَلِمَةً تَخْرُجُ مِنْ

न वोह कुछ इल्म रखते हैं न उन के बाप दादा कितना बड़ा बोल है कि उन के मुंह

أَفْوَاهِهِمْ إِنْ يَقُولُونَ إِلَّا كَذِبًا ۖ فَلَعَلَّكَ بَاخِعٌ

से निकलता है निरा झूट कह रहे हैं तो कहीं तुम अपनी जान

نَفْسِكَ عَلَىٰ آثَارِهِمْ إِنْ لَمْ يُؤْمَرُوا بِهَذَا الْحَدِيثِ

पर खेल जाओगे उन के पीछे अगर वोह इस बात पर ईमान न लाएं

أَسْفًا ۚ إِنَّا جَعَلْنَا مَا عَلَى الْأَرْضِ زِينَةً لِّهَا لِيَبْلُوهُمْ

गम से बेशक हम ने ज़मीन का सिंगार किया जो कुछ इस पर है कि उन्हें

أَيُّهُمْ أَحْسَنُ عَمَلًا ۚ وَإِنَّا لَجُعَلُونَ مَا عَلَيْهَا

आज़माएं उन में किस के काम बेहतर हैं और बेशक जो कुछ इस पर है एक दिन हम उसे

صَعِيدًا اجْرَزًا ۚ أَمْ حَسِبْتَ أَنَّ أَصْحَابَ الْكَهْفِ

पट पर मैदान कर छोड़ेंगे क्या तुम्हें मा'लूम हुवा कि पहाड़ की खोह और जंगल के

وَالرَّقِيمِ ۖ كَانُوا مِنْ آيَاتِنَا عَجَبًا ۚ إِذْ أَوَى الْفِتْيَةُ

किनारे वाले हमारी एक अजीब निशानी थे जब उन जवानों ने

إِلَى الْكَهْفِ فَقَالُوا رَبَّنَا آتِنَا مِنْ لَدُنْكَ رَحْمَةً

ग़ार में पनाह ली फिर बोले ऐ हमारे रब हमें अपने पास से रहमत दे



وَهَيْبِي لَنَا مِنْ أَمْرِ نَارِ شَدًّا ۝ فَضَرُّنَا عَلَىٰ أَذَانِهِمْ فِي

और हमारे काम में हमारे लिये राहयाबी के सामान कर तो हम ने उस गार में उन के कानों पर

الْكَهْفِ سِنِينَ عَدَدًا ۝ ثُمَّ بَعَثْنَا لَهُمْ لِنَعْلَمَ أَيُّ الْحِزْبَيْنِ

गिनती के कई बरस थपका फिर हम ने उन्हें जगाया कि देखें दो गुरौहों

أَحْصَىٰ لِمَا بَنَوْا أَمَدًا ۝ نَحْنُ نَقُصُّ عَلَيْكَ نَبَأَهُمْ

में कौन उन के ठहरने की मुद्दत ज़ियादा ठीक बताता है हम उन का ठीक ठीक हाल तुम्हें

بِالْحَقِّ إِنَّهُمْ فِتْيَةٌ آمَنُوا بِرَبِّهِمْ وَزِدْنَاهُمْ هُدًى ۝ وَ

सुनाएं वोह कुछ जवान थे कि अपने रब पर ईमान लाए और हम ने उन को हिदायत बढ़ाई और

رَبَّنَا عَلَىٰ قُلُوبِهِمْ إِذْ قَامُوا فَقَالُوا رَبُّنَا رَبُّ السَّمَوَاتِ

हम ने उन के दिलों की ढारस बंधाई जब खड़े हो कर बोले कि हमारा रब वोह है जो आस्मान

وَالْأَرْضِ لَنْ نَدْعُو مِنْ دُونِهِ إِلَهًا لَقَدْ قُلْنَا إِذَا

और ज़मीन का रब है हम उस के सिवा किसी मा'बूद को न पूजेंगे ऐसा हो तो हम ने ज़रूर

شَطَطًا ۝ هُوَ الَّذِي قَوْمُنَا اتَّخَذُوا مِنْ دُونِهِ إِلَهًا

हृद से गुज़री हुई बात कही येह जो हमारी कौम है उस ने अल्लाह के सिवा खुदा बना रखे

لَوْلَا يَأْتُونَ عَلَيْهِمْ بِسُلْطَانٍ بَيِّنٍ فَمَنْ أَظْلَمُ مِنْ

हैं क्यूं नहीं लाते इन पर कोई रोशन सनद तो उस से बढ़ कर ज़ालिम कौन

اَفْتَرَىٰ عَلَى اللَّهِ كَذِبًا ۖ وَاِذَا عَزَلْتَهُمْ ۖ وَمَا يَعْبُدُونَ

जो अल्लाह पर झूठ बांधे और जब तुम उन से और जो कुछ वोह अल्लाह

اِلَّا اللَّهُ فَاَوَّالِيَ الْكَهْفِ يَنْشُرْكُمْ رَبُّكُمْ مِّن رَّحْمَتِهِ

के सिवा पूजते हैं सब से अलग हो जाओ तो ग़ार में पनाह लो तुम्हारा रब तुम्हारे लिये अपनी रहमत

وَيُهَيِّئْ لَّكُمْ مِّنْ اَمْرِكُمْ مِّرْفَقًا ۚ وَتَرَى الشَّمْسَ اِذَا

फेला देगा और तुम्हारे काम में आसानी के सामान बना देगा और ऐ महबूब तुम सूरज को देखोगे

طَلَعَتْ تُّرُورًا عَنْ كُهُفِهِمْ ذَاتَ الْيَمِينِ وَازْغَرَبَتْ

कि जब निकलता है तो उन के ग़ार से दहनी तरफ़ बच जाता है और जब डूबता

تَقَرُّهُمْ ذَاتَ الشِّمَالِ وَهُمْ فِي فَجْوَةٍ مِّنْهُ ۚ ذٰلِكَ مِنْ

है तो उन्हें बाई तरफ़ कतरा जाता है हालां कि वोह उस ग़ार के खुले मैदान में हैं येह

اٰيَاتِ اللَّهِ ۚ مَن يُّهْدِ اللَّهُ فَهُوَ الْمُهْتَدِ ۚ وَمَن يُضِلُّ

अल्लाह की निशानियों से है जिसे अल्लाह राह दे तो वोही राह पर है और जिसे गुमराह करे

فَلَن يَجْعَلَ لَهٗ وَلِيًّا مُّرْسِدًا ۚ وَتَحْسَبُهُمْ اَيْقَاطًا وَهُمْ

तो हरगिज़ उस का कोई हिमायती राह दिखाने वाला न पाओगे और तुम उन्हें जागता समझो और वोह सोते

رُقُودًا ۚ وَنُقَلِّبُهُمْ ذَاتَ الْيَمِينِ وَذَاتَ الشِّمَالِ ۚ

हैं और हम उन की दाहिनी बाई करवटें बदलते हैं

وَكَلَّاهُمْ بِأَسْطِ ذِرَاعَيْهِ بِالْوَصِيدِ لَوِ اطَّلَعَتْ عَلَيْهِمْ

और उन का कुत्ता अपनी कलाइयां फैलाए हुए है गार की चौखट पर ऐ सुनने वाले अगर तू

لَوَيْتَ مِنْهُمْ فَرَارًا وَلَكِلَيْتَ مِنْهُمْ رُجْعًا ۝<sup>१८</sup> وَكَذَلِكَ

उन्हें झांक कर देखे तो उन से पीठ फैर कर भागे और उन से हैबत में भर जाए और यूँही हम ने

بَعَثْنَاهُمْ لِيَتَسَاءَلُوا آبِيَهُمْ ۖ قَالَ قَائِلٌ مِّنْهُمْ كَمْ لَبِثْتُمْ

उन को जगाया कि आपस में एक दूसरे से अहवाल पूछें उन में एक कहने वाला बोला

قَالُوا الْبَيْنَا يَوْمًا أَوْ بَعْضُ يَوْمٍ ۖ قَالُوا رَبُّكُمْ أَعْلَمُ بِمَا

तुम यहां कितनी देर रहे। कुछ बोले कि एक दिन रहे या दिन से कम दूसरे बोले तुम्हारा

لَبِثْتُمْ ۖ فَابْعَثُوا أَحَدَكُمْ بِوَرِقِكُمْ هَذِهِ إِلَى الْبَيْتَةِ

रब खूब जानता है जितना तुम ठहरे तो अपने में एक को येह चांदी ले कर शहर में भेजो

فَلْيَنْظُرِ إِلَيْهَا أَرَأَيْتُمْ أَفَلْيَأْتِكُمْ بِرِزْقٍ مِّنْهُ

फिर वोह गौर करे कि वहां कौन सा खाना ज़ियादा सुथरा है कि तुम्हारे लिये इस में से खाने

وَلْيَتَلَطَّفْ وَلَا يُشْعِرَنَّ بِكُمْ أَحَدًا ۝<sup>१९</sup> إِنَّهُمْ إِنْ يَظْهَرُوا

को लाए और चाहिये कि नरमी करे और हरगिज़ किसी को तुम्हारी ई तलाज़ न दे बेशक अगर वोह तुम्हें जान लेंगे

عَلَيْكُمْ يَرْجِسُكُمْ وَيُبْعِدُكُمْ فِي مِلَّةٍ مَّوْلَانِ تَقْلُحُوا

तो तुम्हें पथराओ करेंगे या अपने दीन में फैर लेंगे और ऐसा हुवा तो तुम्हारा कभी भला न

إِذَا أَبَدًا ۝ وَكَذَلِكَ أَعْتَرْنَا عَلَيْهِمْ لِيَعْلَمُوا أَنَّ وَعْدَ

होगा और इसी तरह हम ने उन की इत्तिहाज कर दी कि लोग जान लें कि

اللَّهُ حَقٌّ وَأَنَّ السَّاعَةَ لَا رَيْبَ فِيهَا إِذْ يَتَنَازَعُونَ

अल्लाह का वा'दा सच्चा है और क़ियामत में कुछ शुबा नहीं जब वोह लोग उन के मुआ-मले में

بَيْنَهُمْ أَمْرُهُمْ فَقَالُوا ابْنُوا عَلَيْهِمْ بُنْيَانًا رَبُّهُمْ أَعْلَمُ بِهِمْ

बाहम झगड़ने लगे तो बोले इन के गार पर कोई इमारत बनाओ इन का रब इन्हें खूब

قَالَ الَّذِينَ غَلَبُوا عَلَىٰ أَمْرِهِمْ لَنَتَّخِذَنَّ عَلَيْهِمْ مَسْجِدًا ۝

जानता है वोह बोले जो इस काम में ग़ालिब रहे थे क़सम है कि हम तो उन पर मस्जिद बनाएंगे

سَيَقُولُونَ ثَلَاثَةٌ رَّابِعُهُمْ كَلْبُهُمْ وَيَقُولُونَ خَمْسَةٌ

अब कहेंगे कि वोह तीन है चौथा उन का कुत्ता और कुछ कहेंगे पांच हैं छटा उन का कुत्ता

سَادِسُهُمْ كَلْبُهُمْ رَجْمًا بِالْغَيْبِ وَيَقُولُونَ سَبْعَةٌ

बे देखे अलाव तुक्का बात और कुछ कहेंगे सात हैं

وَنَامُ لَهُمْ كَلْبُهُمْ قُلْ رَبِّي أَعْلَمُ بِعَدَّتِهِمْ مَّا يَعْلَمُهُمْ إِلَّا

और आठवां उन का कुत्ता तुम फ़रमाओ मेरा रब इन की गिनती खूब जानता है उन्हें

قَلِيلٌ ۖ فَلَا تَسْأَلُهُمْ فِيهِمْ إِلَّا مَرَاءً ظَاهِرًا وَلَا تَسْتَفْتِ

नहीं जानते मगर थोड़े तो उन के बारे में बहस न करो मगर इतनी ही बहस जो ज़ाहिर हो चुकी और

فِيَوْمٍ مِّنْهُمْ أَحَدًا ۖ وَلَا تَقُولَنَّ لِشَايٍ إِنِّي فَاعِلٌ

उन के बारे में किसी किताबी से कुछ न पूछो और हरगिज किसी बात को न कहना कि मैं कल यह

ذَلِكَ غَدًا ۖ إِلَّا أَنْ يَشَاءَ اللَّهُ ۚ وَادْكُرْ رَبَّكَ إِذَا

कर दूंगा मगर यह कि अल्लाह चाहे और अपने रब की याद कर जब तू

نَسِيتَ وَقُلْ عَسَى أَنْ يَهْدِيَنِي رَبِّي لِأَقْرَبَ مِنْ

भूल जाए और यूँ कह कि करीब है कि मेरा रब मुझे उस से नज़्दीक तर

هَذَا ارْشَادًا ۚ وَلَبِثُوا فِي كُفْرِهِمْ ثَلَاثَ مِائَةٍ سِنِينَ

रास्ती की राह दिखाए और वोह अपने ग़ार में तीन सो बरस

وَإِذْ أَدْرَأْتُمْ سَعَاءَ ۚ قُلِ اللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا لَبِثُوا ۚ لَهُ غَيْبُ

ठहरे नव ऊपर तुम फ़रमाओ अल्लाह ख़ूब जानता है वोह जितना ठहरे

السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ۚ أَبْصِرْ بِهِ وَأَسْمِعْ ۚ مَا لَهُمْ مِّنْ

उसी के लिये हैं आस्मानों और ज़मीन के सब ग़ैब वोह क्या ही देखता और क्या

دُونَهُ مِنْ شَيْءٍ ۚ وَلَا يُشْرِكُ فِي حُكْمِهِ أَحَدًا ۚ

ही सुनता है उस के सिवा उन का कोई वाली नहीं और वोह अपने हुक्म में किसी को शरीक नहीं करता

وَآتِلْ مَا أُوحِيَ إِلَيْكَ مِنْ كِتَابِ رَبِّكَ ۚ لَا مُبَدِّلَ

और तिलावत करो जो तुम्हारे रब की किताब तुम्हें वह्य हुई उस की बातों

لِكَلِمَتِهِ ۖ وَلَنْ يُجَادَ مِنْ دُونِهِ مُلْتَحَدًا ۝۱۲ۖ وَاصْبِرْ

का कोई बदलने वाला नहीं और हरगिज तुम उस के सिवा पनाह न पाओगे और अपनी जान

نَفْسِكَ مَعَ الَّذِينَ يَدْعُونَ رَبَّهُمْ بِالْغَدَاةِ وَ

उन से मानूस रखो जो सुबह व शाम अपने रब को पुकारते हैं उस की

الْعِشِيِّ يُرِيدُونَ وَجْهَهُ ۖ وَلَا تَعْدُ عَيْنُكَ عَنْهُمْ

रिजा चाहते और तुम्हारी आंखें उन्हें छोड़ कर और पर न पड़ें क्या

تُرِيدُ زِينَةَ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا ۖ وَلَا تَطْعَمَنْ أَغْفَلًا

तुम दुनिया की जिन्दगी का सिंगार चाहोगे और उस का कहा न मानो जिस का

قَلْبُهُ عَنْ ذِكْرِنَا وَاتَّبَعَ هَوَاهُ ۖ وَكَانَ أَمْرُهُ فُرْطًا ۝۱۳

दिल हम ने अपनी याद से गाफिल कर दिया और वोह अपनी ख्वाहिश के पीछे चला और उस का काम हृद से गुजर गया

وَقُلِ الْحَقُّ مِنْ رَبِّكُمْ ۖ فَمَنْ شَاءَ فَلْيُؤْمَرْ وَمَنْ

और फ़रमा दो कि हक़ तुम्हारे रब की तरफ़ से है तो जो चाहे ईमान लाए और जो चाहे

شَاءَ فَلْيُكْفَرْ ۚ إِنَّا آعْتَدْنَا لِلظَّالِمِينَ نَارًا أَحَاطَ بِهِمْ

कुफ़ करे बेशक हम ने ज़ालिमों के लिये वोह आग तय्यार कर रखी है जिस की

سَادِقُهَا ۚ وَإِنْ يَسْتَغِيثُوا يُغَاثُوا بِمَاءٍ كَالْمُهْلِ

दीवारें उन्हें घेर लेंगी और अगर पानी के लिये फ़रियाद करें तो उन की फ़रियाद रसी होगी

يَشْرَبُ الْوُجُوهَ بِئْسَ الشَّرَابُ وَسَاءَتْ مُرْتَفَقًا ۝

उस पानी से कि चर्ख दिये हुए धात की तरह है कि उन के मुंह भून देगा क्या ही बुरा, पीना

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ إِنَّا لَا نُضِيعُ

और दोख क्या ही बुरी ठहरने की जगह बेशक जो ईमान लाए और नेक काम किये हम उन के

أَجْرَ مَنْ أَحْسَنَ عَمَلًا ۝ أُولَٰئِكَ لَهُمْ جَنَّاتُ عَدْنٍ

नेग जाएअ नहीं करते जिन के काम अच्छे हों उन के लिये बसने के बाग हैं उन के

تَجْرَى مِنْ تَحْتِهِمُ الْأَنْهَارُ يُحَلَّونَ فِيهَا مِنْ أَسَاوِرَ

नीचे नदियां बहें वोह उस में सोने के कंगन पहनाए जाएंगे और

مِنْ ذَهَبٍ وَيَلْبَسُونَ ثِيَابًا خُضْرًا مِنْ سُنْدُسٍ

सब्ज कपड़े करैब और कनादीज के पहनेंगे वहां तख्तों पर

وَاسْتَبْرَقٍ مُّتَّكِينَ فِيهَا عَلَى الْأَرَائِكِ نَعَمَ

तकिया लगाए क्या ही अच्छा सवाब और

التَّوَابُ وَحَسُنَتْ مُرْتَفَقًا ۝ وَأَضْرِبْ لَهُم مِّثْلًا

जन्नत क्या ही अच्छी आराम की जगह और उन के सामने दो मर्दों

رَّجُلَيْنِ جَعَلْنَا لِأَحَدِهِمَا جَنَّتَيْنِ

का हाल बयान करो कि उन में एक को हम ने अंगूरों के दो बाग

مِنْ أَعْنَابٍ وَحَفَفْنَاهَا بِنَخْلٍ وَ

दिये और उन को खजूरों से ढांप लिया और

جَعَلْنَا بَيْنَهُمَا نَازِرَةً ۖ كُلَّا

उन के बीच बीच में खेती रखी दोनों

الْجَنَّتَيْنِ اتَتْ أَكْلَهَا وَلَمْ تَظْلِمِ

बाग अपने फल लाए और उस में कुछ

مِنْهُ شَيْئًا ۚ وَفَجَدْنَا خِلْفَهُمَا نَهْرًا ۖ

कमी न दी और दोनों के बीच में हम ने नहर बहाई

وَكَانَ لَهُ شَمْرٌ فَقَالَ لِصَاحِبِهِ

और वोह फल रखता था तो अपने साथी से बोला

وَهُوَ يُحَاوِرُهُ أَنَا أَكْثَرُ مِنْكَ مَالًا وَ

और वोह उस से रद्दो बदल करता था मैं तुझे से माल में

أَعَزُّ نَفَرًا ۖ وَدَخَلَ جَنَّتَهُ وَهُوَ

ज़ियादा हूं और आदमियों का ज़ियादा जोर रखता हूं

ظَالِمٌ لِّنَفْسِهِ ۖ قَالَ مَا أَظُنُّ أَن تَبِيدَ

अपने बाग में गया और अपनी जान पर जुल्म करता हुआ बोला मुझे गुमान नहीं



هَذِهِ أَبَدًا ۖ وَمَا أَظُنُّ السَّاعَةَ قَائِمَةً وَلَئِنْ رُدُّتُ إِلَىٰ رَبِّي لَأَجِدَنَّ خَيْرًا مِّنْهُمَا مُنْقَلَبًا ۝ قَالَ

कि येह कभी फना हो और मैं गुमान नहीं करता कि कियामत काइम हो और अगर मैं

رُدُّتُ إِلَىٰ رَبِّي لَأَجِدَنَّ خَيْرًا مِّنْهُمَا مُنْقَلَبًا ۝ قَالَ

अपने रब की तरफ़ फिर कर भी तो ज़रूर इस बाग़ से बेहतर पलटने की जगह पाऊंगा उस के

لَهُ صَاحِبَةٌ وَهُوَ يُحَاوِرُهُ أَكَفَرْتَ بِالَّذِي خَلَقَكَ

साथी ने उस से उलट फैर करते हुए जवाब दिया क्या तू उस के साथ

مِّن تُرَابٍ ثُمَّ مِّنْ تُفْغَةٍ ثُمَّ سَوَّكَ رَجُلًا ۖ لَكِنَّا

कुफ़्र करता है जिस ने तुझे मिट्टी से बनाया फिर निथरे पानी की बूंद से फिर तुझे ठीक मर्द किया लेकिन मैं तो

هُوَ اللَّهُ رَبِّي وَلَا أَشْرِكُ بِرَبِّي أَحَدًا ۝ وَلَوْ لَا إِذْ دَخَلْتَ

येही कहता हूँ कि वोह अल्लाह ही मेरा रब है और मैं किसी को अपने रब का शरीक नहीं करता हूँ और क्यूं न हुवा

جَنَّتِكَ قُلْتَ مَا شَاءَ اللَّهُ ۖ لَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللَّهِ ۚ إِن تَرَنِ

कि जब तू अपने बाग़ में गया तो कहा होता जो चाहे अल्लाह हमें कुछ ज़ोर नहीं मगर अल्लाह की मदद का

أَنَا أَقْلٌ مِّنْكَ مَا لَوْ وَلَدًا ۖ فَعَسَىٰ رَبِّي أَنْ يُّوتِيَنِي

अगर तू मुझे अपने से माल व औलाद में कम देखता था तो करीब है कि मेरा रब मुझे तेरे

خَيْرًا مِّنْ جَنَّتِكَ وَيُرْسِلَ عَلَيْهَا حُسْبَانًا مِّنَ السَّمَاءِ

बाग़ से अच्छा कर दे और तेरे बाग़ पर आस्मान से बिज्लियां उतारे तो वोह पट पर मैदान

قَتَصَبَحَ صَعِيدًا اَزْلَقًا ۝ اَوْ يُصْبِحَ مَاءً وَّمَا غَرَّا فُلُجٌ

हो कर रह जाए या उस का पानी ज़मीन में धंस जाए

تَسْتَطِيعُ لَهُ طَلَبًا ۝ وَاُحِيطَ بِشَرِّهِ فَاَصْبَحَ يُقَلِّبُ

फिर तू उसे हरगिज़ तलाश न कर सके और उस के फल घेर लिये गए तो अपने हाथ

كَفَّيْهِ عَلَى مَا اَنْفَقَ فِيْهَا وَهِيَ خَاوِيَةٌ عَلَى عُرُوشِهَا

मलता रह गया उस लागत पर जो उस बाग़ में खर्च की थी और वोह अपनी टेठों

وَيَقُولُ يٰلَيْتَنِيْ لَمْ اَشْرِكْ بِرَبِّيْٓ اَحَدًا ۝ وَلَمْ تَكُنْ لَهُ

पर गिरा हुवा था और कह रहा है ऐ काश मैं ने अपने रब का किसी को शरीक न किया होता और उस

فَوْةٌ يُّصْرُونَ ۝ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَمَا كَانَ مُتَصَرًّا ۝

के पास कोई जमाअत न थी कि अल्लाह के सामने उस की मदद करती न वोह बदला लेने के क़बिल था

هٰذَا لَكَ الْوَلٰٓئَةُ لِلّٰهِ الْحَقُّ ۝ هُوَ خَيْرٌ ثَوَابًا وَخَيْرٌ

यहां खुलता है कि इख़्तियार सच्चे अल्लाह का है उस का सवाब सब से बेहतर और उसे मानने का अन्जाम

عُقْبًا ۝ وَاَضْرَبَ لَهُمْ مِّثْلَ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا كَمَا ۝

सब से भला और उन के सामने ज़िन्दगानिये दुन्या की कहावत बयान करो जैसे एक पानी हम ने

اَنْزَلْنٰهُ مِنَ السَّمَآءِ فَاَخْتَلَطَ بِهٖ نَبَاتُ الْاَرْضِ

आस्मान से उतारा तो उस के सबब ज़मीन का सबज़ा घना हो कर

فَاصْبَحْ هَشِيمًا تَذْرُوهُ الرِّيحُ ۖ وَكَانَ اللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ

निकला कि सूखी घास हो गया जिसे हवाएं उड़ाएं और अल्लाह हर चीज पर

شَيْءٍ مُّقْتَدِرًا ۝۱۰۰ الْمَالُ وَالْبَنُونَ زِينَةُ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا

काबू वाला है माल और बेटे येह जीती दुनिया का सिंगार है

وَالْبَقِيَّةُ الصَّالِحَاتُ خَيْرٌ عِنْدَ رَبِّكَ ثَوَابًا وَخَيْرًا أَمَلًا ۝

और बाकी रहने वाली अच्छी बातें उन का सवाब तुम्हारे रब के यहां बेहतर और वोह

وَيَوْمَ نُسَيِّرُ الْجِبَالَ وَتَرَى الْأَرْضَ بَارِزَةً ۖ وَحَشَرْنَاهُمْ

उम्मीद में सब से भली और जिस दिन हम पहाड़ों को चलाएंगे और तुम ज़मीन को साफ़ खुली हुई देखोगे

فَلَمْ نُعَادِرْمَهُمْ أَحَدًا ۝۱۰۱ وَعَرَضُوا عَلَيَّ رَبِّكَ صَفًّا لَقَدْ

और हम उन्हें उठाएंगे तो उन में से किसी को छोड़ न देंगे और सब तुम्हारे रब के हुजूर परा बांधे पेश

جَسَدُهُمْ ۖ كَمَا خَلَقْنَاكُمْ أَوَّلَ مَرَّةٍ ۖ بَلْ زَعَمْتُمْ أَلَّنْ

होगे बेशक तुम हमारे पास वैसे ही आए जैसा हम ने तुम्हें पहली बार बनाया था बल्कि तुम्हारा गुमान

نَجْعَلَ لَكُم مَّوْعِدًا ۝۱۰۲ وَوَضَعَ الْكِتَابَ فَتَرَى الْمُبْرِينَ

था कि हम हरगिज़ तुम्हारे लिये कोई वा'दे का वक़्त न रखेंगे और नामए आ'माल रखा जाएगा तो तुम

مُشْفِقِينَ ۖ مَسَافِيَهُ وَيَقُولُونَ يَوْمَئِذٍ نَأْمَلُ هَذَا الْكِتَابِ

मुजरिमों को देखोगे कि उस के लिखे से डरते होंगे और कहेंगे हाए

لَا يَغَادِرُ صَغِيرَةً وَلَا كَبِيرَةً إِلَّا أَحْصَاهَا ۚ وَوَجَدُوا مَا

खुराबी हमारी इस नविशते को क्या हुवा न इस ने कोई छोटा गुनाह छोड़ा न बड़ा जिसे घेर न लिया हो

عَمَلُوا حَاضِرًا ۚ وَلَا يَظْلِمُ رَبُّكَ أَحَدًا ۚ وَإِذْ قُلْنَا

और अपना सब किया उन्होंने ने सामने पाया और तुम्हारा रब किसी पर जुल्म नहीं करता और याद करो जब

لِلْمَلَائِكَةِ السُّجُودَ ۚ وَالْإِدْمَ فَسَجَدُوا إِلَّا إِبْلِيسَ ۖ كَانَ

हम ने फ़िरिश्तों को फ़रमाया कि आदम को सज्दा करो तो सब ने सज्दा किया सिवा इब्लीस कि कौमे जिन से

مِنَ الْجِنَّ فَفَسَقَ عَنْ أَمْرِ رَبِّهِ ۚ أَفَتَتَّخِذُونَهُ

था तो अपने रब के हुक्म से निकल गया भला क्या उसे और उस की औलाद को मेरे सिवा दोस्त

وَذُرِّيَّتَهُ أَوْلِيَاءَ مِنْ دُونِي ۚ وَهُمْ لَكُمْ عَدُوٌّ مُبِينٌ

बनाते हो और वोह तुम्हारे दुश्मन हैं ज़ालिमों को क्या ही

لِلظَّالِمِينَ بَدَلًا ۚ مَا أَشْهَدُ تَهُمَ خَلَقَ السَّمَوَاتِ

बुरा बदल मिला न मैं ने आस्मानों और ज़मीन के बनाते वक्त उन्हें

وَالْأَرْضِ ۚ وَآخَلَقَ أَنْفُسَهُمْ ۚ وَكَأَنْتُمْ مُتَخِذِينَ

सामने बिठा लिया था न खुद उन के बनाते वक्त और न मेरी शान कि गुमराह करने वालों को

عُصْدًا ۚ وَيَوْمَ يَقُولُ نَادُوا شُرَكَاءِيَ الَّذِينَ زَعَمْتُمْ

बाजू बनाऊं और जिस दिन फ़रमाएगा कि पुकारो मेरे शरीकों को जो तुम गुमान करते थे

فَكَوْهُمْ فَلَمْ يَسْتَجِيبُوا لَهُمْ وَجَعَلْنَا بَيْنَهُم مَّوْبِقًا ۝

तो उन्हें पुकारेंगे वोह उन्हें जवाब न देंगे और हम उन के दरमियान एक हलाकत का मैदान कर देंगे

وَرَأَى الْمُجْرِمُونَ النَّارَ فَظَنُّوا أَنَّهُمْ مُوَاقِعُوهَا وَلَمْ

और मुजरिम दोख़ को देखेंगे तो यकीन करेंगे कि उन्हें इस में गिरना है और

يَجِدُوا عَنْهَا مَصْرِفًا ۝ وَلَقَدْ صَرَّفْنَا فِي هَذَا الْقُرْآنِ

इस से फिरने की कोई जगह न पाएंगे और बेशक हम ने लोगों के लिये इस कुरआन में

لِلنَّاسِ مِنْ كُلِّ مَثَلٍ وَكَانَ الْإِنْسَانُ أَكْثَرُ شَيْءٍ

हर किस्म की मिस्ल तरह तरह बयान फ़रमाई और आदमी हर चीज़ से बढ़ कर

جَدَلًا ۝ وَمَا مَنَعَ النَّاسَ أَنْ يُؤْمِنُوا إِذْ جَاءَهُمْ

झगड़ालू है और आदमियों को किस चीज़ ने इस से रोका कि ईमान लाते जब

الْهُدَى وَيَسْتَغْفِرُوا رَبَّهُمْ إِلَّا أَنْ تَأْتِيَهُمْ سُنَّةٌ

हिदायत उन के पास आई और अपने रब से मुआफ़ी मांगते मगर येह कि उन पर अगलों का

الْأُولَئِينَ أَوْيَاتِيَهُمُ الْعَذَابُ قُبُلًا ۝ وَمَا نُرْسِلُ

दस्तूर आए या उन पर किस्म किस्म का अज़ाब आए और हम रसूलों को

الرَّسُلِينَ إِلَّا مُبَشِّرِينَ وَمُنذِرِينَ وَيُجَادِلُ الَّذِينَ

नहीं भेजते मगर खुशी और डर सुनाने वाले और जो काफ़िर हैं वोह बातिल के साथ

كَفَرُوا بِالْبَاطِلِ لِيُدْحِضُوا بِهِ الْحَقَّ وَاتَّخَذُوا آلِيَنِي

झगड़ते हैं कि उस से हक को हटा दें और उन्होंने ने मेरी आयतों की और जो डर उन्हें सुनाए

وَمَا أُنذِرُوا هَزُورًا ۚ وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنْ ذُكِّرَ بِآيَاتِ رَبِّهِ

गए थे उन की हंसी बना ली और उस से बढ़ कर ज़ालिम कौन जिसे उस के

فَاعْرَضَ عَنْهَا وَنَسِيَ مَا قَدْ مَتَّ يَدُهُ ۖ إِنَّا جَعَلْنَا عَلَىٰ

रब की आयतें याद दिलाई जाएं तो वोह उन से मुंह फैर ले और उस के हाथ जो आगे

قُلُوبِهِمُ الْكِنَّةَ ۚ أَنْ يَتَّقَهُمْ فِي إِذَانِهِمْ وَقَرَأُوا وَإِنْ

भेज चुके उसे भूल जाए हम ने उन के दिलों पर गिलाफ़ कर दिये हैं कि कुरआन न समझे

تَدْعُهُمْ إِلَى الْهُدَىٰ فَلَنْ يَهْتَدُوا إِذًا أَبَدًا ۚ وَرَبُّكَ

और उन के कानों में गिरानी और अगर तुम उन्हें हिदायत की तरफ़ बुलाओ तो जब भी हरगिज़ कभी राह न पाएंगे और

الْغَفُورُ ذُو الرَّحْمَةِ ۖ لَوْ يُؤَاخِذُكُمْ بِمَا كَسَبُوكُمُ الْعَجَلُ لَكُمْ

तुम्हारा रब बख़्शने वाला महर वाला है अगर वोह उन्हें उन के किये पर पकड़ता तो जल्द उन पर

الْعَذَابُ ۖ بَلْ لَهُمْ مَوْعِدٌ لَّنْ يَجِدُوا مِنْ دُونِهِ

अज़ाब भेजता बल्कि उन के लिये एक वा'दे का वक़्त है जिस के सामने कोई पनाह न

مَوْلَاهُ ۚ وَتِلْكَ الْقُرَىٰ أَهْلَكْتُمْ لَهَا ظَلَمُوا وَجَعَلْنَا

पाएंगे और येह बस्तियाँ हम ने तबाह कर दीं जब उन्होंने ने जुल्म किया और हम ने उन की

لَهُلِكُمْ مَوْعِدًا ۖ وَإِذْ قَالَ مُوسَى لِقَتْلِهِ أَأَيْبُحُ حَتَّىٰ

बरबादी का एक वा'दा रखा था और याद करो जब मूसा ने अपने खादिम से कहा मैं बाज न रहूंगा

أَبْلُغَ مَجْمَعَ الْبَحْرَيْنِ أَوْ أَمْضَىٰ حُقُبًا ۖ فَلَمَّا بَلَغَا

जब तक वहां न पहुंचूं जहां दो समुन्दर मिले हैं या करनों चला जाऊं फिर

مَجْمَعَ يَنْهِيهِمَا نَسِيًا حُوتَهُمَا فَاتَّخَذَ سَبِيلَهُ فِي

जब वोह दोनों उन दरियाओं के मिलने की जगह पहुंचे अपनी मछली भूल गए और उस ने समुन्दर में

الْبُحْرَيْنِ ۖ فَلَمَّا جَاوَزَا قَالَ لِقَتْلِهِ إِتَيْنَا عَدَاءَنَا

अपनी राह ली सुरंग बनाती फिर जब वहां से गुजर गए मूसा ने खादिम से कहा हमारा सुब् का खाना

لَقَدْ لَقِينَا مِنْ سَفَرِنَا هَذَا انْصِبًا ۖ قَالَ أَرَأَيْتَ

लाओ बेशक हमें अपने इस सफर में बड़ी मशक्कत का सामना हुआ बोला भला देखिये तो

إِذَا وَبِنَا إِلَى الصَّخْرَةِ فَإِنِّي نَسِيتُ الْحُوتَ ۖ وَمَا

जब हम ने उस चट्टान के पास जगह ली थी तो बेशक मैं मछली को भूल गया और मुझे शैतान

أَنْسِيَهُ إِلَّا الشَّيْطَانُ أَنْ أَذْكُرَهُ ۚ وَاتَّخَذَ

ही ने भुला दिया कि मैं उस का मज्कूर करूं और उस ने तो समुन्दर में अपनी

سَبِيلَهُ فِي الْبَحْرِ عَجَبًا ۖ قَالَ ذَلِكُ مَا كُنَّا

राह ली अचम्बा है मूसा ने कहा येही तो

نَبِيْعٌ فَارْتَدَّ اَعْلٰى اَثَارِهَا قَصَصًا ۝۳ فَوَجَدَا عَبْدًا

हम चाहते थे तो पीछे पलटे अपने कदमों के निशान देखते तो हमारे बन्दों

مِّنْ عِبَادِنَا اٰتَيْنَاهُ رَحْمَةً مِّنْ عِنْدِنَا وَعَلَّمْنَاهُ

में से एक बन्दा पाया जिसे हम ने अपने पास से रहमत दी और उसे अपना

مِّنْ لَّدُنَّا عَلِمًا ۝۴ قَالَ لَهٗ مُوسٰى هَلْ اَتَّبَعَكَ

इलमे लदुन्नी अता किया उस से मूसा ने कहा क्या मैं तुम्हारे साथ रहूँ

عَلٰى اَنْ تَعْلَمَ مِنْ مَّاءٍ عَلِمْتَ رُشْدًا ۝۵ قَالَ اِنَّكَ

इस शर्त पर कि तुम मुझे सिखा दोगे नेक बात जो तुम्हें ता'लीम हुई कहा आप मेरे साथ

لَنْ تَسْتَطِيعَ مَعِيَ صَبْرًا ۝۶ وَكَيْفَ تَصْبِرُ عَلٰى مَا لَمْ

हरगिज़ न ठहर सकेंगे और उस बात पर क्यूं कर सब्र करेंगे जिसे आप

تَحْطُ بِهٖ خُبْرًا ۝۷ قَالَ سَتَجِدُنِيْ اِنْ شَاءَ اللّٰهُ صَابِرًا

का इल्म मुहीत नहीं कहा अन्करीब अल्लाह चाहे तो तुम मुझे साबिर पाओगे और मैं

وَلَا اَعْصِيْ لَكَ اَمْرًا ۝۸ قَالَ فَاِنْ اَتَّبَعْتَنِيْ فَلَا

तुम्हारे किसी हुक्म का खिलाफ न करूंगा कहा तो अगर आप मेरे साथ रहते हैं तो मुझ से

تَسْأَلْنِيْ عَنْ شَيْءٍ حَتّٰى اُحْدِثَ لَكَ مِنْهُ ذِكْرًا ۝۹

किसी बात को न पूछना जब तक मैं खुद उस का जिक्र न करूँ



فَانْطَلَقَا حَتَّى إِذَا رَكِبَا فِي السَّفِينَةِ خَرَقَهَا قَالَ

अब दोनों चले यहां तक कि जब कश्ती में सुवार हुए उस बन्दे ने उसे चीर डाला मूसा

أَخْرَقَهَا لِنُتْرَقِ أَهْلَهَا لَقَدْ جِئْتَ شَيْئًا أَمْرًا ۝٤١

ने कहा क्या तुम ने इसे इस लिये चीरा कि इस के सुवारों को डुबा दो बेशक यह तुम ने बुरी बात की

قَالَ الْمَاقِلُ إِنَّكَ لَنْ تَسْتَطِيعَ مَعِيَ صَبْرًا ۝٤٢

कहा मैं न कहता था कि आप मेरे साथ हरगिज न ठहर सकेंगे

قَالَ لَا تَأْخُذْ بِنِآسِيَّتِي وَلَا تَرْهَقْنِي

कहा मुझ से मेरी भूल पर गरिष्ठ न करो और मुझ पर मेरे काम

مِنْ أَمْرِي عُسْرًا ۝٤٣ فَانْطَلَقَا حَتَّى إِذَا الْبَقِيَ

में मुश्किल न डालो फिर दोनों चले यहां तक कि जब एक लड़का

غُلَامًا فَقَتَلَهُ قَالَ أَقْتَلْتُ نَفْسًا زَكِيَّةً بِغَيْرِ

मिला उस बन्दे ने उसे क़त्ल कर दिया मूसा ने कहा क्या तुम ने एक सुथरी जान बे किसी

نَفْسٍ ۝٤٤ لَقَدْ جِئْتَ شَيْئًا نُكْرًا ۝

जान के बदले क़त्ल कर दी बेशक तुम ने बहुत बुरी बात की

قَالَ الْمَاقِلُ لَكَ إِنَّكَ لَنْ تَسْتَطِيعَ مَعِيَ

कहा मैं ने आप से न कहा था कि आप हरगिज मेरे साथ न ठहर

صَبْرًا ۖ قَالَ إِنَّ سَأَلْتُكَ عَنْ شَيْءٍ بَعْدَ هَٰذَا فَلَا

सकेगे कहा इस के बा'द मैं तुम से कुछ पूछूं तो फिर मेरे साथ न रहना

تُصَحِّبُنِي ۚ قَدْ يَلُغَتْ مِنْ لَدُنِّي عُذْرًا ۖ فَانْطَلَقَا

बेशक मेरी तरफ से तुम्हारा उज़्र पुरा हो चुका फिर दोनों चले

حَتَّىٰ إِذَا آتَىٰ أَهْلَ قَرْيَةٍ اسْتَطْعَمَا أَهْلُهَا فَأَبَوْا أَنْ

यहां तक कि जब एक गाड़ वालों के पास आए उन दहकानों से खाना मांगा

يُخَيِّفُوهُمَا فَوَجَدَا فِيهَا جِدَارًا يُرِيدُ أَنْ يَنْقَضَ

तो उन्होंने ने उन्हें दा'वत देनी कबूल न की फिर दोनों ने उस गाड़ में एक दीवार पाई कि

فَأَقَامَهُ ۚ قَالَ لَوْ شِئْتَ لَتَّخَذْتَ عَلَيْهِ أَجْرًا ۖ قَالَ

गिरा चाहती है उस बन्दे ने उसे सीधा कर दिया मूसा ने कहा तुम चाहते तो इस पर कुछ मजदूरी ले लेते कहा यह

هَٰذَا افِرَاقٌ بَيْنِي وَبَيْنِكَ ۚ سَأَتَّبِعُكِ بِمَا وُئِلَ مَا لَمْ

मेरी और आप की जुदाई है अब मैं आप को उन बातों का फैर बताऊंगा जिन पर आप से

تَسْتَطِيعَ عَلَيْهِ صَبْرًا ۖ أَمَّا السَّفِينَةُ فَكَانَتْ لِمَسْكِينٍ

सब्र न हो सका वोह जो कश्ती थी वोह कुछ मोहताजों की थी कि दरिया में

يَعْمَلُونَ فِي الْبُحْرِ فَارَدْتِ أُنْ أَعِيْبَهَا وَكَانَ وَرَاءَهُمْ

काम करते थे तो मैं ने चाहा कि उसे ऐबदार कर दूं और उन के पीछे एक बादशाह

مَلِكٌ يَأْخُذُ كُلَّ سَفِينَةٍ غَصْبًا ۝۵۷ وَأَمَّا الْعَلَمَ فَكَانَ

था कि हर साबित कश्ती ज़बर दस्ती छीन लेता और वोह जो लड़का था

أَبُوهُ مُؤْمِنِينَ فَخَشِينَا أَنْ يُرْهِقَهُمَا طُغْيَانًا

उस के मां बाप मुसल्मान थे तो हमें डर हुवा कि वोह उन को सरकशी और कुफ़्र

وَكُفْرًا ۝۵۸ فَأَرَدْنَا أَنْ يُبْدِلَهُمَا رَبُّهُمَا خَيْرًا مِّنْهُ زَكَاةً

पर चढ़ा दे तो हम ने चाहा कि उन दोनों का रब उस से बेहतर सुथरा और उस से

وَأَقْرَبَ رَحْمًا ۝۵۹ وَأَمَّا الْجِدَارُ فَكَانَ لِغُلَامَيْنِ يَتِيمَيْنِ

जियादा मेहरबानी में करीब अता करे रही वोह दीवार वोह शहर के दो यतीम लड़कों की थी

فِي الْمَدِينَةِ وَكَانَ تَحْتَهُ كَنْزٌ لَهُمَا وَكَانَ أَبُوهُمَا

और उस के नीचे उन का खज़ाना था और उन का बाप नेक आदमी था तो आप के रब

صَالِحًا ۝۶۰ فَأَرَادَ رَبُّكَ أَنْ يَبْلُغَا أَشُدَّهُمَا وَيُخْرِجَا

ने चाहा कि वोह दोनों अपनी जवानी को पहुंचें और अपना खज़ाना निकालें

كَنْزَهُمَا ۝۶۱ رَحْمَةً مِّنْ رَبِّكَ ۝ وَمَا فَعَلْتُهُ عَنْ أَمْرِي ۝

आप के रब की रहमत से और येह कुछ मैं ने अपने हुक्म से न किया येह फैर है

ذَلِكَ تَأْوِيلُ مَا لَمْ تَسْطِعْ عَلَيْهِ صَبْرًا ۝۶۲ وَيَسْأَلُكَ

उन बातों का जिस पर आप से सब्र न हो सका और तुम से

عَنْ ذِي الْقُرَيْنَيْنِ قُلْ سَأَتْلُو عَلَيْكُمْ مِنْهُ ذِكْرًا ۝

जुल करनैन को पूछते हैं तुम फ़रमाओ मैं तुम्हें इस का मज़कूर पढ़ कर सुनाता हूँ

إِنَّا مَكْنَتَاهُ فِي الْأَرْضِ وَآتَيْنَاهُ مِنْ كُلِّ شَيْءٍ سَبَبًا ۝

बेशक हम ने उसे ज़मीन में काबू दिया और हर चीज़ का एक सामान अता फ़रमाया

فَاتَّبَعْ سَبَبًا ۝ حَتَّىٰ إِذَا بَلَغَ مَغْرِبَ الشَّمْسِ وَجَدَهَا ۝

तो वोह एक सामान के पीछे चला यहां तक कि जब सूरज डूबने की जगह पहुंचा उसे

تَغْرُبُ فِي عَيْنٍ حَمِئَةٍ وَوَجَدَ عِنْدَهَا قَوْمًا قُلْنَا

एक सियाह कीचड़ के चश्मे में डूबता पाया और वहां एक कौम मिली हम ने

يَذَا الْقُرَيْنَيْنِ إِمَّا أَنْ تَعَذِّبَ وَإِمَّا أَنْ تَتَّخِذَ فِيهِمْ حُسْنًا ۝

फ़रमाया ऐ जुल करनैन या तो तू उन्हें सज़ा दे या उन के साथ भलाई इस्ज़ितयार करे

قَالَ أَمَّا مَنْ ظَلَمَ فَسَوْفَ نَعَذِّبُهُ ثُمَّ يُرَدُّ إِلَىٰ رَبِّهِ ۝

अर्ज की, कि वोह जिस ने जुल्म किया उसे तो हम अन्करीब सज़ा देंगे फिर अपने रब की तरफ़

فَيُعَذِّبُهُ عَذَابًا نَكِرًا ۝ وَإِمَّا مَنْ آمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا

फैरा जाएगा वोह उसे बुरी मार देगा और जो ईमान लाया और नेक काम किया तो उस

فَلَهُ جَزَاءُ الْحُسْنَىٰ ۖ وَسَنَقُولُ لَهُ مِنْ أَمْرٍ أَيْسَرًا ۝

का बदला भलाई है और अन्करीब हम उसे आसान काम कहेंगे

ثُمَّ اتَّبَعَ سَبِيلًا ۝ حَتَّىٰ إِذَا بَلَغَ مَطْلِعَ الشَّمْسِ وَجَدَهَا

फिर एक सामान के पीछे चला यहां तक कि जब सूरज निकलने की जगह पहुंचा उसे ऐसी कौम

تَطْلُعُ عَلَىٰ قَوْمٍ لَّمْ نَجْعَلْ لَهُم مِّن دُونِهَا سِتْرًا ۝

पर निकलता पाया जिन के लिये हम ने सूरज से कोई आड़ नहीं रखी

كَذَٰلِكَ ۖ وَقَدْ أَحَطْنَا بِمَا لَدَيْهِ خُبْرًا ۝ ثُمَّ اتَّبَعَ سَبِيلًا ۝

बात येही है और जो कुछ उस के पास था सब को हमारा इल्म मुहीत है फिर एक सामान के

حَتَّىٰ إِذَا بَلَغَ بَيْنَ السَّدَّيْنِ وَجَدَ مِنْ دُونِهِمَا قَوْمًا

पीछे चला यहां तक कि जब दो पहाड़ों के बीच पहुंचा उन से इधर कुछ ऐसे लोग

لَا يَكَادُونَ يُفْقَهُونَ قَوْلًا ۝ قَالَ أُولَٰئِكَ الْقَرَيْنَيْنِ مِن

पाए कि कोई बात समझते मा'लूम न होते थे उन्होंने ने कहा ऐ जुल करनैन बेशक

يَا جُوجُ وَمَا جُوجُ مُفْسِدُونَ فِي الْأَرْضِ فَهَلْ نَجْعَلُ

याजूज व माजूज ज़मीन में फ़साद मचाते हैं तो क्या हम आप के लिये कुछ माल मुक़रर कर दें

لَكَ خَرْجًا عَلَىٰ أَنْ نَجْعَلَ بَيْنَنَا وَبَيْنَهُمْ سَدًّا ۝ قَالَ مَا

इस पर कि आप हम में और उन में एक दीवार बना दें कहा वोह जिस पर

مَكَّنِّي فِيهِ رَبِّي خَيْرٌ فَأَعِينُونِي بِقُوَّةٍ أَجْعَلْ بَيْنَكُمْ

मुझे मेरे रब ने काबू दिया है बेहतर है तो मेरी मदद ताक़त से करो मैं तुम में

وَبَيْنَهُمْ رَدْمًا ۚ أَتُونِي زُرَّاءَ الْحَدِيدِ ۖ حَتَّىٰ إِذَا سَاوَىٰ بَيْنَ

और उन में एक मज्बूत आड़ बना दूं मेरे पास लौह के तख्ते लाओ यहां तक कि वोह जब

الصَّادِفِينَ قَالَ انْفِخُوا حَتَّىٰ إِذَا جَعَلَهُ نَارًا ۖ قَالَ

दीवार दोनों पहाड़ों के कनारों से बराबर कर दी कहा धोंको यहां तक कि जब उसे आग कर दिया

أَتُونِي ۖ أفرغ عليه قطرا ۚ فَمَا اسْتَطَاعُوا أَنْ يَظْهَرُوهُ

कहा लाओ मैं इस पर गला हुवा तांबा उंडेल दूं तो याजूज व माजूज इस पर न चढ़ सके

وَمَا اسْتَطَاعُوا لَهُ تَقْبًا ۚ قَالَ هَذَا رَحْمَةٌ مِنِّي ۖ

और न इस में सूराख कर सके कहा येह मेरे रब की रहमत है फिर जब

فَإِذَا جَاءَ وَعْدُ رَبِّي جَعَلَهُ دَكَّاءَ ۚ وَكَانَ وَعْدُ رَبِّي

मेरे रब का वा'दा आएगा इसे पाश पाश कर देगा और मेरे रब का वा'दा

حَقًّا ۚ وَتَرْكْنَا بَعْضُهُمْ يَوْمَئِذٍ يَبُوجُ فِي بَعْضٍ ۚ وَ

सच्चा है और उस दिन हम उन्हें छोड़ देंगे कि उन का एक गुरौह दूसरे पर

نُفِخَ فِي الصُّورِ ۖ فَجَمَعْنَاهُمْ جُمُعًا ۚ وَعَرْضْنَا جَهَنَّمَ

रेला देगा और सूर फूँका जाएगा तो हम उन सब को इकट्ठा कर लाएंगे और हम उस दिन

يَوْمَئِذٍ لِلْكَافِرِينَ عَرْضًا ۚ الَّذِينَ كَانَتْ أَعْيُنُهُمْ

जहन्नम काफिरों के सामने लाएंगे वोह जिन की आंखों पर मेरी याद से पर्दा

فِي غَطَاءٍ عَنْ ذِكْرِي وَكَأَنَّهُ لَا يَسْتَطِيعُونَ سَمْعًا ۝

पड़ा था और हक बात सुन न सकते थे

أَفَحَسِبَ الَّذِينَ كَفَرُوا أَنْ يَتَّخِذُوا عِبَادِي مِنْ

तो क्या काफिर येह समझे हैं कि मेरे बन्दों को मेरे सिवा हिमायती बना लेंगे बेशक हम ने

دُونِي أَوْلِيَآءَ إِنَّا أَعْتَدْنَا لَهُمْ لِلْكَفَرِينَ نُزُلًا ۝

काफिरो की मेहमानी को जहन्नम तय्यार कर रखी है

قُلْ هَلْ نُنَبِّئُكُمْ بِالْأَخْسَرِينَ أَعْمَالًا ۝ الَّذِينَ

तुम फरमाओ क्या हम तुम्हें बता दें कि सब से बड़ कर नाकिस अमल किन के हैं उन

ضَلَّ سَعْيُهُمْ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَهُمْ يَحْسَبُونَ

के जिन की सारी कोशिश दुन्या की जिन्दगी में गुम गई और वोह इस खयाल में हैं

أَنَّهُمْ يُحْسِنُونَ صُنْعًا ۝ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ كَفَرُوا بِآيَاتِ

कि हम अच्छा काम कर रहे हैं येह लोग हैं जिन्हों ने अपने रब की आयतें

رَبِّهِمْ وَلِقَائِهِ فَجَبَّتْ أَعْمَالُهُمْ فَلَا نُقِيمُ لَهُمْ

और उस का मिलना न माना तो उन का किया धरा सब अकारत है तो हम उन के लिये कियामत

يَوْمَ الْقِيَامَةِ وَزَنَّا ۝ ذَلِكَ جزَاءُ وَهُمْ جَهَنَّمُ بِمَا كَفَرُوا

के दिन कोई तोल न काइम करेंगे येह उन का बदला है जहन्नम इस पर कि उन्होंने ने कुफ़ किया और

وَاتَّخَذُوا آيَاتِي وَرُسُلِي هُزُوًا ۝ إِنَّ الَّذِينَ

मेरी आयतों और मेरे रसूलों की हंसी बनाई बेशक जो ईमान लाए

أَمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ كَانَتْ لَهُمْ جَنَّاتُ

और अच्छे काम किये फिरदौस के बाग़

الْفِرْدَوْسِ نُزُلًا ۝ خَالِدِينَ فِيهَا لَا يَبْغُونَ

उन की मोहमानी है वोह हमेशा उन में रहेंगे उन से

عَنْهَا حَوْلًا ۝ قُلْ لَوْ كَانَ الْبَحْرُ مَدَادًا لَّكَلِمَتِ

जगह बदलना न चाहेंगे तुम फ़रमा दो अगर समुन्दर मेरे रब की बातों के लिये सियाही

رَبِّي لَنَفْعِدَ الْبَحْرَ قَبْلَ أَنْ تَنْفَعَكِلِمَتِ رَبِّي

हो तो ज़रूर समुन्दर ख़त्म हो जाएगा और मेरे रब की बातें ख़त्म न होंगी अगर्वें हम

وَلَوْ جُنَّا بِمِثْلِهِ مَدَدًا ۝ قُلْ إِنَّمَا أَنَا

वैसा ही और उस की मदद को ले आएं तुम फ़रमाओ ज़ाहिर सूरते ब-शरी में

بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ يُوحَىٰ إِلَىٰ أَنَّمَا إِلَهُ الْكَوْمِ إِلَهُ وَاحِدٌ

तो मैं तुम जैसा हूं मुझे वहुय आती है कि तुम्हारा मा'बूद एक ही मा'बूद है तो जिसे

فَمَنْ كَانَ يَرْجُوا لِقَاءَ رَبِّهِ فَلْيَعْمَلْ عَمَلًا صَالِحًا

अपने रब से मिलने की उम्मीद हो उसे चाहिये कि नेक काम करे



# وَلَا يُشْرِكْ بِعِبَادَةِ رَبِّهِ أَحَدًا ۝

और अपने रब की बन्दगी में किसी को शरीक न करे

## “फ़त्ह” के तीन हुस्नफ की निश्चत से सूरह फ़त्ह के 3 फ़ज़ाइल

(1) हुदैबिया से वापसी में मक्कए मुकर्रमा और मदीनए मुनव्वरह के रास्ते में इस सूरत का नुज़ूल हुवा। जब येह सूरत नाज़िल हुई तो नबिय्ये करीम, रऊफुर्रहीम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने फ़रमाया : आज रात मुझ पर एक ऐसी सूरत नाज़िल हुई जो मुझे दुन्या की हर चीज़ से ज़ियादा प्यारी है।

(صَحِيحُ الْبُخَارِيِّ كِتَابُ التَّفْسِيرِ الْحَدِيثُ ٤٨٣٣ ج ٣ ص ٣٢٨)

(2) जिस वक़्त र-मज़ान शरीफ़ का चांद देखा जाए तो सूरए फ़त्ह को तीन बार पढ़ने से तमाम साल रिज़्क में फ़राख़ी होती है। क़शती में सुवार होते वक़्त पढ़ने से ग़र्क़ होने से मामून रहता है। जिदाल और क़िताल के वक़्त लिख कर पास रखने से हिफ़ाज़त होती है।

(जन्ती ज़ेवर, स. 596)

(3) दुश्मनों पर फ़त्ह पाने के लिये इस को 21 मर्तबा पढ़िये अगर र-मज़ान का चांद देख कर उस के सामने पढ़ा जाए तो إِنَّ شَاءَ اللهُ तَعَالَى साल भर अम्न रहेगा।

(जन्ती ज़ेवर, स. 596)

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरबान रहमत वाला

إِنَّا فَتَحْنَا لَكَ فَتْحًا مُبِينًا ۝ لِيُغْفِرَ لَكَ اللَّهُ مَا تَقَدَّمَ

बेशक हम ने तुम्हारे लिये रोशन फ़त्ह फ़रमा दी ताकि अल्लाह तुम्हारे सबब से गुनाह बख़्शे तुम्हारे अगलों

مِنْ ذُنُوبِكُمْ وَمَا تَأَخَّرُ وَيُتِمَّ نِعْمَتَهُ عَلَيْكَ وَيَهْدِيكَ

के और तुम्हारे पिछलों के और अपनी ने'मते तुम पर तमाम कर दे और तुम्हें सीधी राह

صِرَاطًا مُسْتَقِيمًا ۝ وَيُبْصِرْكَ اللَّهُ نَصْرًا عَزِيزًا ۝

दिखा दे और अल्लाह तुम्हारी ज़बर दस्त मदद फ़रमाए

هُوَ الَّذِي أَنْزَلَ السَّكِينَةَ فِي قُلُوبِ الْمُؤْمِنِينَ

वोही है जिस ने ईमान वालों के दिलों में इत्मीनान उतारा

لِيُزَادُوا الْإِيمَانًا مَعَ إِيمَانِهِمْ وَلِلَّهِ جُنُودُ السَّمَوَاتِ

ताकि उन्हें यकीन पर यकीन बढ़े और अल्लाह ही की मिल्क हैं तमाम लश्कर आस्मानों

وَالْأَرْضِ وَكَانَ اللَّهُ عَلِيمًا حَكِيمًا ۝ لِيُدْخَلَ

और ज़मीन के और अल्लाह इल्मो ह्किमत वाला है ताकि ईमान वाले

الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ بَحَثٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا

मर्दों और ईमान वाली औरतों को बागों में ले जाए जिन के नीचे नहरें रवां हमेशा उन में

الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا وَيُكَفِّرُ عَنْهُمْ سَيِّئَاتِهِمْ وَكَانَ

रहें और उन की बुराइयां उन से उतार दे और यह अल्लाह के यहां

ذَلِكَ عِنْدَ اللَّهِ قُوْرًا عَظِيمًا ۝ وَيُعَذِّبُ الْمُنْفِقِينَ

बड़ी काम्याबी है और अज़ाब दे मुनाफ़िक मर्दों

وَالنَّفَقَاتِ وَالْمُشْرِكِينَ وَالْمُشْرِكَةِ الظَّالِمِينَ

और मुनाफ़िक औरतों और मुशरिक मर्दों और मुशरिक औरतों को जो अल्लाह पर बुरा

بِاللَّهِ ظَنَ السَّوْءِ عَلَيْهِمْ دَائِرَةُ السَّوْءِ وَغَضِبَ

गुमान रखते हैं उन्हीं पर है बुरी गरदिश और अल्लाह

اللَّهُ عَلَيْهِمْ وَلَعَنَهُمْ وَأَعَدَّ لَهُمْ جَهَنَّمَ وَسَاءَتْ

ने उन पर ग़ज़ब फ़रमाया और उन्हें ला'नत की और उन के लिये ज़हन्म तय्यार फ़रमाया और वोह क्या ही

مَصِيرًا ⑥ وَلِلَّهِ جُنُودُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَكَانَ

बुरा अन्जाम है और अल्लाह ही की मिल्क हैं आस्मानों और ज़मीन के सब लश्कर और अल्लाह

اللَّهُ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ④ إِنَّا أَرْسَلْنَاكَ شَاهِدًا وَبَشِيرًا

इज़्ज़त व हिकमत वाला है बेशक हम ने तुम्हें भेजा हाज़िर व नाज़िर और खुशी और

وَنَذِيرًا ⑧ لَتُؤْمِنُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ وَتُعَزِّرُوهُ وَ

डर सुनाता ताकि ऐ लोगो तुम अल्लाह और उस के रसूल पर ईमान लाओ और रसूल की ता'ज़ीम व तौकीर

تُوَقِّرُوهُ وَتُسَبِّحُوهُ بُكْرَةً وَأَصِيلًا ⑨ إِنَّ الَّذِينَ

करो और सुब्ह व शाम अल्लाह की पाकी बोलो वोह जो तुम्हारी बैअत

يُبَايِعُونَكَ إِنَّمَا يُبَايِعُونَ اللَّهَ يَدُ اللَّهِ فَوْقَ

करते हैं वोह तो अल्लाह ही से बैअत करते हैं उन के हाथों पर अल्लाह का हाथ है

أَيُّدِيهِمْ فَتَنُّكَ فَإِنَّا يَبُيِّتُكَ عَلَى نَفْسِهِ

तो जिस ने अहद तोड़ा उस ने अपने बड़े अहद को तोड़ा और जिस ने पूरा किया

وَمَنْ أَوْفَى بِمَا عَاهَدَ عَلَيْهِ اللَّهُ فَمِيسُوتُهُ أَجْرًا

वोह अहद जो उस ने अल्लाह से किया था तो बहुत जल्द अल्लाह उसे बड़ा सवाब

عَظِيمًا ۖ سَيَقُولُ لَكَ الْمُخَلَّفُونَ مِنَ الْأَعْرَابِ

देगा अब तुम से कहेंगे जो गंवार पीछे रह गए थे कि हमें

شَغَلْنَا أَمْوَالَنَا وَهَلُونَا فَاسْتَغْفِرْ لَنَا يَقُولُونَ

हमारे माल और हमारे घर वालों ने जाने से मशगूल रखा अब हुजूर हमारी

بِالسِّنْتِهِمْ مَا لَيْسَ فِي قُلُوبِهِمْ قُلْ فَتَنُّ يَبِيَّاكَ

मग़िफ़रत चाहें अपनी ज़बानों से वोह बात कहते हैं जो उन के दिलों में नहीं तुम फ़रमाओ तो

لَكُمْ مِّنَ اللَّهِ شَيْئًا إِنْ أَرَادَ بِكُمْ ضَرًّا أَوْ أَرَادَ

अल्लाह के सामने कैसे तुम्हारा कुछ इख़्तियार है अगर वोह तुम्हारा बुरा चाहे या तुम्हारी भलाई

بِكُمْ نَفْعًا بَلْ كَانَ اللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرًا ۖ بَلْ

का इरादा फ़रमाए बल्कि अल्लाह को तुम्हारे कामों की ख़बर है बल्कि तुम तो

ظَنَنْتُمْ أَن لَّنْ يَتَّقِلَ الرِّسُولُ وَالْمُؤْمِنُونَ

येह समझे हुए थे कि रसूल और मुसलमान हरगिज़ घरों को वापस न आएंगे और इसी को अपने दिलों

إِلَىٰ أَهْلِيهِمْ أَبَدًا وَزُيِّنَ ذَٰلِكَ فِي قُلُوبِكُمْ وَظَنُّمُ

में भला समझे हुए थे और तुम ने बुरा गुमान किया

ظَنَّ السَّوْءَ وَكُنْتُمْ قَوْمًا بُورًا ⑫ وَمَنْ لَّمْ يُوْمِنْ

और तुम हलाक होने वाले लोग थे और जो ईमान न लाए

بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ فَإِنَّا أَعْتَدْنَا لِلْكَافِرِينَ سَعِيرًا ⑬

अल्लाह और उस के रसूल पर तो बेशक हम ने काफ़ि़रों के लिये भड़कती आग तय्यार कर रखी है

وَلِلَّهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ يُغْفِرُ لِمَنْ يَّشَآءُ

और अल्लाह ही के लिये है आस्मानों और ज़मीन की सल्तनत जिसे चाहे बख़्शे

وَيُعَذِّبُ مَنْ يَّشَآءُ وَكَانَ اللّٰهُ غَفُورًا رَّحِيْمًا ⑭

और जिसे चाहे अज़ाब करे और अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है

سَيَقُولُ الْمُخَلَّفُونَ إِذَا انطَلَقْتُمْ إِلَىٰ مَغَآئِمِ

अब कहेंगे पीछे बैठ रहने वाले जब तुम ग़नीमतें लेने चलो तो

لِنَأْخُذْ بِهَا ذُرُوءَنَا تَتَّبِعُكُمْ يَرِيدُونَ أَن

हमें भी अपने पीछे आने दो वोह चाहते हैं अल्लाह का कलाम

يُبَيِّنَ لَكُمْ اللّٰهُ قُلُوبُ لَنْ تَتَّبِعُونَا كَذٰلِكُمْ قَالَ

बदल दें तुम फ़रमाओ हरगिज़ तुम हमारे साथ न आओ अल्लाह ने पहले

اللَّهُ مِنْ قَبْلُ فَسَيَقُولُونَ بَلْ تَحْسُدُ عَلَيْنَا يَا بَل

से यूँही फरमा दिया है तो अब कहेंगे बल्कि तुम हम से जलते हो बल्कि वोह बात

كَانُوا لَا يَفْقَهُونَ إِلَّا قَلِيلًا ٥٥ قُلْ لِلْمُخَلَّفِينَ مِنْ

न समझते थे मगर थोड़ी उन पीछे रह गए हुए गंवारों से

الْأَعْرَابِ سَتُدْعُونَ إِلَى قَوْمٍ أُولَىٰ بِأَسْ شَدِيدِ

फरमाओ अन्करीब तुम एक सख्त लड़ाई वाली कौम की तरफ बुलाए जाओगे कि उन से

تُقَاتِلُونَهُمْ أَوْ يُسْلِمُونَ ٥٦ فَإِنْ تُطِيعُوا يُؤْتِكُمُ اللَّهُ

लड़ो या वोह मुसल्मान हो जाएं फिर अगर तुम फरमान मानोगे अल्लाह तुम्हें अच्छा सवाब

أَجْرًا حَسَنًا وَإِنْ تَتَوَلَّوْا كَبَا تَوَلَّيْتُمْ ٥٧ مِنْ قَبْلُ

देगा और अगर फिर जाओगे जैसे पहले फिर गए तो तुम्हें

يُعَذِّبُكُمْ عَذَابًا أَلِيمًا ٥٨ لَيْسَ عَلَى الْأَعْمَىٰ حَرَجٌ

दर्दनाक अज़ाब देगा अन्धे पर तंगी नहीं और न

وَلَا عَلَى الْأَعْرَجِ حَرَجٌ وَلَا عَلَى الْمَرِيضِ حَرَجٌ وَمَنْ

लंगड़े पर मुज़ा-यका और न बीमार पर मुवा-खज़ा और जो अल्लाह

يُطِيعِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ يُدْخِلْهُ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا

और उस के रसूल का हुक्म माने अल्लाह उसे बागों में ले जाएगा

الْأَنهَرُ وَمَنْ يَتَوَلَّ يُعَذِّبْهُ عَذَابًا أَلِيمًا ۝۱۷ لَقَدْ

जिन के नीचे नहरें रवां हैं और जो फिर जाएगा उसे दर्दनाक अज़ाब फ़रमाएगा बेशक

رَضِيَ اللَّهُ عَنِ الْمُؤْمِنِينَ إِذْ يُبَايِعُونَكَ تَحْتَ

अल्लाह राजी हुवा ईमान वालों से जब वोह उस पेड़ के नीचे तुम्हारी

الشَّجَرَةِ فَعَلِمَ مَا فِي قُلُوبِهِمْ فَأَنْزَلَ السَّكِينَةَ عَلَيْهِمْ

बैअत करते थे तो अल्लाह ने जाना जो उन के दिलों में है तो उन पर इत्मीनान

وَأَثَابَهُمْ فَتْحًا قَرِيبًا ۝۱۸ وَمَغَانِمَ كَثِيرَةً يَأْخُذُونَهَا

उतारा और उन्हें जल्द आने वाली फ़तह का इन्आम दिया और बहुत सी ग़नीमतें जिन को लें और अल्लाह

وَكَانَ اللَّهُ عَزِيزًا حَكِيمًا ۝۱۹ وَعَدَ اللَّهُ مَغَانِمَ

इज़्ज़त व हिक्मत वाला है और अल्लाह ने तुम से वा'दा किया है

كَثِيرَةً يَأْخُذُونَهَا فَجَعَلَ لَكُمْ هَذِهِ وَيُغْفِرُ لَكُمْ

बहुत सी ग़नीमतों का कि तुम लोगे तो तुम्हें यह जल्द अता फ़रमा दी और लोगों के

النَّاسِ عَنْكُمْ وَلِتَكُونَ آيَةً لِلْمُؤْمِنِينَ وَيُغْفِرَ لَكُمْ

हाथ तुम से रोक दिये और इस लिये कि ईमान वालों के लिये निशानी

صِرَاطًا مُسْتَقِيمًا ۝۲۰ وَأُخْرَى لَمْ تَقْدِرُوا عَلَيْهَا قَدْ

हो और तुम्हें सीधी राह दिखावे और एक और जो तुम्हारे बल की न थी वोह अल्लाह

أَحَاطَ اللَّهُ بِهَا وَكَانَ اللَّهُ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرًا ۝ وَلَوْ

के कब्जे में है और अल्लाह हर चीज पर कादिर है और अगर

فَاتَكُمْ الَّذِينَ كَفَرُوا وَلَوْ أَدْبَارْتُمْ لَا يَجِدُونَ

काफिर तुम से लड़ें तो जरूर तुम्हारे मुक़ाबले से पीठ फैर देंगे फिर कोई हिमायती न

وَلِيًّا وَلَا نَصِيرًا ۝ سُنَّةَ اللَّهِ الَّتِي قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلُ

पाएंगे न मददगार अल्लाह का दस्तूर है कि पहले से चला आता है और हरगिज़ तुम अल्लाह

وَلَنْ تَجِدَ لِسُنَّةِ اللَّهِ تَبْدِيلًا ۝ وَهُوَ الَّذِي كَفَّ أَيْدِيَهُمْ

का दस्तूर बदलता न पाओगे और वोही है जिस ने उन के हाथ

عَنْكُمْ وَأَيْدِيَكُمْ عَنْهُمْ بِبَطْنِ مَكَّةَ مِنْ بَعْدِ أَنْ أَظْفَرَكُمْ

तुम से रोक दिये और तुम्हारे हाथ उन से रोक दिये वादिये मक्का में बा'द इस के

عَلَيْهِمْ وَكَانَ اللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرًا ۝ هُمُ الَّذِينَ

कि तुम्हें उन पर काबू दे दिया था और अल्लाह तुम्हारे काम देखता है वोह है

كَفَرُوا وَصَدُّوكُمْ عَنِ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ وَالْهَدْيِ

जिन्होंने ने कुफ़ किया और तुम्हें मस्जिद ह़राम से रोका और कुरबानी के जानवर रुके पड़े

مَعَكُمْ فَإِنْ تَبْلُغْ مَحَلَّهُ وَلَوْ لَرَجَالَ مُؤْمِنُونَ

अपनी जगह पहुंचने से और अगर येह न होता कुछ मुसल्मान मर्द



وَنِسَاءً مُّؤْمِنَاتٍ لَّمْ يَعْلَمُوهُمُ إِن تَطَّوَّهُمْ قُصِّيبُكُمْ

और कुछ मुसलमान औरतें जिन की तुम्हें खबर नहीं कहीं तुम उन्हें रौंद डालो तो तुम्हें उन की तरफ से

مِّنْهُمْ مَّعْرَةٌ بَغَيْرِ عِلْمٍ لِّئَلَّا يَدْخُلَ اللَّهُ فِي رَحْمَتِهِ مَن

अज्ञानी में कोई मकरूह पहुंचे तो हम तुम्हें उन की क़िताल की इजाज़त देते उन का येह बचाव इस लिये है कि अल्लाह अपनी

يَنشَأُ لَوْ تَزَيَّلُوا لَعَذَّبْنَا الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْهُمْ عَذَابًا

रहमत में दाख़िल करे जिसे चाहे अगर वोह जुदा हो जाते तो हम ज़रूर इन में के काफ़ि़रों को दर्दनाक

إِلِيمًا ۖ إِذْ جَعَلَ الَّذِينَ كَفَرُوا فِي قُلُوبِهِمُ الْحَبِيَّةَ

अज़ाब देते जब कि काफ़ि़रों ने अपने दिलों में अड़ रखी वोही ज़मानए जाहिलिय्यत की अड़ तो अल्लाह ने

حَبِيَّةَ الْجَاهِلِيَّةِ فَأَنْزَلَ اللَّهُ سَكِينَتَهُ عَلَى رَسُولِهِ

अपना इत्मीनान अपने रसूल और ईमान वालों

وَعَلَى الْمُؤْمِنِينَ وَالزَّمَهُمْ كَلِمَةَ التَّقْوَىٰ وَكَانُوا

पर उतारा और परहेज़ गारी का कलिमा उन पर लाज़िम फ़रमाया और वोह इस

أَحَقَّ بِهَا وَأَهْلُهَا وَكَانَ اللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمًا ۝

के ज़ियादा सज़ावार और इस के अहल थे और अल्लाह सब कुछ जानता है

لَقَدْ صَدَقَ اللَّهُ رَسُولَهُ الرُّبُوبَ بِالْحَقِّ لَتَدْخُلُنَّ

बेशक अल्लाह ने सच कर दिया अपने रसूल का सच्चा ख़्बाब बेशक तुम ज़रूर

السُّجْدَ الْحَرَامِ إِنْ شَاءَ اللَّهُ آمِينَ مُحَلِّقِينَ

मस्जिदे हराम में दाखिल होंगे अगर अल्लाह चाहे अमन व अमान से अपने

رُءُوسَكُمْ وَمُقَصِّرِينَ لَا تَخَافُونَ فَعَلِمَ مَا لَمْ

सर्ों के बाल मुंडाते या तरशवाते बे खौफ तो उस ने जाना जो तुम्हें मा'लूम

تَعْلَمُوا فَجَعَلَ مِنْ دُونِ ذَلِكَ قَتْلًا قَرِيبًا ۝ هُوَ

नहीं तो इस से पहले एक नज़्दीक आने वाली फ़त्ह रखी वोही

الَّذِي أَرْسَلَ رَسُولَهُ بِالْهُدَىٰ وَدِينِ الْحَقِّ لِيُظْهِرَهُ

है जिस ने अपने रसूल को हिदायत और सच्चे दीन के साथ भेजा कि इसे

عَلَى الدِّينِ كُلِّهِ وَكَفَىٰ بِاللَّهِ شَهِيدًا ۝ مُحَمَّدٌ

सब दीनों पर ग़ालिब करे और अल्लाह काफ़ी है गवाह मुहम्मद अल्लाह

رَسُولُ اللَّهِ وَالَّذِينَ مَعَهُ أَشِدَّاءُ عَلَى الْكُفَّارِ

के रसूल हैं और इन के साथ वाले काफ़िरो' पर सख़्त हैं

رُحَمَاءُ بَيْنَهُمْ تَرَاهُمْ رُكَّعًا سُجَّدًا يَبْتَغُونَ فَضْلًا

और आपस में नर्म दिल तो उन्हें देखेगा रुकूअ करते सज्दे में

مِّنَ اللَّهِ وَرِضْوَانًا نَّيْسِبَاهُمْ فِي وُجُوهِهِمْ مِّن

गिरते अल्लाह का फ़ज़लो रिज़ा चाहते उन की अ़लामत उन के चेहरों में है

اٰتَرَ السُّجُوْدِ ذٰلِكَ مَثَلُهُمْ فِي التَّوْرَةِ وَمَثَلُهُمْ

सज्दों के निशान से यह उन की सिफ़त तौरेत में है और उन की सिफ़त

فِي الْاِنْجِيلِ كَزَرْعٍ اَخْرَجَ شَطَاةً فَازَرَهُ فَاسْتَغْلَظَ

इन्जील में जैसे एक खेती उस ने अपना पल्लु निकाला फिर उसे ताक़त दी फिर

فَاسْتَوَىٰ عَلَىٰ سَوْتِهِ يُغْجِبُ الرُّعَاةَ لِيُعْطِيَٰ بِهِمُ

दबीज़ हुई फिर अपनी साक़ फिर सीधी खड़ी हुई किसानों को भली लगती है ताकि उन से

الْكُفَّارُ وَعَدَ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ

काफ़िरों के दिल जलें अल्लाह ने वा'दा किया उन से जो इन में ईमान और अच्छे कामों वाले हैं

مِنْهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّاجْرٌ اَعْظِيْمًا

बख़्शिश और बड़े सवाब का

दिल में नूरे ईमान पाने का एक सबब

हृदीसे पाक में है, “जिस शख्स ने गुस्सा ज़ब्त कर लिया बा वुजूद इस के कि वोह गुस्सा नाफ़िज़ करने पर कुदरत रखता है **اَللّٰهُ** उस के दिल को सुकून व ईमान से भर देगा।

(الجامع الصغير للسيوطي ص ٥٤١ حديث ٨٩٩٧)

### हिक्वयत

किसी शख्स ने हज़रते सय्यिदुना सलमान फ़रसी رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ को गाली दी। उन्होंने ने फ़रमाया : “अगर बरोजे कियामत मेरे गुनाहों का पल्ला भारी है तो जो कुछ तुम ने कहा मैं उस से भी बदतर हूँ और अगर मेरा वोह पल्ला हलका है तो मुझे तुम्हारी गाली की कोई परवाह नहीं।”

(اتحاف السادة المتقين ج ٩ ص ٤١٦ دارالكتب العلمية بيروت)

### हिक्वयत

किसी शख्स ने सय्यिदुना शा'बी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ को गाली दी आप ने फ़रमाया : “अगर तू सच कहता है तो **अब्बाह** عَزَّوَجَلَّ मेरी मग़िफ़रत फ़रमाए और अगर तू झूट कहता है तो **अब्बाह** عَزَّوَجَلَّ तेरी मग़िफ़रत फ़रमाए।”

(احياء العلوم ج ٣ ص ٢١٢ دار صادر بيروت)

### म-दनी फूल

ऐ काश ! रोज़ी में कसरत की महबूबत के बदले हम नेकियों में ब-र-कत की हसरत करते और इस के लिये भी कोई विद करते।

## “दुआ” के तीन हुरफ़ की निश्चत से सूरए दुख़ान के 3 फ़जाइल

(1) सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जो किसी रात में सूरए दुख़ान पढ़ेगा तो सुबह होने तक सत्तर हज़ार फ़िरिश्ते उस के लिये दुआए मग़िफ़रत करते रहेंगे । (سُنَنِ التِّرْمِذِيِّ ج ٤ ص ٤٠٦ حديث ٢٨٩٧)

(2) नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जिस ने शबे जुमुआ में सूरए दुख़ान पढ़ी उस की मग़िफ़रत कर दी जाएगी । (سُنَنِ التِّرْمِذِيِّ ج ٤ ص ٤٠٧ حديث ٢٨٩٨)

(3) रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जो जुमुआ के दिन या रात में सूरए दुख़ान पढ़ेगा **اَللّٰهُ** जन्नत में उस के लिये एक घर बनाएगा । (اَلْمُعْجَمُ الْكَبِيرُ الْحَدِيثُ ٨٠٢٦ ج ٨ ص ٢٦٤)



بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ



अल्लाह के नाम से शुरूअ जो बहुत मेहरबान रहमत वाला

حَمْدٌ ۝ وَالْكِتَابِ الْمُبِیْنِ ۝ اِنَّا اَنْزَلْنٰهُ فِیْ لَیْلَةٍ

कसम इस रोशन किताब की बेशक हम ने इसे ब-र-कत वाली रात में  
مُبْرَكَةٍ ۝ اِنَّا كُنَّا مُنْذِرِیْنَ ۝ فِیْهَا یُفْرَقُ كُلُّ اَمْرٍ

उतारा बेशक हम डर सुनाने वाले हैं इस में बांट दिया जाता है हर हिकमत  
حَكِیْمٍ ۝ اَمْرًا مِّنْ عِنْدِنَا ۝ اِنَّا كُنَّا مُرْسِلِیْنَ ۝  
वाला काम हमारे पास के हुकम से बेशक हम भेजने वाले हैं

رَحْمَةً مِّن رَّبِّكَ إِنَّهُ هُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ٧

तुम्हारे रब की तरफ़ से रहमत बेशक वोही सुनता जानता है वोह जो

السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَبَلَّيْنَهُمَا إِنَّ كُنْتُمْ مُّوقِنِينَ ٨

रब है आस्मानों और ज़मीन का और जो कुछ उन के दरमियान है अगर तुम्हें यकीन हो

لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ يُحْيِي وَيُمِيتُ رَبُّكُمْ وَرَبُّ آبَائِكُمُ الْأَوَّلِينَ ٩

उस के सिवा किसी की बन्दगी नहीं वोह जिलाए और मारे तुम्हारा रब और तुम्हारे अगले बाप दादा का रब

بَلْ هُمْ فِي شَكٍّ يَلْعَبُونَ ١٠ فَارْتَقِبْ يَوْمَ تَأْتِي السَّمَاءُ

बल्कि वोह शक में पड़े खेल रहे हैं तो तुम उस दिन के मुन्तज़िर रहो जब आस्मान एक

بِدُخَانٍ مُّبِينٍ ١١ يَغْشَى النَّاسَ هَذَا عَذَابٌ أَلِيمٌ ١٢

ज़ाहिर धुवां लाएगा कि लोगों को ढांप लेगा येह है दर्दनाक अज़ाब

رَبَّنَا اكْشِفْ عَنَّا الْعَذَابَ إِنَّا مُؤْمِنُونَ ١٣ أَلَيْسَ لَهُمُ

उस दिन कहेंगे ऐ हमारे रब हम पर से अज़ाब खोल दे हम ईमान लाते हैं कहां से हो

الذِّكْرَى وَقَدْ جَاءَهُمْ رَسُولٌ مُّبِينٌ ١٤ ثُمَّ تَوَلَّوْا

उन्हें नसीहत मानना हलां कि उन के पास साफ़ बयान फ़रमाने वाला रसूल तशरीफ़ ला चुका फिर उस से

عَنْهُ وَقَالُوا مَعْلَمٌ مَّجْنُونٌ ١٥ إِنَّا كَاشِفُو الْعَذَابِ

रु गरदां हुए और बोले सिखाया हुआ दीवाना है हम कुछ दिनों को अज़ाब खोले देते

قَلِيلًا إِنَّكُمْ عَائِدُونَ ﴿١٥﴾ يَوْمَ يُطَّشُّ الْبُطْشَةُ الْكُبْرَىٰ

हैं तुम फिर वोही करोगे जिस दिन हम सब से बड़ी पकड़ पकड़ेगे

إِنَّا مُتَقَبُّونَ ﴿١٦﴾ وَلَقَدْ فَتَنَّا قَبْلَهُمْ قَوْمَ فِرْعَوْنَ

बेशक हम बदला लेने वाले हैं और बेशक हम ने उन से पहले फिरऔन की कौम को जांचा

وَجَاءَهُمْ رَسُولٌ كَرِيمٌ ﴿١٧﴾ أَنْ أَدُّوا إِلَيَّ عِبَادَ اللَّهِ

और उन के पास एक मुअज़्ज़ रसूल तशरीफ लाया कि अल्लाह के बन्दों को मुझे सिपुर्द कर दो

إِنِّي لَكُمْ رَسُولٌ أَمِينٌ ﴿١٨﴾ وَأَنْ لَا تَعْلُوا عَلَى اللَّهِ

बेशक मैं तुम्हारे लिये अमानत वाला रसूल हूं और अल्लाह के मुक़ाबिल सरकशी न करो मैं

إِنِّي أَنْتَبِكُمْ بِسُلْطَنِ مُبِينٍ ﴿١٩﴾ وَإِنِّي عَذْتُ بِرَبِّي

तुम्हारे पास एक रोशन सनद लाता हूं और मैं पनाह लेता हूं अपने रब और

وَرَبِّكُمْ أَنْ تَرْجُمُونِ ﴿٢٠﴾ وَإِنْ لَمْ تُؤْمِنُوا إِلَيَّ فَأَعْتَزِلُنِ ﴿٢١﴾

तुम्हारे रब की इस से कि तुम मुझे संसार करो और अगर तुम मेरा यक़ीन न लाओ तो मुझ से किनारे हो जाओ

فَدَعَا رَبَّهُ أَنَّ هَؤُلَاءِ قَوْمٌ مُّجْرِمُونَ ﴿٢٢﴾ فَأَسْرِ بِعِبَادِي

तो उस ने अपने रब से दुआ की, कि येह मुजरिम लोग हैं हम ने हुक्म फ़रमाया कि मेरे

لَيْلًا إِنَّكُمْ مُّسْتَبْعُونَ ﴿٢٣﴾ وَاتْرُكِ الْبَحْرَ هَؤُلَاءِ إِلَهُمْ جُنْدٌ

बन्दों को रातों रात ले निकल ज़रूर तुम्हारा पीछा किया जाएगा और दरिया को यूंही जगह जगह से

مُعْرِقُونَ ۝۲۸ كَمْ تَرَكُوا مِنْ جَنَّاتٍ وَعُيُونٍ ۝۲۹ وَزُرُوعٍ

खुला छोड़ दे बेशक वोह लश्कर डुबोया जाएगा कितने छोड़ गए बाग़ और चश्मे और खेत

وَمَقَامٍ كَرِيمٍ ۝۳۰ وَنَعْمَةً كَانُوا فِيهَا فَكَيْهِينَ ۝۳۱ كَذَلِكَ

और उम्दा मकानात और ने'मते जिन में फ़ारिगुल बाल थे हम ने यूंही

وَأَوْثَرُهَا قَوْمًا آخَرِينَ ۝۳۲ فَمَا بَكَتُ عَلَيْهِمُ السَّمَاءُ

किया और उन का वारिस दूसरी कौम को कर दिया तो उन पर आस्मान और ज़मीन न रोए और

وَالْأَرْضُ وَمَا كَانُوا مُنْظَرِينَ ۝۳۳ وَلَقَدْ بَعَجْنَا بَنِي

उन्हे मोहलत न दी गई और बेशक हम ने बनी इस्राईल

إِسْرَائِيلَ مِنَ الْعَذَابِ الْمُهِينِ ۝۳۴ مِنْ فُرْعُونَ إِنَّهُ

को ज़िल्लत के अज़ाब से नजात बख़शी फिरऔन से बेशक वोह

كَانَ عَلِيًّا مِنَ الْمُسْرِفِينَ ۝۳۵ وَلَقَدْ اخْتَرْتَهُمْ عَلَى

मु-तकब्बिर हद से बढ़ने वालों में से था और बेशक हम ने उन्हे

عِلْمٍ عَلَى الْعَالَمِينَ ۝۳۶ وَأَتَيْنَهُمْ مِنَ الْآيَاتِ مَا فِيهِ لَكُلٌّ

दानिस्ता चुन लिया उस ज़माने वालों से और हम ने उन्हे वोह निशानियां अता फ़रमाई

مُبِينٌ ۝۳۷ إِنَّ هَؤُلَاءِ لَيَقُولُونَ ۝۳۸ إِنَّ هِيَ إِلَّا أَمْوَاتُنَا

जिन में सरीह इन्आम था बेशक येह कहते हैं वोह तो नहीं मगर हमारा



الْأُولَى وَمَا نَحْنُ بِمُنْشَرِينَ ۝ فَاتُوا بِأَبَائِنَا إِن كُنْتُمْ

एक दफ़ा का मरना और हम उठाए न जाएंगे तो हमारे बाप दादा को ले आओ अगर

صِدِّيقِينَ ۝ أَهْمُ خَيْرًا قَوْمُ تَبَّعٍ ۖ وَالَّذِينَ مِنْ

तुम सच्चे हो क्या वोह बेहतर हैं या तुब्बअ की कौम और जो उन से पहले थे

قَبْلِهِمْ أَهْلُكُنْهُمْ اللَّهُمَّ كَانُوا أَجْرَمِينَ ۖ وَمَا خَلَقْنَا

हम ने उन्हें हलाक कर दिया बेशक वोह मुजरिम लोग थे और हम ने न बनाए

السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا الْعِینَ ۖ مَا خَلَقْنَا

आस्मान और ज़मीन और जो कुछ उन के दरमियान है खेल के तौर पर हम ने उन्हें

إِلَّا بِالْحَقِّ وَلَكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ۖ إِنَّ يَوْمَ

न बनाया मगर हक के साथ लेकिन उन में अक्सर जानते नहीं बेशक

الْفَصْلِ مِيقَاتِهِمْ أَجْمَعِينَ ۖ يَوْمَ لَا يُغْنِي مَوْلَى

फैसले का दिन उन सब की मीआद है जिस दिन कोई दोस्त किसी

عَنْ مَوْلَى شَيْئًا وَلَا هُمْ يُبْصَرُونَ ۖ إِلَّا مَنْ رَحِمَ

दोस्त के कुछ काम न आएगा और न उन की मदद होगी मगर जिस पर अल्लाह रहम

اللَّهُ إِنَّهُ هُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ۖ إِنَّ شَجَرَتَ الزُّقُومِ ۖ

करे बेशक वोही इज़्ज़त वाला मेहरबान है बेशक थूहड़ का पेड़

طَعَامُ الْأَثِيمِ ۖ كَالْمُهْلِ يَغْلِي فِي الْبُطُونِ ۖ

गुनाहगारों की ख़ूराक है गले हुए तांबे की तरह पेटों में जोश मारे

كَغَلَى الْحَمِيمِ ۖ خَذُوهُ فَاعْتَلُوهُ إِلَىٰ سَوَاءِ الْحَبِيمِ ۖ

जैसा खौलता पानी जोश मारे उसे पकड़ो ठीक भड़कती आग की तरफ़ बजोर घसीटते ले जाओ

ثُمَّ صُبُّوا فَوْقَ رَأْسِهِ مِنْ عَذَابِ الْحَمِيمِ ۖ ذُقْ إِنَّكَ

फिर उस के सर के ऊपर खौलते पानी का अज़ाब डालो चख हां हां

أَنْتَ الْعَزِيزُ الْكَرِيمُ ۖ إِنَّ هَذَا مَا كُنْتُمْ بِهِ تَمْتَرُونَ ۖ

तू ही बड़ा इज़्ज़त वाला करम वाला है बेशक यह है वोह जिस में तुम शुबा करते थे

إِنَّ الْمُتَّقِينَ فِي مَقَامٍ أَمِينٍ ۖ فِي جَنَّاتٍ وَعُيُونٍ ۖ

बेशक डर वाले अमान की जगह में हैं बागों और चशमों में

يَلْبَسُونَ مِنْ سُنْدُسٍ وَإِسْتَبْرَقٍ مُّتَقِيلِينَ ۖ

पहनेंगे करैब और क़नादीज़ आमने सामने

كَذَلِكَ وَزَوَّجْنَاهُمْ بِحُورٍ عِينٍ ۖ يَدْعُونَ فِيهَا

यूही है और हम ने उन्हें बियाह दिया निहायत सियाह और रोशन बड़ी आंखों वालियों से उस में हर

بِكُلِّ فَاكِهَةٍ آمِنِينَ ۖ لَا يَذُقُونَ فِيهَا

क़िस्म का मेवा मांगेंगे अम्नो अमान से इस में पहली मौत के सिवा

الْمَوْتَ إِلَّا الْمَوْتَ الْأُولَىٰ وَوَقَهُم عَذَابَ

फिर मौत न चखेंगे और अल्लाह ने उन्हें आग के अज़ाब से

الْجَحِيمِ ۖ فَضْلًا مِّن رَّبِّكَ ذَٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ

बचा लिया तुम्हारे रब के फ़ज़ल से येही बड़ी काम्याबी

الْعَظِيمِ ۝ فَإِنَّمَا يَسَّرْنَاهُ بِلِسَانِكَ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُونَ ۝

है तो हम ने इस कुरआन को तुम्हारी ज़बान में आसान किया कि वोह समझें

فَارْتَقِبْ إِنَّهُمْ مُّرْتَقِبُونَ ۝

तो तुम इन्तिज़ार करो वोह भी किसी इन्तिज़ार में हैं

“म-दुनी इब्आम” के नव हुरूफ़ की निश्बत से  
सूरह मुल्क के 9 फ़ज़ाइल

(1) हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है कि मालिके बहरो बर, हुस्ने अख़्लाक के पैकर, नबियों के ताजवर, महबूबे रब्बे अक्बर رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने फ़रमाया : “बेशक कुरआन में तीस आयतों पर मुश्तमिल एक सूरत है जो अपने कारी के लिये शफ़ाअत करती रहेगी यहां तक कि उस की मग़िफ़रत कर दी जाएगी और येह تَبَارَكَ الَّذِي بِيَدِهِ الْمُلْكُ है ।”

(سُنَنِ التِّرْمِذِيِّ حَدِيث ٢٩٠٠ ج ٤ ص ٤٠٨)

(2) हज़रते सय्यिदुना अनस رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है कि रहमते आलम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने फ़रमाया : कुरआने करीम में एक सूरत है जो अपने क़ारी के बारे में झगड़ा करेगी यहां तक कि उसे जन्नत में दाखिल करा देगी और वोह येही **सूरए मुल्क** है । (الدُّرُّ الْمَشْهُور ج ٨ ص ٢٣٣)

(3) हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाते हैं कि “जब बन्दा क़ब्र में जाएगा तो अज़ाब उस के क़दमों की जानिब से आएगा तो उस के क़दम कहेंगे तेरे लिये मेरी तरफ़ से कोई रास्ता नहीं क्यूं कि येह रात में **सूरए मुल्क** पढ़ा करता था, फिर अज़ाब उस के सीने या पेट की तरफ़ से आएगा तो वोह कहेगा कि तुम्हारे लिये मेरी जानिब से कोई **रास्ता** नहीं क्यूं कि येह रात में **सूरए मुल्क** पढ़ा करता था, फिर वोह उस के सर की तरफ़ से आएगा तो सर कहेगा कि तुम्हारे लिये मेरी तरफ़ से कोई **रास्ता** नही क्यूं कि येह रात में **सूरए मुल्क** पढ़ा करता था ।”

तो येह सूरत रोकने वाली है, अज़ाबे क़ब्र से रोकती है, तौरात में इस का नाम **सूरए मुल्क** है जो इसे रात में पढ़ता है बहुत ज़ियादा और अच्छा अमल करता है ।”

(الْمُسْتَدْرَكُ عَلَى الصَّحِيحَيْنِ حَدِيث ٣٨٩٢ ج ٣ ص ٣٢٢)

(4) हज़रते सय्यिदुना इब्ने अब्बास رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا फ़रमाते हैं कि एक सहाबी رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने एक क़ब्र पर अपना खैमा लगाया मगर उन्हें इल्म न था कि यहां क़ब्र है लेकिन बा'द में पता चला कि

वहां किसी शख्स की क़ब्र है जो **सूरए मुल्क** पढ़ रहा है और उस ने पूरी सूरत ख़त्म की वोह सहाबी رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ रहमते आलम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की बारगाह में हाज़िर हुए और अर्ज़ किया : “या रसूलल्लाह ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ मैं ने एक क़ब्र पर खैमा तान लिया मगर मुझे मा'लूम न था कि वहां क़ब्र है जब कि वहां एक ऐसे शख्स की क़ब्र है जो रोज़ाना पूरी सू-रतुल मुल्क पढ़ता है ।” तो रसूलुल्लाह صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने फ़रमाया : “येही रोकने वाली है, येही नजात दिलाने वाली है जिस ने उसे अज़ाबे क़ब्र से **महफूज़** रखा ।”

(سُنَنِ التِّرْمِذِيِّ حَدِيثٌ ٢٨٩٩ ج ٤ ص ٤٠٧)

(5) **हुज़ूरे अकरम** صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने आलीशान है कि मेरी **ख़्वाहिश** है कि **تَبَارَكَ الَّذِي بِيَدِهِ الْمُلْكُ** हर मोमिन के दिल में हो ।

(كُنُزُ الْعُمَالِ حَدِيثٌ ٢٦٤٥ ج ١ ص ٢٩١)

(6) चांद देख कर इस को पढ़ा जाए तो महीने के तीस दिनों तक वोह **सख़्तियों** से **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّ وَجَلَّ** महफूज़ रहेगा, इस लिये कि येह तीस आयतें है और तीस दिन के लिये **काफ़ी** हैं ।

(تَفْسِيرُ رُوحِ الْمَعَانِي سُوْرَةُ الْمَلِكِ ج ١ ص ٤)

(7) **हज़रते सय्यिदुना इब्ने अब्बास** رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا फ़रमाते हैं कि मीठे मीठे आका, मक्की म-दनी मुस्तफ़ा صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इर्शाद फ़रमाया : बेशक मैं कुरआन में 30 आयात की एक सूरत पाता हूं, जो शख्स सोते वक़्त इस (सूरत) की तिलावत करे, उस के लिये 30 नेकियां लिखी जाएंगी, और उस के 30 गुनाह मिटाए

जाएंगे, और उस के 30 द-रजात बुलन्द किये जाएंगे, अब्बाह रब्बुल इज्जत अपने फ़िरिश्तों में से एक फ़िरिश्ता उस की तरफ़ भेजेगा, ताकि वोह उस पर अपने पर बिछा दे और उस की हर चीज़ से जागने तक हिफ़ाज़त करे, और येह मुजा-दला (या'नी झगड़ा) करने वाली है, अपने पढ़ने वाले की मग़िफ़रत के लिये क़ब्र में झगड़ा करेगी, और येह تَبْرَكَ الَّذِي يَبْدِئُ الْمَسْكُوتِ है ।

(الدُّرُ الْمَشْهُورُ، ج ८، ص २३३)

(8) सरकारे मदीनए मुनव्वरह, सरदार मक्कए मुकर्रमा

रात को आराम फ़रमाने से पहले सू-रतुल मुल्क और السّجدة तिलावत फ़रमाते थे ।

(تَفْسِيرُ رُوحِ الْبَيَانِ، سورة الملك، ج १०، ص ९८)

(9) हज़रते सय्यिदुना इब्ने अब्बास رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا ने एक

आदमी से फ़रमाया : क्या मैं तुझे एक हदीस तोहफ़े के तौर पर न दूं जिस के साथ तू खुश हो जाए, उस ने अर्ज की बेशक ! तो आप تَبْرَكَ الَّذِي يَبْدِئُ الْمَسْكُوتِ ने फ़रमाया : येह सूरह पढ़ो : رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ और येह सूरत अपने अहलो इयाल, अपने तमाम बच्चों, अपने घर के बच्चों और अपने पड़ोसियों को सिखाओ (इस की इन्हें ता'लीम दो) क्यूं कि येह नजात दिलाने वाली है और क़ियामत के दिन अपने क़ारी के लिये अपने रब के पास झगड़ने वाली है, और येह उसे तलाश करेगी ताकि उसे जहन्नम के अज़ाब से नजात दिलाए और इस के सबब इस का क़ारी अज़ाब से भी नजात पा जाएगा ।

(الدُّرُ الْمَشْهُورُ ج ८ ص २३१)

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ जो बहुत मेहरबान रहमत वाला

تَبَارَكَ الَّذِي بِيَدِهِ الْمُلْكُ وَهُوَ عَلَى كُلِّ

बड़ी ब-र-कत वाला है वोह जिस के कब्जे में सारा मुल्क और वोह हर चीज पर

شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝ الَّذِي خَلَقَ الْمَوْتَ وَالْحَيَاةَ لِيَبْلُوَكُمْ

कादिर है वोह जिस ने मौत और ज़िन्दगी पैदा की, कि तुम्हारी जांच हो

إِيَّكُمْ أَحْسَنُ عَمَلًا وَهُوَ الْعَزِيزُ الْغَفُورُ ۝ الَّذِي

तुम में किस का काम ज़ियादा अच्छा है और वोही इज़्जत वाला बख़्शिश वाला है जिस ने

خَلَقَ سَبْعَ سَوَاتٍ طِبَاقًا تَرَىٰ فِي خَلْقِ الرَّحْمَنِ

सात आस्मान बनाए एक के ऊपर दूसरा तो रहमान के बनाने में क्या फर्क देखता

مَنْ تَقْوَىٰ تَآرَجَعَ الْبَصَرُ هَلْ تَرَىٰ مِنْ فُطُورٍ ۝

है तो निगाह उठा कर देख तुझे कोई रखना नज़र आता है

ثُمَّ آرَجَعَ الْبَصَرَ كَرَّتَيْنِ يَنْقَلِبُ إِلَيْكَ الْبَصَرُ خَاسِئًا

फिर दोबारा निगाह उठा नज़र तेरी तरफ़ ना काम पलट आएगी

وَهُوَ حَسِيرٌ ۝ وَلَقَدْ زَيَّنَّا السَّمَاءَ الدُّنْيَا بِصَوَابٍ وَجَعَلْنَا

थकी मांदी और बेशक हम ने नीचे के आस्मान को चरागों से आरास्ता किया

رُجُومًا لِلشَّيْطَانِ وَاعْتَدْنَا لَهُمُ عَذَابَ السَّعِيرِ ⑤

और उन्हें शैतानों के लिये मार किया और उन के लिये भड़कती आग का अज़ाब तय्यार फ़रमाया

وَالَّذِينَ كَفَرُوا بِرَبِّهِمْ عَذَابُ جَهَنَّمَ وَبِئْسَ الْمَصِيرُ ⑥

और जिन्होंने ने अपने रब के साथ कुफ़ किया उन के लिये जहन्नम का अज़ाब है और क्या ही बुरा अन्जाम

إِذَا الْقُوفُ فِيهَا سَبَّحُوا بِحَمْدِ اللَّهِ تَكَادُ ⑦

जब उस में डाले जाएंगे उस का रेंकना सुनेंगे कि जोश मारती है मा'लूम होता

تَمَيَّزُ مِنَ الْغَيْظِ كُلَّمَا أُلْقِيَ فِيهَا فَوْجٌ سَأَلَهُمْ خَزَنَتُهَا ⑧

हे कि शिद्दते ग़ज़ब में फट जाएगी जब कभी कोई गुरौह उस में डाला जाएगा उस के

الْمَ يَأْتِكُمْ نَذِيرٌ ⑨ قَالُوا بَلَىٰ قَدْ جَاءَنَا نَذِيرٌ فَكَذَّبْنَا ⑩

दारोगा उन से पूछेंगे क्या तुम्हारे पास कोई डर सुनाने वाला न आया था कहेंगे क्यूं नहीं बेशक

وَقُلْنَا مَا نَزَّلَ اللَّهُ مِنْ شَيْءٍ إِنْ أَنْتُمْ إِلَّا فِي ضَلَالٍ ⑪

हमारे पास डर सुनाने वाले तशरीफ़ लाए फिर हम ने झुटलाया और कहा अल्लाह ने कुछ नहीं उतारा तुम तो नहीं मगर

كَبِيرٌ ⑫ وَقَالُوا لَوْ كُنَّا نَسْمَعُ أَوْ نَعْقِلُ مَا كُنَّا فِي أَصْحَابِ ⑬

बड़ी गुमराही में और कहेंगे अगर हम सुनते या समझते तो दोज़ख़ वालों में न

السَّعِيرِ ⑭ فَأَعْتَرَفُوا بِذَنبِهِمْ فَسُحْقًا لِأَصْحَابِ السَّعِيرِ ⑮

होते अब अपने गुनाह का इक़्रार किया तो फिटकार हो दोज़ख़ियों को



إِنَّ الَّذِينَ يَخْشَوْنَ رَبَّهُم بِالْغَيْبِ لَهُمْ مَغْفِرَةٌ وَأَجْرٌ

बेशक वोह जो बे देखे अपने रब से डरते हैं उन के लिये बख्शिश और बड़ा सवाब

كَبِيرٌ ۝ وَأَسْرُؤُا قَوْلَكُمُ أَوْ أَجْهَرُ ۚ وَإِنَّهُ عَلِيمٌ

है और तुम अपनी बात आहिस्ता कहो या आवाज़ से वोह तो दिलों की

بَيِّنَاتِ الصُّدُورِ ۝ أَلَا يَعْلَمُ مَنْ خَلَقَ وَهُوَ اللَّطِيفُ

जानता है क्या वोह न जाने जिस ने पैदा किया और वोही है हर

النَّخِيرِ ۝ هُوَ الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ الْأَرْضَ ذُلُولًا فَامْشُوا

बारीकी जानता खबरदार वोही है जिस ने तुम्हारे लिये ज़मीन राम कर दी तो उस के रस्तों में

فِي مَنَازِلِهَا وَكُلُوا مِنْ رِزْقِهِ ۚ وَالْيَهُ النُّشُورُ ۝ أَمْنُهُ

चलो और अल्लाह की रोज़ी में से खाओ और उसी की तरफ़ उठना है क्या तुम

مَنْ فِي السَّمَاءِ أَنْ يَخْسِفَ بِكُمُ الْأَرْضَ فَإِذَا هِيَ تَمُورُ ۝

उस से निडर हो गए जिस की सल्तनत आस्मान में है कि तुम्हें ज़मीन में धंसा दे

أَمْ أَمْنُكُمْ مَنْ فِي السَّمَاءِ أَنْ يُرْسِلَ عَلَيْكُمْ حَاصِبًا

जभी वोह कांपती रहे या तुम निडर हो गए उस से जिस की सल्तनत आस्मान में है कि तुम पर पथराओ भेजे तो अब

فَسْتَغْلِبُونَ كَيْفَ نَذِيرٌ ۝ وَلَقَدْ كَذَّبَ الَّذِينَ مِنْ

जानोगे कैसा था मेरा डराना और बेशक उन से अगलों ने झुटलाया

قَبْلَهُمْ فَكَيْفَ كَانَ نَكِيرٌ ۝۱۸ أَوَلَمْ يَرَوْا إِلَى الطَّيْرِ فَوْقَهُمْ

तो कैसा हुवा मेरा इन्कार और क्या उन्होंने ने अपने ऊपर परिन्दे न

صَفَتْ وَيَقْبِضْنَ مَا يَمْسُكُهُنَّ إِلَّا الرَّحْمَنُ إِنَّهُ بِكُلِّ

देखे पर फैलाते और समेटते उन्हें कोई नहीं रोकता सिवा रहमान के बेशक वोह सब कुछ

شَيْءٍ بَصِيرٌ ۝۱۹ أَمَّنْ هَذَا الَّذِي هُوَ جُنْدٌ لَّكُمْ يَنْصُرُكُمْ

देखता है या वोह कौन सा तुम्हारा लश्कर है कि रहमान के मुक़ाबिल तुम्हारी मदद करे

مِّنْ دُونِ الرَّحْمَنِ إِنِ الْكَافِرُونَ إِلَّا فِي غُرُورٍ ۝

काफ़िर नहीं मगर धोके में

أَمَّنْ هَذَا الَّذِي يُرْزُقُكُمْ إِنْ أَمْسَكَ رِزْقَهُ بَلْ لَّجُّوا

या कौन सा ऐसा है जो तुम्हें रोज़ी दे अगर वोह अपनी रोज़ी रोक ले बल्कि वोह

فِي عُتُوٍّ وَنُفُورٍ ۝۲۰ أَفَمَن يَتَّبِعُ مُكِبًّا عَلَىٰ وَجْهِهِ أَهْدَىٰ

सरकश और नफ़रत में ढीट बने हुए हैं तो क्या वोह जो अपने मुंह के बल औंधा चले ज़ियादा राह पर

أَمَّن يَتَّبِعُ سَوِيًّا عَلَىٰ صِرَاطٍ مُّسْتَقِيمٍ ۝۲۱ قُلْ هُوَ الَّذِي

है या वोह जो सीधा चले सीधी राह पर तुम फ़रमाओ वोही

أَنشَأَكُمْ وَجَعَلَ لَكُمُ السَّمْعَ وَالْأَبْصَارَ وَالْأَفْئِدَةَ قَلِيلًا

जिस ने तुम्हें पैदा किया और तुम्हारे लिये कान और आंख और दिल बनाए कितना कम

مَا تَشْكُرُونَ ﴿٣٢﴾ قُلْ هُوَ الَّذِي ذَرَأَكُمْ فِي الْأَرْضِ

हक मानते हो तुम फरमाओ वोही है जिस ने ज़मीन में तुम्हें फैलाया और उसी

وَالْبَیْهَ تَحْشُرُونَ ﴿٣٣﴾ وَيَقُولُونَ مَتَى هَذَا الْوَعْدُ

की तरफ उठाए जाओगे और कहते हैं येह वा'दा कब आएगा

إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ﴿٣٤﴾ قُلْ إِنَّمَا الْعِلْمُ عِنْدَ اللَّهِ

अगर तुम सच्चे हो तुम फरमाओ येह इल्म तो अल्लाह के पास है

وَأَنبَأْنَا أَنَا نَذِيرٌ مُّبِينٌ ﴿٣٥﴾ فَلَمَّا رَأَوْهُ زُلْفَةً سَيِّئَتْ

और मैं तो येही साफ़ डर सुनाने वाला फिर जब उसे पास देखेंगे

وُجُوهُ الَّذِينَ كَفَرُوا وَقِيلَ هَذَا الَّذِي كُنْتُمْ بِهِ

काफ़ि़रों के मुंह बिगड़ जाएंगे और उन से फरमाया जाएगा येह है जो तुम

تَدَّعُونَ ﴿٣٦﴾ قُلْ أَرَأَيْتُمْ إِنْ أَهْلَكْنِي اللَّهُ وَمَنْ

मांगते थे तुम फरमाओ भला देखो तो अगर अल्लाह मुझे और मेरे साथ वालों

مَعِيَ أَوْ رَحِمْنَا فَتَنْ يُجِيزُ الْكَافِرِينَ مِنْ عَذَابِ الْيَوْمِ ﴿٣٧﴾

को हलाक कर दे या हम पर रहम फरमाए तो वोह कौन सा है जो काफ़ि़रों को दुख के अज़ाब से

قُلْ هُوَ الرَّحْمَنُ أَمْتَابِهِ وَعَلَيْهِ تَوَكَّلْنَا فَسْتَعْلَمُونَ

बचा लेगा तुम फरमाओ वोही रहमान है हम उस पर ईमान लाए और उसी पर भरोसा किया तो अब

مَنْ هُوَ فِي ضَلَالٍ مُبِينٍ ۖ قُلْ أَرَأَيْتُمْ إِنْ أَصْبَحَ

जान जाओगे कौन खुली गुमराही में है तुम फ़रमाओ भला देखो तो अगर सुबह को तुम्हारा

مَأْوَاكُمْ غَوْرًا فَنَنْبَأُتِيكُمْ بِهِ ۗ مَعِينٌ ۝

पानी ज़मीन में धंस जाए तो वोह कौन है जो तुम्हें पानी ला दे निगाह के सामने बहता

“रहमान” के चार हुस्नफ़ की निश्बत से

सूरए रहमान के 4 फ़ज़ाइल

(1) हज़रते सय्यिदुना अली رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है

कि मैं ने हुजूरे अकरम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम, रसूले मुहत्तशम, शाफ़ेए उमम رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ وَآلِهِ وَسَلَّمَ को येह फ़रमाते हुए

सुना कि “हर चीज़ के लिये ज़ीनत है और कुरआने पाक की ज़ीनत सूरए रहमान है।” (الذُّرُّ الْمَشْهُورُ ج ٧ ص ٦٩٠)

(2) सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार, बि इज़्ने परवर्द गार

दो आलम के मालिको मुख्तार, शहन्शाहे अबरार رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

ने इर्शाद फ़रमाया : सूरए हदीद, إِذَا وَقَعَتِ الْوَاقِعَةُ और अर्रहमान के पढ़ने वाले को ज़मीन व आस्मान के फ़िरिश्तों में साकिनुल

फ़िरदौस (जन्नतुल फ़िरदौस का रहने वाला) पुकारा जाता है।

(الذُّرُّ الْمَشْهُورُ ج ٧ ص ٦٩٠)

(3) हज़रते जाबिर बिन अब्दुल्लाह رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत

है कि सरकारे मदीना, राहते क़ल्बो सीना, बाइसे नुज़ूले सकीना, फैज गन्जीना, साहिबे मुअत्तर पसीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सहाबए किराम رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمْ के पास तशरीफ़ लाए और सूरए रहमान इब्तिदा से आखिर तक तिलावत फ़रमाई, और सब ख़ामोश रहे। फिर आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : मैं तुम पर येह कैसा सुकूत देख रहा हूं, मैं ने येही सूरत जिननों की मुलाक़ात की रात उन पर तिलावत की तो उन्होंने ने तुम से इन्तिहाई ख़ूब सूरत और हसीन जवाब दिया, मैं जब भी इस आयत पर पहुंचा : فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبِينَ तो उन्होंने ने कहा : وَلَا بَشَىءٌ مِنْ نِعْمِكُمْ رَبَّنَا تُكْذِبُونَ فَلَكَ الْحُكْمُ या 'नी ऐ हमारे रब ! हम तेरी ने'मतों में से किसी भी शै को नहीं झुटलाते, सब ता'रीफें तेरे लिये हैं।

(الذُّرَّ الْمَشْهُور ج ٧ ص ٦٩٠)

(4) सूरए रहमान ग्यारह बार पढ़ने से मक़ासिद पूरे होते हैं, नीज़ इस सूरह को लिख कर और धो कर तुहाल (तिल्ली की बीमारी) के मरीज़ को पिलाना बहुत मुफ़ीद है। (जन्नती ज़ेवर, स. 597)



بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ



अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरबान रहमत वाला

الرَّحْمٰنُ ۝ عَلَّمَ الْقُرْآنَ ۝ خَلَقَ الْاِنْسَانَ ۝ عَلَّمَهُ

रहमान ने अपने महबूब को कुरआन सिखाया इंसानियत की जान मुहम्मद को पैदा किया माका-न व मा यकू

الْبَيَانَ ۝ الشَّمْسُ وَالْقَمَرُ بِحُسْبَانٍ ۝ وَالْجُمْ

का बयान उन्हें सिखाया सूरज और चांद हिसाब से है और सब्जे और

وَالشَّجَرُ يَسْجُدْنَ ۝ وَالسَّمَاءُ رَفَعَهَا وَوَضَعَ الْمِيزَانَ ۝

पेड़ सज्दा करते हैं और आस्मान को अल्लाह ने बुलन्द किया और तराजू रखी

أَلَّا تَطْغَوْا فِي الْمِيزَانِ ۝ وَأَقِيمُوا الْوَزْنَ بِالْقِسْطِ

कि तराजू में बे ए'तिदाली न करो और इन्साफ के साथ तोल काइम करो

وَلَا تَخْسِرُوا الْمِيزَانَ ۝ وَالْأَرْضُ وَضَعَهَا لِلْأَنْحَامِ ۝

और वज़न न घटाओ और ज़मीन रखी मखलूक के लिये इस

فَاكْهَةٌ ۝ وَالنَّحْلُ ذَاتُ الْكُمَامِ ۝ وَالْحَبُّ ذُو الْعَصْفِ

में मेवे और ग़िलाफ़ वाली खजूरे और भुस के साथ अनाज

وَالرَّيْحَانُ ۝ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبِينَ ۝ خَلَقَ

और खुशबू के फूल तो ऐ जिन व इन्स तुम दोनों अपने रब की कौन सी ने'मत झुटलाओगे उस ने आदमी

الْإِنْسَانَ مِنْ صَلْصَالٍ كَالْفَخَّارِ ۝ وَخَلَقَ الْجَانَّ

को बनाया बजती मिट्टी से जैसे ठेकरी और जिन को पैदा फरमाया आग

مِنْ مَّارِجٍ مِّنْ نَّارٍ ۝ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبِينَ ۝

के लूके से तो तुम दोनों अपने रब की कौन सी ने'मत झुटलाओगे

رَبُّ الْمَشْرِقَيْنِ وَرَبُّ الْمَغْرِبَيْنِ ۝ فَبِأَيِّ آلَاءِ

दोनों पूरब का रब और दोनों पश्चिम का रब तो तुम दोनों अपने रब

رَبِّكُمَا تُكذِّبَنِ ۝ مَجَّ الْبَحْرَيْنِ يَلْتَقِيَنِ ۝ يَذُنُّهُمَا

की कौन सी ने'मत झुटलाओगे उस ने दो समुन्दर बहाए कि देखने में मा'लूम हों मिले हुए

بَرْزَخٍ لَّا يَبْغِيَنِ ۝ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكذِّبَنِ ۝

और है उन में रोक कि एक दूसरे पर बढ़ नहीं सकता तो अपने रब की कौन सी ने'मत झुटलाओगे

يَخْرُجُ مِنْهُمَا اللُّؤْلُؤُ وَالْمَرْجَانُ ۝ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا

उन में से मोती और मूंगा निकलता है तो अपने रब की कौन सी ने'मत

تُكذِّبَنِ ۝ وَلَهُ الْجَوَارِ الْمُنشَآتُ فِي الْبَحْرِ كَالْأَعْلَامِ ۝

झुटलाओगे और उसी की हैं वोह चलने वालीयां कि दरिया में उठी हुई हैं जैसे पहाड़

فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكذِّبَنِ ۝ كُلُّ مَنْ عَلَيْهَا فَانٍ ۝

तो अपने रब की कौन सी ने'मत झुटलाओगे ज़मीन पर जितने हैं सब को फना है

وَبِبْقَى وَجْهِ رَبِّكَ ذُو الْجَلِيلِ وَالْإِكْرَامِ ۝ فَبِأَيِّ

और बाकी है तुम्हारे रब की जात अ-ज़मत और बुजुर्गी वाला तो अपने रब

الْآءِ رَبِّكُمَا تُكذِّبَنِ ۝ يَسْأَلُهُ مَنْ فِي السَّمَوَاتِ

की कौन सी ने'मत झुटलाओगे उसी के मंगता हैं जितने आस्मानों और

وَالْأَرْضُ كُلُّ يَوْمٍ هُوَ فِي شَأْنٍ ۖ فَبَآئِيَ الْآءِ

जमीन में हैं उसे हर दिन एक काम है तो अपने रब की कौन सी

رَبِّكُمْ أَنْتَكِدِّ بْنِ ۖ سَنَفَعُ لَكُمْ أَيُّهُ الثَّقَلَيْنِ ۖ فَبَآئِيَ

ने'मत झुटलाओगे जल्द सब काम निबटा कर हम तुम्हारे हिसाब का क़स्द फ़रमाते हैं ऐ दोनों भारी गुरौह तो

الْآءِ رَبِّكُمْ أَنْتَكِدِّ بْنِ ۖ يَعْشَرُ الْجِنَّ وَالْإِنْسِ إِنْ

अपने रब की कौन सी ने'मत झुटलाओगे ऐ जिन व इन्सान के गुरौह अगर तुम से हो सके कि आस्मानों

اسْتَطَعْتُمْ أَنْ تَنْفُذُوا مِنْ أَقْطَارِ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ

और ज़मीन के किनारों से निकल जाओ तो निकल जाओ

فَأَنْفُذُوا وَلَا تَتَفَنَّذُوا مِنَ الْإِسْلَاطِ ۖ فَبَآئِيَ الْآءِ

जहां निकल कर जाओगे उसी की सल्लतनत है तो अपने रब की कौन

رَبِّكُمْ أَنْتَكِدِّ بْنِ ۖ يُرْسَلُ عَلَيْكُمْ شَوَاطِيرُ مِنْ دَارِهِ

सी ने'मत झुटलाओगे तुम पर छोड़ी जाएगी बे धुवें की आग की लपट

وَمُحَاسٍ فَلَا تَنْتَحِرْنَ ۖ فَبَآئِيَ الْآءِ رَبِّكُمْ أَنْتَكِدِّ بْنِ

और बे लपट का काला धुवां तो फिर बदला न ले सकोगे तो अपने रब की कौन सी ने'मत झुटलाओगे

فَإِذَا انْشَقَّتِ السَّمَاءُ فَكَانَتْ وَرْدَةً كَالدِّهَانِ ۖ فَبَآئِيَ

फिर जब आस्मान फट जाएगा तो गुलाब के फूल सा हो जाएगा जैसे सुख निरी तो अपने रब



الْاٰرِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبْنَ ۝ فَيَوْمَئِذٍ اَلَيْسَ لَنَا ذَنْبٌ

की कौन सी ने'मत झुटलाओगे तो उस दिन गुनाहगार के गुनाह की पूछ न होगी

اِنْسٌ وَّ اٰجَانٌ ۝ فَبَايَ الْاٰرِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبْنَ ۝ يَعْرِفُ

किसी आदमी और जिन्न से तो अपने रब की कौन सी ने'मत झुटलाओगे मुजरिम अपने

الْجُرْمُونَ بِسِيمُمْ فَيُؤْخَذُ بِالنَّوَاصِي وَالْاَقْدَامِ ۝

चेहरे से पहचाने जाएंगे तो माथा और पाउं पकड़ कर जहन्नम में डाले जाएंगे

فَبَايَ الْاٰرِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبْنَ ۝ هٰذِهِ جَهَنَّمُ الَّتِي

तो अपने रब की कौन सी ने'मत झुटलाओगे यह है वोह जहन्नम जिसे

يَكْذِبُ بِهَا الْجُرْمُونَ ۝ يَطُوفُونَ بَيْنَهَا وَبَيْنَ

मुजरिम झुटलाते हैं फैरे करेंगे इस में और इन्तिहा के

حَيْعِمٍ اِنَّ ۝ فَبَايَ الْاٰرِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبْنَ ۝ وَلَيْسَ خَافَ

जलते खौलते पानी में तो अपने रब की कौन सी ने'मत झुटलाओगे और जो अपने रब के हुजूर

مَقَامِ رَبِّهِ جَنَّتٍ ۝ فَبَايَ الْاٰرِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبْنَ ۝ ذَوَاتَا

खड़े होने से डरे उस के लिये दो जन्नतें हैं तो अपने रब की कौन सी ने'मत झुटलाओगे बहुत सी

اَفْنَانٍ ۝ فَبَايَ الْاٰرِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبْنَ ۝ فِيْهِمَا عَيْنٌ

डालों वालियां तो अपने रब की कौन सी ने'मत झुटलाओगे उन में दो चश्मे

تَجْرِلِينَ ۚ فَبَايَ الْآدِرَبِكُمْ أَتَكْذِبِينَ ۝۱۱ فَبِهِمَا مِنْ

बहते हैं तो अपने रब की कौन सी ने'मत झुटलाओगे उन में हर मेवा दो दो

كُلِّ فَالْكَهَةِ زَوْجِينَ ۝۱۲ فَبَايَ الْآدِرَبِكُمْ أَتَكْذِبِينَ ۝

किस्म का तो अपने रब की कौन सी ने'मत झुटलाओगे

مُتَكِّينَ عَلَى فُرُشٍ بَطَآئِنُهُا مِنْ اِسْتَبْرَقٍ وَجَنَّا

ऐसे बिछोनों पर तकिया लगाए जिन का अस्तर कनादीज का और दोनों के

الْجَنَّتَيْنِ دَانِ ۝۱۳ فَبَايَ الْآدِرَبِكُمْ أَتَكْذِبِينَ ۝۱۴ فِيْهِنَّ

मेवे इतने झुके हुए कि नीचे से चुन लो तो अपने रब की कौन सी ने'मत झुटलाओगे उन बिछोनों

فَصَارَتْ اَلطَّرْفُ لَمْ يَطْنِهِنَّ اِنْسٌ قَبْلَهُمْ وَلَا جَانٌّ ۝

पर वोह औरतें हैं कि शोहर के सिवा किसी को आंख उठा कर नहीं देखतीं उन से पहले उन्हें न छुवा किसी आदमी और न जिन ने

فَبَايَ الْآدِرَبِكُمْ أَتَكْذِبِينَ ۝۱۵ كَانَهُنَّ الْيَاقُوتُ

तो अपने रब की कौन सी ने'मत झुटलाओगे गोया वोह ला'ल

وَالْمَرْجَانُ ۝۱۶ فَبَايَ الْآدِرَبِكُمْ أَتَكْذِبِينَ ۝۱۷ هَلْ جَزَاءُ

और मूंगा हैं तो अपने रब की कौन सी ने'मत झुटलाओगे नेकी का बदला क्या

الْاِحْسَانِ اِلَّا الْاِحْسَانُ ۝۱۸ فَبَايَ الْآدِرَبِكُمْ أَتَكْذِبِينَ ۝

है मगर नेकी तो अपने रब की कौन सी ने'मत झुटलाओगे

وَمِنْ دُونِهِمَا جَنَّتَيْنِ ۖ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبِينَ ﴿١٧﴾

और इन के सिवा दो जन्नतें और हैं तो अपने रब की कौन सी ने'मत झुटलाओगे

مُدَّهَامَتَيْنِ ۖ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبِينَ ﴿١٨﴾

निहायत सब्जी से सियाही की झलक दे रही हैं तो अपने रब की कौन सी ने'मत झुटलाओगे

فِيهِمَا عَيْنَيْنِ تَصَاحَتَنِ ۖ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا

इन में दो चश्मे हैं छलकते हुए तो अपने रब की कौन सी ने'मत झुटलाओगे

تُكَذِّبِينَ ﴿١٩﴾ فِيهِمَا فَاكِهَةٌ وَنَخْلٌ وَرُمَّانٌ ﴿٢٠﴾

इन में मेवे और खजूरें और अनार हैं

فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبِينَ ﴿٢١﴾ فِيهِنَّ خَيْرٌ حَسَنٌ ﴿٢٢﴾

तो अपने रब की कौन सी ने'मत झुटलाओगे उन में औरतें हैं आदत की नेक सूरत की अच्छी

فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبِينَ ﴿٢٣﴾ حُورٌ مَّقْصُورَاتٌ فِي

तो अपने रब की कौन सी ने'मत झुटलाओगे हूरें हैं खैमों में पदा

الْحُجُيَامِ ۖ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبِينَ ﴿٢٤﴾ لَمْ يَطْمِئِنَّ

नशीन तो अपने रब की कौन सी ने'मत झुटलाओगे उन से पहले उन्हें

إِنْسٌ قَبْلَهُمْ وَلَا جَانٌّ ۖ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبِينَ ﴿٢٥﴾

हाथ न लगाया किसी आदमी और न जिन्न ने तो अपने रब की कौन सी ने'मत झुटलाओगे

का नाम जो अ-जमत और बुजुर्गी वाला

لثالث، ج ٤، ص ٢٦٢.

## सूरए वाकिअह के फ़ज़ाइल

(1) येह सूरत बहुत ही बा ब-र-कत है हज़रते सय्यिदुना अनस رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने फ़रमाया : सूरए वाकिअह तवंगरी (या'नी खुशहाली) की सूरत है लिहाज़ा इसे पढ़ो और अपनी औलाद को सिखाओ ।  
(رُوحُ الْمَعَانِي ج ٧ ص ١٨٣)

(2) हज़रते सय्यिदुना इब्ने मस्ऊद رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ म-रजुल मौत में मुब्तला थे हज़रते उस्मान रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ उन की इयादत के लिये तशरीफ़ ले गए और उन से फ़रमाने लगे कि अगर मैं तुम्हें ख़जाने से कुछ अता कर दूं तो कैसा है ? उन्होंने ने फ़रमाया : मुझे इस की कोई ज़रूरत नहीं । हज़रते उस्मान रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने फ़रमाया : बा'द में तुम्हारी बच्चियों के काम आएगा । इब्ने मस्ऊद रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने कहा : तुम मेरी बच्चियों के मु-तअल्लिक़ फ़क़्रो फ़ाका से डरते हो मैं ने इन को हुक्म दिया है कि वोह हर रात सूरए वाकिअह पढ़ा करें, मैं ने रसूलुल्लाह عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ को येह फ़रमाते हुए सुना कि जो आदमी हर रात सू-रतुल वाकिआ पढ़ेगा वोह कभी फ़क़्रो फ़ाका में मुब्तला नहीं होगा ।



بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ



अल्लाह के नाम से शुरूअ जो बहुत मेहरबान रहमत वाला

إِذَا وَقَعَتِ الْوَاقِعَةُ ۚ لَيْسَ لَوْفَعَتِهَا كَاذِبَةٌ ۖ

जब हो लेगी वोह होने वाली उस वक़्त उस के होने में किसी को इन्कार की गुन्जाइश न होगी

خَافِضَةٌ رَّافِعَةٌ ۚ إِذَا رُجَّتِ الْأَرْضُ رَجًا ۖ

किसी को पस्त करने वाली, किसी को बुलन्दी देने वाली जब ज़मीन कांपेगी थरथरा कर

وَبُسَّتِ الْجِبَالُ بَسًّا ۖ فَكَانَتْ هَبَاءً مُنْبَثًّا ۚ وَكُنْتُمْ

और पहाड़ रेज़ा रेज़ा हो जाएंगे चूरा हो कर तो हो जाएंगे जैसे रोज़न की धूप में गुबार के बारीक ज़रे फैले

أَزْوَاجًا ثَلَاثَةً ۖ فَأَصْحَابُ الْيَمِينِ ۖ مَا أَصْحَابُ الْيَمِينِ ۖ

हुए और तुम तीन किस्म हो जाओगे तो दहनी तरफ़ वाले कैसे दहनी तरफ़ वाले

وَأَصْحَابُ الْمَشْأَمِ ۖ مَا أَصْحَابُ الْمَشْأَمِ ۖ وَالسَّابِقُونَ

और बाई तरफ़ वाले कैसे बाई तरफ़ वाले और जो सब्कत ले

السَّابِقُونَ ۖ أُولَئِكَ الْمُقَرَّبُونَ ۖ فِي جَنَّاتِ النَّعِيمِ

गए वोह तो सब्कत ही ले गए वोही मुकर्रबे बारगाह हैं चैन के बागों में

ثَلَاثَةٌ مِّنَ الْأَوَّلِينَ ۖ وَقَلِيلٌ مِّنَ الْآخِرِينَ ۖ عَلَى سُرُرٍ

अगलों में से एक गुरौह और पिछलों में से थोड़े जड़ाउ तख्तों पर

مَوْضُونَةٍ ۖ مُّتَكِينِينَ ۖ عَلَيْهَا مُتَقَبِّلِينَ ۖ يُطُوفُ عَلَيْهِمْ

होंगे उन पर तकिया लगाए हुए आमने सामने उन के गिर्द लिये फिरेंगे

وَلَدَانِ مُخْلَدُونَ ۖ بِأَكْوَابٍ وَأَبَارِيقٍ ۖ وَكَأْسٍ

हमेशा रहने वाले लड़के कूजे और आफ़ताबे और जाम आंखों के सामने

مَنْ مَّعِينٌ ۝ لَا يَصِدَّ عَنْهَا وَلَا يُزْفُونَ ۝

बहती शराब के उस से न उन्हें दर्दे सर हो न होश में फर्क आए

وَفَاكِهَةٍ مِّمَّا يَتَخَيَّرُونَ ۝ وَلَحْمِ طَيْرٍ مِّمَّا يَشْتَهُونَ ۝

और मेवे जो पसन्द करें और परिन्दों का गोश्त जो चाहें

وَحُورٌ عِينٌ ۝ كَأَمْثَالِ اللُّؤْلُؤِ الْمَكْنُونِ ۝ جَزَاءُ مِمَّا

और बड़ी आंख वालीयां हूँ जैसे छुपे रखे हुए मोती सिला उन

كَانُوا يَعْمَلُونَ ۝ لَا يَسْمَعُونَ فِيهَا لَغْوًا وَلَا تَأْتِيَمًا ۝

के आ'माल का उस में न सुनेंगे कोई बेकार बात न गुनाहगारी

الَّتِي لَا سَلَامًا سَلَامًا ۝ وَأَصْحَابُ الْيَمِينِ ۝ مَا أَصْحَابُ

हां यह कहना होगा सलाम सलाम और दहनी तरफ वाले कैसे दहनी

الْيَمِينِ ۝ فِي سِدْرٍ مَّخْضُودٍ ۝ وَطَلْحٍ مَّنْضُودٍ ۝

तरफ वाले बे कांटे की बेरियों में और केले के गुच्छों में

وَظِلِّ مَّدُودٍ ۝ وَمَاءٍ مَّسْكُوبٍ ۝ وَفَاكِهَةٍ كَثِيرَةٍ ۝

और हमेशा के साए में और हमेशा जारी पानी में और बहुत से मेवों में

لَا مَقْطُوعَةٍ وَلَا مَمْنُوعَةٍ ۝ وَفُرُشٍ مَّرْفُوعَةٍ ۝ إِنَّا

जो न खत्म हों और न रोके जाएं और बुलन्द बिछोनों में बेशक

اَنْشَأْنَهُنَّ اِنْشَاءً ۝۶۵ فَجَعَلْنَهُنَّ اَبْكَارًا ۝۶۶ عُرْبًا اَتْرَابًا ۝۶۷

हम ने उन औरतों को अच्छी उठान उठाया तो उन्हें बनाया कवारियां अपने शोहरों पर प्यारियां उन्हें प्यार

لَا صُحْبَ الْيَمِينِ ۝۶۸ نُّلَّةٌ مِّنَ الْاَوَّلِينَ ۝۶۹ وَنُّلَّةٌ مِّنَ

दिलातियां एक उम्र वालियां दहनी तरफ वालों के लिये अगलों में से एक गुरौह और पिछलों में

الْاٰخِرِينَ ۝۷۰ وَاَصْحَابُ الشِّمَالِ ۝۷۱ مَا اَصْحَابُ الشِّمَالِ ۝۷۲

से एक गुरौह और बाई तरफ वाले और कैसे बाई तरफ वाले

فِي سَمُومٍ وَمَحِيْمٍ ۝۷۳ وَظِلٍّ مِّنْ يَّحْمُومٍ ۝۷۴ لَا بَارِدٍ وَلَا

जलती हवा और खौलते पानी में और जलते धूप की छाऊं में जो न ठन्डी न इज्जत

كِرِيْمٍ ۝۷۵ اِنَّهُمْ كَانُوْا قَبْلَ ذٰلِكَ مُتْرَفِيْنَ ۝۷۶ وَكَانُوْا

की बेशक वोह इस से पहले ने 'मतों' में थे और इस बडे

يُصِرُّوْنَ عَلَى الْحَنَثِ الْعَظِيْمِ ۝۷۷ وَكَانُوْا يَقُوْلُوْنَ ۝۷۸

गुनाह की हट रखते थे और कहते थे क्या जब हम

اِيْذًا اٰمَنَّا وَكُنَّا تُرَابًا وَّعِظَمَاءِ اِنَّا لَمَبْعُوْتُوْنَ ۝۷۹

मर जाएं और हड्डियां और मिट्टी हो जाएं तो क्या जरूर हम उठाए जाएंगे

اَوْ اٰبَاؤُنَا الْاَوَّلُوْنَ ۝۸۰ قُلْ اِنَّ الْاَوَّلِيْنَ وَالْاٰخِرِيْنَ ۝۸۱

और क्या हमारे अगले बाप दादा भी तुम फरमाओ कि बेशक सब अगले और पिछले



لَجْمُو عُنُونَ إِلَىٰ مِيقَاتِ يَوْمٍ مَّعْلُومٍ ۝ ثُمَّ إِنَّكُمْ إِلَيْهَا

जूरर इकठ्ठे किये जाएंगे एक जाने हुए दिन की मीआद पर फिर बेशक तुम ऐ

الصَّالُونَ الْمَكْدِبُونَ ۝ لَا تَكُونُونَ مِنَ الشَّجَرِ مِنْ زَوْجٍ

गुमराहों झुटलाने वालो जूरर थूहड़ के पेड़ में से खाओगे

فَمَا لُؤُونَ مِنْهَا الْبُطُونَ ۝ فَشَرِبُونَ عَلَيْهِ مِنَ الْحَمِيمِ ۝

फिर उस से पेट भरोगे फिर उस पर खौलता पानी पियोगे

فَشَرِبُونَ شُرْبَ الْهَيْمِ ۝ هَذَا نُزْلُهُمْ يَوْمَ الدِّينِ ۝

फिर ऐसा पियोगे जैसे सख्त प्यासे ऊंट पियें यह उन की मेहमानी है इन्साफ़ के दिन

لَحْنٌ خَلَقْنَاكُمْ فَلَوْلَا تُصَدِّقُونَ ۝ أَفَرَأَيْتُمْ مَا

हम ने तुम्हें पैदा किया तो तुम क्यों नहीं सच मानते तो भला देखो तो वोह मनी

نُفُوسٌ ۝ أَأَنْتُمْ تَخْلُقُونَهَا أَمْ نَحْنُ الْخَالِقُونَ ۝ نَحْنُ

जो गिराते हो क्या तुम इस का आदमी बनाते हो या हम बनाने वाले हैं हम ने

قَدْ رَأَيْنَا بَيْنَكُمْ الْمَوْتَ وَمَا نَحْنُ بِمَسْبُوقِينَ ۝ عَلَىٰ أَنْ

तुम में मरना ठहराया और हम इस से हारे नहीं कि तुम जैसे

تُبَدَّلَ أَمْثَالَكُمْ وَنُنْشِئَكُمْ فِي مَا لَا تَعْلَمُونَ ۝ وَلَقَدْ

और बदल दें और तुम्हारी सूरतें वोह कर दें जिस की तुम्हें खबर नहीं और बेशक

عَلِمْتُمْ النَّشْأَةَ الْأُولَىٰ فَلَوْلَا تَذَكَّرُونَ ﴿٣٧﴾ أَفَرَأَيْتُمْ

तुम जान चुके हो पहली उठान फिर क्यों नहीं सोचते तो भला बताओ

مَا تَحْزَنُونَ ﴿٣٨﴾ أَأَنْتُمْ تَرْزَعُونَهَا أَمْ نَحْنُ الرَّزَّاعُونَ ﴿٣٩﴾

तो जो बोते हो क्या तुम उस की खेती बनाते हो या हम बनाने वाले हैं

لَوْ نَشَاءُ لَجَعَلْنَاهُ حُطَامًا فَظَلْتُمْ تَفَكَّهُونَ ﴿٤٠﴾ إِنَّا لَنَرُّوهُمْ

हम चाहें तो उसे रौंदन कर दें फिर तुम बातें बनाते रह जाओ कि हम पर चट्टी पड़ी

بَلْ نَحْنُ مَحْرُومُونَ ﴿٤١﴾ أَفَرَأَيْتُمُ الْمَاءَ الَّذِي تَشْرَبُونَ ﴿٤٢﴾

बल्कि हम बे नसीब रहे तो भला बताओ तो वोह पानी जो पीते हो

أَأَنْتُمْ أَنْزَلْتُمُوهُ مِنَ الْمُزْنِ أَمْ نَحْنُ الْمُنْزِلُونَ ﴿٤٣﴾

क्या तुम ने इसे बादल से उतारा या हम हैं उतारने वाले

لَوْ نَشَاءُ لَجَعَلْنَاهُ أَمْحًا فَلَوْلَا تَشْكُرُونَ ﴿٤٤﴾ أَفَرَأَيْتُمْ

हम चाहें तो इसे खारी कर दें फिर क्यों नहीं शुक्र करते तो भला बताओ तो

النَّارَ الَّتِي تَوْرُونَ ﴿٤٥﴾ أَأَنْتُمْ أَنْشَأْتُمْ شَجَرَتَهَا أَمْ نَحْنُ

वोह आग जो तुम रोशन करते हो क्या तुम ने इस का पेड़ पैदा किया या हम हैं पैदा करने

الْمُنْشِئُونَ ﴿٤٦﴾ نَحْنُ جَعَلْنَاهَا تَذَكُّرًا وَرَمَاءً لِلْمُنْفِقِينَ ﴿٤٧﴾

वाले हम ने इसे जहन्म का यादगार बनाया और जंगल में मुसाफिरों का फ़ाएदा

فَسَبِّحْ بِاسْمِ رَبِّكَ الْعَظِيمِ ۝ فَلَا أُقْسِمُ بِمَوْجِعِ الْجُومِ ۝

तो ऐ महबूब तुम पाकी बोलो अपने अ-ज़मत वाले रब के नाम की तो मुझे क़सम है उन जगहों की जहां तारे

وَإِنَّهُ لَقَسَمٌ لِّوَعْلَمُونَ عَظِيمٌ ۝ إِنَّهُ لَقُرْآنٌ كَرِيمٌ ۝

डूबते हैं और तुम समझो तो यह बड़ी क़सम है बेशक यह इज़्ज़त वाला कुरआन है

فِي كِتَابٍ مَّكْنُونٍ ۝ لَا يَسُوءُ إِلَّا الْإِطْمَارُونَ ۝ تَنْزِيلٌ

महफूज़ नविश्ता में उसे न छूए मगर बा बुजू उतारा हुवा

مِّن رَّبِّ الْعَالَمِينَ ۝ أَفِي هَذَا الْحَدِيثِ أَنْتُمْ

हैं सारे जहान के रब का तो क्या इस बात में तुम सुस्ती करते

مُدْهِنُونَ ۝ وَتَجْعَلُونَ رِزْقَكُمْ أَنْتُمْ تُكْذِبُونَ ۝

हो और अपना हिस्सा यह रखते हो कि झुटलाते हो

فَلَوْلَا إِذَا بَلَغَتِ الْحُلُقُومَ ۝ وَأَنْتُمْ جُنُودٌ تَنْظُرُونَ ۝

फिर क्यूं न हो कि जब जान गले तक पहुंचे और तुम उस वक़्त देख रहे हो

وَنَحْنُ أَقْرَبُ إِلَيْهِ مِنْكُمْ وَلَكِنْ لَا تُبْصِرُونَ ۝

और हम उस के ज़ियादा पास हैं तुम से मगर तुम्हें निगाह नहीं

فَلَوْلَا إِنْ كُنْتُمْ غَيْرَ مَدِينِينَ ۝ تَرْجِعُونَهَا إِنْ

क्यूं न हुवा अगर तुम्हें बदला मिलना नहीं कि इसे लौटा लाते

كُنْتُمْ صِدِّيقِينَ ۝ فَاَمَّا اِنْ كَانَ مِنَ الْمُفْرِسِينَ ۝

अगर तुम सच्चे हो फिर वोह मरने वाला अगर मुक़र्रबों से है

فَرَوْحٌ وَرَيْحَانٌ وَجَنَّتْ نَعِيمٌ ۝ وَاَمَّا اِنْ كَانَ

तो राहत है और फूल और चैन के बाग़ और अगर दहनी तरफ़

مِنْ أَصْحَابِ الْيَمِينِ ۝ فَسَلَامٌ لَّكَ مِنْ أَصْحَابِ الْيَمِينِ ۝

वालों से हो तो ऐ महबूब तुम पर सलाम है दहनी तरफ़ वालों से

وَاَمَّا اِنْ كَانَ مِنَ الْمَكْدِيِّينَ الضَّالِّينَ ۝ فَذُرْ

और अगर झुटलाने वालों गुमराहों में से हो तो उस की

مِّنْ حَبِيمٍ ۝ وَتَصْلِيَةٌ جَمِيمٌ ۝ اِنَّ هَذَا لَهُوَ

मेहमानी खौलता पानी और भड़कती आग में धंसाना येह बेशक आ'ला

حَقُّ الْيَقِينِ ۝ فَسَبِّحْ بِاسْمِ رَبِّكَ الْعَظِيمِ ۝

द-रजे की यकीनी बात है तो ऐ महबूब तुम अपने अ-ज़मत वाले रब के नाम की पाकी बोलो

सू-रतुरशज्दह



بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ



अल्लाह के नाम से शुरूअ जो बहुत मेहरबान रहमत वाला

الَمْ تَنْزِيلُ الْكِتَابِ لَارِيبَ فِيهِ مِنْ رَبِّ الْعَالَمِينَ ۝

किताब का उतारना बेशक परवर्द गारे आलम की तरफ से है

أَمْ يَقُولُونَ افْتَرَاهُ ۚ بَلْ هُوَ الْحَقُّ مِنْ رَبِّكَ لِتُنذِرَ

क्या कहते हैं उन की बनाई हुई है बल्कि वोही हक है तुम्हारे रब की तरफ से

قَوْمًا مِمَّا أَتَاهُمْ مِنْ نَذِيرٍ ۚ مَنْ قَبْلِكَ لَعَلَّهُمْ

कि तुम डराओ ऐसे लोगों को जिन के पास तुम से पहले कोई डर सुनाने वाला

يَهْتَدُونَ ۝ ٣ اللَّهُ الَّذِي خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَ

न आया इस उम्मीद पर कि वोह राह पाएं अल्लाह है जिस ने आस्मान और

الْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا فِي سِتَّةِ أَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوَى

जमीन और जो कुछ इन के बीच में है छ दिन में बनाए फिर अश

عَلَى الْعَرْشِ ۚ مَا لَكُمْ مِنْ دُونِهِ مِنْ وَلِيٍّ وَلَا

पर इस्तिवा फरमाया उस से छूट कर तुम्हारा कोई हिमायती न सिफारिशी

شَفِيعٍ ۚ أَفَلَا تَتَذَكَّرُونَ ۝ ٤ يُدَبِّرُ الْأَمْرَ مَنْ

तो क्या तुम ध्यान नहीं करते काम की तदबीर फरमाता है

السَّمَاءِ إِلَى الْأَرْضِ ثُمَّ يَرْجُئُ إِلَيْهِ فِي يَوْمٍ كَانَ

आस्मान से ज़मीन तक फिर उसी की तरफ़ रुजूअ करेगा उस दिन कि जिस की

مَقْدَارُهُ أَلْفَ سَنَةٍ مِّمَّا تَعُدُّونَ ۚ ذَٰلِكَ عِلْمُ

मिक्दार हजार बरस है तुम्हारी गिनती में ये है हर निहा

الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ۚ الَّذِي

और इयां का जानने वाला इज्ज़त व रहमत वाला वोह जिस ने जो

أَحْسَنَ كُلِّ شَيْءٍ خَلْقَهُ وَبَدَأَ خَلْقَ الْإِنْسَانِ مِنْ

चीज बनाई ख़ूब बनाई और पैदाइश इन्सान की इब्तिदा मिट्टी से

طِينٍ ۚ ثُمَّ جَعَلَ نَسْلَهُ مِنْ سُلَالَةٍ مِّنْ نَّارٍ مُّهِينٍ ۚ

फ़रमाई फिर उस की नस्ल रखी एक बे क़द्र पानी के खुलासे से

ثُمَّ سَوَّاهُ وَنَفَخَ فِيهِ مِنْ رُّوحِهِ وَجَعَلَ لَكُمُ السَّمْعَ

फिर उसे ठीक किया और उस में अपनी तरफ़ की रूह फूँकी और तुम्हें कान

وَالْأَبْصَارَ وَالْأَفْئِدَةَ ۚ قَلِيلًا مَّا تَشْكُرُونَ ۚ وَقَالُوا

और आंखें और दिल अता फ़रमाए क्या ही थोड़ा हक़ मानते हो और बोले

عِذَا ضَلَلْنَا فِي الْأَرْضِ أَإِنَّا لَفِي خَلْقٍ جَدِيدٍ ۚ

क्या जब हम मिट्टी में मिल जाएंगे क्या फिर नए बनेंगे बल्कि वोह

بَلْ هُمْ بِلِقَاءِ رَبِّهِمْ كَفِرُونَ ⑩ قُلْ يَتُوبُكُمْ مَلَايِكُ

अपने रब के हज़ूर हाज़िरी से मुन्किर हैं तुम फ़रमाओ तुम्हें वफ़ात देता

الْمَوْتِ الَّذِي وُكِّلَ بِكُمْ ثُمَّ إِلَىٰ رَبِّكُمْ تُرْجَعُونَ ⑪

है मौत का फ़िरिश्ता जो तुम पर मुक़र्र है फिर अपने रब की तरफ़ वापस जाओगे

وَلَوْ تَرَىٰ إِذِ الْمُرْسَلُونَ نَاكِسُو أَعْيُنِهِمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ

और कहीं तुम देखो जब मुजरिम अपने रब के पास सर नीचे डाले होंगे

رَبِّئَا أَبْصَرْنَا وَسَبَّحْنَا فَأَرْجَعْنَا نَعْمَلُ صَالِحًا إِنَّا

ऐ हमारे रब अब हम ने देखा और सुना हमें फिर भेज कि नेक काम करें हम

مُوقِنُونَ ⑫ وَلَوْ شِئْنَا لَآتَيْنَا كُلَّ نَفْسٍ هُدًى بَهَا

को यकीन आ गया और अगर हम चाहते हर जान को इस की हिदायत अता फ़रमाते मगर

وَلَكِنْ حَقَّ الْقَوْلُ مِنِّي لَأَمْلَأَنَّ جَهَنَّمَ مِنَ الْجِنَّةِ

मेरी बात क़रार पा चुकी कि ज़रूर जहन्नम को भर दूंगा इन जिन्यों और

وَالنَّاسِ أَجْمَعِينَ ⑬ قَدْ وَفَّوْا بِمَا نَسِيتُمْ لِقَاءَ

आदमियों सब से अब चखो बदला उस का कि तुम अपने

يَوْمِكُمْ هَٰذَا إِنَّا نَسِينَاكُمْ وَذُقُوا أَعْدَابَ الْخُلْدِ

उस दिन की हाज़िरी भूले थे हम ने तुम्हें छोड़ दिया अब हमेशा

بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ۚ إِنَّمَا يُؤْمِنُ بِآيَاتِنَا الَّذِينَ إِذَا

का अज़ाब चखो अपने किये का बदला हमारी आयतों पर वोही ईमान लाते हैं कि जब वोह

ذَكَرُوا بِهَا خَرُّوا سُجَّدًا وَسَبَّحُوا بِحَمْدِ رَبِّهِمْ وَهُمْ

उन्हें याद दिलाई जाती हैं सज्दे में गिर जाते हैं अपने रब की ता'रीफ़ करते हुए उस की पाकी

لَا يَسْتَكْبِرُونَ ۚ تَتَجَافَىٰ جُنُوبُهُمْ عَنِ الْمَضَاجِعِ

बोलते है और तकब्बुर नहीं करते उन की करवटें जुदा होती हैं ख़्वाब गाहों से

يَدْعُونَ رَبَّهُمْ خَوْفًا وَطَمَعًا وَمِمَّا رَزَقْنَاهُمْ يُنفِقُونَ ۚ

और अपने रब को पुकारते हैं डरते और उम्मीद करते और हमारे दिये हुए में से कुछ ख़ैरात करते हैं

فَلَا تَعْلَمُ نَفْسٌ مَّا أُخْفِيَ لَهُم مِّن قُرَّةِ أَعْيُنٍ جَزَاءً

तो किसी जी को नहीं मा'लूम जो आंख की ठन्डक उन के लिये छुपा रखी है सिला उन

بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۚ أَفَمَن كَانَ مُؤْمِنًا كَمَن كَانَ

के कामों का तो क्या जो ईमान वाला है वोह उस जैसा हो जाएगा

فَاسْقَآ لَا يَسْتَوُونَ ۚ أَمَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا

जो बे हुक्म है येह बराबर नहीं जो ईमान लाए और अच्छे काम किये उन के लिये

الصَّالِحَاتِ فَلَهُمْ جَنَّاتُ الْمَأْوَىٰ نُزُلًا بِمَا كَانُوا

बसने के बाग़ हैं उन के कामों के सिले में



يَعْمَلُونَ ۝۱۹ وَأَمَّا الَّذِينَ فَسَقُوا فَمَأْوَاهُمُ النَّارُ كُلَّمَا

मेहमान दारी । रहे वोह जो बे हुक्म हैं उन का ठिकाना आग है जब कभी उस में

أَرَادُوا أَنْ يَخْرُجُوا مِنْهَا أُعِيدُوا فِيهَا وَقِيلَ لَهُمْ

से निकलना चाहेंगे फिर उसी में फेर दिये जाएंगे और उन से फरमाया जाएगा

ذُوقُوا عَذَابَ النَّارِ الَّتِي كُنْتُمْ بِهِ تُكَذِّبُونَ ۝۲०

चखो उस आग का अज़ाब जिसे तुम झुटलाते थे

وَلَنْذِيْقَهُمْ مِّنَ الْعَذَابِ الِّدْنٰى دُونَ الْعَذَابِ

और ज़रूर हम उन्हें चखाएंगे कुछ नज़्दीक का अज़ाब उस बड़े अज़ाब से

الْكَبْرِ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ ۝۲१ وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنْ ذُكِّرَ

पहले जिसे देखने वाला उम्मीद करे कि अभी बाज़ आएंगे और उस से बढ़ कर

بَايَاتِ رَبِّهِ ثُمَّ أَعْرَضَ عَنْهَا إِنَّا مِنَ الْمُجْرِمِينَ

जालिम कौन जिसे उस के रब की आयतों से नसीहत की गई फिर उस ने उन से मुंह फेर

مُنْتَقِبُونَ ۝۲२ وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوسَى الْكِتَابَ فَلَا

लिया बेशक हम मुजरिमों से बदला लेने वाले हैं और बेशक हम ने मूसा को किताब अता फ़रमाई तो तुम

تَكُنْ فِي مِرْيَةٍ مِّنْ لِّقَائِهِ وَجَعَلْنَاهُ هُدًى

उस के मिलने में शक न करो और हम ने उसे

لَبَنِي إِسْرَءِيلَ ۖ وَجَعَلْنَا مِنْهُمْ إِحْبَابَ يَهُدَا وَن

बनी इस्राईल के लिये हिदायत किया और हम ने उन में से कुछ इमाम बनाए कि

بِأَمْرِنَا لِّلصَّابِرِينَ ۖ وَكَانُوا بِآيَاتِنَا يُوقِنُونَ ﴿٧٢﴾

हमारे हुक्म से बताते जब कि उन्होंने ने सब्र किया और वोह हमारी आयतों पर यकीन लाते थे

إِنَّ رَبَّكَ هُوَ يَفْصِلُ بَيْنَهُمُ الْيَوْمَ الْقِيَمَةِ فِيمَا

बेशक तुम्हारा रब उन में फैसला कर देगा क़ियामत के दिन जिस बात

كَانُوا فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ﴿٧٣﴾ أَوَلَمْ يَهْدِ لَهُمْ كَمْ

में इख़्तिलाफ़ करते थे और क्या उन्हें इस पर हिदायत

أَهْلَكْنَا مِنْ قَبْلِهِمْ مِّنَ الْقُرُونِ يَمْشُونَ فِي

न हुई कि हम ने उन से पहले कितनी संगतें हलाक कर दीं कि आज येह उन

مَسْكِنِهِمْ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ أَفَلَا يَسْمَعُونَ ﴿٧٤﴾

के घरों में चल फिर रहे हैं बेशक इस में जरूर निशानियां हैं तो क्या सुनते नहीं

أَوَلَمْ يَرَوْا أَنَّا نَسُوقُ الْمَاءَ إِلَى الْأَرْضِ الْجُرُزِ فَنُخْرِجُ

और क्या नहीं देखते कि हम पानी भेजते हैं खुश्क ज़मीन की तरफ़ फिर उस से खेती

بِهِ زُرْعَاتٍ أَكُلُ مِنْهُ أَنْعَامُهُمْ وَأَنْفُسُهُمْ أَفَلَا

निकालते हैं कि उस में से उन के चौपाए और वोह खुद खाते हैं तो क्या

يُجْرُونَ ۝ وَيَقُولُونَ مَتَى هَذَا الْفَتْحُ إِنْ كُنْتُمْ

उन्हें सूझता नहीं और कहते हैं येह फैसला कब होगा अगर तुम

صَادِقِينَ ۝ قُلْ يَوْمَ الْفَتْحِ لَا يَنْفَعُ الَّذِينَ

सच्चे हो तुम फरमाओ फैसले के दिन काफ़िरो को उन का

كَفَرُوا وَإِيمَانُهُمْ وَلَا هُمْ يُنْظَرُونَ ۝ فَأَعْرَضَ

ईमान लाना नफ़ा न देगा और न उन्हें मोहलत मिले तो उन से मुंह

عَنْهُمْ وَانْتَظَرِ إِنَّهُمْ مُنْتَظَرُونَ ۝

फैर लो और इन्तिज़ार करो बेशक उन्हें भी इन्तिज़ार करना है

### अहले बैत से हुस्ने सुलूक

अमीरुल मुअमिनीन हज़रते अलिय्युल मुर्तज़ा शरे  
खुदा عزّوجلّ के रिवायत है, **اَللّٰهُ** के  
महबूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अनिल उयूब  
फ़रमाते हैं :

“जो मेरे अहले बैत में से किसी के साथ अच्छा सुलूक  
करेगा, मैं रोज़े क़ियामत इस का सिला उसे अता फ़रमाऊंगा।”

(الجامع الصغير للسيوطي الحديث ٨٨٢١ ص ٥٣٣)

## सूरह मुजम्मिल

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरबान रहमत वाला

يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ ۖ قُمْ إِلَىٰ الْآقِلِينَ ۖ تَضَفَّةً أَوْ

ऐ झुरमट मारने वाले रात में किया मफरमा सिवा कुछ रात के आधी रात या

انْقُصْ مِنْهُ قَلِيلًا ۖ أَوْ زِدْ عَلَيْهِ وَرَتِّلِ الْقُرْآنَ

इस से कुछ कम करो या इस पर कुछ बढ़ाओ और कुरआन खूब ठहर ठहर

تَرْتِيلًا ۖ إِنَّا سَأَلْنَا عَلَىٰ قَوْلًا نَقِيلَ ۖ إِنَّ نَاشِئَةَ

कर पढ़ो बेशक अन्करीब हम तुम पर एक भारी बात डालेंगे बेशक रात

الَّيْلِ هِيَ أَشَدُّ وَطْأً وَأَقْوَمُ قِيلًا ۖ إِنَّ لَكَ فِي النَّهَارِ

का उठना वोह ज़ियादा दबाव डालता है और बात खूब सीधी निकलती है बेशक दिन में तो तुम को

سَبْحًا طَوِيلًا ۖ وَادْكُرْ اسْمَ رَبِّكَ وَتَبْتَئِلُ إِلَيْهِ يَتَّبِعُكَ

बहुत से काम हैं और अपने रब का नाम याद करो और सब से टूट कर उसी के हो रहो

رَبُّ الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ فَاتَّخِذْهُ وَكِيلًا ۖ

वोह पूरब का रब और पश्चिम का रब उस के सिवा कोई मा'बूद नहीं तो तुम उसी को अपना कारसाज बनाओ

وَاصْبِرْ عَلَىٰ مَا يَقُولُونَ وَاهْجُرْهُمْ هَجْرًا جَبِيلًا ۖ وَ

और काफ़िरों की बातों पर सब्र फ़रमाओ और उन्हें अच्छी तरह छोड़ दो और

ذَرْنِي وَالْمُكَذِّبِينَ أُولَى النَّعْمَةِ وَمَهِّلْهُمْ قَلِيلًا ۝۱۱

मुझ पर छोड़ो उन झुटलाने वाले मालदारों को और उन्हें थोड़ी मोहलत दो बेशक

لَدَيْنَا أَنْكَالٌ وَجَحِيمٌ ۝۱۲ وَطَعَامًا ذَا غُصَّةٍ وَعَذَابًا

हमारे पास भारी बेड़ियां हैं और भड़कती आग और गले में फंसता खाना और दर्दनाक

الْيَمَاءُ ۝۱۳ يَوْمَ تَرْجُفُ الْأَرْضُ وَالْجِبَالُ وَكَانَتِ

अज़ाब जिस दिन थरथराएंगे ज़मीन और पहाड़ और पहाड़ हो जाएंगे रैते

الْجِبَالُ كَثِيبًا مَّهِيلًا ۝۱۴ إِنَّا أَرْسَلْنَا إِلَيْكُمْ رَسُولًا شَاهِدًا

का टीला बहता हुवा बेशक हम ने तुम्हारी तरफ़ एक रसूल भेजे

عَلَيْكُمْ كَمَا أَرْسَلْنَا إِلَىٰ فِرْعَوْنَ رَسُولًا ۝۱۵ فَعَصَىٰ

कि तुम पर हाज़िर नाज़िर हैं जैसे हम ने फ़िरऔन की तरफ़ रसूल भेजे तो फ़िरऔन ने

فِرْعَوْنُ الرَّسُولَ فَأَخَذْنَاهُ أَخْذًا وَبِيلًا ۝۱۶ فَكَيْفَ

उस रसूल का हुक्म न माना तो हम ने उसे सख़्त गरिप्त से पकड़ा फिर कैसे बचोगे

تَتَّقُونَ إِن كَفَرْتُمْ يَوْمًا يَجْعَلُ الْوِلْدَانَ شِيبًا ۝۱۷ السَّمَاءُ

अगर कुफ़्र करो उस दिन से जो बच्चों को बूढ़ा कर देगा आस्मान उस

مُنْفَطِرَةٌ كَانَتْ وَعْدُهُ مَفْعُولًا ۝۱۸ إِنَّ هَذِهِ تَذْكِرَةٌ

के सदमे से फट जाएगा अल्लाह का वा'दा हो कर रहना बेशक येह नसीहत है

فَمَنْ شَاءَ اتَّخَذَ إِلَىٰ رَبِّهِ سَبِيلًا ۚ إِنَّ رَبَّكَ يَعْلَمُ أَنَّكَ

तो जो चाहे अपने रब की तरफ़ राह ले बेशक तुम्हारा रब जानता

تَقُومُ أَدْنَىٰ مِنْ ثُلَاثِي اللَّيْلِ وَنِصْفَهُ وَثُلُثَهُ وَطَائِفَةٌ

है कि तुम क़ियाम करते हो कभी दो तिहाई रात के करीब कभी आधी रात कभी तिहाई और

مِّنَ الَّذِينَ مَعَكَ وَاللَّهُ يُقَدِّرُ اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ ۚ عَلِمَ أَنْ

एक जमाअत तुम्हारे साथ वाली और अल्लाह रात और दिन का अन्दाज़ा फ़रमाता है उसे मा'लूम

لَّنْ تَحْصُوهُ فَتَابَ عَلَيْكُمْ فَاقْرَءُوا مَا تَيَسَّرَ مِنَ الْقُرْآنِ

है कि ऐ मुसलमानो तुम से रात का शुमार न हो सकेगा तो उस ने अपनी महर से तुम पर रुखूअ

عَلِمَ أَنْ سَيَكُونُ مِنْكُمْ مَّرْضَىٰ وَآخَرُونَ يَضْرِبُونَ فِي

फ़रमाई अब कुरआन में से जितना तुम पर आसान हो उतना पढ़ो उसे मा'लूम है कि अक़रीब

الْأَرْضِ يَبْتَغُونَ مِنْ فَضْلِ اللَّهِ وَآخَرُونَ يُقاتِلُونَ

कुछ तुम में बीमार होंगे और कुछ ज़मीन में सफ़र करेंगे अल्लाह का फ़ज़ल तलाश करने और कुछ अल्लाह

فِي سَبِيلِ اللَّهِ فَاقْرَءُوا مَا تَيَسَّرَ مِنْهُ وَأَقِيمُوا الصَّلَاةَ

की राह में लड़ते होंगे तो जितना कुरआन मुयस्सर हो पढ़ो और नमाज़ क़ाइम रखो

وَاتُوا الزَّكَاةَ وَقَرِّضُوا اللَّهَ قَرْضًا حَسَنًا وَمَا تَقَدَّسَ

और ज़कात दो और अल्लाह को अच्छा कर्ज़ दो और अपने लिये जो भलाई

لَا تَفْسِكُمْ مِّنْ خَيْرٍ تَجِدُوهُ عِنْدَ اللَّهِ هُوَ خَيْرٌ وَأَعْظَمُ

आगे भेजोगे उसे अल्लाह के पास बेहतर और बड़े सवाब की पाओगे और

أَجْرًا وَاسْتَغْفِرُوا لِلَّهِ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿٤٠﴾

अल्लाह से बख्शिश मांगो बेशक अल्लाह बख्शने वाला मेहरबान है

### उ-लमा की शान

اَللّٰهُ के महबूब, दानाए गुयूब, मुनज्जहुन

अनिल उयूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने पुरनूर है :

जन्नती जन्नत में उ-लमाए किराम के मोहताज होंगे, इस लिये कि वोह हर जुमुआ को اَللّٰهُ तआला के दीदार से मुशरफ़ होंगे । اَللّٰهُ तआला फ़रमाएगा :

يَا'नी मुझ से मांगो, जो चाहो ।

वोह जन्नती उ-लमाए किराम की तरफ़ मु-तवज्जेह होंगे कि अपने रब्बे करीम से क्या मांगें ? वोह फ़रमाएंगे : “येह मांगो वोह मांगो ।” जैसे वोह लोग दुन्या में उ-लमाए किराम के मोहताज थे, जन्नत में भी उन के मोहताज होंगे ।

(“الْفَرْدُوسُ بِمَا تُورِ الحُطَابُ” حديث ٨٨٠ ج ١ ص ٢٣٠)

و “الْحَامِعُ الصَّغِيرُ” للسيوطي لحديث ٢٢٣٥ ص ١٣٥)

## “बरी” के तीन हुरफ की निश्बत से सूरए क़फ़िरान के 3 फ़जाइल

(1) हज़रते सय्यिदुना फ़रवह बिन नौफ़ल رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है उन्होंने ने नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की खिदमत में हाज़िर हो कर अर्ज़ की : **या रसूलल्लाह !** صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ मुझे ऐसी चीज़ बताएं जिसे मैं बिस्तर पर जाते वक़्त पढ़ा करूं नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ ने फ़रमाया : **قُلْ يَا أَيُّهَا الْكَافِرُونَ** पढ़ा करो, येह शिर्क से बराअत (या'नी आज़ादी) है। (سُنَنِ التِّرْمِذِيِّ حَدِيثُ ३६१४ ج ५ ص २०७)

(2) हज़रते सय्यिदुना अनस رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है कि शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साहिबे मुअ़त्तर पसीना, बाइसे नुजूले सकीना, फैज़ गन्जीना صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने एक सहाबी رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से फ़रमाया : “ऐ फ़ुलां ! क्या तुम ने शादी कर ली है ?” तो उस ने अर्ज़ की : **“या रसूलल्लाह !** صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ खुदा की क़सम ! नहीं की, मेरे पास शादी करने के लिये कुछ नहीं।” फ़रमाया : “क्या तुम्हें **قُلْ هُوَ اللهُ أَحَدٌ** याद नहीं ?” उस ने अर्ज़ की “क्यूं नहीं।” आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ ने इर्शाद फ़रमाया : “येह तिहाई क़ुरआन के बराबर है।” फिर फ़रमाया : “क्या तुम्हें **إِذَا جَاءَ نَصْرُ اللَّهِ وَالْفَتْحُ** याद नहीं ?” उस ने अर्ज़ की क्यूं नहीं। फ़रमाया : “येह चौथाई क़ुरआन के बराबर है।” फिर दर्याफ़्त फ़रमाया : “क्या तुम्हें **قُلْ يَا أَيُّهَا الْكَافِرُونَ** याद नहीं ?” उस ने अर्ज़ की : “क्यूं नहीं।” फ़रमाया : “येह चौथाई क़ुरआन के बराबर है।” फिर फ़रमाया : “क्या तुम्हें **إِذَا زُلْزِلَتِ الْأَرْضُ** याद नहीं ?” उस ने अर्ज़ की : “क्यूं नहीं ?” फ़रमाया : “येह **“चौथाई क़ुरआन है”** फिर फ़रमाया : “शादी कर लो”, शादी कर लो।” (سُنَنِ التِّرْمِذِيِّ حَدِيثُ २९०६ ج ६ ص ६०९)



(3) हज़रते सय्यिदुना इब्ने अब्बास رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहरो बर صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने फ़रमाया : “ اِنْزِلَتْ نِسْفُ کُرْآنِ کے برابر है और قُلْ هُوَ اللَّهُ أَحَدٌ चौथाई कुरआन के बराबर है और قُلْ يَٰٓأَيُّهَا الْکَافِرُونَ चौथाई कुरआन के बराबर है ।”

(سُنَنِ التِّرْمِذِيِّ الْحَدِيثُ २९०३، ج ४، ص ६०९)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरबान रहमत वाला

قُلْ يَٰٓأَيُّهَا الْکَافِرُونَ ۝۱ لَا أَعْبُدُ مَا تَعْبُدُونَ ۝۲

तुम फ़रमाओ ऐ काफ़िरो न मैं पूजता हूं जो तुम पूजते हो

وَلَا أَنْتُمْ عِبُدُونَ مَا أَعْبُدُ ۝۳ وَلَا أَنَا

और न तुम पूजते हो जो मैं पूजता हूं और न मैं पूजूंगा

عَابِدٌ مَّا عِبَدْتُمْ ۝۴ وَلَا أَنْتُمْ عِبُدُونَ مَا

जो तुम ने पूजा और न तुम पूजोगे जो मैं

أَعْبُدُ ۝۵ لَكُمْ دِينُكُمْ وَلِيَ دِينِ ۝۶

पूजता हूं तुम्हें तुम्हारा दीन और मुझे मेरा दीन

## “बिस्मिल्लाह” के सात हुस्नफ़ की निश्चत से सू-२तुल इक्ल़ास के 7 फ़ज़ाइल

(1) हज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से मरवी है

कि हुजुरे पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इर्शाद फ़रमाया : “तुम में से कोई शख्स रात में तिहाई कुरआन क्यूं नहीं पढ़ता ?” सहाबए किराम رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمْ ने अर्ज किया : कोई शख्स तिहाई कुरआन कैसे पढ़ सकता है ? इर्शाद फ़रमाया : “**قُلْهُوَ اللهُ أَحَدٌ** तिहाई कुरआन के बराबर है ।”

(صحيح مسلم، حديث: ४११/ص ४००)

(2) हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत

है कि सय्यिदुल मुर-सलीन, खातिमुन्नबिय्यीन, जनाबे रहमतुल्लिल आ-लमीन صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इर्शाद फ़रमाया :

“इकठ्ठे हो जाओ क्यूं कि अभी मैं तुम्हारे सामने तिहाई कुरआन पढ़ूंगा ।” चुनान्वे सहाबए किराम رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمْ में से जिन्हें जम्अ होना था वोह जम्अ हो गए फिर नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ तशरीफ़ लाए और **قُلْهُوَ اللهُ أَحَدٌ** पढ़ी और वापस तशरीफ़ ले गए ।

हम एक दूसरे से कहने लगे : “शायद आस्मान से कोई ख़बर आई है जिस की वजह से हुजूर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ वापस तशरीफ़ ले गए हैं ।” जब आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ दोबारा तशरीफ़ लाए तो फ़रमाया : “मैं ने तुम्हारे सामने तिहाई कुरआन पढ़ने का कहा था तो सुन लो ? येही सूरत तिहाई कुरआन के बराबर है ।”

(صحيح مسلم، حديث: ४१२/ص ४००)

(3) हज़रते सय्यिदुना अबू सईद खुदरी رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाते हैं कि “एक शख्स ने किसी को बार बार قُلْ هُوَ اللهُ أَحَدٌ पढ़ते हुए सुना तो सुब्ह के वक़्त रसूले अकरम صَلَّی اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की बारगाह में हाज़िर हो कर इस का तज़क़िरा किया वोह साहिब गोया उसे कम समझ रहे थे तो रसूलुल्लाह صَلَّی اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने फ़रमाया : “उस ज़ात की क़सम जिस के दस्ते कुदरत में मेरी जान है येह सूरत तिहाई कुरआन के बराबर है ।”

(صَحِيحُ الْبُخَارِيِّ الْحَدِيثُ ००१३ ج ३ ص ६०६)

(4) हज़रते सय्यिदुना मुअज़ बिन अनस जुहनी رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है कि اَللّٰهُ کے महबूब, दानाए गुयूब, मुनज़ज़हुन अनिल उयूब صَلَّی اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इर्शाद फ़रमाया : “जो शख्स दस मर्तबा قُلْ هُوَ اللهُ أَحَدٌ पढ़ेगा اَللّٰهُ غَزُوْخُل उस के लिये जन्नत में एक महल बनाएगा ।” हज़रते सय्यिदुना उमर बिन ख़त्ताब رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने अर्ज किया : “या रसूलुल्लाह ! صَلَّی اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ फिर तो हम इसे कसरत से पढ़ा करेंगे ।” आप صَلَّی اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ ने फ़रमाया : “اَللّٰهُ غَزُوْخُل बहुत ज़ियादा अता फ़रमाने वाला और पाक है ।”

(مُسْنَدُ إِمَامِ أَحْمَدُ بْنُ حَنْبَلٍ حَدِيثُ १०६१० ج ५ ص ३०८)

(5) उम्मुल मुअमिनीन हज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीका रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا से मरवी है कि नूर के पैकर, नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहरो बर صَلَّی اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने एक साहिब को एक सरिय्या का अमीर बना कर भेजा येह अपने अस्हाब को नमाज़ पढ़ाते तो उस में और सूरत के साथ अखीर में قُلْ هُوَ اللهُ أَحَدٌ पढ़ते । सरिय्या से लौटने के बा'द लोगों ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ से

इस का तज़िकरा किया तो नबिय्ये करीम ﷺ ने फ़रमाया : “उस से पूछो वोह ऐसा क्यूं करता है ?” लोगों ने उस से पूछा तो उस ने बताया कि “मैं इस को हर नमाज़ में इस लिये पढ़ता हूं कि येह रहमान غَوْوَجَل की सिफ़त है और मैं इस के पढ़ने को पसन्द करता हूं।” येह सुन कर नबी ﷺ ने फ़रमाया : “उस को ख़बर दो कि **अल्लाह** غَوْوَجَل भी उस से **महबूबत** फ़रमाता है।”

(صَحِيحُ الْبُخَارِيِّ الْحَدِيثُ ٧٣٧٥ ج ٤ ص ٥٣١)

(6) हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाते हैं कि मैं ख़ातिमुल मुर-सलीन, रहूमतुल्लिल आ-लमीन, शफ़ीउल मुज़िबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन, महबूबे रब्बुल आ-लमीन, जनाबे सादिको अमीन ﷺ के साथ कहीं जा रहा था कि आप ﷺ ने किसी शख्स को सूरए इख़्लास पढ़ते हुए सुना तो आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : “**वाजिब** हो गई।” मैं ने अर्ज़ किया : “या रसूलल्लाह ! ﷺ क्या चीज़ वाजिब हो गई ?” फ़रमाया : “**जन्नत**।”

(الموطأ للإمام مالك الحديث ٤٩٥ ج ١ ص ١٩٨)

(7) हज़रते सय्यिदुना अनस رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है कि ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सखावत, पैकरे अ-ज-मतो शराफ़त, महबूबे रब्बुल इज़्ज़त, मोहसिने इन्सानियत ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : “जो शख्स रोज़ाना दो सो मर्तबा **قُلْ هُوَ اللهُ أَحَدٌ** पढ़ेगा उस के **पचास बरस** के गुनाह मिटा दिये जाएंगे मगर येह कि उस पर कर्ज़ हो।” (سَنَنِ التِّرْمِذِيِّ حَدِيثُ ٢٩٠٧ ج ٤ ص ٤١١)



بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ



अल्लाह के नाम से शुरूअ जो बहुत मेहरबान रहमत वाला

قُلْ هُوَ اللَّهُ أَحَدٌ ۝ اللَّهُ الصَّمَدُ ۝ لَمْ يَلِدْ وَلَمْ

तुम फ़रमाओ वोह अल्लाह है वोह एक है अल्लाह बे नियाज़ है न उस की कोई औलाद और न

يُولَدْ ۝ وَلَمْ يَكُنْ لَهُ كُفُوًا أَحَدٌ ۝

वोह किसी से पैदा हुवा और न उस के जोड़ का कोई

लोगों से सुवाल न करने की फ़ज़ीलत

हज़रते सय्यिदुना सौबान رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से मरवी है कि, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अनिल उयूब صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने फ़रमाया : “जो शख्स मुझे इस बात की ज़मानत दे कि लोगों से कोई चीज़ न मांगे, तो मैं उसे जन्नत की ज़मानत देता हूँ।” हज़रते सय्यिदुना सौबान رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ अर्ज़ गुज़ार हुए कि मैं इस बात की ज़मानत देता हूँ। चुनान्वे वोह किसी से कुछ नहीं मांगा करते थे।

(سُنَنِ أَبِي كُرْدَحَيْثٍ: ١٦٤٣، ص ١٣٤٦)

## “पब्बा बब” के पांच हुस्नफ़ की निश्बत से सूरऽ फलक और सूरऽ नास के 5 फ़ज़ाइल

(1) हज़रते सय्यिदुना जाबिर बिन अब्दुल्लाह رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا

फ़रमाते हैं कि सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए  
रोजे शुमार, दो आलम के मालिको मुख्तार, हबीबे परवर्द गार  
रुज़ी رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने मुझे से फ़रमाया : “ऐ जाबिर ! पढ़ो ।” मैं ने  
अर्ज़ की : “या रसूलल्लाह ! رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ मेरे मां बाप आप पर  
कुरबान ! क्या पढ़ूं ?” फ़रमाया : قُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ और قُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ النَّاسِ  
फिर मैं ने येह दोनों (सूरतें) पढ़ीं तो फ़रमाया : “इन दोनों को पढ़ा  
करो क्यूं कि तुम इन की मिस्ल हरगिज़ न पढ़ सकोगे ।”

(الأحسان بِرَبِّ رَبِّ صَبِيحُ ابْنِ جَبَان، الحديث: ٧٩٣، ج ٢، ص ٨٤)

(2) हज़रते सय्यिदुना उक्बा बिन अमिर رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से

रिवायत है कि “मैं एक सफ़र में रसूलुल्लाह رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के  
साथ था तो आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ ने फ़रमाया : “ऐ उक्बा ! क्या  
मैं तुम्हें पढ़ी जाने वाली दो बेहतरीन सूरतें न सिखाऊं ?” फिर आप  
قُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ النَّاسِ और قُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ ने मुझे से  
सिखाई ।”

(سُنَنِ أَبِي ذَرٍّ، الحديث: ١٤٦٢، ج ٢، ص ١٠٣)

(3) हज़रते सय्यिदुना उक्बा बिन अमिर رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से

रिवायत है कि “मैं रसूलुल्लाह رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के साथ जुहफ़ा  
और अब्बा (दो मक़ामात) के दरमियान से गुज़र रहा था कि हमें शदीद

आंधी और तारीकी ने घेर लिया तो रसूलुल्लाह ﷺ ने  
 قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ الْاَشْفَاكِ और قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ النَّاسِ के ज़रीए पनाह मांगना शुरू  
 की और मुझ से फ़रमाया : “ऐ उक्बा ! इन दोनों के ज़रीए पनाह  
 मांगा करो किसी पनाह चाहने वाले ने इस की मिस्ल किसी चीज़  
 के वसीले से पनाह नहीं मांगी ।”

(سُنَنِ أَبِي دَاوُدَ، الْحَدِيثُ: ١٤٦٣، ج ٢، ص ١٠٣)

#### (4) उम्मुल मुअमिनीन हज़रते सय्यि-दतुना अ़इशा

ﷺ से रिवायत है कि जब रसूलुल्लाह ﷺ आराम फ़रमाने के लिये बिस्तर पर तशरीफ़ लाते तो दोनों हाथों को  
 जोड़ कर सूरए इख़्लास, फ़लक़ और नास पढ़ कर दम करते और  
 ब-दने अक्दस के जिस हिस्से तक हाथ पहुंचते वहां हाथ फैरते मगर  
 हाथ फैरने की इब्तिदा सर और चेहरे से होती और जिस्मे अक्दस के  
 अगले हिस्से से और इसी तरह तीन मर्तबा येह अमल करते थे ।

(صَحِيحُ الْبُخَارِيِّ، الْحَدِيثُ: ५०१७، ج ३، ص ६०७)

#### (5) हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन हबीब

رضی اللہ تعالیٰ عنہ कि सरकारे दो आलम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी  
 आदम, रसूले मुहूतशम ﷺ ने उन से फ़रमाया  
 قُلْ هُوَ اللّٰهُ أَحَدٌ और मुअव्वि-ज़तैन (सूरए फ़लक़ और सूरए नास)  
 रोज़ाना तीन तीन मर्तबा सुब्ह व शाम पढ़ लिया करो येह तुम्हारे  
 लिये हर चीज़ से किफ़ायत करेंगी ।

(الْذُّرُ الْمَشْهُورُ، ج ८، ص १८१)



بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ



अल्लाह के नाम से शुरूअ जो बहुत मेहरबान रहमत वाला

قُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ ۝۱ مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ ۝۲ وَمِنْ

तुम फ़रमाओ मैं उस की पनाह लेता हूँ जो सुब्द का पैदा करने वाला है उस की सब मख़्लूक के शर से और अंधेरी

شَرِّ غَاسِقٍ إِذَا وَقَبَ ۝۳ وَمِنْ شَرِّ النَّفَّاثَاتِ فِي

डालने वाले के शर से जब वोह डूबे और उन औरतों के शर से जो गिरहों

الْعُقَدِ ۝۴ وَمِنْ شَرِّ حَاسِدٍ إِذَا حَسَدَ ۝۵

में फूंकती हैं और हसद वाले के शर से जब वोह मुझ से जले



بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ



अल्लाह के नाम से शुरूअ जो बहुत मेहरबान रहमत वाला

قُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ النَّاسِ ۝۱ مَلِكِ النَّاسِ ۝۲

तुम कहो मैं उस की पनाह में आया जो सब लोगों का रब सब लोगों का बादशाह

إِلَهِ النَّاسِ ۝۳ مِنْ شَرِّ الْوَسْوَاسِ الْخَنَّاسِ ۝۴

सब लोगों का खुदा उस के शर से जो दिल में बुरे ख़तरे डाले

الَّذِي يُوسْوِسُ فِي صُدُورِ النَّاسِ ۝۵

और दुबुक रहे वोह जो लोगों के दिलों में वस्वसे डालते हैं

مِنَ الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ ۝۶

जिन्न और आदमी



“**बग्माज**” के चार हुरफ़ की निश्बत से सूरह  
ब-करह की आखिरी आयात के चार फ़ज़ाइल

(1) शहन्शाहे मदीना, सुरूरे क़ल्बो सीना **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** ने फ़रमाया : **اَللّٰهُ** ने ज़मीन व आस्मान को पैदा करने से दो हजार साल पहले एक किताब लिखी फिर उस में से ब-करह की आखिरी दो आयतें नाज़िल फ़रमाई, जिस घर में तीन रातें इन दो आयतों को पढ़ा जाएगा शैतान उस घर के क़रीब न आएगा ।

(مُسْنَدُ التِّرْمِذِيِّ الْحَدِيثُ २८९१ ج ६ ص ६०६)

(2) एक रिवायत के अल्फ़ाज़ कुछ यूँ हैं कि “जिस घर में इन दो आयतों को पढ़ा जाएगा शैतान तीन दिन तक उस के क़रीब न आएगा ।”

(الْمُسْتَدْرَكُ حَدِيثُ २१०९ ج २ ص २६८)

(3) नूर के पैकर, नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहरो बर **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** ने फ़रमाया : “बेशक **اَللّٰهُ** ने मुझे अपने अर्श के नीचे के ख़ज़ाने में से ऐसी दो आयतें अता फ़रमाई जिन के ज़रीए सू-रतुल ब-करह का इख़िताम फ़रमाया, इन्हें सीखो और अपनी औरतों और बच्चों को सिखाओ क्यूं कि येह नमाज़ और क़ुरआन और दुआ हैं ।”

(الْمُسْتَدْرَكُ الْحَدِيثُ २११० ج २ ص २६८)

(4) सुल्ताने दो जहान, मदीने के सुल्तान, रहमते आ-लमियान, सरवरे ज़ीशान **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** ने फ़रमाया : “जो शख्स (सूरह) ब-करह की आखिरी दो आयतें रात में पढ़ेगा वोह उसे किफ़ायत करेंगी ।”

(صَحِيحُ الْبُخَارِيِّ حَدِيثُ ०००९ ج ३ ص ६००)

किफायत से मुराद येह है कि येह दो आयतें उस रात के कियाम के काइम मक़ाम हो जाएंगी या उस रात उसे शैतान से महफूज़ रखेंगी या उस रात में नाज़िल होने वाली आफ़ात से बचाएंगी या उसे फ़ज़ीलत व सवाब के लिये काफ़ी होंगी । وَاللّٰهُ تَعَالٰی اَعْلَمُ ।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ जो बहुत मेहरबान रहमत वाला

اَمِّنَ الدَّسُوْلُ بِمَا اُنْزِلَ اِلَيْهِ مِنْ

रसूल ईमान लाया उस पर जो उस के रब के पास से

رَّسُوْلِهِ وَالْمُؤْمِنُوْنَ كُلُّ اَمِّنَ بِاللّٰهِ وَ

इस पर उतरा और ईमान वाले सब ने माना अल्लाह और उस के

مَلٰٓئِكَتِهٖ وَكُتُبِهٖ وَرُسُلِهٖ لَا تَفَرَّقُ

फ़िरिशतों और उस की किताबों और उस के रसूलों को येह कहते

بَيْنَ اَحَدٍ مِّنْ رُّسُلِهٖ تَقَالُوْا سَمِعْنَا

हुए कि हम उस के किसी रसूल पर ईमान लाने में फ़र्क़ नहीं करते और अर्ज़ की, कि हम ने

وَاطَعْنَا غُفْرَانَكَ رَبَّنَا وَاِلَيْكَ الْمَصِيْرُ ۝ ٢٨٥

सुना और माना तेरी मुआफ़ी हो ऐ रब हमारे और तेरी ही तरफ़ फिरना है अल्लाह

يُكَلِّفُ اللَّهُ نَفْسًا إِذَا وُسْعَهَا لَهَا مَا كَسَبَتْ

किसी जान पर बोझ नहीं डालता मगर उस की ताकत भर उस का फाएदा है

وَعَلَيْهَا مَا اكْتَسَبَتْ رَبَّنَا لَا تَأْخُذْنَا إِن نَّسِينَا

जो अच्छा कमाया और उस का नुकसान है जो बुराई कमाई ऐ रब हमारे हमें न पकड़ अगर हम भूलें

أَوْ أَخْطَأْنَا رَبَّنَا وَلَا تَحْمِلْ عَلَيْنَا اِصْرًا كَمَا

या चूकें ऐ रब हमारे और हम पर भारी बोझ न रख जैसा कि

حَمَلْتَهُ عَلَى الَّذِينَ مِنْ قَبْلِنَا رَبَّنَا وَلَا تَحْمِلْنَا كَمَا

तूने हम से अगलों पर रखा था ऐ रब हमारे और हम पर वोह

طَاقَةَ لَنَا بِهِ ۚ وَاعْفُ عَنَّا ۖ وَارْحَمْنَا ۖ

बोझ न डाल जिस की हमें सहार न हो और हमें मुआफ़ फ़रमा दे और बख़्शा दे और हम

أَنْتَ مَوْلَانَا فَانصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكَافِرِينَ ٤

पर मेहर कर तू हमारा मौला है तो काफ़ि़रों पर हमें मदद दे

### म-दनी फूल

ऐ काश ! रोज़ी में कसरत की महबूबत के बदले हम  
नेकियों में ब-र-कत की हसरत करते और इस के लिये भी  
कोई विर्द करते

## सूरउ ह२२ की आखिरी आयात

हज़रते सय्यिदुना मा'क़िल बिन यसार رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से मरवी है कि नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने फ़रमाया :  
 “जो शख्स सुबह के वक़्त तीन बार اَعُوْذُ بِاللّٰهِ السَّمِيعِ الْعَلِيْمِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ कहे और सूरए ह२२ की आखिरी तीन आयात पढ़े तो अल्लाह तआला उस के लिये सत्तर हज़ार फ़िरिश्ते मुक़र्रर कर देता है जो शाम तक उस के लिये दुआए रहमत करते हैं और अगर उस दिन मरे तो शहीद होगा और शाम को पढ़े तो सुबह तक येही फ़ज़ीलत है।”  
 (سُنَنِ التِّرْمِذِيِّ حَدِيثٌ ٢٩٣١ ج ٤ ص ٤٢٣)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरबान रहमत वाला

هُوَ اللّٰهُ الَّذِي لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ عِلْمُ الْغَيْبِ وَ

वोही अल्लाह है जिस के सिवा कोई मा'बूद नहीं हर निहा व इयां का जानने वाला

الشَّهَادَةِ هُوَ الرَّحْمٰنُ الرَّحِيْمُ ۝ هُوَ اللّٰهُ الَّذِي

वोही है बड़ा मेहरबान रहमत वाला वोही है अल्लाह जिस के सिवा

لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ الْمَلِكُ الْقَدُّوسُ السَّلَامُ التَّوْحِيدُ

कोई मा'बूद नहीं बादशाह निहायत पाक सलामती देने वाला

الْمُهَيْمِنُ الْعَزِيزُ الْجَبَّارُ الْمُتَكَبِّرُ سُبْحَنَ اللَّهِ عَمَّا

अमान बख़्शने वाला हिफ़ाज़त फ़रमाने वाला इज़्ज़त वाला अ-ज़मत वाला तकब्बुर वाला अल्लाह को पाकी

يُشْرِكُونَ ۝ هُوَ اللَّهُ الْخَالِقُ الْبَارِئُ الْمُصَوِّرُ لَهُ

है उन के शिर्क से वोही है अल्लाह बनाने वाला पैदा करने वाला हर एक को सूरत

الْأَسْمَاءُ الْحُسْنَى يُسَبِّحُ لَهُ مَا فِي السَّمَوَاتِ

देने वाला उसी के हैं सब अच्छे नाम उस की पाकी बोलता है जो कुछ आस्मानों और

وَالْأَرْضِ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ۝

ज़मीन में है और वोही इज़्ज़त व हिक्मत वाला है

“मढ़ीबा” के पांच हुरूफ़ की निश्बत से

आ-यतुल कुरसी के 5 फ़ज़ाइल

(1) हदीस शरीफ़ में है कि येह आयत कुरआने मजीद की आयतों में बहुत ही अ-ज़मत वाली आयत है। (الدَّرُ الْمَشْهُورُ ج २ ص ६)

(2) हज़रते सय्यिदुना उबय्य बिन का'ब رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है कि हुस्ने अख़लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, महबूबे रब्बे अक्बर صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने फ़रमाया : “ऐ अबू मुन्ज़िर ! क्या तुम्हें मा'लूम है कि कुरआने पाक की जो आयतें तुम्हें याद हैं इन में कौन सी आयत अज़ीम है ?” मैं ने अर्ज किया : “اللَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ الْعَلِيُّ الْقَيُّومُ”

फिर रसूलुल्लाह ﷺ ने मेरे सीने पर हाथ मारा और फरमाया : “ऐ अबू मुन्ज़िर ! तुम्हें इल्म मुबारक हो ।”

(صَحِيح مُسْلِم حَدِيث ٨١٠ ص ٤٠٥)

(3) एक रिवायत में है कि सू-रतुल ब-क़रह में एक आयत है जो कुरआन की तमाम आयतों की सरदार है, वोह जिस घर में पढ़ी जाए उस घर से शैतान भाग जाता है वोह आ-यतुल कुरसी है ।

(الْمُسْتَدْرَك حَدِيث ٣٠٨٠ ج ٢ ص ٦٤٧)

(4) अमीरुल मुअमिनीन हज़रते सय्यिदुना अली क़ुम फ़रमाते हैं कि मैं ने हुज़ूरे अकरम, नूरे मुजस्सम को फ़रमाते हुए सुना जो शख्स हर नमाज़ के बा'द आ-यतुल कुरसी पढ़े उसे जन्नत में दाख़िल होने से कोई चीज़ नहीं रोक सकती वोह मरते ही जन्नत में चला जाएगा और जो कोई रात को सोते वक़्त इसे पढ़ेगा वोह, उस के पड़ोसी और आस पास के दूसरे घर वाले शैतान और चोर से महफूज़ रहेंगे ।

(شُعَبُ الْإِيمَانِ حَدِيث ٢٣٩٥ ج ٢ ص ٤٥٨)

(5) जो शख्स हर नमाज़ के बा'द आ-यतुल कुरसी पढ़ेगा उस को हस्बे ज़ैल ब-र-क़ते नसीब होंगी : اِنْ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ

- ① वोह मरने के बा'द जन्नत में जाएगा ।
- ② वोह शैतान और जिन्न की तमाम शरारतों से महफूज़ रहेगा ।
- ③ अगर मोहताज होगा तो चन्द दिनों में उस की मोहताजी और ग़रीबी दूर हो जाएगी ।
- ④ जो शख्स सुब्ह व शाम और बिस्तर पर लैटते वक़्त आ-यतुल कुरसी और इस के बा'द की दो आयतें خَلِدُونَ तक पढ़ा करेगा वोह

चोरी, गर्क आबी और जलने से महफूज रहेगा ।

﴿5﴾ अगर सारे मकान में किसी ऊंची जगह पर लिख कर उस का कत्बा आवेजां कर दिया जाए तो بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ उस घर में कभी फाका न होगा । बल्कि रोजी में ब-र-कत और इजाफा होगा और उस मकान में कभी चोर न आ सकेगा । (जन्नती जेवर, स. 589)

आ-यंतुल  
कुरशी  
**اللَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ الْحَيُّ الْقَيُّومُ**

अल्लाह है जिस के सिवा कोई मा'बूद नहीं वोह आप जिन्दा

**لَا تَأْخُذُكَ سِنَّةٌ وَلَا نَوْمٌ لَهُ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَمَا**

और औरो का काइम रखने वाला उसे न ऊंघ आए न नींद उसी का है जो कुछ आस्मानों

**فِي الْأَرْضِ مَنْ ذَا الَّذِي يَشْفَعُ عِنْدَهُ إِلَّا بِإِذْنِهِ**

में है और जो कुछ ज़मीन में वोह कौन है जो उस के यहां सिफारिश करे

**يَعْلَمُ مَا بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ وَلَا يُحِيطُونَ**

बे उस के हुक्म के जानता है जो कुछ उन के आगे है और जो कुछ उन के पीछे

**بِشَيْءٍ مِّنْ عِلْمِهِ إِلَّا بِمَا شَاءَ وَسِعَ كُرْسِيُّهُ السَّمَوَاتِ**

और वोह नहीं पाते उस के इल्म में से मगर जितना वोह चाहे उस की कुरसी में समाए

**وَالْأَرْضِ وَلَا يَئُودُهُ حِفْظُهُمَا وَهُوَ الْعَلِيُّ الْعَظِيمُ**

हुए हैं आस्मान और ज़मीन और उसे भारी नहीं उन की निगहबानी और वोही बुलन्द बड़ाई वाला

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ  
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

عَزَّوَجَلَّ

# फैजाने जिक्रुल्लाह

بِسْمِ اللَّهِ

## दुरूद शरीफ की फजीलत

सरकारे दो जहान صَلَّی اللہ تعالیٰ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मग़िफ़रत निशान है : जो मेरी महबबत और मेरी तरफ़ शौक की वजह से मुझ पर हर दिन और हर रात को तीन तीन बार दुरूद शरीफ़ पढ़े तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ पर हक़ है कि वोह इस के उस दिन और उस रात के गुनाह बख़्श दे ।

(الْمُعْتَمَدُ الْكَبِيرُ ج ۱ ص ۳۶۱ ح ۹۲۸)

صَلُّوا عَلَى الْخَبِيبِ ا صَلَّی اللہ تعالیٰ عَلَیْ مُحَمَّد

## ईमाने मुफ़रशल

أَمَنْتُ بِاللَّهِ وَمَلَائِكَتِهِ وَكُتُبِهِ وَرُسُلِهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ  
وَالْقَدَرِ خَيْرِهِ وَشَرِّهِ مِنَ اللَّهِ تَعَالَى وَالْبَعْثِ بَعْدَ الْمَوْتِ

तरजमा : मैं ईमान लाया अल्लाह पर और उस के फ़िरिश्तों पर और उस की किताबों पर और उस के रसूलों पर और क़ियामत के दिन पर और इस पर कि अच्छी और बुरी तक्दीर अल्लाह की तरफ़ से है और मौत के बा'द उठाए जाने पर ।



फरमाने मुस्तफा ﷺ जिसने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह तआला उस पर दस रहमते भेजता है।

### ईमाने मुज्जल

أَمِنْتُ بِاللَّهِ كَمَا هُوَ بِأَسْمَائِهِ وَصِفَاتِهِ وَقَبِلْتُ  
جَمِيعَ أَحْكَامِهِ إِقْرَأْ بِاللِّسَانِ وَتَصْدِيقٌ بِالْقَلْبِ

तरजमा : मैं ईमान लाया अल्लाह पर जैसा कि वोह अपने नामों और अपनी सिफतों के साथ है और मैं ने उस के तमाम अहकाम कबूल किये ज़बान से इक़्ार करते हुए और दिल से तस्दीक करते हुए।

### अव्वल कलिमा तय्यिब

لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ مُحَمَّدٌ رَّسُولُ اللَّهِ

तरजमा : अल्लाह के सिवा कोई इबादत के लाइक नहीं मुहम्मद (ﷺ) अल्लाह के रसूल हैं।

### दूसरा कलिमा शहादत

أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ  
وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ

तरजमा : मैं गवाही देता हूं कि अल्लाह के सिवा कोई मा'बूद नहीं वोह अकेला है उस का कोई शरीक नहीं और मैं गवाही देता हूं कि बेशक मुहम्मद (ﷺ) अल्लाह के बन्दे और रसूल हैं।

फरमाने मुस्तफा ﷺ जो शख्स मुझ पर दुरुदे पाक पढ़ना भूल गया वोह जन्नत का रास्ता भूल गया ।

### तीसरा कलिमा तम्जीद

سُبْحَانَ اللَّهِ وَالْحَمْدُ لِلَّهِ وَلَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَاللَّهُ  
أكْبَرُ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللَّهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيمِ

तरजमा : अल्लाह पाक है और सब खूबियां अल्लाह के लिये हैं और अल्लाह के सिवा कोई मा'बूद नहीं और अल्लाह सब से बड़ा है गुनाहों से बचने की ताकत और नेकी करने की तौफीक अल्लाह ही की तरफ से है जो सब से बुलन्द अ-जमत वाला है ।

### चौथा कलिमा तौहीद

لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ  
الْحَمْدُ يُحْيِي وَيُمِيتُ وَهُوَ حَيٌّ لَا يَمُوتُ أَبَدًا أَبَدًا  
ذُو الْجَلَالِ وَالْإِكْرَامِ بِيَدِهِ الْخَيْرُ وَهُوَ عَلَى كُلِّ  
شَيْءٍ قَدِيرٌ

तरजमा : अल्लाह के सिवा कोई मा'बूद नहीं वोह अकेला है उस का कोई शरीक नहीं उसी के लिये है बादशाही और उसी के लिये हम्द है वोही ज़िन्दा करता और मारता है और वोह ज़िन्दा है उस को हरगिज़ कभी मौत नहीं आएगी । बड़े जलाल और बुजुर्गी वाला है । उस के हाथ में भलाई है और वोह हर चीज़ पर कादिर है ।

फरमाने मुस्तफा ﷺ जिसने मुझ पर एक बार दुरदे पाक पड़ा अल्लाह तआला उस पर दस रहमते भेजता है।

पांचवां कलिमा इस्तिफ़ार

اَسْتَغْفِرُ اللهَ رَبِّي مِنْ كُلِّ ذَنْبٍ اَذْنَبْتُهُ عَمَدًا اَوْ  
خَطَا سِرًّا اَوْ عَلَانِيَةً وَاَتُوبُ اِلَيْهِ مِنَ الذَّنْبِ  
الَّذِي اَعْلَمُ وَمِنَ الذَّنْبِ الَّذِي لَا اَعْلَمُ اِنَّكَ اَنْتَ  
عَلَّامُ الْغُيُوبِ وَسَتَّارُ الْعُيُوبِ وَغَفَّارُ الذُّنُوبِ وَلَا  
حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيمِ

तरजमा : मैं अल्लाह से मुआफी मांगता हूं जो मेरा परवर्द गार है हर गुनाह से जो मैं ने जान बूझ कर किया या भूल कर, छुप कर किया या जाहिर हो कर और मैं उस की बारगाह में तौबा करता हूं उस गुनाह से जिस को मैं जानता हूं और उस गुनाह से भी जिस को मैं नहीं जानता, (ऐ अल्लाह) बेशक तू गैबों का जानने वाला और ऐबों का छुपाने वाला और गुनाहों का बख़्शने वाला है और गुनाह से बचने की ताक़त और नेकी करने की कुव्वत अल्लाह ही की तरफ़ से है जो सब से बुलन्द अ-ज़मत वाला है।

छटा कलिमा रद्दे कुफ़

اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَعُوْذُ بِكَ مِنْ اَنْ اُشْرِكَ بِكَ شَيْئًا وَاَنَا  
اَعْلَمُ بِهٖ وَاَسْتَغْفِرُكَ لِمَا لَا اَعْلَمُ بِهٖ ثَبَّتْ عَنْهُ

फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ जिसने मुझ पर दस मरतबा दुरुद पाक पढ़ा! अल्लाह तआला उस पर सौ रहमतें भेजता है।

وَتَبَرَّأْتُ مِنَ الْكُفْرِ وَالشِّرْكِ وَالْكَذِبِ وَالْغَيْبَةِ  
وَالْبِدْعَةِ وَالنَّيْمَةِ وَالْفَوَاحِشِ وَالْبُهْتَانِ  
وَالْعَاصِي كُلِّهَا وَأَسْلَمْتُ وَأَقُولُ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ  
مُحَمَّدٌ رَسُولُ اللَّهِ

तरजमा : ऐ अल्लाह मैं तेरी पनाह मांगता हूं इस बात से कि मैं किसी शै को तेरा शरीक बनाऊं जान बूझ कर और बख़्शिश मांगता हूं तुझ से उस (शिक) की जिस को मैं नहीं जानता और मैं ने उस से तौबा की और मैं बेज़ार हुवा कुफ़्र से और शिक से और झूट से और ग़ीबत से और बिदअत से और चुगली से और बे हयाइयों से और बोहतान से और तमाम गुनाहों से और मैं इस्लाम लाया और मैं कहता हूं अल्लाह के सिवा कोई इबादत के लाइक नहीं मुहम्मद (ﷺ) अल्लाह के रसूल हैं।

“मग़िफ़रत” के पांच हुस्नफ़ की निश्चत  
से इस्तिग़फ़ार करने के 5 फ़ज़ाइल

(1) दिलों के जंग की सफ़ाई

हज़रते सय्यिदुना अनस رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है कि खा-तमुन्नबिय्यीन, साहिबे कुरआने मुबीन, महबूबे रब्बुल आ-लमीन, जनाबे सादिको अमीन ﷺ का फ़रमाने दिल नशीन है : बेशक लौहे की तरह दिलों को भी जंग लग जाता है और इस की जिला (या'नी सफ़ाई) इस्तिग़फ़ार करना है।

(مَجْمَعُ الزَّوَادِ ج ١٠ ص ٢٤٦ ح ١٧٥٧٥)

फरमाने मुस्तफा ﷺ तुम जहां भी हो मुझ पर दुरद पढ़ो कि तुम्हारा दुरद मुझ तक पहुंचता है।

## (2) परेशानियों और तंगियों से नजात

हजरते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन अब्बास رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا

से रिवायत है कि महबूबे रब्बे जुल जलाल, साहिबे जूदो नवाल, शहन्शाहे खुश खिसाल, सुल्ताने शीरीं मकाल, पैकरे हुस्नो जमाल, ﷺ का फरमाने दिल नशीन है : जिस ने इस्तिफार को अपने ऊपर लाजिम कर लिया अल्लाह عزوجل उस की हर परेशानी दूर फरमाएगा और हर तंगी से उसे राहत अता फरमाएगा और उसे ऐसी जगह से रिजक अता फरमाएगा जहां से उसे गुमान भी न होगा।

(سُنَنِ ابْنِ مَاجَه ج ٤ ص ٢٥٧ ح ٣٨١٩)

## (3) खुश करने वाला आ'माल नामा

हजरते सय्यिदुना जुबैर बिन अब्बाम رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत

है कि नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम ﷺ का फरमाने मुसररत निशान है : जो इस बात को पसन्द करता है कि उस का नामए आ'माल उसे खुश करे तो उसे चाहिये कि उस में इस्तिफार का इजाफा करे।

(مَجْمَعُ الزَّوَالِد ج ١٠ ص ٣٤٧ ح ١٧٥٧٩)

## (4) खुश ख़बरी !

हजरते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन बुस्र رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ

फरमाते हैं कि मैं ने शहन्शाहे मदीना, करारे क़ल्बो सीना, साहिबे मुअत्तर पसीना, बाइसे नुजूले सकीना, फैज गन्जीना, ﷺ

फरमाने मुस्तफा ﷺ जिसने मुझ पर दस मर्तबा सुबह और दस मर्तबा शाम दुरुदे पाक पढ़ा उसे किया मत के दिन मेरी शफाअत मिलेगी।

को फरमाते हुए सुना कि खुश ख़बरी है उस के लिये जो अपने नामए आ'माल में इस्तिफ़ार को कसरत से पाए।

(سُنَنِ ابْنِ مَاجَه ج ٤ ص ٢٥٧ حَدِيث ٣٨١٨)

## (5) सय्यिदुल इस्तिफ़ार पढ़ने वाले के लिये जन्नत की बिशारत

हज़रते सय्यिदुना शहाद बिन औस رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से मरवी है कि ख़ातिमुल मुर-सलीन, रहमतुल्लिल आ-लमीन, शफीज़ल मुज़िबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन, महबूबे रब्बुल आ-लमीन, जनाबे सादिको अमीन صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने फरमाया कि येह सय्यिदुल इस्तिफ़ार है :

اَللّٰهُمَّ اَنْتَ رَبِّيْ لَا اِلَهَ اِلَّا اَنْتَ خَلَقْتَنِيْ وَاَنَا عَبْدُكَ  
وَاَنَا عَلٰى عَهْدِكَ وَوَعْدِكَ مَا اسْتَطَعْتُ اَعُوْذُ بِكَ  
مِنْ شَرِّ مَا صَنَعْتُ اَبُوْءُ لَكَ بِنِعْمَتِكَ عَلَيَّ وَاَبُوْءُ  
بِذَنْبِيْ فَاغْفِرْ لِيْ فَاِنَّهُ لَا يَغْفِرُ الذُّنُوْبَ اِلَّا اَنْتَ

तरजमा : “ ऐ अल्लाह ! तू मेरा रब है तेरे सिवा कोई मा'बूद नहीं तूने मुझे पैदा किया मैं तेरा बन्दा हूँ और ब क़द्रे ताक़त तेरे अहदो पैमान पर काइम हूँ, मैं अपने किये के शर से तेरी पनाह मांगता हूँ, तेरी ने'मत का जो मुझ पर है इक़ार करता हूँ और अपने गुनाहों का ए'तिराफ़ करता हूँ मुझे बख़्श दे कि तेरे सिवा कोई गुनाह नहीं बख़्श सकता ।”

फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ मुझ पर दुर्दे पाक की कसूरत करो बेशक यह तुम्हारे लिये त्हातर है।

जिस ने इसे दिन के वक़्त ईमान व यकीन के साथ पढ़ा फिर उसी दिन शाम होने से पहले उस का इन्तिक़ाल हो गया तो वोह जन्नती है और जिस ने रात के वक़्त इसे ईमान व यकीन के साथ पढ़ा फिर सुबह होने से पहले उस का इन्तिक़ाल हो गया तो वोह जन्नती है।

(صحيح البخاري ج ٤ ص ١٩٠ حديث ١٢٠٦)

## “वाहिद” के चार हुरफ़ की निश्बत से कलिमए तय्यिबा के 4 फ़ज़ाइल (1) खुश नसीब कौन

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है उन्होंने ने अर्ज़ की : या रसूलल्लाह ! ﷺ कियामत के दिन आप ﷺ की शफ़ाअत से बहरा मन्द होने वाले खुश नसीब लोग कौन होंगे ? फ़रमाया : ऐ अबू हुरैरा ! मेरा गुमान येही था कि तुम से पहले मुझ से येह बात कोई न पूछेगा क्यूं कि मैं हदीस सुनने के मुआ-मले में तुम्हारी हिर्स को जानता हूं, कियामत के दिन मेरी शफ़ाअत पाने वाला खुश नसीब वोह होगा जो सिद्क़ दिल से “لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ” कहेगा।

(صحيح البخاري ج ١ ص ٥٣ حديث ٩٩)

## (2) अफ़ज़ल ज़िक्र व दुआ

हज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाते हैं : मैं ने शहन्शाहे मदीना, करारे क़ल्बो सीना, साहिबे मुअत्तर पसीना, बाइसे नुजूले सकीना, फैज़ गन्जीना ﷺ को फ़रमाते हुए सुना : सब से अफ़ज़ल ज़िक्र “لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ” है और सब

फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ जिसने किताब में मुझ पर दुर्रदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फ़िरिश्ते उस के लिये इस्तिफ़ार करते रहेंगे।

से अफ़ज़ल दुआ “اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ” है। (سُنَنِ ابْنِ مَاجَه ج ٤ ص ٢٤٨ حديث ٣٨٠٠)

### (3) आस्मानों के दरवाजे खुल जाते हैं

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहरो बर ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : “जिस बन्दे ने इख़्लास के साथ “لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ” कहा तो आस्मानों के दरवाजे खोल दिये जाते हैं, यहां तक कि वोह अर्श तक पहुंच जाता है जब कि कबीरा गुनाहों से बचता रहे।”

(سُنَنِ التِّرْمِذِيِّ ج ٥ ص ٣٤٠ حديث ٣٦٠١)

### (4) तज्दीदे ईमान

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ से रिवायत है कि सय्यिदुल मुबल्लिगीन, रहमतुल्लिल आ-लमीन ﷺ ने फ़रमाया : अपने ईमान की तज्दीद कर लिया करो। अर्ज़ किया गया : या रसूलुल्लाह ! ﷺ हम अपने ईमान की तज्दीद कैसे किया करें ? फ़रमाया : “لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ” कसरत से पढ़ा करो।

(مُسْتَدْرَأُ لِلْإِمَامِ أَحْمَدَ بْنِ حَنْبَلٍ ج ٣ ص ٢٨١ حديث ٨٧١٨)

“जन्नत” के तीन हुस्नफ़ की निश्बत से  
 “سُبْحَانَ اللَّهِ وَبِحَمْدِهِ” पढ़ने के 3 फ़ज़ाइल  
 (1) गुनाह मिटा दिये जाते हैं

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ से रिवायत है कि



फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ मुझ पर कसरत से दुरूदे पाक पढ़ो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे गुनाहों के लिये मग़ि़फ़रत है।

ताजदारें रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सखावत, पैकरे अ-ज-मतो शराफ़त, महबूबे रब्बुल इज्ज़त, मोहसिने इन्सानियत ﷺ का फ़रमाने मग़ि़फ़रत निशान है : जो सो मर्तबा "سُبْحَانَ اللَّهِ وَبِحَمْدِهِ" पढ़ता है उस के गुनाह मिटा दिये जाते हैं अगर्चे समुन्दर के झाग के बराबर हों। (سنن الترمذی ج ۵ ص ۲۸۷ حدیث ۳۴۷۷)

## (2) सोने का पहाड़ स-दक़ करने का सवाब

हज़रते सय्यिदुना अबू उमामा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है कि ख़ातिमुल मुर-सलीन, रहमतुल्लिल आ-लमीन, शफ़ीज़ल मुज़िबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन, महबूबे रब्बुल आ-लमीन, जनाबे सादिको अमीन ﷺ का फ़रमाने दिल नशीन है : जिस के लिये रात में इबादत करना दुश्वार हो या वोह अपना माल खर्च करने में बुख़ल से काम लेता हो या दुश्मन से जिहाद करने से डरता हो तो वोह "سُبْحَانَ اللَّهِ وَبِحَمْدِهِ" कसरत से पढ़ा करे क्यूं कि ऐसा करना अल्लाह عزّوجلّ को अपनी राह में सोने का पहाड़ स-दका करने से ज़ियादा पसन्द है।

(مَجْمَعُ الزَّوَايِد ج ۱۰ ص ۱۱۲ حدیث ۱۶۸۷۶)

## (3) जन्नत में खजूर का दरख़्त

हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन अम्म रَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहरो बर ﷺ ने फ़रमाया : जो "سُبْحَانَ اللَّهِ وَبِحَمْدِهِ" पढ़ता है उस के लिये जन्नत में खजूर का एक दरख़्त लगा दिया जाता है।

(مَجْمَعُ الزَّوَايِد ج ۱۰ ص ۱۱۱ حدیث ۱۶۸۷۵)

फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ जो मुझ पर एक मरतबा दूरद शरीफ़ पढ़ता है अल्लाह तआला उस के लिये एक क़ीरात अज़्र लिखता है और क़ीरात उहद पहाड़ जितना है।

## “आका” के तीन हुरूफ़ की निश्बत से “لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللّٰهِ” पढ़ने के 3 फ़ज़ाइल

### (1) जन्नत का दरवाज़ा

हज़रते सय्यिदुना मुअज़ बिन जबल رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ से मरवी है कि हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़लाक मरवी है कि हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़लाक ﷺ ने फ़रमाया : क्या मैं तुम्हें जन्नत के दरवाज़ों में से एक दरवाज़े के बारे में न बताऊँ ? अर्ज़ की गई : वोह क्या है ? इर्शाद फ़रमाया : “لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللّٰهِ”

(مَجْمَعُ الزَّوَادِ ج ١٠ ص ١١٨ حديث ١٦٨٩٧)

### (2) निनानवे बीमारियों के लिये दवा

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ से मरवी है कि सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आलम के मालिको मुख्तार, हबीबे परवर्द गार ﷺ ने फ़रमाया : जिस ने “لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللّٰهِ” कहा तो येह (उस के लिये) निनानवे बीमारियों की दवा है उन में सब से हलकी बीमारी रन्जो अलम है।

(الترغيب والترهيب ج ٢ ص ٢٨٥ حديث ٢٤٤٨)

फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ जिसने मुझ पर एक बार दुरूद पाक पढ़ा अल्लाह तआला उस पर दस रहमत भेजता है।

### (3) ने'मत की हिफ़ाज़त का नुश्खा

हज़रते सय्यिदुना उक्बा बिन अमिर رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से मरवी है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहरो बर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने फ़रमाया : जिसे अल्लाह सुल्ताने ने कोई ने'मत अता फ़रमाई फिर वोह बन्दा उस ने'मत को बाकी रखना चाहता हो तो उसे चाहिये कि “لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللَّهِ” की कसरत करे।

(الْمُعْتَمُ الْكَبِيرُ ج ١٧ ص ٣١١ حديث ٨٥٩)

### बेदार होते वक़्त के 3 अवशद

(1) हज़रते सय्यिदुना उबादा बिन सामित رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है कि हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक ला إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ الْحَمْدُ لِلَّهِ وَسُبْحَانَ اللَّهِ وَلَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَاللَّهُ أَكْبَرُ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللَّهِ

(तरजमा : अल्लाह ﷻ के सिवा कोई मा'बूद नहीं वोह तन्हा है उस का कोई शरीक नहीं, उसी की बादशाही है और उसी की खूबियां और वोह हर चीज़ पर कुदरत रखता है अल्लाह ﷻ पाक है और अल्लाह ﷻ खूबियों वाला है और अल्लाह ﷻ के सिवा कोई मा'बूद नहीं और

फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ जब तुम मुसलीन علیهم السلام पर दुरदे पाक पढ़ो तो मुझ पर भी पढ़ो बेशक मैं तमाम जहानों के रब का रसूल हूँ।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ सब से बड़ा है और गुनाह से बचने की कुव्वत और नेकी करने की ताक़त अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ही की तरफ़ से हासिल होती है।) फिर “اللَّهُمَّ اغْفِرْ لِي” कहा या कोई दुआ मांगी तो उसे क़बूल कर लिया जाएगा, फिर अगर वुजू किया और नमाज़ पढ़ी तो उस की नमाज़ क़बूल कर ली जाएगी। (صَحِيحُ الْبُخَارِيِّ ج ۱ ص ۳۹۱-حدیث ۱۱۰۴)

(2) हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन अम्र رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ

से रिवायत है कि सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आलम के मालिको मुख्तार, हबीबे परवर्द गार ﷺ ने फ़रमाया : जिस ने नींद से बेदार होते वक़्त بِسْمِ اللَّهِ، سُبْحَانَ اللَّهِ، اٰمَنْتُ بِاللّٰهِ وَكَفَرْتُ بِالْجِبْتِ وَالطَّاغُوتِ

(तरजमा : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नाम से, अल्लाह पाक है, मैं अल्लाह पर ईमान लाया और बुत और शैतान से मुन्किर हुवा।) दस दस मर्तबा पढ़ा तो हर उस गुनाह से बचा लिया जाएगा जिस का उसे ख़ौफ़ हो और कोई गुनाह उस तक न पहुँच सकेगा। (مَجْمَعُ الرُّوَايَدِ ج ۱۰ ص ۱۷۴-حدیث ۱۷۰۶)

(3) الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ اَحْيَاَنَا بَعْدَ مَا اَمَاتَنَا وَاَلَيْهِ التَّشَوُّرُ ۝

तरजमा : तमाम ता'रीफ़ें अल्लाह तआला के लिये जिस ने हमें मौत (नींद) के बा'द हयात (बेदारी) अता फ़रमाई और हमें उसी की तरफ़ लौटना है। (صَحِيحُ الْبُخَارِيِّ ج ۴ ص ۱۹۲-حدیث ۶۳۱۲)

फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ जो मुझ पर रोज़े जुमुआ दुरद शरीफ़ पढ़ेगा मैं क़ियामत के दिन उस की शफ़ाअत करूँगा।

## “या ख़ुदा” के पांच हुरूफ़ की निश्बत से सुब्ह व शाम के 5 अज़क़ार

(1) हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से मरवी है

कि एक शख्स बारगाहे रिसालत में हाज़िर हुवा और अर्ज़ किया : या रसूलल्लाह! ﷺ मैं ने ऐसा बिच्छू कभी नहीं देखा जिस ने मुझे गुज़श्ता रात काटा। सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आलम के मालिको मुख़्तार, हबीबे परवर्द गार ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : तुम ने शाम के वक़्त

أَعُوذُ بِكَلِمَاتِ اللَّهِ التَّامَّاتِ مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ

(तरजमा : मैं अल्लाह तआला के पूरे और कामिल कलिमात के साथ मख़्लूक के शर से पनाह लेता हूँ (यहां मख़्लूक से मुराद वोह मख़्लूक है जिस से शर हो सके)) क्यूं न पढ़ लिया कि बिच्छू तुम्हें कोई नुक़सान न पहुंचाता।

(صَحِيحُ ابْنِ جِبَانَ ج २ ص १८० حديث १०१६)

(2) हज़रते सय्यिदुना अबान बिन उस्मान रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से

मरवी है कि आकाए मज़्लूम, सरवरे मा'सूम, हुस्ने अख़्लाक के पैकर, नबियों के ताजवर, महबूबे रब्बे अक्बर ﷺ ने फ़रमाया : जो शख्स सुब्ह व शाम तीन तीन मर्तबा येह पढ़ेगा, तो उसे कोई चीज़ नुक़सान न पहुंचा सकेगी

फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ जिसने मुझ पर रोज़े जुमुआ दो सौ बार दूरदे पाक पढ़ा उस के दो सौ साल के गुनाह मुआफ़ होंगे।

بِسْمِ اللَّهِ الَّذِي لَا يَضُرُّ مَعَ اسْمِهِ شَيْءٌ فِي الْأَرْضِ  
وَلَا فِي السَّمَاءِ وَهُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ

(तरजमा : अल्लाह के नाम से जिस के नाम की ब-र-कत से ज़मीन व आस्मान की कोई चीज़ नुक़सान नहीं पहुंचा सकती और वोही सुनता जानता है।) (सُنَنِ التِّرْمِذِيِّ ५०५२ व २३९९९)

(3) हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाते हैं कि नबिय्ये मुक़र्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने फ़रमाया : जिस ने सुबह और शाम सो सो मर्तबा "سُبْحَانَ اللَّهِ وَبِحَمْدِهِ" पढ़ा क़ियामत के दिन उस से अफ़ज़ल अमल ले कर आने वाला कोई न होगा मगर वोह जो उस की मिस्ल कहे या उस से ज़ियादा पढ़े। (صَحِيح مُسْلِم १४४० व २६९२)

(4) हज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाते हैं कि जिस ने सुबह व शाम सात सात मर्तबा पढ़ा :

حَسْبِيَ اللَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَهُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيمِ

(तरजमा : मुझे अल्लाह काफ़ी है उस के सिवा किसी की बन्दगी नहीं मैं ने उसी पर भरोसा किया और वोह बड़े अर्श का मालिक है।) अल्लाह उस की तमाम परेशानियों में क़िफ़ायत करेगा। (سُنَنِ أَبِي دَاوُدَ ४६१६ व ५०८१)

(5) हज़रते सय्यिदुना मुनैजिर رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाते हैं कि

फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ जो शख्स मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना भूल गया वोह जन्नत का रास्ता भूल गया ।

मैं ने नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहरो बर ﷺ को फ़रमाते हुए सुना : जो सुब्ह के वक़्त येह पढ़े :

رَضِيتُ بِاللّٰهِ رَبًّا وَبِالْإِسْلَامِ دِينًا وَبِمُحَمَّدٍ نَبِيًّا

(तरजमा : मैं अल्लाह के रब होने और इस्लाम के दीन होने और हज़रत मुहम्मद ﷺ के नबी होने पर राज़ी हूँ।) तो मैं उसे अपने हाथ से पकड़ कर जन्नत में दाख़िल करने की ज़मानत देता हूँ।

(مَحْمُودُ الزَّوَالِد ج १० ص १०७ حديث १७००)

## “अहद” के तीन हुरूफ़ की निश्बत से क़लिमए तौहीद के 3 फ़ज़ाइल

(1) हज़रते सय्यिदुना अबू उमामा رضی اللہ تعالیٰ عنہ से रिवायत है कि ख़ातिमुल मुर-सलीन, रहमतुल्लिल आ-लमीन, शफ़ीज़ल मुज़िबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन, महबूबे रब्बुल आ-लमीन, जनाबे सादिको अमीन ﷺ ने फ़रमाया : जिस ने

لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ  
الْحَمْدُ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ

(तरजमा : अल्लाह के सिवा कोई मा'बूद नहीं वोह अकेला है उस का कोई शरीक नहीं उसी के लिये है बादशाही और उसी के लिये हम्द है और वोह हर चीज़ पर क़ादिर है।) कहा तो इस क़लिमे से कोई अमल आगे न बढ़ सकेगा और उस के साथ कोई गुनाह बाक़ी न रहेगा।

फरमाने मुस्तफा ﷺ जिसने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह तआला उस पर दस रहमते भेजता है।

(2) हज़रते सय्यिदुना अम्र बिन शुऐब رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا ब वासिता वालिद अपने दादा से रिवायत करते हैं कि शहन्शाहे खुश खिसाल, पैकरे हुस्नो जमाल, दाफ़ेए रन्जो मलाल, साहिबे जूदो नवाल, रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : बेहतरीन दुआ यौमे अ-रफ़ा की दुआ है और सब से बेहतर कलिमा जो मैं ने और मुझ से पहले के अम्बिया السّٰलَم ने कहा (वोह येह है) :

لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ  
الْحَمْدُ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ

(جامع ترمذی ج ۵ ص ۳۳۹ حدیث ۳۵۹۶)

(3) हज़रते सय्यिदुना बराअ बिन अज़िब رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है कि सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आलम के मालिको मुख्तार, हबीबे परवर्द गार صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जिस ने चांदी या दूध स-दका किया या अन्धे को रास्ता बताया तो येह एक गुलाम आज़ाद करने की तरह है और जिस ने

لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ  
الْحَمْدُ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ

कहा तो येह भी एक गुलाम आज़ाद करने की तरह है।

(المُسْنَدُ لِلْإِمَامِ أَحْمَد بن حنبل ج ۶ ص ۴۰۸ حدیث ۱۸۵۴)



फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ जिसने मुझ पर दस मरतबा दुरूद पाक पढ़ा अल्लाह तआला उस पर सौ रहमतें भेजता है।

## ईमान पर ख़ातिमा के चार अवशब्द

एक शख्स बारगाहे आ 'ला हज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِ में हाज़िर हो कर ईमान पर ख़ातिमा बिलखैर के लिये दुआ का तालिब हुवा तो आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِ ने उस के लिये दुआ फ़रमाई और इर्शाद फ़रमाया : ﴿1﴾ (रोज़ाना) 41 बार सुब्ह को يَا حَيُّ يَا قَيُّوْمُ لَا إِلَهَ إِلَّا أَنْتَ (ऐ हमेशा जिन्दा रहने वाले ! ऐ हमेशा काइम रहने वाले ! कोई मा'बूद नहीं मगर तू।) अव्वल व आख़िर दुरूद शरीफ़ नीज़ ﴿2﴾ सोते वक़्त अपने सब अवराद के बा'द सूरए काफ़िरून रोज़ाना पढ़ लिया कीजिये इस के बा'द कलाम वगैरा न कीजिये हां अगर ज़रूरत हो तो कलाम करने के बा'द फिर सूरए काफ़िरून तिलावत कर लें कि ख़ातिमा इसी पर हो إِنَّ شَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ ख़ातिमा ईमान पर होगा। और ﴿3﴾ तीन बार सुब्ह और तीन बार शाम इस दुआ का विर्द रखें : اَللّٰهُمَّ اِنَّا نَعُوْذُ بِكَ مِنْ اَنْ تُشْرِكَ بِكَ شَيْئًا نَعْلَمُهُ وَنَسْتَغْفِرُكَ لِمَا لَا نَعْلَمُهُ : (“ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हम तेरी पनाह मांगते हैं इस से कि जान कर हम तेरे साथ किसी चीज़ को शरीक करें और हम उस से इस्तिफ़ार करते हैं जिस को नहीं जानते।”) (المفوظ حصه ٢ من ٢٣٤ حامد اينڈ كينى مركز الاولياء لاہور) ﴿4﴾ بِسْمِ اللّٰهِ عَلٰى دِيْنِيْ بِسْمِ اللّٰهِ عَلٰى نَفْسِيْ وَوُلْدِيْ وَاهْلِيْ وَمَالِيْ (अल्लाह तआला के नाम की ब-र-कत से मेरे दीन, जान, औलाद और अहलो माल की हिफ़ाज़त हो।) सुब्ह व शाम तीन तीन बार पढ़िये, दीन, ईमान, जान, माल, बच्चे सब महफूज़ रहें। (श-ज-रए कादिरिया र-जबिय्या, स. 12, मक-त-बतुल मदीना बाबुल मदीना कराची) (गुरूबे आफ़ताब से सुब्हे सादिक तक रात और आधी रात ढले से सूरज की पहली किरन चमकने तक सुब्ह है)

फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ तुम जहाँ भी हो मुझ पर दुरुद पढ़ो कि तुम्हारा दुरुद मुझ तक पहुँचता है।

## गुनाहों की बरिख़शश

لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَاللَّهُ أَكْبَرُ وَالْحَمْدُ لِلَّهِ  
وَسُبْحَنَ اللَّهِ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللَّهِ

जो शख्स येह विर्द पढ़ता है उस के गुनाह बरिख़ा दिये जाते हैं अगर्चे समुन्दर के झाग के बराबर हों।

(المُسْنَدُ لِلْإِمَامِ أَحْمَدَ بْنِ حَنْبَلٍ ج २ ص ६६२ حديث ६९७७)

## चार करोड़ नेकियां कमाएं

أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ  
إِلَهًا وَاحِدًا أَحَدًا صَمَدًا لَمْ يَتَّخِذْ صَاحِبَةً  
وَلَا وَلَدًا وَلَمْ يَكُنْ لَهُ كُفُوًا أَحَدٌ ०

हज़रते तमीम दारी رضي الله تعالى عنه से रिवायत है कि शहन्शाहे मदीना, करारे क़ल्बो सीना, साहिबे मुअत्तर पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना, फैज़ गन्जीना ﷺ का फ़रमाने आलीशान है कि जो शख्स येह कलिमात दस मर्तबा कहे, ऐसे आदमी के लिये चार करोड़ नेकियां लिखी जाती हैं। (سُنَنُ التِّرْمِذِيِّ ج ५ ص २८९ حديث २४८४)

## शैतान से बचने का अमल

لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ  
الْحَمْدُ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ

फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ जिसने मुझ पर दस मर्तबा सुबह और दस मर्तबा शाम दूरुदे पाक पढ़ा उसे क्रियामत के दिन मेरी शफ़ाअत मिलेगी।

हज़रते अबू हुरैरा رضي الله تعالى عنه से मरवी है कि नबिय्ये

मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम

صلى الله تعالى عليه وآله وسلم का फ़रमाने आलीशान है : “जिस ने येह कलिमात

दिन में सो बार कहे तो उस का येह अमल दस गुलाम आज़ाद करने

के बराबर होगा और उस के नामए आ'माल में सो नेकियां लिखी

जाएंगी और उस के सो गुनाह मुआफ़ कर दिये जाएंगे और येह

कलिमात उस दिन शाम तक शैतान से उस की हिफ़ाज़त करेंगे और

कोई शख्स उस से बेहतर अमल ले कर नहीं आएगा मगर वोह जिस

ने उस से ज़ियादा येह अमल किया।” (صحيح البخاريّ حديث ۳۲۹۳ ج ۲ ص ۴۰۲)

## गीबत से बचने का म-दनी नुस्खा

हज़रते अल्लामा मजदुद्दीन फ़ीरोज़आबादी رحمة الله تعالى عليه से

मन्कूल है : जब किसी मजलिस में (या'नी लोगों में) बैठो तो कहो :

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ وَصَلَّى اللَّهُ عَلَى مُحَمَّدٍ

तो अल्लाह عزّوجلّ तुम पर एक फ़िरिश्ता मुकर्रर फ़रमा देगा जो

तुम को ग़ीबत से बाज़ रखेगा और जब मजलिस से उठो तो कहो :

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ وَصَلَّى اللَّهُ عَلَى مُحَمَّدٍ

फरमाने मुस्तफा ﷺ मुझ पर दुरदे पाक की कसूरत करो बेशक येह तुम्हारे लिये त्हा रत है ।

तो वोह फिरिश्ता लोगों को तुम्हारी गीबत करने से बाज रखेगा ।

(الْقَوْلُ الْبَيِّنُ ص २७८)

## पांच म-दनी फूल

हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन अल आस رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ

का इशदि सआदत बुन्याद है : पांच आदतें ऐसी हैं कि कोई इन्हें इख्तियार कर ले तो दुन्या व आखिरत में सआदत मन्द हो जाए । १) वक़्तन फ़

वक़्तन २) कहता रहे "لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ مُحَمَّدٌ رَّسُولُ اللَّهِ" صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

जब किसी मुसीबत में मुब्तला हो (म-सलन बीमार हो या नुक्सान हो जाए या परेशानी की ख़बर सुने) तो "إِنَّا لِلَّهِ وَإِنَّا إِلَيْهِ رَاجِعُونَ" और

"لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللَّهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيمِ" पढ़े ३) जब भी ने'मत मिले तो

शुक्राने में "الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ" कहे ४) जब किसी (जाइज़) काम का

आगाज़ करे तो "بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ" पढ़े और ५) जब गुनाह

कर बैठे तो यूँ कहे, "اسْتَغْفِرُ اللَّهَ الْعَظِيمَ وَآتُوبُ إِلَيْهِ" (या'नी

मैं अ-ज़मत वाले अल्लाह عزّوجلّ से मग़ि़रत त़लब करते हुए उस की

तरफ़ तौबा करता हूँ ।)

(الْمُنْبَهَاتُ ص ०७)

## जादू औऱ बलाओं से हिफ़ज़त के लिये शश कुपल

इन छ दुआओं को "शश कुपल" कहते हैं जो शख्स रात को

हमेशा शश कुपल पढ़ता रहे या लिख कर अपने पास रखे वोह हर

ख़ौफ़ व ख़तरे से और जादू से और हर किस्म की बलाओं से

महफूज़ रहेगा ।

(जन्ती ज़ेवर, स. 582)

फरमाने मुस्तफा ﷺ जिसने किताब में मुझ पर दुरूदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फिरश्ते उस के लिये इस्तिगफार करते रहेंगे।

### कुपले अव्वल

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ بِسْمِ اللَّهِ السَّمِيعِ  
الْبَصِيرِ الَّذِي لَيْسَ كَمِثْلِهِ شَيْءٌ وَهُوَ عَلَى  
كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ

### कुपले दुवुम

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ بِسْمِ اللَّهِ الْخَلَّاقِ  
الْعَلِيمِ الَّذِي لَيْسَ كَمِثْلِهِ شَيْءٌ وَهُوَ الْفَتَّاحُ الْعَلِيمُ

### कुपले शिवुम

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ بِسْمِ اللَّهِ السَّمِيعِ  
الْبَصِيرِ الَّذِي لَيْسَ كَمِثْلِهِ شَيْءٌ وَهُوَ الْعَلِيمُ الْبَصِيرُ

### कुपले चहारुम

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ بِسْمِ اللَّهِ السَّمِيعِ  
الْبَصِيرِ الَّذِي لَيْسَ كَمِثْلِهِ شَيْءٌ وَهُوَ الْغَنِيُّ الْقَدِيرُ

फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ मुझ पर कसूरत से दुरदे पाक पढ़ो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरदे पाक पढ़ना तुम्हारे गुनाहों के लिये मग़िफ़रत है।

### कुपले पन्जुम

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ بِسْمِ اللَّهِ السَّمِيعِ  
الْبَصِيرِ الَّذِي لَيْسَ كَمِثْلِهِ شَيْءٌ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْغَفُورُ

### कुपले शशुम

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ بِسْمِ اللَّهِ السَّمِيعِ  
الْبَصِيرِ الَّذِي لَيْسَ كَمِثْلِهِ شَيْءٌ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْغَفُورُ  
الْحَكِيمُ فَاللَّهُ خَيْرٌ حَافِظًا وَهُوَ أَرْحَمُ الرَّاحِمِينَ

नमाज़ के बा'द पढ़े जाने वाले अवराद

नमाज़ के बा'द जो अज़्कारे तवीला (तवील अवराद) अहादीसे मुबा-रका में वारिद हैं, वोह जोहर व मग़िब व इशा में सुन्नतों के बा'द पढ़े जाएं, क़ब्ले सुन्नत मुख़्तसर दुआ पर क़नाअत चाहिये, वरना सुन्नतों का सवाब कम हो जाएगा।

(رُكُوعُ، ج २، ص ३००، भाषा और रिवायत حصّه ३ ص १०७)

अहादीसे मुबा-रका में किसी दुआ की निस्बत जो ता'दाद वारिद है उस से कम ज़ियादा न करे कि जो फ़ज़ाइल उन अज़्कार के लिये हैं वोह उसी अ़दद के साथ मख़्सूस हैं उन में कम ज़ियादा करने की मिसाल येह है कि कोई कुपल (ताला) किसी ख़ास किस्म की कुन्जी से खुलता है अब अगर कुन्जी में दन्दाने कम या ज़ाइद कर दें

फरमाने मुस्तफा ﷺ जो मुझ पर एक मरतबा दुरूद शरीफ पढ़ता है अल्लाह तआला उस के लिये एक कीरात अन्न लिखता है और कीरात उहद पहाड़ जितना है।

तो उस से न खुलेगा, अलबत्ता अगर शुमार में शक वाक़ेअ हो तो ज़ियादा कर सकता है और येह ज़ियादत (बढ़ाना) नहीं बल्कि इत्माम (मुकम्मल करना) है। (ऐज़न, स. 302)

पन्ज वक्ता नमाज़ों के सुनन व नवाफ़िल से फ़रागत के बा'द ज़ैल के अवराद पढ़ लीजिये सहूलत के लिये नम्बर ज़रूर दिये हैं मगर इन में तरतीब शर्त नहीं है। हर विर्द के अक्वल आख़िर दुरूद शरीफ़ पढ़ना सोने पे सुहागा है।

﴿1﴾ “आ-यतुल कुरसी” एक एक बार पढ़ने वाला मरते ही दाख़िले जन्नत हो। (مشكاة المصابيح ج ۱ ص ۱۹۷ حدیث ۹۷۴)

﴿2﴾ اللَّهُمَّ اعِنِّي عَلَى نِكْرِكَ وَشُكْرِكَ وَحَسَنِ عِبَادَتِكَ -

(سُنَنِ أَبِي كَلْدَةَ ج ۲ ص ۱۲۳ حدیث ۱۰۲۲)

﴿3﴾ (2) اَسْتَغْفِرُ اللَّهَ الَّذِي لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ الْحَيُّ الْقَيُّومُ وَأَتُوبُ إِلَيْهِ -

(तीन तीन बार) उस के गुनाह मुआफ़ हों अगर्चे वोह मैदाने जिहाद से भागा हुवा हो। (سُنَنِ التِّرْمِذِيِّ ج ۵ ص ۳۳۶ حدیث ۳۵۸۸)

﴿4﴾ तस्बीहे फ़ातिमा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا : तैंतीस बार, اَلْحَمْدُ لِلَّهِ तैंतीस बार, येह 99 हुए, आख़िर में

(1) ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ! तू अपने ज़िक्र, अपने शुक्र और अपनी अच्छी इबादत करने पर मेरी मदद फ़रमा।

(2) तरजमा : मैं अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से मुआफ़ी मांगता (मांगती) हूँ जिस के सिवा कोई मा'बूद नहीं वोह ज़िन्दा है काइम रखने वाला है और उस की बारगाह में तौबा क़रता (करती) हूँ।

फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ जो शख्स मुझ पर दुरुदे पाक पढ़ना भूल गया वोह जन्नत का रास्ता भूल गया ।

لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ ، لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝ (1)

एक बार पढ़ कर (100 का अदद पूरा कर ले) इस के गुनाह बख़्श दिये जाएंगे अगर्चे समुन्दर के झाग के बराबर हों ।

﴿5﴾ हर नमाज़ के बा'द पेशानी के अगले हिस्से पर हाथ रख कर पढ़े :

(2) بِسْمِ اللَّهِ الَّذِي لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ الرَّحْمَنُ الرَّحِيمُ ، اللَّهُمَّ أَذْهَبْ عَنِّي أَلَمَّ وَالْحَزْنَ .

(पढ़ने के बा'द हाथ खींच कर पेशानी तक लाए) तो हर ग़म व परेशानी से बचे । मेरे आका आ'ला हज़रत इमामे अहले सुन्नत मौलाना शाह अहमद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمَن ने मज़क़ूरा दुआ के आख़िर में मज़ीद इन अल्फ़ाज़ का इज़ाफ़ा फ़रमाया है, وَعَنْ أَهْلِ السُّنَّةِ या'नी और अहले सुन्नत से ।

﴿6﴾ अस् व फ़ज़्र के बा'द बिग़ैर पाउं बदले, बिग़ैर कलाम किये

لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ بِيَدِهِ الْخَيْرُ

يُخَيِّرُ وَيُمَيِّتُ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝ (3)

दस<sup>10</sup> दस<sup>10</sup> बार पढ़िये ।

(बहारे शरीअत, हिस्सा : 3, स. 107)

﴿7﴾ हज़रते सय्यिदुना अनस رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से मरवी है कि नबिय्ये

(1) या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई मा'बूद नहीं वोह यक्ता व यगाना है उस का कोई शरीक नहीं । उसी का मुल्क है । उसी की हम्द है । वोह हर शै पर कादिर है ।

(2) अल्लाह के नाम से शुरूअ जिस के सिवा कोई मा'बूद नहीं वोह रहमान व रहीम है । ऐ अल्लाह (عَزَّوَجَلَّ) मुझ से ग़म व मलाल दूर फ़रमा । (3) अल्लाह (عَزَّوَجَلَّ) के सिवा कोई मा'बूद नहीं, वोह तन्हा है, उस का कोई शरीक नहीं, उस के लिये मुल्क व हम्द है, उसी के हाथ में खैर है, वोह जिन्दा करता है और मौत देता है और वोह हर शै पर कादिर है ।



फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ जिसने मुझ पर दस मरतबा दुरुद पाक पढ़ा अल्लाह तआला उस पर सौ रहमतें भेजता है।

रहमत, शफ़ीए उम्मत, शहन्शाहे नुबुव्वत, ताजदारे रिसालत  
ﷺ ने फ़रमाया : जिस ने नमाज़ के बा'द येह कहा,

“ **سُبْحَنَ اللّٰهُ الْعَظِيمِ وَبِحَمْدِهِ لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللّٰهِ** ” (1)

तो वोह मग़िफ़रत याफ़ता हो कर उठेगा।

(مَحْمُوعُ الزَّوَالِدِ ج ۱ ص ۱۲۹ حديث ۱۶۹۲۸)

عَزَّوَجَلَّ से रिवायत है अल्लाह तआला ﷻ ने फ़रमाया : “जो हर फ़र्ज़ नमाज़ के बा'द दस<sup>10</sup> मरतबा

ﷻ ने फ़रमाया : “जो हर फ़र्ज़ नमाज़ के बा'द दस<sup>10</sup> मरतबा

ﷻ ने फ़रमाया : “जो हर फ़र्ज़ नमाज़ के बा'द दस<sup>10</sup> मरतबा

ﷻ ने फ़रमाया : “जो हर फ़र्ज़ नमाज़ के बा'द दस<sup>10</sup> मरतबा

ﷻ ने फ़रमाया : “जो हर फ़र्ज़ नमाज़ के बा'द दस<sup>10</sup> मरतबा

ﷻ ने फ़रमाया : “जो हर फ़र्ज़ नमाज़ के बा'द दस<sup>10</sup> मरतबा

ﷻ ने फ़रमाया : “जो हर फ़र्ज़ नमाज़ के बा'द दस<sup>10</sup> मरतबा

ﷻ ने फ़रमाया : “जो हर फ़र्ज़ नमाज़ के बा'द दस<sup>10</sup> मरतबा

ﷻ ने फ़रमाया : “जो हर फ़र्ज़ नमाज़ के बा'द दस<sup>10</sup> मरतबा

ﷻ ने फ़रमाया : “जो हर फ़र्ज़ नमाज़ के बा'द दस<sup>10</sup> मरतबा

ﷻ ने फ़रमाया : “जो हर फ़र्ज़ नमाज़ के बा'द दस<sup>10</sup> मरतबा

ﷻ ने फ़रमाया : “जो हर फ़र्ज़ नमाज़ के बा'द दस<sup>10</sup> मरतबा

ﷻ ने फ़रमाया : “जो हर फ़र्ज़ नमाज़ के बा'द दस<sup>10</sup> मरतबा

ﷻ ने फ़रमाया : “जो हर फ़र्ज़ नमाज़ के बा'द दस<sup>10</sup> मरतबा

ﷻ ने फ़रमाया : “जो हर फ़र्ज़ नमाज़ के बा'द दस<sup>10</sup> मरतबा

ﷻ ने फ़रमाया : “जो हर फ़र्ज़ नमाज़ के बा'द दस<sup>10</sup> मरतबा

ﷻ ने फ़रमाया : “जो हर फ़र्ज़ नमाज़ के बा'द दस<sup>10</sup> मरतबा

ﷻ ने फ़रमाया : “जो हर फ़र्ज़ नमाज़ के बा'द दस<sup>10</sup> मरतबा

ﷻ ने फ़रमाया : “जो हर फ़र्ज़ नमाज़ के बा'द दस<sup>10</sup> मरतबा

ﷻ ने फ़रमाया : “जो हर फ़र्ज़ नमाज़ के बा'द दस<sup>10</sup> मरतबा

फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ तुम जहाँ भी हो मुझ पर दुरद पढ़ो कि तुम्हारा दुरद मुझ तक पहुँचता है।

## मिनटों में चार ख़त्म क़ुरआने पाकक्व सवाब

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رضي الله تعالى عنه से रिवायत है मदीने के ताजदार, सुल्ताने दो जहान, रहमते आ-लमियान, सरवरे जी शान, महबूबे रहमान صلى الله تعالى عليه وآله وسلم का फ़रमाने हकीकत निशान है : जो बा'दे फ़ज़्र बारह मर्तबा قُلْ هُوَ اللهُ أَحَدٌ (पूरी सूरत) पढ़ेगा गोया वोह चार बार (पूरा) कुरआन पढ़ेगा और उस दिन उस का येह अमल अहले ज़मीन से अफ़ज़ल है जब कि वोह तक्वा का पाबन्द रहे।

(شُعَبُ الْإِيمَانِ لِلْبَيْهَقِيِّ ج ٢ ص ٥٠١ حديث ٢٥٢٨)

## शैतान से महफूज़ रहने क्व अमल

सरकारे मदीना, राहते क़ल्बो सीना, फैज़ गन्जीना, साहिबे मुअत्तर पसीना صلى الله تعالى عليه وآله وسلم का फ़रमाने आलीशान है : जिस ने नमाज़े फ़ज़्र अदा की और बात किये बिगैर قُلْ هُوَ اللهُ أَحَدٌ (पूरी सूरत) को दस मर्तबा पढ़ा तो उस दिन में उसे कोई गुनाह न पहुँचेगा और वोह शैतान से बचाया जाएगा।

(تَفْسِيرُ دُرِّ مَنثور ج ٨ ص ١٧٨)

(नमाज़ के बा'द पढ़ने के मज़ीद अवराद मक-त-बतुल मदीना की मत्बूआ बहारे शरीअत हिस्सा 3 सफ़हा 107 ता 110 पर, अल वज़ी-फ़तुल करीमा और श-ज-रए कादिरय्या में मुला-हज़ा फ़रमा लीजिये।)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! ﷺ عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

## गुस्सा रोकने की फ़ज़ीलत

हृदीसे पाक में है : जो शख्स अपने गुस्से को रोकेगा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ क़ियामत के रोज़ उस से अपना अज़ाब रोक देगा।

(شُعَبُ الْإِيمَانِ ج ٦ ص ٣١٥ حديث ٨٣١١)

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ  
مَا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

## फैजाने दुरूद

بِسْمِ اللَّهِ

“बिस्मिल्लाह” के सात हुरूफ की निश्बत  
से दुरूद शरीफ के 7 फ़ज़ाइल

(1) हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहरो बर صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने रूह परवर है कि जिस ने मुझ पर एक मर्तबा दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस पर दस रहमतें नाज़िल फ़रमाएगा ।

(صَحِيح مُسْلِم ص ٢١٦ ح ٤٠٨)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

(2) हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से मरवी है कि ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सखावत, पैकरे अ-ज़मतो शराफ़त, महबूबे रब्बुल इज़ज़त, मोहसिने इन्सानियत صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का इशदि रहमत बुन्याद है : जिस ने मुझ पर एक मर्तबा दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस पर दस रहमतें नाज़िल फ़रमाएगा उस के दस गुनाह मिटा देगा ।

(الْإِحْسَانُ بترتيبِ صَحِيحِ ابْنِ حَبَّان ج ٢ ص ١٣٠ ح ٩٠١)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ जिसने मुझ पर दस मर्तबा सुब्ह और दस मर्तबा शाम दुरूद पाक पढ़ा उसे क़ियामत के दिन मेरी शफ़ाअत मिलेगी ।

(3) हज़रते सय्यिदुना अबू बरदा बिन नयार رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से मरवी है कि नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहन्शाहे मरवी है कि नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने ब-र-कत निशान है : मेरी उम्मत में से जिस ने सिदके दिल से एक मर्तबा दुरूदे पाक पढ़ा, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस पर दस रहमतें नाज़िल फ़रमाएगा और उस के लिये दस नेकियां लिखेगा और उस के दस द-रजात बुलन्द फ़रमाएगा और उस के दस गुनाह मिटा देगा । (المُعْتَمُ الْكَبِيرُ ج २२ ص १९० حديث ५१२)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

(4) हज़रते सय्यिदुना अबू उमामा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से मरवी है कि शहन्शाहे खुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल, दाफ़ेए रन्जो मलाल, साहिबे जूदो नवाल, रसूले बे मिसाल, महबूबे रब्बे जुल जलाल बीबी आमिना के लाल صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने बा कमाल है : हर जुमुआ के दिन मुझ पर दुरूदे पाक की कसरत किया करो बेशक मेरी उम्मत का दुरूद हर जुमुआ के दिन मुझ पर पेश किया जाता है, (क़ियामत के दिन) लोगों में से मेरे ज़ियादा क़रीब वोही शख्स होगा जिस ने (दुन्या में) मुझ पर ज़ियादा दुरूद पढ़ा होगा ।

(الْمُسْنُ الْكَبِيرُ ج ३ ص ३०३ حديث ५९९०)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

(5) हज़रते सय्यिदुना इब्ने मस्ऊद رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से मरवी

फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ जिसने किताब में मुझ पर दुरूद पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फ़िरिश्ते उस के लिये इस्तिफ़ार करते रहेंगे ।

है कि सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आलम के मालिको मुख़्तार, हबीबे परवर्द गार ﷺ का फ़रमाने तर्क़ुब निशान है : बेशक क़ियामत के दिन मेरे सब से ज़ियादा क़रीब वोह शख़्स होगा जिस ने दुन्या में मुझ पर ज़ियादा दुरूद पढ़ा होगा ।

(الإحسان بترتيب صحيح ابن حبان ج ٢ ص ١٣٣ حديث ٩٠٨)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! ﷺ

(6) शहन्शाहे मदीना, करारे क़ल्बो सीना, साहिबे मुअत्तर पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना, फैज़ गन्जीना ﷺ का फ़रमाने आफ़ियत निशान है : ऐ लोगो ! बेशक तुम में से बरोजे क़ियामत उस की दहशतों और हिसाब किताब से जल्द नजात पाने वाला वोह शख़्स होगा जिस ने दुन्या में मुझ पर कसरत से दुरूद पढ़ा होगा ।

(فَرْدَوْسُ الْأَخْبَارِ ج ٢ ص ٤٧١ حديث ٨٢١٠)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! ﷺ

(7) हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़लाक ﷺ का फ़रमाने रहमत निशान है : “मुझ पर कसरत से दुरूदे पाक पढ़ो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे गुनाहों के लिये मफ़िरत है ।”

(الْعَامِعُ الصَّغِيرُ ص ٨٧ حديث ١٤٠٦)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! ﷺ

फरमाने मुस्तफा ﷺ जो मुझ पर रोजे जुमुआ दुरूद शरीफ पढ़ेगा मैं क़ियामत के दिन उस की शफ़ाअत करूंगा।

“اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَیْكَ یَا سَیِّدَ الْمُرْسَلِیْنَ” के तीस हुरफ़ की निश्बत से दुरूद शरीफ़ के 30 म-दनी फूल

- ﴿1﴾ अल्लाह तआला के हुक्म की ता'मील होती है।
- ﴿2﴾ एक मर्तबा दुरूद शरीफ़ पढ़ने वाले पर दस रहमतें नाज़िल होती हैं।
- ﴿3﴾ उस के दस द-रजात बुलन्द होते हैं।
- ﴿4﴾ उस के लिये दस नेकियां लिखी जाती हैं।
- ﴿5﴾ उस के दस गुनाह मिटाए जाते हैं।
- ﴿6﴾ दुआ से पहले दुरूद शरीफ़ पढ़ना दुआ की क़बूलिय्यत का बाइस है।
- ﴿7﴾ दुरूद शरीफ़ पढ़ना नबिय्ये रहमत ﷺ की शफ़ाअत का सबब है।
- ﴿8﴾ दुरूद शरीफ़ पढ़ना गुनाहों की बख़्शिश का बाइस है।
- ﴿9﴾ दुरूद शरीफ़ के ज़रीए अल्लाह तआला बन्दे के गुमों को दूर करता है।
- ﴿10﴾ दुरूद शरीफ़ पढ़ने के बाइस बन्दा क़ियामत के दिन रसूले अकरम ﷺ का कुर्ब हासिल करेगा।
- ﴿11﴾ दुरूद शरीफ़ तंगदस्त के लिये स-दका के काइम मक़ाम है।
- ﴿12﴾ दुरूद शरीफ़ क़ज़ाए हाजात का ज़रीआ है।
- ﴿13﴾ दुरूद शरीफ़ अल्लाह तआला की रहमत और फ़िरिश्तों की दुआ का बाइस है।

फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ जिसने मुझ पर एक बार दुरूद पाक पढ़ा अल्लाह तआला उस पर दस रहमते भेजता है।

«14» दुरूद शरीफ़ अपने पढ़ने वाले के लिये पाकीज़गी और तहारात का बाइस है।

«15» दुरूद शरीफ़ से बन्दे को मौत से पहले जन्नत की खुश ख़बरी मिल जाती है।

«16» दुरूद शरीफ़ पढ़ना क़ियामत के ख़तरात से नजात का सबब है।

«17» दुरूद शरीफ़ पढ़ने से बन्दे को भूली हुई बात याद आ जाती है।

«18» दुरूद शरीफ़ मजलिस की पाकीज़गी का बाइस है और क़ियामत के दिन येह मजलिस बाइसे हसरत नहीं होगी।

«19» दुरूद शरीफ़ पढ़ने से फ़क़्र (तंगदस्ती) दूर होता है।

«20» येह अमल बन्दे को जन्नत के रास्ते पर डाल देता है।

«21» दुरूद शरीफ़ पुल सिरात पर बन्दे की रोशनी में इज़ाफ़े का बाइस है।

«22» दुरूद शरीफ़ के ज़रीए बन्दा जुल्म व ज़फ़्फ़ा से निकल जाता है।

«23» दुरूद शरीफ़ पढ़ने की वजह से बन्दा आस्मान और ज़मीन में क़ाबिले ता'रीफ़ हो जाता है।

«24» दुरूद शरीफ़ पढ़ने वाले को इस अमल की वजह से उस की जात, अमल, उम्र और बेहतरी के अस्बाब में ब-र-कत हासिल होती है।

«25» दुरूद शरीफ़ रहमते खुदा वन्दी के हुसूल का ज़रीआ है।

«26» दुरूद शरीफ़ महबूबे रब्बुल इज्ज़त ﷺ से दाइमी

फरमाने मुस्तफा ﷺ जो शख्स मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना भूल गया वोह जन्नत का रास्ता भूल गया ।

महब्बत और इस में ज़ियादत का सबब है और येह (महब्बत) ईमानी उकूद में से है । जिस के बिगैर ईमान मुकम्मल नहीं होता ।

﴿27﴾ दुरूद शरीफ़ पढ़ने वाले से आप ﷺ महब्बत फरमाते हैं ।

﴿28﴾ दुरूद शरीफ़ पढ़ना, बन्दे की हिदायत और उस की ज़िन्दा दिली का सबब है क्यूं कि जब वोह आप ﷺ पर कसरत से दुरूद शरीफ़ पढ़ता है और आप का ज़िक्र करता है तो आप ﷺ की महब्बत उस के दिल पर ग़ालिब आ जाती है ।

﴿29﴾ दुरूद शरीफ़ पढ़ने वाले का येह ए'ज़ाज़ भी है कि सुलताने अनाम ﷺ की बारगाहे बेकस पनाह में उस का नाम पेश किया जाता है और उस का ज़िक्र होता है ।

﴿30﴾ दुरूद शरीफ़ पुल सिरात पर साबित क़दमी और सलामती के साथ गुज़रने का बाइस है ।

(جلاء الأفهام ص २०३ २४६ ملقطاً)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

सरकार के दीदार

के तलब गार के लिये तोहफ़ा

اللَّهُمَّ صَلِّ عَلَى رُوحِ مُحَمَّدٍ فِي الْأَرْوَاحِ وَعَلَى  
جَسَدِهِ فِي الْأَجْسَادِ وَعَلَى قَبْرِهِ فِي الْقُبُورِ

صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم شافِعہٗ زمرہٗ

का फ़रमाने शफ़ाअत निशान है : जो शख्स येह दुरूदे पाक पढ़े उस



फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ जिसने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पड़ा अल्लाह तआला उस पर दस रहूमत भेजता है।

को ख़्वाब में मेरी ज़ियारत होगी और जिस ने ख़्वाब में मुझे देखा वोह मुझे क़ियामत के दिन भी देखेगा और जो मुझे क़ियामत के दिन देख लेगा मैं उस की शफ़ाअत करूंगा और मैं जिस की शफ़ाअत करूंगा वोह हौजे कौसर से पानी पियेगा और उस के जिस्म को अल्लाह (كُفِّتَ الْغَمَّةُ عَنْ جَمِيعِ الْأُمَّةِ ج ١ ص ٣٢٥) दोजख़ पर हराम कर देगा ।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

बहिष्काश व मणिफेस्ट

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلَى مُحَمَّدٍ كُلَّمَا ذَكَرَهُ الدَّاكِرُونَ وَصَلِّ  
عَلَى مُحَمَّدٍ كُلَّمَا غَفَلَ عَنْ ذِكْرِهِ الْغَافِلُونَ

किसी शख्स ने हज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عليه رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِي  
 को वफ़ात के बा'द ख़्वाब में देखा और हाल दर्याफ़्त किया तो आप  
 ने फ़रमाया : **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ ने इस दुरूदे पाक की ब-र-कत से मेरी  
 बख़्शिश फ़रमा दी । (اَفْقَصُ الصَّلَوَاتِ عَلَى سَيِّدِ السَّادَاتِ ص ۸۱ ملخصاً)

माल में खैरो ब-२-कत

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلَى مُحَمَّدٍ عَبْدِكَ وَرَسُوْلِكَ وَعَلَى  
الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنَاتِ وَالْمُسْلِمِيْنَ وَالْمُسْلِمَاتِ

साहिबे रूहुल बयान फ़रमाते हैं : जो शख़्स इस दुरूदे पाक को पढेगा उस का मालो दौलत बढ़ता रहेगा ।

(تَفْسِيرُ رُوحِ الْبَيَانِ الْأَحْزَابِ: ٥٦ ج ٧ ص ٢٣٣)

फरमाने मुस्तफा ﷺ जिसने मुझ पर सौ मरतबा दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह तआला उस पर सौ रहमतें भेजता है।

कुव्वते हाफिज़ा मज़बूत हो

اللَّهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ وَبَارِكْ عَلَى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ النَّبِيِّ  
الْكَامِلِ وَعَلَى آلِهِ كَمَا لَا نِهَآيَةَ لِكَمَالِكَ وَعَدَدَ كَمَالِهِ

अगर किसी शख्स को निस्यान या'नी भूल जाने की बीमारी हो तो वोह मग़ि़ब और इशा के दरमियान इस दुरूदे पाक को कसरत से पढ़े, إِنَّ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ हाफिज़ा क़वी हो जाएगा।

(أَفْضَلُ الصَّلَوَاتِ عَلَى سَيِّدِ السَّادَاتِ ص १९१/१९२ ملقطاً)

दा'वते इस्लामी के हफ़तावार सुन्नतों भरे  
इज्तिमाअ में पढ़े जाने वाले 6 दुरूदे पाक

﴿1﴾ शबे जुमुआ का दुरूद

اللَّهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ وَبَارِكْ عَلَى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ  
النَّبِيِّ الْأُمِّيِّ الْحَبِيبِ الْعَالِي الْقَدْرِ الْعَظِيمِ الْجَاهِ  
وَعَلَى آلِهِ وَصَحْبِهِ وَسَلِّمْ

बुजुर्गों ने फ़रमाया कि जो शख्स हर शबे जुमुआ (जुमुआ और जुमा'रात की दरमियानी रात) इस दुरूद शरीफ़ को पाबन्दी से कम अज़ कम एक मरतबा पढ़ेगा मौत के वक़्त सरकारे मदीना ﷺ की ज़ियारत करेगा और क़ब्र में दाख़िल होते वक़्त भी, यहां तक कि वोह

फरमाने मुस्तफा ﷺ तुम जहां भी हो मुझ पर दुरूद पढ़ो कि तुम्हारा दुरूद मुझ तक पहुंचता है।

देखेगा कि सरकारे मदीना ﷺ उसे कब्र में अपने  
रहमत भरे हाथों से उतार रहे हैं। (أَفْضَلُ الصَّلَوَاتِ عَلَى سَيِّدِ السَّادَاتِ ص १०१ ملخصاً)

## ﴿2﴾ तमाम गुनाह मुआफ़

اللَّهُمَّ صَلِّ عَلَى سَيِّدِنَا وَمَوْلَانَا مُحَمَّدٍ وَعَلَى آلِهِ وَسَلِّمْ

हज़रते सय्यिदुना अनस رضي الله تعالى عنه से रिवायत है कि  
ताजदारे मदीना ﷺ ने फरमाया : जो शख्स येह दुरूदे  
पाक पढ़े अगर खड़ा था तो बैठने से पहले और बैठा था तो खड़े होने  
से पहले उस के गुनाह मुआफ़ कर दिये जाएंगे। (ऐज़न, स. 65)

## ﴿3﴾ रहमत के सत्तर दरवाजे صَلَّى اللَّهُ عَلَى مُحَمَّدٍ

जो येह दुरूदे पाक पढ़ता है तो उस पर रहमत के 70 दरवाजे  
खोल दिये जाते हैं। (أَقْوَلُ الْبَيِّنَاتِ ص २७७)

## ﴿4﴾ एक हजार दिन की नेकियां جَزَى اللَّهُ عَنَّا مُحَمَّدًا مَا هُوَ أَهْلُهُ

हज़रते सय्यिदुना इब्ने अब्बास رضي الله تعالى عنهما से रिवायत है  
की सरकारे मदीना ﷺ ने फरमाया : इस दुरूदे पाक  
को पढ़ने वाले के लिये सत्तर फिरिश्ते एक हजार दिन तक नेकियां  
लिखते हैं। (مَجْمَعُ الزَّوَادِ ج १० ص २०६ حديث १७३०)

फरमाने मुस्तफ़ा ﷺ जिसने मुझ पर दस मर्तबा सुब्ह और दस मर्तबा शाम दुरूद पाक पढ़ा उसे कियामत के दिन मेरी शफ़ाअत मिलेगी।

### ﴿5﴾ छ लाख दुरूद शरीफ़ का सवाब

اللَّهُمَّ صَلِّ عَلَى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ عَدَدَ مَا فِي عِلْمِ اللَّهِ  
صَلَاةً دَائِمَةً يَدْوَامُ مُلْكِ اللَّهِ

हज़रते अहमद सावी عليه رحمة الله الهادی बा'जू बुजुर्गों से नक़ल करते हैं: इस दुरूद शरीफ़ को एक बार पढ़ने से छ लाख दुरूद शरीफ़ पढ़ने का सवाब हासिल होता है। (أَفْضَلُ الصَّلَوَاتِ عَلَى سَيِّدِ السَّادَاتِ ص १६९)

### ﴿6﴾ कुर्बे मुस्तफ़ा ﷺ

اللَّهُمَّ صَلِّ عَلَى مُحَمَّدٍ كَمَا تُحِبُّ وَتَرْضَى لَهُ

एक दिन एक शख्स आया तो हुज़ूरे अन्वर ﷺ ने उसे अपने और सिद्दीके अक्बर رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ के दरमियान बिठा लिया। इस से सहाबए किराम رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمْ को तअज्जुब हुआ कि येह कौन जी मर्तबा है! जब वोह चला गया तो सरकार ﷺ ने फ़रमाया: येह जब मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ता है तो यूं पढ़ता है।

(أَقْرَبُ الْبَيْنِ ص १२०)

### दुरूदे २-जविय्या

صَلِّ اللَّهُ عَلَى النَّبِيِّ الْأُمِّيِّ وَالْإِلهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ  
وَسَلِّمْ صَلَوةً وَسَلَامًا عَلَيْكَ يَا رَسُولَ اللَّهِ

फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ मुझ पर दुरदे पाक की कसूरत करो बेशक यह तुम्हारे लिये त्हा रत है ।

येह दुरूद शरीफ़ हर नमांज़ के बा'द खुसूसन बा'द नमाजे जुमुआ मदीनए मुनव्वरह **رَافَعًا لِلَّهِ شَرَفًاوُتَعْظِيمًا وَتَكْرِيمًا** की जानिब मुंह कर के सो मर्तबा पढ़ने से बे शुमार फ़ज़ाइल व ब-रकात हासिल होते हैं ।

(**الْوُظُفَةُ الْكَرِيمَةُ** ص ६०) (पाक व हिन्द में का'बा शरीफ़ की तरफ़ रुख़ करने से मदीनए मुनव्वरह **رَافَعًا لِلَّهِ شَرَفًاوُتَعْظِيمًا وَتَكْرِيمًا** की तरफ़ भी मुंह हो जाता है ।)

दीन व दुन्या की ने'मतें हासिल कीजिये

**اَللّٰهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ وَبَارِكْ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ  
وَّعَلٰى اٰلِهِ عَدَدَ اِنْعَامِ اللّٰهِ وَاَفْضَالِهِ**

इस दुरूदे पाक को पढ़ने से दीन व दुन्या की बे शुमार ने'मतें हासिल होंगी ।  
(**اَفْضَلُ الصَّلٰوٰتِ عَلٰى سَيِّدِ السَّادٰتِ** ص १०१)

दुरूदे शफ़अत

**اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّاَنْزِلْهُ التَّقَعْدَ الْمُقَرَّبَ عِنْدَكَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ**

शाफ़ेए उमम **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهِ وَسَلَّم** का फ़रमाने मुअज़्ज़म है : जो शख़्स यूं दुरूदे पाक पढ़े उस के लिये मेरी शफ़अत वाजिब हो जाती है ।

(**التَّرْغِيبُ وَالتَّرْهِيْبُ** ज २ व ३२९ हलित ३१)

दुन्या व आख़िरत की सुख़-रई

**اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّاٰلِهِ وَصَحْبِهِ وَسَلِّمْ بِعَدَدِ  
مَا فِى جَمِيعِ الْقُرْاٰنِ حَرْفًا حَرْفًا وَبِعَدَدِ كُلِّ حَرْفٍ اَلْفًا اَلْفًا**

फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ मुझ पर दुरदे पाक की कसूरत करो बेशक यह तुम्हारे लिये त्हा रत है ।

येह दुरूद शरीफ़ हर नमांज़ के बा'द खुसूसन बा'द नमाजे जुमुआ मदीनए मुनव्वरह **رَافَعًا لِلَّهِ شَرَفًاوُتَعْظِيمًا وَتَكْرِيمًا** की जानिब मुंह कर के सो मर्तबा पढ़ने से बे शुमार फ़ज़ाइल व ब-रकात हासिल होते हैं ।

(**الْوُظُفَةُ الْكَرِيمَةُ** ص ६०) (पाक व हिन्द में का'बा शरीफ़ की तरफ़ रुख़ करने से मदीनए मुनव्वरह **رَافَعًا لِلَّهِ شَرَفًاوُتَعْظِيمًا وَتَكْرِيمًا** की तरफ़ भी मुंह हो जाता है ।)

दीन व दुन्या की ने'मतें हासिल कीजिये

**اَللّٰهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ وَبَارِكْ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ  
وَّعَلٰى اٰلِهِ عَدَدَ اِنْعَامِ اللّٰهِ وَاَفْضَالِهِ**

इस दुरूदे पाक को पढ़ने से दीन व दुन्या की बे शुमार ने'मतें हासिल होंगी ।  
(**اَفْضَلُ الصَّلٰوٰتِ عَلٰى سَيِّدِ السَّادٰتِ** ص १०१)

दुरूदे शफ़अत

**اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّاَنْزِلْهُ التَّقَعْدَ الْمُقَرَّبَ عِنْدَكَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ**

शाफ़ेए उमम **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهِ وَسَلَّم** का फ़रमाने मुअज़्ज़म है : जो शख़्स यूं दुरूदे पाक पढ़े उस के लिये मेरी शफ़अत वाजिब हो जाती है ।

(**التَّرْغِيبُ وَالتَّرْهِيْبُ** ज २ व ३२९ हलित ३१)

दुन्या व आख़िरत की सुख़-रई

**اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّاٰلِهِ وَصَحْبِهِ وَسَلِّمْ بَعْدَ  
مَا فِى جَمِيعِ الْقُرْاٰنِ حَرْفًا حَرْفًا وَبَعْدَ كُلِّ حَرْفٍ اَلْفًا اَلْفًا**

फरमाने मुस्तफा ﷺ जिसने किताब में मुझ पर दुरूदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फिरिश्ते उस के लिये इस्तिफार करते रहेंगे ।

कुरआने करीम की तिलावत के बा'द जो शख्स इस दुरूदे पाक को पढ़ेगा वोह दुन्या व आखिरत में सुखुरु रहेगा ।

(تَفْسِيرُ رُوحِ الْبَيَانِ، الاحزاب: ٥٦ ج ٧ ص ٢٣٤)

ग्यारह हजार दुरूद का सवाब

اللَّهُمَّ صَلِّ عَلَى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَعَلَى آلِهِ  
صَلَاةً أَنْتَ لَهَا أَهْلٌ وَهُوَ لَهَا أَهْلٌ

हजरते सय्यिदुना हाफिज़ जलालुद्दीन अस्सुयूतिशशाफेई ने फरमाया : इस दुरूदे पाक का एक मर्तबा पढ़ना ग्यारह हजार मर्तबा दुरूद शरीफ पढ़ने के बराबर है ।

(أَفْضَلُ الصَّلَوَاتِ عَلَى سَيِّدِ السَّادَاتِ ص ١٥٣)

चौदह हजार दुरूदे पाक का सवाब

اللَّهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ وَبَارِكْ عَلَى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ  
وَعَلَى آلِهِ عَدَدَ كَمَالِ اللَّهِ وَكَمَا يَلِيْقُ بِكَمَالِهِ

इस दुरूद शरीफ को सिर्फ एक मर्तबा पढ़ने से चौदह हजार दुरूदे पाक का सवाब मिलता है । (أَفْضَلُ الصَّلَوَاتِ عَلَى سَيِّدِ السَّادَاتِ ص ١٥٠)

एक लाख दुरूदे पाक का सवाब

اللَّهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ وَبَارِكْ عَلَى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ النَّوْرِ  
الذَّاتِي وَالسِّرِّ السَّارِي فِي سَائِرِ الْأَسْمَاءِ وَالصِّفَاتِ

फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ मुझ पर कसूरत से दुरुदे पाक पढ़ो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरुदे पाक पढ़ना तुम्हारे गुनाहों के लिये मग़िफ़रत है।

इस दुरुदे पाक को एक बार पढ़ा जाए तो एक लाख बार दुरुद शरीफ़ पढ़ने का सवाब मिलता है। नीज़ अगर किसी को कोई हाज़त दरपेश हो तो येह दुरुदे पाक पांच सो बार पढ़े। **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّ وَجَلَّ** हाज़त पूरी होगी। **(أَفْضَلُ الصَّلَوَاتِ عَلَى سَيِّدِ السَّادَاتِ ص ११३)**

हर किस्म की परेशानी से नजात के लिये  
**اللَّهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ عَلَى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ**  
**قَدْ ضَاقَتْ حِيلَتِي أَدْرِكْنِي يَا رَسُولَ اللَّهِ**

सय्यिद इब्ने आबिदीन **رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ** फ़रमाते हैं कि मैं ने इसे एक फ़िलए अज़ीम में पढ़ा जो दिमिशक में वाक़ेअ हुवा, इसे अभी दो सो मर्तबा भी नहीं पढ़ा था कि मुझे एक शख्स ने आ कर इत्तिलाअ दी कि फ़ितना ख़त्म हो गया। **(أَفْضَلُ الصَّلَوَاتِ عَلَى سَيِّدِ السَّادَاتِ ص १०६)**

आबे कौसर से भरा पियाला  
**اللَّهُمَّ صَلِّ عَلَى مُحَمَّدٍ وَعَلَى آلِهِ وَأَصْحَابِهِ وَأَوْلَادِهِ**  
**وَأَزْوَاجِهِ وَدُرَرِيِّتِهِ وَأَهْلِ بَيْتِهِ وَأَصْهَارِهِ وَأَنْصَارِهِ**  
**وَأَشْيَاعِهِ وَمُحِبِّينِهِ وَأَمَّتِهِ وَعَلَيْنَا مَعَهُمْ أَجْمَعِينَ**  
**يَا أَرْحَمَ الرَّاحِمِينَ**

हज़रते सय्यिदुना हसन बसरी **رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ** फ़रमाते हैं कि जो शख्स हौजे कौसर से भरा पियाला पीना चाहे वोह इस दुरुदे पाक को पढ़े। **(أَقْوَلُ الْبَيِّنَاتِ ص १२२)**



फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ जो मुज़ पर एक मरतबा दुरूद शरीफ़ पढ़ता है अल्लाह तआला उस के लिये एक क़ीरात अज़्र लिखता है और क़ीरात उहद पहाड़ जितना है।

## “२२खूले २हमत” के आठ हुरूप की निश्बत से दुश्बदे ताज के ८ म-दनी फूल

﴿१﴾ जो शख्स उरूजे माह (या'नी चांद की पहली से चौदहवीं तक) शबे जुमुआ में बा'द नमाज़े इशा बा वुजू पाक कपड़े पहन कर खुशबू लगा कर एक सो सत्तर बार इस दुरूदे पाक को पढ़ कर सो रहे, ग्यारह शब मु-तवातिर इसी तरह करे **हुज़ूर** **ﷺ** **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** की ज़ियारत से मुशरफ़ होगा।

﴿२﴾ सेहूर व आसेब ज़िन्न व शैतान के दफ़अ के लिये और चेचक के लिये ११ बार पढ़ कर दम करे **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** फ़ाएदा होगा।

﴿३﴾ क़ल्ब की सफ़ाई के लिये हर रोज़ बा'द नमाज़े सुबह साठ बार और बा'द नमाज़े अस्स तीन बार और बा'द नमाज़े इशा ३ बार विर्द रखे।

﴿४﴾ दुश्मनों, ज़ालिमों, ह़ासिदों और ह़ाकिमों के शर से महफूज़ रहने के लिये और ग़म व गुरबत दूर होने के लिये चालीस शब मु-तवातिर बा'द नमाज़े इशा ४१ बार पढ़े।

﴿५﴾ रोज़ी में ब-र-क़त के लिये सात बार बा'द नमाज़े फ़ज़्र हमेशा विर्द रखे।

﴿६﴾ अक़ीमा (बांझ औरत) के लिये २१ खुरमों (छुहारों) पर सात सात बार दम कर के एक खुरमा (छुहारा) रोज़ खिला दे और बा'दे हैज़ तुहर (या'नी पाकी के अय्याम) में हम बिस्तर हो ब फ़ज़ले खुदा **ﷺ** नेक फ़रज़न्द पैदा हो।

﴿७﴾ अगर ह़ामिला पर ख़लल (या'नी तक्लीफ़) हो तो सात दिन बराबर सात मरतबा पानी पर दम कर के पिलाए।

﴿८﴾ वासिते मुवा-स-लते तालिब व मत्लूब (जाइज़ महब्बत म-सलन

फरमाने मुस्तफा ﷺ जिसने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह तआला उस पर दस रहमतें भेजता है।

मियां बीवी में महबबत) और हर मक्सूद के लिये आधी रात के बा'द बा वुजू चालीस बार सिदको यकीन के साथ पढ़े اِنْ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ मल्लूबे दिली हासिल होगा ।

(आ'माले रज़ा, स. 22)

## दुरूदे ताज

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا وَمَوْلَانَا مُحَمَّدٍ صَاحِبِ التَّاجِ  
وَالْمِعْرَاجِ وَالْبَرَقِ وَالْعَلَمِ دَافِعِ الْبَلَاءِ وَالْوَبَاءِ وَالْقَحْطِ  
وَالرَّضِ وَالْاَلَمِ اِسْمُهُ مَكْتُوبٌ مَّرْفُوعٌ مَّشْفُوعٌ  
مَنْقُوشٌ فِي اللّٰوْحِ وَالْقَلَمِ سَيِّدِ الْعَرَبِ وَالْعَجَمِ جِسْمُهُ  
مُقَدَّسٌ مُّعَظَّرٌ مُّطَهَّرٌ مُّنَوَّرٌ فِي الْبَيْتِ وَالْحَرَمِ شَمْسُ  
الصُّحَى بَدْرُ الدُّجَى صَدْرُ الْعُلَى نُوْرُ الْهُدَى كَهْفُ  
الْاُورَى مِصْبَاحُ الظُّلَمِ جَبِيْلُ الشِّيمِ شَفِيْعُ الْاُمَمِ  
صَاحِبِ الْجُوْدِ وَالْكَرَمِ وَاللّٰهُ عَاصِمُهُ وَجَبْرِئِلُ خَادِمُهُ  
وَالْبَرَقُ مَرْكَبُهُ وَالْمِعْرَاجُ سَفَرُهُ وَسِدْرَةُ الْمُنْتَهَى  
مَقَامُهُ وَقَابُ قَوْسَيْنِ مَطْلُوْبُهُ وَالْمَطْلُوْبُ مَقْصُوْدُهُ  
وَالْمَقْصُوْدُ مَوْجُوْدُهُ سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ خَاتَمِ النَّبِيِّيْنَ  
شَفِيْعِ الْمُنْذِيْنَ اَيُّسُ الْغَرِيْبِيْنَ رَحْمَةً لِّلْعَالِيْنَ

फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ जब तुम मुसलीन غلبهم السلام पर दुरदे पाक पढ़ो तो मुझ पर भी पढ़ो बेशक मैं तमाम ज़हानों के रब का रसूल हूँ।

رَاحَةَ الْعَاشِقِينَ مُرَادِ الْمُشْتَاقِينَ شَسِ الْعَارِفِينَ  
سِرَاجِ السَّالِكِينَ وَصَبَاحِ الْمُقَرَّبِينَ مُحِبِّ الْفُقَرَاءِ وَ  
الْغُرَبَاءِ وَالْمَسَاكِينِ سَيِّدِ الثَّقَلَيْنِ نَبِيِّ الْحَرَمَيْنِ إِمَامِ  
الْقِبْلَتَيْنِ وَسَيِّدَتِنَا فِي الدَّائِرَةِ صَاحِبِ قَابِ قَوْسَيْنِ  
مَحْبُوبِ رَبِّ الْمَشْرِقَيْنِ وَالْمَغْرِبَيْنِ جَدِّ الْحَسَنِ  
وَالْحُسَيْنِ مَوْلَانَا وَمَوْلَى الثَّقَلَيْنِ إِبْنِ الْقَاسِمِ مُحَمَّدٍ  
ابْنِ عَبْدِ اللَّهِ نُورٍ مِّنْ نُورِ اللَّهِ يَا أَيُّهَا الْمُشْتَاقُونَ بِنُورِ  
جَمَالِهِ صَلُّوا عَلَيْهِ وَآلِهِ وَأَصْحَابِهِ وَسَلِّمُوا تَسْلِيمًا

तरजमा : ऐ अल्लाह! رحمت فرما हमारे सरदार और हमारे आका मुहम्मद, ताज व मे'राज वाले, बुराक और बुलन्दी वाले पर, बलिय्यात व वबा, कहत व मरज, दुख और मुसीबत के दूर करने वाले पर, जिन का इस्मे गिरामी लिखा हुवा है बुलन्द है और अल्लाह ﷻ के नाम के साथ जुड़ा हुवा है लौहे महफूज और कलम में रंग आमेजी किया हुवा है, अरब और अजम के सरदार, जिन का जिस्मे मुबारक हर ऐब से मुबर्रा, खुशबू का मम्बअ, इन्तिहाई पाकीजा, नूरुन अला नूर, अपने घर और हरम में (इन तमाम अहवाल के साथ आज भी मौजूद है) सुब्द के रोशन और खुश्नुमा सूरज, चौदहवीं रात के चांद, बुलन्दी के मआखज़, हिदायत के नूर, मख़्लूक की जाए पनाह, तारीकियों के चराग़, बेहतरीन खुल्क व आदात वाले, उम्मतों की शफ़ाअत करने वाले, सखावत और करम के वाली पर दुरूदो सलाम और अल्लाह ﷻ उन का मुहाफ़िज़ है जिब्रीले अमीन खादिम हैं और बुराक सुवारी है मे'राज उन का सफ़र है और सिद-रतुल मुन्तहा उन का मक़ाम है और का-ब कौसैन (कमाले कुर्बे इलाही) उन का मल्बूब है

फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ जो मुझ पर रोज़ जुमुआ दुरूद शरीफ़ पढ़ेगा मैं क़ियामत के दिन उस को शफ़ाअत करूँगा।

और मल्लूब या'नी कमाले कुर्बे इलाही वोही मक्सूद है और मक्सूद हासिल हो चुका है तमाम रसूलों के सरदार, तमाम अम्बिया के बा'द आने वाले, गुनहगारों की शफ़ाअत करने वाले, मुसाफ़िरों और अज्जबियों के ग़म गुसार, तमाम ज़हानों पर रहूँ फ़रमाने वाले, आशिकों की राहत और मुश्ताकों की मुराद, जुम्लाहाए आरिफ़ों के सूरज, सालिकों के चराग़, मुक़रबीन की शम्अ, फ़कीरों परदेसियों और मिस्कीनों से महबूबत व उल्फ़त रखने वाले, जिन्नात और इन्सानों के सरदार, ह-रमे मक्का और ह-रमे मदीना के नबी, बैतुल मुक़द्दस और ख़ानए का'बा दोनों क़िब्लों के इमाम, दुन्या व आख़िरत में हमारे वसीला, का-ब कौसैन की नवीद वाले, मशिरकों और मग़िर्बों के रब के हबीब, इमामे हसन और इमामे हुसैन के नाना, हमारे आका, जुम्ला जिन्न व इन्स के वाली, या'नी अबुल क़ासिम मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नूर में से अ-जमत व रिफ़ाअत वाले नूर पर दुरूदो सलाम, उन के नूरे जमाल के आशिको ! ख़ूब सलातो सलाम भेजो उन की जाते वाला सिफ़त पर और उन की आल व अस्हाब पर।

**दुरूदे तुनज्जीना के बारे में ईमान अपरोज़ हिक्कयत**

अल्लामा इब्ने फ़कहानी رحمه الله الفی किताब "अल फ़ज्जुल मुनीर" में इस दुरूद शरीफ़ के बारे में एक वाक़िआ बयान करते हुए फ़रमाते हैं कि पारसा शैख़ मूसा ज़रीर رحمه الله تعالى عليه ने मुझ से बयान किया कि वोह ब ज़रीअए कश्ती समुन्दरी सफ़र पर रवाना हुए, रास्ते में शदीद तूफ़ान ने आ लिया जिसे इक्लाबिया (उलट पलट कर देने वाली) कहते हैं। बहुत कम लोग हैं जो इस तूफ़ान में फंस कर डूबने से बचते हैं, लोग डूबने के ख़ौफ़ से चीख़ो पुकार करने लगे, मुझे नींद आ गई, ख़्वाब में नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम ﷺ की ज़ियारत हुई, आप ﷺ की ज़ियारत हुई, आप ﷺ ने फ़रमाया : कश्ती वालों को कहो कि वोह एक हज़ार मर्तबा येह दुरूद

फरमाने मुस्तफा عليه السلام जिसने मुझ पर रोजे जुमुआ दो सौ बार दुरुदे पाक पढ़ा उस के दो सौ साल के गुनाह मुआफ होंगे।

اللَّهُمَّ صَلِّ عَلَى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَعَلَى آلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ صَلَاةً تَنْجِيْنَا بِهَا شَرِيْفِهَا से ले कर بَعْدَ الْمَمَاتِ तक पढ़ें। मैं बेदार हुवा और कश्ती वालों को ख़्वाब बयान किया। हम ने मिल कर तीन सौ मर्तबा ही पढ़ा था कि अल्लाह तआला ने तूफ़ान से नजात अता फ़रमा दी। (مَطَالِعُ الْمُسْرَاتِ ص ६७१)

शैख़ मजदुद्दीन फ़िरोज़आबादी साहिबे कामूस ने, शैख़ हसन बिन अली असवानी के हवाले से बयान किया कि जो शख्स येह दुरुदे पाक (दुरुदे तुनज्जीना) किसी भी मुश्किल, आफ़त या मुसीबत में एक हज़ार मर्तबा पढ़े अल्लाह तआला उस मुश्किल को आसान फ़रमा देगा और उस का मक़सद पूरा फ़रमा देगा।

(مَطَالِعُ الْمُسْرَاتِ ص ६७१)

اللَّهُمَّ صَلِّ عَلَى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ صَلَاةً تَنْجِيْنَا بِهَا مِنْ جَمِيعِ الْأَهْوَالِ وَالْآفَاتِ وَتَقْضِي لَنَا بِهَا جَمِيعَ الْحَاجَاتِ وَتُطَهِّرُنَا بِهَا مِنْ جَمِيعِ السَّيِّئَاتِ وَتَرْفَعُنَا بِهَا أَعْلَى الدَّرَجَاتِ وَتُبَلِّغُنَا بِهَا أَقْصَى الْغَايَاتِ مِنْ جَمِيعِ الْخَيْرَاتِ فِي الْحَيَاةِ وَبَعْدَ الْمَمَاتِ إِنَّكَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ

फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ जो शख्स मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना भूल गया वोह जन्त का रास्ता भूल गया ।

**तरजमा :** ऐ अल्लाह ! عَزَّوَجَلَّ सय्यिदुना हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा पर ऐसी रहमत नाज़िल फ़रमा कि तू इन के सबब हमें तमाम ख़ौफ़ों और आफ़तों से नजात दे और इन के सबब तू हमारी तमाम हाज़तों को पूरा फ़रमा और इन की बदौलत तू हमें तमाम गुनाहों से पाक कर दे और इन के ज़रीए तू हमें बुलन्द द-रजात पर फ़ाइज़ फ़रमा दे और इन की ब-र-कत से तू हमें तमाम नेकियों की आख़िरी इन्तिहा तक पहुंचा दे, ज़िन्दगी में और मौत के बा'द और बेशक तू हर चीज़ पर कादिर है ।

### शिफ़ाए अमराज

اللَّهُمَّ صَلِّ عَلَى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ طِبِّ الْقُلُوبِ وَدَوَائِهَا  
وَعَافِيَةِ الْأَبْدَانِ وَشِفَائِهَا وَتَوْرِ الْأَبْصَارِ وَضِيَائِهَا  
وَعَلَى آلِهِ وَأَصْحَابِهِ وَبَارِكْ وَسَلِّمْ

बा वुजू मरीज़ को लिख कर दें कि ज़बान से चाटे या पानी में घोल कर पिला दें । शिफ़ा होने तक येह अमल बराबर करते रहें बि इज़िल्लाह मौत के सिवा हर मरज़ को मुफ़ीद है ।

### दुरूदे माही के बारे में मछली की हिक्कयत

एक बुजुर्ग رحمه الله تعالى दरिया के कनारे वुजू कर रहे थे कि एक मछली आई और उस ने येह दुरूद शरीफ़ पढ़ा उन्होंने ने दर्याफ़्त किया कि इसे किस से सीखा उस मछली ने जवाब दिया कि एक दफ़आ दरिया के कनारे पर मैं ने एक फ़िरिश्ते को पढ़ते सुना और याद कर लिया उसी रोज़ से हर आफ़त व बला से महफूज़ हूं ।

(आ'माले रज़ा, स. 138)

फरमाने मुस्तफा ﷺ जिसने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह तआला उस पर दस रहमते भेजता है।

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلَى مُحَمَّدٍ وَعَلَى اٰلِ مُحَمَّدٍ خَيْرِ  
الْخَلَائِقِ وَاَفْضَلِ الْبَشَرِ وَشَفِيعِ الْاُمَمِ يَوْمَ الْحَشْرِ  
وَالنَّشْرِ وَصَلِّ عَلَى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَعَلَى اٰلِ سَيِّدِنَا  
مُحَمَّدٍ بِعَدَدِ كُلِّ مَعْلُوْمٍ لَكَ وَصَلِّ عَلَى مُحَمَّدٍ وَعَلَى  
اٰلِ مُحَمَّدٍ وَبَارِكْ وَسَلِّمْ وَصَلِّ عَلَى جَمِيعِ الْاَنْبِيَاءِ  
وَالْمُرْسَلِيْنَ وَصَلِّ عَلَى كُلِّ الْمَلٰٓئِكَةِ الْمُقَرَّبِيْنَ وَعَلَى  
عِبَادِ اللّٰهِ الصّٰلِحِيْنَ وَسَلِّمْ تَسْلِيْمًا كَثِيْرًا كَثِيْرًا  
بِرَحْمَتِكَ وَبِفَضْلِكَ وَبِكَرَمِكَ يَا اَكْرَمَ الْاَكْرَمِيْنَ  
بِرَحْمَتِكَ يَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ يَا قَدِيْمُ يَا دَائِمُ  
يَا حَيُّ يَا قَيُّوْمُ يَا وَثَرُ يَا اَحَدُ يَا صَدُّ يَا مَنْ لَّمْ يَكِدْ  
وَلَمْ يُوْلَدْ وَلَمْ يَكُنْ لَهٗ كُفُوًا اَحَدٌ بِرَحْمَتِكَ يَا اَرْحَمَ  
الرّٰحِمِيْنَ

मदीनतुल  
मुकबरहमककतुल  
मुकबरहजन्नतुल  
बकीअमदीनतुल  
मुकबरहमककतुल  
मुकबरहजन्नतुल  
बकीअमदीनतुल  
मुकबरहमककतुल  
मुकबरहजन्नतुल  
बकीअमदीनतुल  
मुकबरहमककतुल  
मुकबरहजन्नतुल  
बकीअ

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ  
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

## फैज़ाने दुआ

### दुआ शरीफ की फज़ीलत

हज़ूरे अकरम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम, रसूले मुहत्तशम,  
शाफ़े उमम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इर्शाद फ़रमाया, जो शख्स बरोजे  
जुमुआ मुझ पर सो बार दुरूदे पाक पढ़े, जब वोह क़ियामत के रोज़  
आएगा तो उस के साथ एक ऐसा नूर होगा कि अगर वोह सारी मख़लूक  
में तक्सीम कर दिया जाए तो सब को क़िफ़ायत करे ।

(حِلْيَةُ الْأَوْلِيَاءِ ج ٨ ص ٤٩ حديث ١١٣٤١)

صَلُّوا عَلَى الْخَبِيبِ ا صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

### दुआ की अहमियत

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! दुआ मांगना बहुत बड़ी  
सआदत है, कुरआन व अहदीसे मुबा-रका में जगह जगह दुआ  
मांगने की तरगीब दिलाई गई है । एक हदीसे पाक में है : “क्या मैं  
तुम्हें वोह चीज़ न बताऊं जो तुम्हें तुम्हारे दुश्मन से नजात दे और  
तुम्हारा रिज़्क वसीअ कर दे, रात दिन अल्लाह तआला से दुआ  
मांगते रहो कि दुआ मोमिन का हथियार है ।”

(الْمُسْنَدُ أَبِي يَعْلَى ج ٢ ص ٢٠١ حديث ١٨٠٦)



फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ जिसने मुझ पर दस मरतबा दुरुदे पाक पढ़ा! अल्लाह तआला उस पर सी रहमतें भेजता है।

## दुआ दाफ़ेस बला है

मक्की म-दनी सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने मुश्क़बार है : “बला उतरती है फिर दुआ उस से जा मिलती है। फिर दोनों क़ियामत तक झगड़ा करते रहते हैं।”

(المُسْتَذْرَك ج ٢ ص ١٦٢ حديث ١٨٥٦)

## इबादात में दुआ का मक़ाम

हज़रते सय्यिदुना अबू ज़र ग़िफ़ारी رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ इश़ाद फ़रमाते हैं : “इबादात में दुआ की वोही हैसियत है जो खाने में नमक की।”

(تَبَيُّهُ الْعَافِيَيْنَ ص ٢١٦ حديث ٥٧٧)

## दुआ के तीन फ़ाउदे

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अनिल उयूब صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ फ़रमाते हैं : जो मुसलमान ऐसी दुआ करे जिस में गुनाह और क़त्ए रेहमी की कोई बात शामिल न हो तो अल्लाह तआला उसे तीन चीज़ों में से कोई एक ज़रूर अता फ़रमाता है : ﴿1﴾ या उस की दुआ का नतीजा जल्द ही उस की ज़िन्दगी में जाहिर हो जाता है। या ﴿2﴾ अल्लाह तआला कोई मुसीबत उस बन्दे से दूर फ़रमा देता है। या ﴿3﴾ उस के लिये आख़िरत में भलाई जम्अ की जाती है। एक और रिवायत में है कि बन्दा (जब आख़िरत में अपनी दुआओं का सवाब देखेगा जो दुन्या में मुस्तजाब (या'नी मक्बूल) न हुई थीं

फरमाने मुस्तफ़ा ﷺ तुम जहाँ भी हो मुझ पर दुरूद पढ़ो कि तुम्हारा दुरूद मुझ तक पहुँचता है।

तो) तमन्ना करेगा, काश ! दुनिया में मेरी कोई दुआ क़बूल न होती।

(المُسْتَذْرَكُ لِلْحَاكِمِ ج ٢ ص ١٦٣، ١٦٥، ١٨٥٩، ١٨٦٢)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! दुआ राएगां तो

जाती ही नहीं। इस का दुनिया में अगर असर ज़ाहिर न भी हो तो आखिरत में अज़्रो सवाब मिल ही जाएगा। लिहाज़ा दुआ में सुस्ती करना मुनासिब नहीं।

“या अफ़ुव्वु” के पांच हुरूफ़ की निस्बत से 5 म-दनी फूल

(1) पहला फ़ाएदा येह है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के हुक्म की पैरवी होती है कि उस का हुक्म है मुझ से दुआ मांगा करो। जैसा कि कुरआने पाक में इर्शाद है :

أَدْعُونِي أَسْتَجِبْ لَكُمْ      तर-जमए कन्ज़ुल ईमान: मुझ से  
(٦٠: ٢٤ المؤمنون)      दुआ करो मैं क़बूल करूंगा।

(2) दुआ मांगना सुन्नत है कि हमारे प्यारे प्यारे आका मक्की म-दनी मुस्तफ़ा ﷺ अक्सर अवकात दुआ मांगते। लिहाज़ा दुआ मांगने में इत्तिबाए सुन्नत का भी शरफ़ हासिल होगा।

(3) दुआ मांगने में इताअते रसूल ﷺ भी है कि आप ﷺ दुआ की अपने गुलामों को ताकीद फ़रमाते रहते।

(4) दुआ मांगने वाला अ़बिदों के जुमरे (या'नी गुरौह) में

फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ जिसने मुझ पर दस मर्तबा सुब्द और दस मर्तबा शाम दूरदे पाक पढ़ा उसे कियामत के दिन मेरी शफ़ाअत मिलेगी।

दाख़िल होता है कि दुआ बज़ाते खुद एक इबादत बल्कि इबादत का भी मज़ है। जैसा कि हमारे प्यारे आका ﷺ का फ़रमाने आलीशान है :-

الدُّعَاءُ مَخَّ الْعِبَادَةِ      तरजमा : दुआ इबादत का मज़ है।

(سُنَنِ التِّرْمِذِيِّ ج ٥ ص ٢٤٣ - حَدِيثُ ٣٣٨٢)

(5) दुआ मांगने से या तो उस का गुनाह मुआफ़ किया जाता है या दुनिया ही में उस के मसाइल हल होते हैं या फिर वोह दुआ उस के लिये आख़िरत का ज़ख़ीरा बन जाती है।

न जाने कौन सा गुनाह हो गया है ?

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ? दुआ मांगने में अल्लाहु रब्बुल इज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ और उस के प्यारे हबीब माहे नुबुव्वत ﷺ की इताअत भी है, दुआ मांगना सुन्नत भी है, दुआ मांगने से इबादत का सवाब भी मिलता है नीज़ दुनिया व आख़िरत के मु-तअद्द फ़वाइद हासिल होते हैं। बा'ज लोगों को देखा गया है कि वोह दुआ की क़बूलिय्यत के लिये बहुत जल्दी मचाते बल्कि **مَعَادُ اللَّهِ عَزَّوَجَلَّ** ! बातें बनाते हैं कि हम तो इतने अरसे से दुआएं मांग रहे हैं, बुजुर्गों से भी दुआएं करवाते रहे हैं, कोई पीर फ़कीर नहीं छोड़ा, येह वज़ाइफ़ पढ़ते हैं, वोह अवराद पढ़ते हैं, फुलां फुलां मज़ार पर भी गए मगर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमारी हाज़त पूरी करता ही नहीं। बल्कि बा'ज येह भी कहते सुने जाते हैं :

फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ मुझ पर दुरदे पाक की कसूरत करो बेशक यह तुम्हारे लिये त्हा रत है ।

“न जाने ऐसा कौन सा गुनाह हो गया है जिस की हमें सज़ा मिल रही है ।”

**नमाज़ न पढ़ना तो गोया ख़ता ही नहीं !**

इस तरह की “भड़ास” निकालने वाले से अगर दरयाफ़्त किया जाए कि भाई ! आप नमाज़ तो पढ़ते ही होंगे ? तो शायद जवाब मिले, “जी नहीं ।” देखा आप ने ! ज़बान पर तो बे साख़्ता जारी हो रहा है, “न जाने क्या ख़ता हम से ऐसी हुई है ? जिस की हम को सज़ा मिल रही है !” और नमाज़ में इन की ग़फ़लत तो इन्हें नज़र ही नहीं आ रही ! गोया नमाज़ न पढ़ना तो (مَعَادُ اللَّهِ عَزَّوَجَلَّ) कोई गुनाह ही नहीं है ! अरे ! अपने मुख़्तसर से वुजूद पर ही थोड़ी नज़र डाल लेते, देखिये तो सही ! सर के बाल इंग्रेज़ी, इंग्रेज़ों की तरह सर भी बरहना, लिबास भी इंग्रेज़ी, चेहरा दुश्मनाने मुस्तफ़ा आतश परस्तों जैसा या’नी ताजदारे रिसालत ﷺ की अज़ीम सुन्नत दाढ़ी मुबारक चेहरे से ग़ाइब ! तहज़ीब व तमहुन इस्लाम के दुश्मनों जैसा, नमाज़ तक भी न पढ़ें । हालां कि नमाज़ न पढ़ना ज़बर दस्त गुनाह, दाढ़ी मुंडाना हराम और दिन भर में झूट, गीबत, चुग़ली, वा’दा ख़िलाफ़ी, बद गुमानी, बद निगाही, वालिदैन की ना फ़रमानी, गाली गलोच, फ़िल्में डिरामे, गाने बाजे वग़ैरा वग़ैरा न जाने कितने गुनाह किये जाएं । लेकिन यह गुनाह “जनाब” को नज़र ही न आए । इतने इतने गुनाह करने के बा वुजूद शैतान ग़ाफ़िल कर देता है । और ज़बान पर यह अल्फ़ाज़े शिक्वा खेल रहे होते हैं : “क्या ख़ता हम

फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ जिसने किताब में मुझ पर दुरूदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फिरिस्ते उस के लिये इस्तिफ़ार करते रहेंगे ।

से ऐसी हुई है ? जिस की हम को सज़ा मिल रही है !”

## जिस दोस्त की बात न मानें

ज़रा सोचिये तो सही ! आप का कोई ज़िगरी दोस्त आप को कई बार कुछ काम बताए मगर आप उस का काम न करें । और कभी आप को अपने उसी दोस्त से काम पड़ जाए तो ज़ाहिर है आप पहले ही सहमे रहेंगे कि मैं ने तो इस का एक भी काम नहीं किया अब वोह भला मेरा काम क्यूं करेगा ! अगर आप ने हिम्मत कर के बात कर के भी देखी और वाक़ेई उस ने काम न भी किया तब भी आप शिक्वा नहीं कर सकेगे क्यूं कि आप ने भी तो अपने दोस्त का कोई काम नहीं किया था ।

अब ठण्डे दिल से ग़ौर कीजिये कि अल्लाह عزّوجلّ ने कितने कितने काम बताए, कैसे कैसे अहक़ाम जारी फ़रमाए । मगर खुद उस के कौन कौन से अहक़ाम पर अमल करते हैं ? ग़ौर करने पर मा'लूम होगा कि उस के कई अहक़ामात की बजा आ-वरी में निहायत ही कोताह वाक़ेअ़ हुए हैं । उम्मीद है बात समझ में आ गई होगी कि खुद तो अपने परवर्द गार عزّوجلّ के हुक्मों पर अमल न करें । और वोह अगर किसी बात (या'नी दुआ) का असर ज़ाहिर न फ़रमाए तो शिक्वा, शिकायत ले कर बैठ जाएं । देखिये ना ! आप अगर अपने किसी ज़िगरी दोस्त की कोई बात बार बार टालते रहें तो हो सकता है कि वोह आप से दोस्ती ही ख़त्म कर दे । लेकिन अल्लाह عزّوجل़ बन्दों पर किस क़दर मेहरबान है कि लाख उस के फ़रमान की ख़िलाफ़ वर्जी

फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ मुझ पर कसूरत से दूरदे पाक पढ़ो बेशक तुम्हारा मुझ पर दूरदे पाक पढ़ना तुम्हारे गुनाहों के लिये मग़िफ़रत है।

करें। फिर भी वोह अपने बन्दों की फ़ेहरिस से ख़ारिज नहीं करता। वोह लुत्फ़ो करम फ़रमाता ही रहता है। ज़रा ग़ौर तो फ़रमाइये! जो बन्दे एहसान फ़रामोशी का मुज़ा-हरा कर रहे हैं। अगर वोह भी बतौरै सज़ा अपने एहसानात उन से रोक ले तो उन का क्या बनेगा? यकीनन उस की इनायत के बिग़ैर एक क़दम भी नहीं उठा सकता। अरे! वोह अपनी अज़ीमुश्शान ने'मत हवा को जो बिल्कुल मुफ़्त अता फ़रमा रखी है अगर चन्द लम्हों के लिये रोक ले तो अभी लाशों के अम्बार लग जाएं!

### क़बूलिय्यते दुआ में ताख़ीर का एक सबब

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो! बसा अवकात क़बूलिय्यते दुआ की ताख़ीर में काफ़ी मस्लहतें भी होती हैं जो हमारी समझ में नहीं आती। हुज़ूर, सरापा नूर, फैज़ गन्ज़ूर ﷺ का फ़रमाने पुर सुरूर है, जब अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का कोई प्यारा दुआ करता है, तो अल्लाह तआला जिब्रईल (عليه السلام) से इशार्द फ़रमाता है, "ठहरो! अभी न दो ताकि फिर मांगे कि मुझ को इस की आवाज़ पसन्द है।" और जब कोई काफ़िर या फ़ासिक़ दुआ करता है, फ़रमाता है, "ऐ जिब्रईल (عليه السلام)! इस का काम जल्दी कर दो, ताकि फिर न मांगे कि मुझ को इस की आवाज़ मकरूह (या'नी ना पसन्द) है।

(كَتَرُ الْعَمَالِ ج ۲ ص ۳۹ حديث ۳۲۶۱)

### हिकायत

हज़रते सय्यिदुना यहूया बिन सईद बिन क़त्तान (رضي الله تعالى عنه) ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ को ख़्वाब में देखा, अर्ज की, इलाही क़ो! मैं अक्सर दुआ करता हूं। और तू क़बूल नहीं फ़रमाता? हुक्म हुवा,

फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ जो मुझ पर एक मरतबा दुरूद शरीफ़ पढ़ता है अल्लाह तआला उस के लिये एक क़ोरात अज़्र लिखता है और क़ोरात उहद पहाड़ जितना है।

“ऐ यहूया ! मैं तेरी आवाज़ को दोस्त रखता हूँ। इस वासिते तेरी दुआ की क़बूलियत में ताख़ीर करता हूँ।” (أَحْسَنُ الْوَعَاءِ ص ३०)

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** अभी जो हृदीसे पाक और हिकायत गुज़री उस में येह बताया गया है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ को अपने नेक बन्दों की गिर्या व ज़ारी पसन्द है तो यूं भी बसा अवकात क़बूलियते दुआ में ताख़ीर होती है। अब इस मस्लहत को हम कैसे समझ सकते हैं ! बहर हाल जल्दी नहीं मचानी चाहिये। अह्सनुल विआअ सफ़हा 33 में आदाबे दुआ बयान करते हुए हज़रते रईसुल मु-तकल्लिमीन मौलाना नकी अली ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं :-

### जल्दी मचाने वाले की दुआ क़बूल नहीं होती

(दुआ के आदाब में से येह भी है कि) दुआ के क़बूल में जल्दी न करे। हदीस शरीफ़ में है कि खुदाए तआला तीन आदमियों की दुआ क़बूल नहीं करता। एक वोह कि गुनाह की दुआ मांगे। दूसरा वोह कि ऐसी बात चाहे कि क़तए रेहूम हो। तीसरा वोह कि क़बूल में जल्दी करे कि मैं ने दुआ मांगी अब तक क़बूल नहीं हुई।

(الْتَرْغِيبُ وَالتَّرْهِيْبُ ج २ ص ३१६ حديث ९)

इस हदीस में फ़रमाया गया है कि ना जाइज़ काम की दुआ न मांगी जाए कि वोह क़बूल नहीं होती। नीज़ किसी रिश्तेदार का हक़ जाएअ होता हो ऐसी दुआ भी न मांगें और दुआ की क़बूलियत के लिये जल्दी भी न करें वरना दुआ क़बूल नहीं की जाएगी।

फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ जो शख्स मुझ पर दुरुदे पाक पढ़ना भूल गया वोह जन्नत का रास्ता भूल गया ।

अह्सनुल विआए लि आदाबिहुआअ पर आ 'ला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह अहमद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمَنِ ने हाशिया तहरीर फ़रमाया है । और उस का नाम जैलुल मुद्दआ लि अह्सनिल विआअ रखा है । इसी हाशिये में एक मक़ाम पर दुआ की क़बूलिय्यत में जल्दी मचाने वालों को अपने मख़सूस और निहायत ही इल्मी अन्दाज़ में समझाते हुए फ़रमाते हैं :-

**अफ़्सरों के पास तो बार बार धक्के खाते ह्ये मगर....**

सगाने दुन्या (या'नी दुन्यवी अफ़्सरों) के उम्मीदवारों (या'नी उन से काम निकलवाने के आरजू मन्दों) को देखा जाता है कि तीन तीन बरस तक उम्मीद वारी (और इन्तिज़ार) में गुज़ारते हैं, सुब्हो शाम उन के दरवाज़ों पर दौड़ते हैं, (धक्के खाते हैं) और वोह (अफ़सरान) हैं कि रुख़ नहीं मिलाते, जवाब नहीं देते, झिड़कते, दिल तंग होते, नाक भौ चढ़ाते हैं, उम्मीद वारी में लगाया तो बेगार (बेकार मेहनत) सर पर डाली, येह हज़रत गिरेह (या'नी उम्मीद वार जेब) से खाते, घर से मंगाते, बेकार बेगार (फुज़ूल मेहनत) की बला उठाते हैं, और वहां (या'नी अफ़्सरों के पास धक्के खाने में) बरसों गुज़रें हुनूज़ (या'नी अभी तक गोया) रोज़े अव्वल (ही) है । मगर येह (दुन्यवी अफ़्सरों के पास धक्के खाने वाले) न उम्मीद तोड़ें, न (अफ़्सरों का) पीछा छोड़ें । और अहक़मुल हाकिमीन, अकरमुल अकरमीन عَزَّوَجَلَّ के दरवाज़े पर अव्वल तो आता ही कौन है ! और आए भी तो उक्ताते, घबराते, कल का होता आज हो जाए, एक हफ़्ता कुछ पढ़ते गुज़रा और शिकायत होने लगी,



फरमाने मुस्तफा ﷺ जिसने मुझ पर दस मरतबा दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह तआला उस पर सौ रहमते भेजता है।

साहिब ! पढ़ा तो था, कुछ असर न हुवा ! येह अहमक अपने लिये इजाबत (या'नी कबूलियत) का दरवाजा खुद बन्द कर लेते हैं।

मुहम्मदुरसूलुल्लाह ﷺ फरमाते हैं :

يُسْتَجَابُ لِأَحَدِكُمْ مَا لَمْ يُعْجَلْ  
يَقُولُ دَعْوَتُ فَلَمْ يَسْتَجِبْ

तरजमा : “तुम्हारी दुआ कबूल होती है जब तक जल्दी न करो येह मत कहो कि मैं ने दुआ की थी कबूल न हुई।”

لِي (صَحِيحُ الْبُخَارِيِّ ج ٤ ص ٢٠٠ حَدِيثُ ٦٣٤٠)

बा'ज तो इस पर ऐसे जामे से बाहर (या'नी बे काबू) हो जाते हैं कि आ'माल व अदइय्या (या'नी अवराद और दुआओं) के असर से बे ए'तिकाद, बल्कि अल्लाह عزوجل के वा'दए करम से बे ए'तिमाद, ऐसों से कहा जाए कि ऐ बे हया ! बे शर्मो ! ज़रा अपने गरीबान में मुंह डालो। अगर कोई तुम्हारा बराबर वाला दोस्त तुम से हज़ार बार कुछ काम अपने कहे और तुम उस का एक काम न करो तो अपना काम उस से कहते हुए अव्वल तो आप लजाओ (शरमाओ)गे, (कि) हम ने तो उस का कहना किया ही नहीं अब किस मुंह से उस से काम को कहें ? और अगर गरज दीवानी होती है (या'नी मतलब पड़ा तो) कह भी दिया और उस ने (अगर तुम्हारा काम) न किया तो अस्लन महल्ले शिकायत न जानोगे (या'नी इस बात पर शिकायत करोगे ही नहीं जाहिर है खुद ही समझते हो) कि हम ने (उस का काम) कब किया था जो वोह करता।

फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ तुम जहाँ भी हो मुझ पर दुरुद पढ़ो कि तुम्हारा दुरुद मुझ तक पहुँचता है।

अब जांचो, कि तुम मालिके अलल इल्लाकِ عَزَّوَجَلَّ के कितने अहकाम बजा लाते हो ? उस के हुक्म बजा न लाना और अपनी दर-ख्वास्त का ख्वाही न ख्वाही (हर सूरत में) क़बूल चाहना कैसी बे हयाई है !

ओ अहमक ! फिर फ़र्क़ देख ! अपने सर से पाउं तक नज़रे ग़ौर कर ! एक एक रूएं में हर वक़्त हर आन कितनी कितनी हज़ार दर हज़ार दर हज़ार सद हज़ार बे शुमार ने'मतें हैं। तू सोता है और उस के मा'सूम बन्दे (या'नी फ़िरिश्ते) तेरी हिफ़ज़त को पहरा दे रहे हैं, तू गुनाह कर रहा है और (फिर भी) सर से पाउं तक सिद्दहत व आफ़िश्यत, बलाओं से हिफ़ज़त, खाने का हज़्म, फ़ुज़लात (या'नी जिस्म के अन्दर की गन्दगियों) का दफ़अ, ख़ून की रवानी, आ'ज़ा में ताक़त, आंखों में रोशनी। बे हिसाब करम बे मांगे बे चाहे तुझ पर उतर रहे हैं। फिर अगर तेरी बा'ज़ ख़्वाहिशें अता न हों, किस मुंह से शिकायत करता है ? तू क्या जाने कि तेरे लिये भलाई काहे में है ! तू क्या जाने कैसी सख़्त बला आने वाली थी कि इस (ब ज़ाहिर न क़बूल होने वाली) दुआ ने दफ़अ की, तू क्या जाने कि इस दुआ के इवज़ कैसा सवाब तेरे लिये ज़ख़ीरा हो रहा है, उस का वा'दा सच्चा है और क़बूल की येह तीनों सूरतें हैं जिन में हर पहली, पिछली से आ'ला है। हां, बे ए'तिकादी आई तो यकीन जान कि मारा गया और इब्लीसे लड़ने ने तुझे अपना सा कर लिया।

وَالْعِيَاذُ بِاللّٰهِ سُبْحٰنَهُ وَتَعَالٰی (और अल्लाह की पनाह वोह पाक है और अ-ज़मत वाला)

फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ जिसने मुझ पर दस मर्तबा सुब्ह और दस मर्तबा शाम दुरूद पाक पढ़ा उसे कियामत के दिन मेरी शफ़ाअत मिलेगी।

**ऐ ज़लील खाक ! ऐ आबे नापाक ! अपना मुंह देख और**  
इस अज़ीम शरफ़ पर गौर कर कि अपनी बारगाह में हाज़िर होने,  
अपना पाक, मु-तआली (या'नी बुलन्द) नाम लेने, अपनी तरफ़  
मुंह करने, अपने पुकारने की तुझे इजाज़त देता है। लाखों मुरादें इस  
फ़ज़्ले अज़ीम पर निसार।

**ओ बे सबे ! ज़रा भीक मांगना सीख।** इस आस्ताने  
रफ़ीअ की खाक पर लौट जा। और लिपटा रह और टिकटिकी  
बंधी रख कि अब देते हैं, अब देते हैं ! बल्कि पुकारने, उस से  
मुनाजात करने की लज़ज़त में ऐसा डूब जा कि इरादा व मुराद  
कुछ याद न रहे, यकीन जान कि इस दरवाज़े से हरगिज़ महरूम  
न फिरेगा कि **مَنْ دَقَّ بَابَ الْكَرِيمِ انْفَتَحَ** (जिस ने करीम के  
दरवाज़े पर दस्तक दी तो वोह इस पर खुल गया) **وَبِاللّهِ التَّوْفِيقُ**  
(और तौफ़ीक़ अल्लाह ﷻ की तरफ़ से है)

(ذیل المَدْعَا لِاحْسَنِ الْوَعَاءِ ص ३४ تا ३७)

**दुआ की क़बूलिय्यत में ताख़ीर तो करम है**

हज़रते सय्यिदुना मौलाना नकी अली ख़ान (عليه رَحْمَةُ الرَّحْمٰن)  
फ़रमाते हैं, ऐ अज़ीज़ ! तेरा परवर्द गार **عَزَّوَجَلَّ** फ़रमाता है,  
**أَجِيبْ دَعْوَةَ الدَّاعِ إِذَا دَعَا** मैं दुआ मांगने वाले की दुआ क़बूल करता  
हूँ जब मुझ से दुआ मांगे।  
(٢٦ البقره: ١٨٦)

फरमाने मुस्तफा ﷺ जिसने किताब में मुझ पर दुरूदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फिरश्ते उस के लिये इस्तिगफ़ार करते रहेंगे ।

فَلَنِعْمَ الْمُجِيبُونَ ۝ हम क्या अच्छे क़बूल करने वाले हैं ।

(प २३, الصفत: ७०)

أَدْعُونِي أَسْتَجِبْ لَكُمْ ۝ मुझ से दुआ मांगो मैं क़बूल फ़रमाऊंगा ।

(प २४, المؤمن: ६०)

पस यकीन समझ कि वोह तुझे अपने दर से महरूम नहीं करेगा और अपने वा'दे को वफ़ा फ़रमाएगा । वोह अपने हबीब ख़लील से फ़रमाता है :

وَأَمَّا السَّائِلُ فَلَا تَنْهَرْ ۝ साइल को न झिड़क ।

(प ३०, الضحی: १०)

आप किस तरह अपने ख़वाने करम से दूर करेगा । बल्कि वोह तुझ पर नज़रे करम रखता है । कि तेरी दुआ के क़बूल करने में देर करता है ।

(أَحْسَنُ الْوَعَاءِ ص ३२, ३३)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! تَحْمَدُ لِلَّهِ عَزَّوَجَلَّ कुरआनो सुन्नत की आलमगीर ग़ैर सियासी तहरीक, दा'वते इस्लामी के म-दनी क़ाफ़िलों में आशिक़ाने रसूल के साथ सुन्नतों भरा सफ़र कर के दुआ मांगने वालों के मसाइल हल होने के काफ़ी वाकिआत सुनने को मिलते हैं ।

म-दनी क़ाफ़िले में इर्कुन्निसा का इलाज हो गया

एक इस्लामी भाई का बयान अपने अन्दाज़ में अर्ज करने

फरमाने मुस्तफा ﷺ जो मुझ पर रोजे जुमुआ दुरद शरीफ पढ़ेगा मैं कियामत के दिन उस की शफाअत करूंगा।

को सआदत हासिल करता हूँ। हमारा म-दनी काफ़िला ठग़ा शहर वारिद हुवा, शु-रकाअ में से एक इस्लामी भाई को इर्कुनिसा का शदीद दर्द उठता था बेचारे शिद्दे दर्द से माहिये बे आब की तरह तड़पते थे। एक बार दर्द के सबब रात भर सो न सके। आखिरी दिन अमीरे काफ़िला ने फ़रमाया : आइये ! सब मिल कर इन के लिये दुआ करते हैं। चुनान्चे दुआ शुरू हुई, उन इस्लामी भाई का बयान है : الْحَمْدُ لِلَّهِ عَزَّوَجَلَّ : दौराने दुआ ही दर्द में कमी आनी शुरू हो गई और कुछ देर के बा'द इर्कुनिसा का दर्द बिल्कुल जाता रहा। الْحَمْدُ لِلَّهِ عَزَّوَجَلَّ। येह बयान देते वक़्त काफ़ी अरसा हो चुका है वोह दिन आज का दिन मुझे फिर कभी इर्कुनिसा की तकलीफ़ नहीं हुई। الْحَمْدُ لِلَّهِ येह बयान देते वक़्त मुझे अलाकाई म-दनी काफ़िला जिम्मादार की हैसियत से म-दनी काफ़िलों की धूमें मचाने की ख़िदमत मिली हुई है।

गर हो इर्कुनिसा, आरिज़ा कोई सा पाओगे सिद्दहें, काफ़िले में चलो  
दूर बीमारियां, और परेशानियां होंगी बस चल पड़ें, काफ़िले में चलो

صَلُّوا عَلَى الْخَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! म-दनी काफ़िले की ब-र-कत से इर्कुनिसा जैसी मूज़ी बीमारी से नजात मिल गई। इर्कुनिसा की पहचान येह है कि इस में चढ़े (या'नी रान के जोड़) से ले कर पाउं के टख़ने तक शदीद दर्द होता है येह मरज़ बरसों तक पीछा नहीं छोड़ता।

फ़रमान मुस्तफ़ा ﷺ जिसने मुझे पर एक बार दुर्रुद पाक पढ़ा अल्लाह तआला उस पर दस रहमत भेजता है।

**“दुआ मोमिन का हथियार है” के सत्तरह हुरूफ़ की निश्बत से दुआ मांगने के 17 म-दनी फूल**

(तक़रीबन तमाम म-दनी फूल अहसनुल विआअ लि आदाबिदुआ मअ शर्ह जैलिल मुद्दआ लि अहसनिल विआअ, मत्बूआ मक-त-बतुल मदीना बाबुल मदीना से माखूज हैं)

﴿1﴾ हर रोज़ कम अज़ कम बीस बार दुआ करना वाजिब है।  
 اِنْمَاجِيزِيْوَن का येह वाजिब, नमाज़ में सू-रतुल फ़ातिहा से अदा हो जाता है कि اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْم (तर-जमए कन्जुल ईमान : हम को सीधा रास्ता चला) भी दुआ और اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ (तर-जमए कन्जुल ईमान : सब खूबियां अल्लाह को जो मालिक सारे जहान वालों का) कहना भी दुआ है। (स. 123) ﴿2﴾ दुआ में हृद से न बड़े। म-सलन अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام का मर्तबा मांगना या आस्मान पर चढ़ने की तमन्ना करना। नीज़ दोनों जहां की सारी भलाइयां और सब की सब खूबियां मांगना भी मन्अ है कि इन खूबियों में मरातिबे अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام भी हैं जो नहीं मिल सकते। (स. 80,81) ﴿3﴾ जो मुहाल (या'नी ना मुम्किन) या क़रीब ब मुहाल हो उस की दुआ न मांगे। लिहाज़ा हमेशा के लिये तन्दुरुस्ती अफ़ियत मांगना कि आदमी उम्र भर कभी किसी तरह की तकलीफ़ में न पड़े येह मुहाले आदी की दुआ मांगना है। यूंही लम्बे क़द के आदमी का छोटा क़द होने या छोटी आंख वाले का बड़ी आंख की दुआ करना मन्मूअ है कि येह ऐसे अम्र की दुआ है जिस पर क़लम जारी हो चुका है। (स. 81) ﴿4﴾ गुनाह की दुआ न करे कि मुझे पराया माल मिल जाए कि गुनाह की त़लब करना भी गुनाह है। (स. 82) ﴿5﴾ क़त्ए रेहूम (म-सलन फुलां

फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ जो शख्स मुझ पर दुरुदे पाक पढ़ना भूल गया वोह जन्नत का रास्ता भूल गया ।

रिश्तेदारों में लड़ाई हो जाए की दुआ न करे । (स. 82) ﴿6﴾ अल्लाह से सिर्फ़ हकीर चीज़ न मांगे कि परवर्द गार غَوْحِلْ गनी है बल्कि अपनी तमाम तवज्जोह उसी की तरफ़ रखे और हर चीज़ का उसी से सुवाल करे । (स. 84) ﴿7﴾ रन्जो मुसीबत से घबरा कर अपने मरने की दुआ न करे । खयाल रहे कि दुन्यवी नुक्सान से बचने के लिये मौत की तमन्ना ना जाइज़ है और दीनी मुजर्त (या'नी दीनी नुक्सान) के खौफ़ से जाइज़ (स. 85,87) ﴿8﴾ बिला ज़रूरते शर-ई किसी के मरने और ख़राबी (बरबादी) की दुआ न करे, अलबत्ता अगर किसी काफ़िर के ईमान न लाने पर यकीन या ज़न्ने ग़ालिब हो और (उस के) जीने से दीन का नुक्सान हो या किसी ज़ालिम से तौबा और जुल्म छोड़ने की उम्मीद न हो और उस का मरना, तबाह होना मख़लूक के हक़ में मुफ़ीद हो तो ऐसे शख्स पर बद दुआ करना दुरुस्त है । (स. 87)

﴿9﴾ किसी मुसल्मान को येह बद दुआ न दे कि “तू काफ़िर हो जाए” कि बा'ज़ उ-लमा के नज़दीक (ऐसी दुआ मांगना) कुफ़्र है और तहकीक़ येह है कि अगर कुफ़्र को अच्छा या इस्लाम को बुरा जान कर कहे तो बेशक कुफ़्र है वरना बड़ा गुनाह है कि मुसल्मान की बद ख़्वाही (या'नी बुरा चाहना) ह़राम है, खुसूस येह बद ख़्वाही (कि फुलां का ईमान बरबाद हो जाए) तो सब बद ख़्वाहियों से बदतर है । (स. 90)

﴿10﴾ किसी मुसल्मान पर ला'नत न करे और उसे मरदूद व मलज़न न कहे और जिस काफ़िर का कुफ़्र पर मरना यकीनी नहीं उस पर भी नाम ले कर ला'नत न करे । (स. 90) ﴿11﴾ किसी मुसल्मान को येह बद दुआ न दे कि “तुझ पर खुदा غَوْحِلْ का ग़ज़ब नाज़िल हो और तू (भाड़ और) आग या दोज़ख़ में दाख़िल हो ।” कि हदीस शरीफ़

फरमाने मुस्तफ़ा ﷺ जिसने मुझ पर एक बार दुरूद पाक पढ़ा अल्लाह तआला उस पर दस रहमते भेजता है।

में इस की मुमा-न-अत वारिद है। (स. 100) ﴿12﴾ जो काफ़िर मरा उस के लिये दुआए मग़िफ़रत हराम व कुफ़्र है। (स. 100) ﴿13﴾ येह दुआ करना, “खुदाया ! सब मुसल्मानों के सब गुनाह बख़्श दे।” जाइज़ नहीं कि इस में उन अह्दादीसे मुबा-रका की तकज़ीब (या’नी झुटलाना) होती है जिन में बा’ज मुसल्मान का दोज़ख़ में जाना वारिद हुवा। (स. 106) अलबत्ता यूं दुआ करना “सारी उम्मते मुहम्मद ﷺ की मग़िफ़रत (या’नी बख़्शिश) हो या सारे मुसल्मानों की मग़िफ़रत हो” जाइज़ है। (स. 103) ﴿14﴾ अपने लिये और अपने दोस्त अहबाब, अहलो माल और औलाद के लिये बद दुआ न करे, क्या मा’लूम कि क़बूलिय्यत का वक़्त हो और बद दुआ का असर ज़ाहिर होने पर नदामत हो। (स. 107) ﴿15﴾ जो चीज़ हासिल हो (या’नी अपने पास मौजूद हो) उस की दुआ न करे म-सलन मर्द यूं न कहे, “या अल्लाह غُذُخْلُ मुझे मर्द कर दे” कि इस्तिहज़ा (मज़ाक बनाना) है। अलबत्ता ऐसी दुआ जिस में शरीअत के हुक्म की ता’मील या अज़िज़ी व बन्दगी का इज़हार या परवर्द गार غُذُخْل और मदीने के ताजदार ﷺ से महब्बत या दीन या अहले दीन की तरफ़ रग़बत या कुफ़्रो काफ़िरीन से नफ़रत वग़ैरा के फ़वाइद निकलते हों वोह जाइज़ है अगर्चे इस अम्र का हुसूल यकीनी हो। जैसे दुरूद शरीफ़ पढ़ना, वसीले की, सिराते मुस्तक़ीम की अल्लाह व रसूल ﷺ के दुश्मनों पर ग़ज़ब व ला’नत की दुआ करना। (स. 108) ﴿16﴾ दुआ में तंगी न करे म-सलन यूं न मांगे या अल्लाह तन्हा मुझ पर रहम फ़रमा या सिर्फ़ मुझे और मेरे फुलां फुलां दोस्त को ने’मत बख़्श। (स. 109) बेहतर येह है कि सब मुसल्मानों को दुआ में शामिल



फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ जिसने मुझ पर दस मरतबा दुरूदे पाक पढ़ा! अल्लाह तआला उस पर सौ रहमतें भेजता है।

कर ले इस का एक फ़ाएदा येह भी होगा कि अगर खुद उस नेक बात का हक़दार न भी हुवा तो अच्छे मुसल्मानों के तुफ़ैल पा लेगा। ﴿17﴾ हुज्जतुल इस्लाम हज़रते सय्यिदुना इमाम मुहम्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَالِي फ़रमाते हैं : मज़बूत अक़ीदे के साथ दुआ मांगे और क़बूलिय्यत का यकीन रखे। (احياء العلوم ج ۱ ص ۷۷۰)

### 15 कुरआनी दुआएं

(1) رَبَّنَا آتِنَا فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً وَفِي الْآخِرَةِ

حَسَنَةً وَقِنَا عَذَابَ النَّارِ ﴿٢٠﴾ (البقرة: २०-१)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : ऐ रब हमारे हमें दुनिया में भलाई दे और हमें आख़िरत में भलाई दे और हमें अज़ाबे दोज़ख़ से बचा।

(2) رَبَّنَا لَا تُؤَاخِذْنَا إِنْ نُسِينَا أَوْ أَخْطَأْنَا

(البقرة: २८६)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : ऐ रब हमारे हमें न पकड़ अगर हम भूलें या चूकें।

(3) رَبَّنَا وَلَا تَحْمِلْ عَلَيْنَا اَصْرًا كَمَا حَمَلْتَهُ

عَلَى الَّذِينَ مِنْ قَبْلِنَا (البقرة: २८६)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : ऐ रब हमारे और हम पर भारी बोझ न रख जैसा तूने हम से अगलों पर रखा था।

(4) رَبَّنَا لَا تُزِغْ قُلُوبَنَا بَعْدَ إِذْ هَدَيْتَنَا وَهَبْ لَنَا مِنْ لَدُنْكَ

رَحْمَةً إِنَّكَ أَنْتَ الْوَهَّابُ ﴿٨﴾ (آل عمران: ८)

फरमाने मुस्तफा ﷺ तुम जहां भी हो मुझ पर दुरद पड़ो कि तुम्हारा दुरद मुझ तक पहुंचता है।

तर-ज-मए कन्जुल ईमान : ऐ रब हमारे दिल टढ़े न कर

बा'द इस के कि तूने हमें हिदायत दी और हमें अपने पास से रहमत अता कर बेशक तू है बड़ा देने वाला।

(5) رَبَّنَا إِنَّا أَمَتًا غَافِرٌ لَّنَا ذُنُوبُنَا وَقِنَا عَذَابَ النَّارِ ۝

(प ३ अल عمران: १६)

तर-ज-मए कन्जुल ईमान : ऐ रब हमारे हम ईमान लाए तो

हमारे गुनाह मुआफ़ कर और हमें दोज़ख़ के अज़ाब से बचा ले।

(6) رَبَّنَا غُفِرَ لَنَا ذُنُوبُنَا وَكَفِّرْ عَنَّا سَيِّئَاتِنَا

وَتَوَقَّنَا مِنَ الْآبْرَارِ ۝ (प ४ अल عمران: १९३)

तर-ज-मए कन्जुल ईमान : ऐ रब हमारे तो हमारे गुनाह बख़्श दे

और हमारी बुराइयां महव फ़रमा दे और हमारी मौत अच्छों के साथ कर।

(7) رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا مَعَ الْقَوْمِ الظَّالِمِينَ ۝

(प ८ अल अعرाफ: ४७)

तर-ज-मए कन्जुल ईमान : ऐ हमारे रब हमें ज़ालिमों के साथ न कर।

(8) رَبَّنَا أَفْرِغْ عَلَيْنَا صَبْرًا وَتَوَقَّنَا مُسْلِمِينَ ۝

(प ९ अल अعرाफ: १२६)

तर-ज-मए कन्जुल ईमान : ऐ रब हमारे हम पर सब्र उंडेल दे

और हमें मुसल्मान उठा।

फरमाने मुस्तफा ﷺ जिसने मुझ पर दस मर्तबा सुब्ह और दस मर्तबा शाम दूरदे पाक पढ़ा उसे कियामत के दिन मेरी शफाअत मिलेगी।

(9) رَبِّ اجْعَلْنِي مُقِيمَ الصَّلَاةِ وَمِنْ ذُرِّيَّتِي

رَبَّنَا وَتَقَبَّلْ دُعَاءِ ۝ (پ ۱۳ ابراهيم: ۴۰)

तर-ज-मए कन्जुल ईमान : ऐ मेरे रब मुझे नमाज़ का काइम करने वाला रख और कुछ मेरी औलाद को ऐ हमारे रब और हमारी दुआ सुन ले।

(10) رَبَّنَا اغْفِرْ لِي وَلِوَالِدَيَّ وَلِلْمُؤْمِنِينَ

يَوْمَ يَقُومُ الْحِسَابُ ۝ (پ ۱۳ ابراهيم: ۴۱)

तर-ज-मए कन्जुल ईमान : ऐ हमारे रब मुझे बख्शा दे और मेरे मां बाप को और सब मुसल्मानों को जिस दिन हिसाब काइम होगा।

(11) رَبَّنَا آمَنَّا فَاغْفِرْ لَنَا وَارْحَمْنَا وَأَنْتَ خَيْرُ الرَّاحِمِينَ ۝

(پ ۱۸ المؤمنون: ۱۰۹)

तर-ज-मए कन्जुल ईमान : ऐ हमारे रब हम ईमान लाए तो हमें बख्शा दे और हम पर रहम कर और तू सब से बेहतर रहम करने वाला है।

(12) رَبَّنَا هَبْ لَنَا مِنْ أَزْوَاجِنَا وَذُرِّيَّاتِنَا قُرَّةَ

أَعْيُنٍ وَاجْعَلْنَا لِلْمُتَّقِينَ إِمَامًا ۝

(پ ۱۹ الفرقان: ۷۴)

तर-ज-मए कन्जुल ईमान : ऐ हमारे रब हमें दे हमारी बीबियों

फरमाने मुस्तफा ﷺ मुझ पर दुरदे पाक की कसूरत करो बेशक येह तुम्हारे लिये तहारत है ।

और हमारी औलाद से आंखों की ठण्डक और हमें परहेज गारों का पेशवा बना ।

(13) رَبَّنَا اغْفِرْ لَنَا وَلِإِخْوَانِنَا الَّذِينَ سَبَقُونَا بِالْإِيمَانِ وَلَا تَجْعَلْ فِي

قُلُوبِنَا غِلًا لِلَّذِينَ آمَنُوا رَبَّنَا إِنَّكَ رَءُوفٌ رَحِيمٌ ۝

(प २८ الحشر: १०)

तर-ज-मए कन्जुल ईमान : ऐ हमारे रब हमें बख्श दे और हमारे भाइयों को जो हम से पहले ईमान लाए और हमारे दिल में ईमान वालों की तरफ से कीना न रख ऐ रब हमारे बेशक तू ही निहायत मेहरबान रहम वाला है ।

(14) رَبِّ أَعُوذُ بِكَ مِنْ هَمَزَاتِ الشَّيْطَانِ ۝

(प १८ المؤمنون: ९७)

तर-ज-मए कन्जुल ईमान : ऐ मेरे रब तेरी पनाह शयातीन के वस्वसों से ।

(15) رَبِّ ارْحَمْهُمَا كَمَا رَبَّيْنِي صَغِيرًا ۝

(प १० بنی اسرائیل: २४)

तर-ज-मए कन्जुल ईमान : ऐ मेरे रब तू इन दोनों पर रहम कर जैसा कि इन दोनों ने मुझे छुटपन (बचपन) में पाला ।

फरमाने मुस्तफा ﷺ जिसने किताब में मुझ पर दुरूदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फिरश्ते उस के लिये इस्तिफार करते रहेंगे ।

## दीन व दुन्या की भलाइयों वाली 49 दुआएं

### (1) दुआए मुस्तफा ﷺ

اَللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के प्यारे महबूब ﷺ अक्सर

येह दुआ भी मांगा करते थे :

يَا مُقَلِّبَ الْقُلُوبِ ثَبِّتْ قَلْبِي عَلَى دِينِكَ

या'नी ऐ दिलों के फेरने वाले ! मेरे दिल को अपने दीन पर

काइम रख ।

(مُسْنَدُ إِمَامِ أَحْمَد بن حَنْبَلٍ، ج ٤ ص ٥١١ حديث ١٣٦٩٧)

येह दुआ ता'लीमे उम्मत के लिये है ताकि लोग सुन कर सीख लें ।

(मिरआत, जि. 1 स. 109)

### (2) सोते वक़्त की दुआ

اَللّٰهُمَّ بِاسْمِكَ اَمُوتُ وَاَحْيَا

तरजमा : ऐ अल्लाह मैं तेरे नाम के साथ ही मरता और

जीता हूँ (या'नी सोता और जागता हूँ) ।

(صَحِيحُ الْبُخَارِيِّ ج ٤ ص ١٩٣ حديث ٦٣١٤)

### (3) नींद से बेदर होने के बा'द की दुआ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ اَحْيَانَا بَعْدَ مَا اَمَاتَنَا وَاِلَيْهِ النُّشُوْرُ

(صَحِيحُ الْبُخَارِيِّ ج ٤ ص ١٩٣ حديث ٦٣١٤)

तरजमा : तमाम ता'रीफें अल्लाह तआला के लिये जिस ने हमें

मौत (नींद) के बा'द हयात (बेदारी) अता फरमाई और हमें उसी की तरफ़

फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ मुझ पर कसूरत से दुरदे पाक पढ़ो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरदे पाक पढ़ना तुम्हारे गुनाहों के लिये माफ़िफ़रत है।

लौटना है।

(4) बैतुल ख़ला में दाख़िल होने से पहले की दुआ

اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنَ الْخُبْثِ وَالْخَبَائِثِ

(صَحِيحُ الْبُخَارِيِّ ج ٤ ص ١٩٥ حديث ٦٣٢٢)

तरजमा : ऐ अल्लाह मैं नापाक जिन और जिनियों से तेरी पनाह मांगता हूँ।

चूँकि पाख़ाने में गन्दे जिन्नात रहते हैं। इस लिये येह दुआ पढ़नी चाहिये।

(मिरआतुल मनाजीह, जि. 1 स. 259)

(5) बैतुल ख़ला से बाहर आने के बाद की दुआ

الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي أَذْهَبَ عَنِّي الْأَذَى وَعَافَانِي

(مُصَنَّفُ ابْنِ أَبِي شَيْبَةَ ج ٧ ص ١٤٩ حديث ٢)

तरजमा : अल्लाह तआला का शुक्र है जिस ने मुझे से अजिय्यत दूर की और मुझे आफ़ियत दी।

(6) घर में दाख़िल होते वक़्त की दुआ

اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ خَيْرَ الْوَجْهِ وَخَيْرَ الْخُرْجِ بِسْمِ اللَّهِ وَلَجْنَا وَبِسْمِ اللَّهِ خَرَجْنَا وَعَلَى اللَّهِ رَبِّنَا تَوَكَّلْنَا

तरजमा : ऐ अल्लाह मैं तुझ से दाख़िल होने और निकलने

फरमाने मुस्तफा ﷺ जो मुझ पर एक मरतबा दुरुद शरीफ पढ़ता है अल्लाह तआला उस के लिये एक कीरात अज़्र लिखता है और कीरात उद्दुद पहाड़ जितना है।

की जगहों की भलाई तलब करता हूं, अल्लाह عزوجل के नाम से हम अन्दर आए और अल्लाह عزوجل के नाम से बाहर निकले और हम ने अपने रब अल्लाह عزوجل पर भरोसा किया। (सनن أبي दाؤद ج ४ ص ४२१-४२२ حديث ५०९६)

### (7) घर से निकलते वक्त की दुआ

بِسْمِ اللَّهِ تَوَكَّلْتُ عَلَى اللَّهِ لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللَّهِ

(सनن أبي दाؤद ج ४ ص ४२०-४२१ حديث ५०९५)

तरजमा : अल्लाह عزوجل के नाम से, मैं ने अल्लाह पर भरोसा किया, गुनाह से बचने की कुव्वत और नेकी करने की ताकत अल्लाह ही की तरफ से है।

इस दुआ के पढ़ने पर गैबी फिरिश्ता पढ़ने वाले से कहता है कि तूने बिस्मिल्लाह की ब-र-कत से हिदायत पाई और अल्लाह के वसीले से किफायत और लाहौल के वासिते से हिफाजत।

(मिरआतुल मनाजीह, जि. 4 स. 48)

### (8) खाना खाने से पहले की दुआ

بِسْمِ اللَّهِ وَاللَّهُ الَّذِي لَا يَضُرُّ مَعَ اسْمِهِ شَيْءٌ فِي الْأَرْضِ وَلَا فِي السَّمَاءِ يَا حَيُّ يَا قَيُّوْمُ

(क़ुत्बुल मुत्ताल ज १० स १०९-११० حديث ४०७९२)

तरजमा : अल्लाह तआला के नाम से शुरू करता हूं जिस के नाम की ब-र-कत से ज़मीन व आस्मान की कोई चीज़ नुक़सान नहीं पहुंचा सकती, ऐ हमेशा ज़िन्दा व काइम रहने वाले।

फरमाने मुस्तफा ﷺ जिसने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह तआला उस पर दस रहमते भजता है।

शुरूअ करने से कब्ल येह दुआ पढ़ ली जाए, अगर खाने पीने में ज़हर भी होगा तो **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** असर नहीं करेगा।

### (9) खाने के बा'द की दुआ

**الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي أَطْعَمَنَا وَسَقَانَا وَجَعَلَنَا مُسْلِمِينَ**

(سُنَنُ أَبِي دَاوُدَ ج ۳ ص ۵۱۳ حديث ۳۸۵۰)

तरजमा : अल्लाह **عَزَّوَجَلَّ** का शुक्र है जिस ने हमें खिलाया, पिलाया और हमें मुसल्मान बनाया।

### (10) दूध पीने के बा'द की दुआ

**اللَّهُمَّ بَارِكْ لَنَا فِيهِ وَزِدْنَا مِنْهُ**

(سُنَنُ أَبِي دَاوُدَ ج ۳ ص ४७६ حديث ३७३०)

तरजमा : ऐ अल्लाह ! हमारे लिये इस में ब-र-कत दे और हमें इस से ज़ियादा इनायत फ़रमा।

### (11) आईना देखते वक़्त की दुआ

**اللَّهُمَّ أَنْتَ حَسَنْتَ خُلُقِي فَحَسِّنْ خُلُقِي**

(الْحَصْنُ وَالْحُصْنُ ص १०२)

तरजमा : या अल्लाह ! तूने मेरी सूरत तो अच्छी बनाई है मेरे अख़लाक़ भी अच्छे कर दे।



फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ जब तुम मुसलमानों पर दुरदे पाक पढ़ो तो मुझे पर भी पढ़ो बेशक मैं तमाम जहानों के रब का रसूल हूँ।

## (12) किसी मुसलमान को मुस्कराता देख कर पढ़ने की दुआ

أُصْحَكَ اللَّهُ سِنِّكَ

(صَحِيحُ الْبُخَارِي ج ٢ ص ٤٠٣ حديث ٣٢٩٤)

तरजमा : अल्लाह غَوْجَل आप को हमेशा मुस्कराता रखे।

## (13) शुक्रिया अदा करने की दुआ

جَزَاكَ اللَّهُ خَيْرًا

(سُنَنِ التِّرْمِذِيِّ ج ٣ ص ٤١٧ حديث ٢٠٤٢)

तरजमा : अल्लाह तआला तुझे जज़ाए खैर दे।

इस मुख़्तसर से जुम्ले में उस की ने'मत का इक़्ार भी हो गया अपने इज्ज का इज़हार भी हो गया और उस के हक़ में दुआए खैर भी, शुक्रिया का मक़्सद भी येही होता है। (मिरआतुल मनाजीह, जि. 4 स. 257)

हदीस में है कि जो लोगों का शुक्रिया अदा न करे वोह अल्लाह का शुक्रिया भी अदा न करेगा।

(مَشْكَاهُ الْمَصَابِيح ج ٢ ص ٥٥٧ حديث ٣٠٢٥)

## (14) अदाए कर्ज़ की दुआ اللَّهُمَّ اكْفِنِي بِحَلَالِكَ عَنْ حَرَامِكَ وَأَغْنِنِي بِفَضْلِكَ عَنْ سُوءِكِ

(الْمُسْتَدْرَكُ لِلْحَاكِم ج ٢ ص ٢٣٠ حديث ٢٠١٦)

तरजमा : ऐ अल्लाह ! मुझे हलाल रिज़क अता फरमा कर

फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ जो मुझे पर राज़ जुमुआ दुरूद शरीफ़ पढ़ेगा मैं क़ियामत के दिन उस को शफ़ाअत करूंगा।

हराम से बचा और अपने फ़ज़्लो करम से अपने सिवा ग़ैरों से बे नियाज़ कर दे।

येह दुआ तीर ब हदफ़ नुस्खा है अगर हर मुसलमान हमेशा ही

येह दुआ हर नमाज़ के बा'द ज़रूर एक बार पढ़ लिया करे **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ**

कर्ज़ व जुल्म से महफूज़ रहेगा। (मिरआतुल मनाजीह, जि. 4 स. 51)

### (15) शुश्शा आने के वक़्त की दुआ

**أَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ**

(صَحِيحُ الْبُخَارِي ج ٤ ص ١٣١ حديث ٦١١٥)

तरजमा : मैं शैतान मरदूद से अल्लाह तआला की पनाह चाहता हूँ।

### (16) इल्म में इज़ाफ़े की दुआ

**رَبِّ زِدْنِي عِلْمًا** (॥३) (प १६, طه: ११४)

तर-जमाए कन्ज़ुल ईमान : ऐ मेरे रब मुझे इल्म ज़ियादा दे।

(17) शिआरे कुफ़र को देखे या आवाज़ सुने  
तो येह दुआ पढ़े

**أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ  
الْهَآ وَاحِدًا لَا تَعْبُدُ إِلَّا إِيَّاهُ**

तरजमा : मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह **عَزَّوَجَلَّ** के सिवा कोई

मा'बूद नहीं, वोह यक्ता है उस का कोई शरीक नहीं, वोह मा'बूद यक्ता है  
हम सिर्फ़ उसी की इबादत करते हैं।

फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ जिसने मुझ पर रोज़े जुमुआ दो सौ बार दूरूदे पाक पढ़ा उस के दो सौ साल के गुनाह मुआफ़ होंगे।

मल्फूज़ाते आ'ला हज़रत में है कि मन्दरों के घन्टे और संख (नाकूस या'नी बड़ी कोड़ी जो मन्दरों में बजाई जाती है) की आवाज़ और गिर्जा वगैरा की इमारत को देख कर भी येह दुआ पढ़े।

(अल मल्फूज़, हिस्सए दुवुम, स. 235)

(18) मुसीबत ज़दा को देख कर पढ़ने की दुआ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ عَافَانِیْ مِمَّا ابْتَلَاکَ بِهٖ وَفَضَّلَنِیْ  
عَلٰی کَثِیْرٍ مِّمَّنْ خَلَقَ تَفْضِیْلًا

(سُنَنِ التِّرْمِذِی ج ۵ ص ۲۷۲ حدیث: ۳۴۴۲)

तरजमा : अल्लाह तआला का शुक्र है जिस ने मुझे इस मुसीबत से आफ़ियत दी जिस में तुझे मुब्तला किया और मुझे अपनी बहुत सी मख़लूक पर फ़ज़ीलत दी।

जो शख्स किसी बला रसीदा को देख कर येह दुआ पढ़ लेगा उस बला से महफूज़ रहेगा। हर तरह के अमराज़ व बला में मुब्तला को देख कर येह दुआ पढ़ सकते हैं। लेकिन तीन किस्म की बीमारियों में मुब्तला को देख कर येह दुआ न पढ़ी जाए इस लिये कि मन्कूल है कि तीन बीमारियों को मक्रूह न रखो :

① जुकाम कि इस की वजह से बहुत सी बीमारियों की जड़ कट जाती है।

② ख़ुजली कि इस से अमराज़ जिल्दिया और जुज़ाम वगैरा का इन्सिदाद हो जाता है।

फरमाने मुस्तफा ﷺ जो शख्स मुझ पर दुरुदे पाक पढ़ना भूल गया वोह जन्नत का रास्ता भूल गया ।

﴿3﴾ आशोबे चश्म ना बीनाई को दफ़अ करता है ।

(मल्फूज़ाते आ'ला हज़रत, हिस्सए अब्वल, स, 78, मलख़बसन )

(इस दुआ को पढ़ते वक़्त इस बात का ख़याल रखें कि मुसीबत

ज़दा तक आवाज़ न पहुंचे क्यूं कि इस से उस की दिल शिकनी हो सकती है ।)

(19) मुर्ग़ की बांग़ सुन कर पढ़ने की दुआ

اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ مِنْ فَضْلِكَ

(صَحِيحُ الْبُخَارِي ج ٢ ص ٤٠٥ حديث ٣٣٠٣ مَأْخُودًا)

तरजमा : या इलाही ! मैं तुझ से तेरे फ़ज़ल का सुवाल करता हूँ ।

मुर्ग़ रहमत का फ़िरिश्ता देख कर बोलता है, उस वक़्त की दुआ पर फ़िरिश्ते के आमीन कहने की उम्मीद है ।

(मिरआतुल मनाजीह, जि. 4 स. 32)

(20) बारिश की ज़ियादती के वक़्त की दुआ

اللَّهُمَّ حَوَالَيْنَا وَلَا عَلَيْنَا اللَّهُمَّ عَلَى الْأَكَامِ  
وَالظَّرَابِ وَبُطُونِ الْأَوْدِيَةِ وَمَنَابِتِ الشَّجَرِ

(صَحِيحُ الْبُخَارِي ج ١ ص ٣٤٨ حديث ١٠١٤)

तरजमा : ऐ अल्लाह ! हमारे इर्द गिर्द बरसा और हम पर न बरसा, ऐ अल्लाह ! टीलों पर और पहाड़ियों पर और वादियों पर और दरख़्त उगने के मक़ामात पर बरसा । (या'नी जहां जानी व माली नुक़सान होने का अन्देशा न हो)

फरमाने मुस्तफा ﷺ जिसने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह तआला उस पर दस रहमते भेजता है ।

(21) आंधी के वक्त की दुआ

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْأَلُكَ خَيْرَهَا وَخَيْرَ مَا فِيْهَا  
وَخَيْرَ مَا اُرْسِلَتْ بِهٖ وَاَعُوْذُ بِكَ مِنْ  
شَرِّهَا وَشَرِّ مَا فِيْهَا وَشَرِّ مَا اُرْسِلَتْ بِهٖ

(صَحِيح مُسْلِم ص ٤٤٦ حديث ٨٩٩)

तरजमा : या इलाही ! मैं तुझ से इस (या'नी आंधी) की  
और जो कुछ इस में है और जिस के साथ ये भेजी गई है, उस की भलाई  
का सुवाल करता हूं और मैं तेरी पनाह मांगता हूं इस (आंधी) के शर से  
और उस चीज़ के शर से जो इस में है और उस के शर से जिस के साथ  
ये भेजी गई है ।

(22) सिताश टूटता देखते वक्त की दुआ

مَا شَاءَ اللّٰهُ لَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ

(عَمَلُ الْيَوْمِ وَاللَّيْلَةِ ص ١٩٨ حديث ٦٥٣)

तरजमा : जो अल्लाह तआला चाहे, कोई कुव्वत नहीं मगर  
अल्लाह तआला की मदद से ।

फरमाने मुस्तफा ﷺ जिसने मुझ पर दस मरतबा दुरूद पाक पढ़ा अल्लाह तआला उस पर सो रहमते भेजता है।

(23) बाज़ार में दाखिल होते वक्त की दुआ  
 لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ لَهُ الْمُلْكُ  
 وَلَهُ الْحَمْدُ يُحْيِي وَيُمِيتُ وَهُوَ حَيٌّ لَا يَمُوتُ  
 بِيَدِهِ الْخَيْرُ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ

(سُنَنِ التِّرْمِذِيِّ ج ٥ ص ٢٧١ حديث ٣٤٣٩)

तरजमा : अल्लाह के सिवा कोई मा'बूद नहीं, वोह अकेला है, उस का कोई शरीक नहीं, उसी के लिये है बादशाही और उसी के लिये हम्द है, वोही ज़िन्दा करता और मारता है वोह ज़िन्दा है उस को हरगिज़ मौत नहीं आएगी, तमाम भलाइयां उसी के दस्ते कुदरत में हैं और वोह हर चीज़ पर कादिर है।

अल्लाह तआला इस (दुआ के पढ़ने वाले) के लिये दस लाख नेकियां लिखता है और उस के दस लाख गुनाह मिटाता है और उस के दस लाख द-रजे बुलन्द करता है और उस के लिये जन्नत में घर बनाता है। (मिरआतुल मनाजीह, जि. 4 स. 39)

(24) बाज़ार में नुक़सान न हो बल्कि फ़ाएदा हो  
 बाज़ार जाएं तो येह दुआ पढ़ें :

بِسْمِ اللَّهِ اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ خَيْرَ هَذِهِ السُّوقِ  
 وَخَيْرَ مَا فِيهَا وَأَعُوذُ بِكَ مِنْ شَرِّهَا وَشَرِّ مَا فِيهَا

फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ तुम जहाँ भी हो मुझ पर दुरद पदो कि तुम्हारा दुरद मुझ तक पहुँचता है।

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُ بِكَ اَنْ اُصِیْبَ فِیْهَا یَمِیْنًا فَاجِرَةً  
اَوْ صَفَقَةً خَاسِرَةً

(المُسْتَدْرَكُ لِلْحَاكِمِ ج ۲ ص ۲۳۲ حدیث (۲۰۲۱))

इस दुआ की ब-र-कत से إِنَّ شَاءَ اللَّهُ تَعَالَى बाज़ार में ख़ूब नफ़ा  
होगा और कोई घाटा नहीं होगा इस दुआ को हुज़ूरे अकरम  
ﷺ ने पढ़ा है। (जन्ती ज़ेवर, स. 580)

### (25) शबे क़द्र की दुआ

उम्मुल मुअमिनीन हज़रते सय्यि-दतुना अइशा सिद्दीका  
रिवायत फ़रमाती हैं : मैं ने अपने सरताज, साहिबे  
मे'राज ﷺ की ख़िदमते बा ब-र-कत में अर्ज़ की :  
“या रसूलल्लाह! ﷺ अगर मुझे शबे क़द्र का इल्म हो  
जाए तो क्या पढ़ूं ?” सरकारे अबद क़रार, शफ़ीए रोज़े शुमार  
ने इर्शाद फ़रमाया : “इस तरह दुआ मांगो :

اَللّٰهُمَّ اِنَّكَ عَفُوٌّ كَرِيْمٌ تُحِبُّ الْعَفْوَ فَاعْفُ عَنِّیْ

तरजमा : ऐ अल्लाह! عَزَّوَجَلَّ बेशक तू मुआफ़ फ़रमाने वाला, दर  
गुज़र फ़रमाने वाला है और मुआफ़ करने को पसन्द फ़रमाता है लिहाज़ा  
मुझे मुआफ़ फ़रमा दे। (سُنَنِ التِّرْمِذِيِّ ج ۵ ص ۳۰۶ حدیث (۳۰۲۴))

फरमाने मुस्तफा ﷺ जिसने मुझ पर दस मर्तबा सुबह और दस मर्तबा शाम दुइदे पाक पढ़ा उसे कियामत के दिन मेरी शफाअत मिलेगी।

## (26) इफ़तार के वक़्त की दुआ

اللَّهُمَّ لَكَ صُمْتُ وَعَلَى رِزْقِكَ أَفْطَرْتُ

(سُنَنِ أَبِي دَاوُدَ ج ٢ ص ٤٤٧ حَدِيث ٢٣٥٨)

तरजमा : ऐ अल्लाह ! मैं ने तेरे लिये रोज़ा रखा और तेरे ही अता कर्दा रिज़क़ से इफ़तार किया।

## (27) आबे ज़म ज़म पीते वक़्त की दुआ

اللَّهُمَّ أَسْأَلُكَ عِلْمًا نَافِعًا وَرِزْقًا وَاسِعًا  
وَشِفَاءً مِّنْ كُلِّ دَاءٍ

(الْمُسْتَدْرَكُ لِلْحَاكِمِ ج ٢ ص ١٣٢ حَدِيث ١٧٨٢)

तरजमा : ऐ अल्लाह ! मैं तुझ से इल्मे नाफ़ेअ का और रिज़क़ की कुशा-दगी का और हर बीमारी से शिफ़ायाबी का सुवाल करता हूँ।

सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : आबे ज़म ज़म जिस काम के लिये पिया जाए (कार आमद है) आप इस को पीते वक़्त शिफ़ा तलब करें तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ शिफ़ा अता फ़रमाएगा, और अगर पनाह मांगें तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे पनाह अता फ़रमाएगा।

(الْمُسْتَدْرَكُ لِلْحَاكِمِ ج ٢ ص ١٣٢ حَدِيث ١٧٨٢)



फरमाने मुस्तफा ﷺ मुझ पर दुरदे पाक की कसूरत करो बेशक येह तुम्हारे लिये तुहारत है।

(28,29) नया लिबास पहनते वक्त की दो दुआएं

الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي كَسَانِي مَا أَوَارِي بِهِ عَوْرَتِي  
وَاتَجَمَّلُ بِهِ فِي حَيَاتِي

(سُنَنِ التِّرْمِذِيِّ ج ٥ ص ٣٢٧ حديث ٣٥٧١)

तरजमा : अल्लाह का शुक्र है जिस ने मुझे वोह कपड़ा पहनाया जिस से मैं अपना सित्र छुपाता हूं और ज़िन्दगी में इस से ज़ीनत हासिल करता हूं।

اللَّهُمَّ لَكَ الْحَمْدُ أَنْتَ كَسَوْتَنِيهِ  
أَسْأَلُكَ خَيْرَهُ وَخَيْرَ مَا صُنِعَ لَهُ وَأَعُوذُ بِكَ  
مِنْ شَرِّهِ وَشَرِّ مَا صُنِعَ لَهُ

(سُنَنِ التِّرْمِذِيِّ ج ٣ ص ٢٩٧ حديث ١٧٧٣)

तरजमा : ऐ अल्लाह ! तेरा शुक्र है तूने मुझे येह कपड़ा पहनाया मैं तुझ से इस की भलाई और जिस गरज के लिये येह बनाया गया है उस की भलाई मांगता हूं और इस की बुराई और जिस गरज के लिये येह बनाया गया है उस की बुराई से तेरी पनाह तलब करता हूं।

(30) तेल लगाते वक्त की दुआ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ जिसने किताब में मुझ पर दुरूद पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फ़िरिश्ते उस के लिये इस्तिफ़ार करते रहेंगे।

तरजमा : अल्लाह ﷻ के नाम से शुरूअ जो बहुत मेहरबान रहमत वाला।

सरकारे मदीना ﷺ का फ़रमाने अलीशान है : जो बिगैर बिस्मिल्लाह पढ़े तेल लगाए तो उस के साथ सत्तर<sup>70</sup> शैतान तेल लगाते हैं। (عَمَلُ الْيَوْمِ وَاللَّيْلَةِ ص ६२ حديث १७६)

### (31) लड़के के अक़ीके की दुआ

اللَّهُمَّ هَذِهِ عَقِيْقَةُ ابْنِي (यहां पर लड़के का नाम लिया जाए) دَمَهَا يَدِمَهُ

وَلَحْمَهَا يَلْحِمُهُ وَعَظْمُهَا يَعْظِمُهُ وَجِلْدُهَا يَجْلِدُهُ  
وَشَعْرُهَا يَشْعُرُهُ اللَّهُمَّ اجْعَلْهَا فِدَاءً لِابْنِي مِنَ النَّارِ

بِسْمِ اللَّهِ اللَّهُ أَكْبَرُ

(दुआ ख़त्म कर के फ़ौरन ज़ब्र कर दे) (फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 20, स. 575)

तरजमा : ऐ अल्लाह ! येह मेरे फुलां बेटे का अक़ीका है, इस का ख़ून इस के ख़ून, इस का गोश्त इस के गोश्त, इस की हड्डी इस की हड्डी, इस का चमड़ा इस के चमड़े और इस के बाल, इस के बाल के बदले में हैं। ऐ अल्लाह ! इस को मेरे बेटे के लिये जहन्नम की आग से फ़िदया बना दे। अल्लाह ﷻ के नाम से, अल्लाह ﷻ सब से बड़ा है।

फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ मुझ पर कसरत से दूर दे पाक पढ़ो बेशक तुम्हारा मुझ पर दूर दे पाक पढ़ना तुम्हारे गुनाहों के लिये मग़िफ़रत है।

### (32) लड़की के अक़ीक़े की दुआ

اَللّٰهُمَّ هَذِهِ عَقِيْقَةُ بِنْتِي (यहां पर लड़की का नाम लिया जाए) دَمُهَا بِدَمِهَا  
وَلَحْمُهَا بِلَحْمِهَا وَعَظْمُهَا بِعَظْمِهَا وَجِلْدُهَا بِجِلْدِهَا وَشَعْرُهَا  
بِشَعْرِهَا اَللّٰهُمَّ اجْعَلْهَا فِدَاءً لِّبِنْتِي مِنَ النَّارِ  
بِسْمِ اللّٰهِ اَللّٰهُ اَكْبَرُ

(दुआ ख़त्म कर के फ़ौरन ज़ब्र कर दे) (फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 20, स. 585)

तरजमा : ऐ अल्लाह ! عَزَّوَجَلَّ येह मेरी फुलां बेटी का अक़ीक़ा है, इस का ख़ून इस के ख़ून, इस का गोशत इस के गोशत, इस की हड्डी इस की हड्डी, इस का चमड़ा इस के चमड़े और इस के बाल, इस के बाल के बदले में हैं। ऐ अल्लाह ! عَزَّوَجَلَّ इस को मेरी बेटी के लिये जहन्नम की आग से फ़िदया बना दे। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नाम से, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ सब से बड़ा है।

### (33) सुवारी पर इत्मीनान से बैठ जाने पर दुआ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ سُبْحَنَ الَّذِي سَخَّرَ لَنَا هَذَا وَمَا كُنَّا لَهُ  
مُقْرِنِينَ وَاِنَّا اِلَى رَبِّنَا لَمُنْقَلِبُونَ

(سُنَنِ أَبِي دَاوُدَ ج ۳ ص ۴۹ حديث ۲۶۰۲)

तरजमा : अल्लाह तआला का शुक्र है, पाकी है उसे जिस ने इस सुवारी को हमारे बस में कर दिया और येह हमारे बूते (ताक़त) की न थी

फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ जो मुझ पर एक मरतबा दूरद शरीफ़ पढ़ता है अल्लाह तआला उस के लिये एक क़ीरात अज़्र लिखता है और क़ीरात उहद पहाड़ जितना है।

और बेशक हमें अपने रब की तरफ़ पलटना है।

(34) जब कोई शगून् दिल में खटके उस वक़्त की दुआ

اللَّهُمَّ لَا يَأْتِي بِالْحَسَنَاتِ إِلَّا أَنْتَ وَلَا يَدْفَعُ  
السَّيِّئَاتِ إِلَّا أَنْتَ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِكَ

(سُنَنِ أَبِي دَاوُدَ ج ٤ ص ٢٥ حديث ٣٩١٩)

तरजमा : ऐ अल्लाह ! عَزَّوَجَلَّ तू ही भलाई अता फ़रमाता है

और तू ही बुराई दूर करता है और गुनाह से बचने की ताक़त और नेकी करने की कुव्वत तेरी ही मदद से है।

बद शगूनी की इस्लाम में कोई हकीकत नहीं है। म-सलन बा'ज़ लोगों को देखा गया है कि अगर उन के सामने से काली बिल्ली रास्ता काट कर गुज़र जाए तो कहते हैं कि हमारे लिये बुरा हुवा, हम जिस मक्सद के लिये जा रहे थे वोह पूरा न होगा लिहाज़ा वापस घर लौट जाते हैं और दोबारा फिर जिस मक्सद के लिये घर से निकले थे उस काम के लिये रवाना होते हैं। याद रहे कि इस्लाम में ऐसे तवहहमात (वहमों) और बद शगूनियों की कोई हकीकत नहीं है, इन से इज्तिनाब ज़रूरी है, अगर दिल में कभी ऐसी बात खटके तो येह दुआ पढ़े कि इस दुआ में मुसलमानों को ता'लीम दी गई है कि मुअस्सिरे हकीकी अल्लाह तआला है। वोह जो चाहता है वोही होता है येही बात अगर बन्दए मोमिन हमेशा अपने पेशे नज़र रखे तो तमाम तवहहमात और बद शगूनियों से छुटकारा हो जाए। اِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ

फरमाने मुस्तफा ﷺ जो शख्स मुझ पर दुरुदे पाक पढ़ना भूल गया वोह जन्नत का रास्ता भूल गया।

(35,36) नज़रे बद लगाने पर पढ़े

وَإِنْ يَكَادُ الَّذِينَ كَفَرُوا لَيُزْلِقُونَكَ بِأَبْصَارِهِمْ

لَمَّا سَمِعُوا الذِّكْرَ وَيَقُولُونَ إِنَّهُ لَمَجْنُونٌ ○

(२९५ القلم: ०१)

तर-ज-मए कन्जुल ईमान : और ज़रूर काफ़िर तो ऐसे मा'लूम होते हैं कि गोया अपनी बद नज़र लगा कर तुम्हें गिरा देंगे, जब कुरआन सुनते हैं और कहते हैं येह ज़रूर अक्ल से दूर हैं।

येह आयत नज़रे बद से बचने के लिये इक्सीर है।

(नूरुल इरफ़ान, स. 971)

हज़रते सय्यिदुना हसन رضي الله تعالى عنه ने फ़रमाया : जिस को नज़र लगे उस पर येह आयत पढ़ कर दम कर दी जाए।

(खज़ाइनुल इरफ़ान, स. 1019)

اللَّهُمَّ اذْهَبْ عَنْهُ حَرَّهَا وَبَرْدَهَا وَوَصَبَهَا

(الْمُسْتَذْرَكُ لِلْحَاكِمِ ج ٥، ص ٣٠٥ حديث: ٧٥٧٥)

तरजमा : ऐ अल्लाह ! इस (नज़रे बद) की गरमी, सर्दी और मुसीबत इस से दूर कर दे।

(37) जल जाने पर पढ़ने की दुआ

اَذْهَبِ الْبَاسَ رَبَّ النَّاسِ اِشْفِ اَنْتَ الشَّافِي لَا شَافِيَ اِلَّا اَنْتَ

(سُنَنِ الْكُبْرَى لِلنَّسَائِيِّ ج ٦ ص ٢٥٤ حديث: ١٠٨٦٤)

फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ जिसने मुझ पर दस मरतबा दुरूद पाक पढ़ा अल्लाह तआला उस पर सौ अहमते भेजता है।

तरजमा : ऐ तमाम लोगों के रब ! तक्लीफ़ दूर फ़रमा, शिफ़ा दे तू ही शिफ़ा देने वाला है तेरे सिवा कोई शिफ़ा देने वाला नहीं।

(38) ज़हरीले जानवरों से महफूज़ रहने की दुआ

नमाज़े फ़ज़्र और नमाज़े मगरिब के बा'द हर रोज़ तीन बार येह दुआ पढ़े अव्वल व आख़िर तीन तीन बार दुरूद शरीफ़ पढ़ ले।

أَعُوذُ بِكَلِمَاتِ اللَّهِ التَّامَّاتِ مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ

तरजमा : मैं अल्लाह के पूरे और कामिल कलिमात के साथ मख़्लूक के शर से पनाह लेता हूँ। (यहां मख़्लूक से मुराद वोह मख़्लूक है जिस से शर हो सके) फिर येह पढ़े :

येह दुआ सफ़र व हज़र में हमेशा ही सुब्ह व शाम पढ़ा कीजिये, ज़हरीली चीज़ों से महफूज़ रहेंगे, बहुत मुजरब है।

(मिरआत, जि. 4 स. 35)

سَلِّمْ عَلَى نُوحٍ فِي الْعَالَيْنِ ○ (پ ۲۳ الصفت: ۷۹)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : नूह पर सलाम हो जहान वालों में। खुदा ने ऎवूजल ने चाहा तो ज़हरीले जानवरों सांप बिच्छू वगैरा से महफूज़ रहेगा। निहायत मुजरब है।

(इस्लामी ज़िन्दगी, स. 128)

(39) किसी क़ैम से ख़तरे के वक़्त की दुआ

اللَّهُمَّ إِنَّا نَجْعَلُكَ فِي نُحُورِهِمْ

फरमाने मुस्तफा ﷺ तुम जहाँ भी हो मुझ पर दुरूद पढ़ो कि तुम्हारा दुरूद मुझ तक पहुँचता है।

## وَنَعُوذُ بِكَ مِنْ شُرُورِهِمْ

(سُنَنِ أَبِي دَاوُدَ ج ٢ ص ١٢٧ حَدِيث ١٥٣٧)

तरजमा : ऐ अल्लाह हम तुझे दुश्मनों के मुकाबिल करते हैं और उन की शरारतों से तेरी पनाह चाहते हैं।

### (40) सख्त ख़तरे के वक़्त की दुआ

## اللَّهُمَّ اسْتُرْ عَوْرَاتِنَا وَامِنْ رَوْعَاتِنَا

(مُسْنَدُ إِمَامِ أَحْمَدُ ج ٤ ص ٨ حَدِيث ١٠٩٩٦)

तरजमा : इलाही ! हमारी पर्दादारी फ़रमा और हमारी घबराहट को बे ख़ौफ़ी व इत्मीनान से बदल दे।

### (41) ज़बान की लुक्कनत की दुआ

## رَبِّ اشْرَحْ لِي صَدْرِي ① وَيَسِّرْ لِي أَمْرِي ② وَاحْلُلْ عُقْدَةً مِّنْ لِّسَانِي ③ يَفْقَهُوا قَوْلِي ④

(پ ١٦ ط ٢٥: ٢٨٦)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : ऐ मेरे रब मेरे लिये मेरा सीना खोल दे और मेरे लिये मेरा काम आसान कर और मेरी ज़बान की गिरह खोल दे कि वोह मेरी बात समझें।

फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ जिसने मुझ पर दस मर्तबा सुब्ह और दस मर्तबा शाम दुर्रदे पाक पढ़ा उसे कियामत के दिन मेरी शफ़ाअत मिलेगी।

(42) कुफ़्र व फ़क़्र से पनाह की दुआ  
 اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنَ الْكُفْرِ وَالْفَقْرِ وَعَذَابِ الْقَبْرِ

(سُنَنُ النَّسَائِي ص ۲۳۱ حديث ۱۳۴۴)

तरजमा : ऐ अल्लाह غَوْجَل मैं कुफ़्र, फ़क़्र और अज़ाबे क़ब्र से तेरी पनाह चाहता हूँ।

(43,44) इयादत करते वक़्त की दो दुआएं

لَا بَأْسَ طَهُورٌ إِنْ شَاءَ اللَّهُ

(صَحِيحُ الْبُخَارِي ج ۲ ص ۵۰۵ حديث ۳۶۱۶)

तरजमा : कोई हरज की बात नहीं إِنْ شَاءَ اللَّهُ غَوْجَل यह मरज़ गुनाहों से पाक करने वाला है।

أَسْأَلُ اللَّهَ الْعَظِيمَ رَبَّ الْعَرْشِ الْعَظِيمِ أَنْ يَشْفِيكَ

(سُنَنُ أَبِي دَاوُد ج ۳ ص ۲۵۱ حديث ۳۱۰۶)

तरजमा : मैं अ-जमत वाले से सुवाल करता हूँ जो अर्शे अज़ीम का मालिक है कि वोह तुझे शिफ़ा दे।

(45) मुसीबत के वक़्त की दुआ

إِنَّا لِلَّهِ وَإِنَّا إِلَيْهِ رَاجِعُونَ ○ اللَّهُمَّ اجْرِنِي فِي مُصِيبَتِي وَأَخْلِفْ لِي خَيْرًا مِنْهَا

(صَحِيحُ مُسْلِم ص ४०७ حديث ९११८)



फरमाने मुस्तफा ﷺ जिसने किताब में मुझे पर दुदुदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फिरिश्ते उस के लिये इस्तिफार करते रहेंगे।

तरजमा : बेशक हम अल्लाह तआला के हैं और बेशक हम उसी की तरफ लौटने वाले हैं, ऐ अल्लाह ! मेरी मुसीबत में मुझे अज़्र दे और मुझे इस से बेहतर अज़ा फ़रमा।

(46) ता'जिय्यत करते वक़्त की दुआ  
 إِنَّ لِلّٰهِ مَا آخَذَ وَلَهُ مَا أَعْطَىٰ وَكُلٌّ عِنْدَهُ بِأَجَلٍ  
 مُّسْتَقَرٍّ فَلْتَصَبِرْ وَلْتَحْتَسِبْ

(صَحِيحُ الْبُخَارِي ج ١ ص ٤٣٤ حديث ١٢٨٤)

तरजमा : बेशक अल्लाह तआला ही का है जो उस ने ले लिया और जो कुछ उस ने दिया है और हर चीज़ की उस की बारगाह में मीआद मुक़रर है पस चाहिये कि तू सब्र करे और सवाब की उम्मीद रखे।

(47) कफ़न पर लिखने की दुआएं

जो येह दुआ मय्यित के कफ़न पर लिखे अल्लाह तआला कियामत तक उस से अज़ाब उठा ले। वोह दुआ येह है :

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْأَلُكَ یَا عَالِمَ السِّرِّ یَا عَظِيْمَ الْخَطْرِ  
 یَا خَالِقَ الْبَشَرِ یَا مُوَقِعَ الظَّفَرِ یَا مَعْرُوْفَ الْاَثَرِ یَا ذَا  
 الطَّوْلِ وَالْمَنِّ یَا کَاشِفَ الصَّرِّ وَالْبَحْنِ یَا اِلَهَ  
 الْاَوَّلِيْنَ وَالْاٰخِرِيْنَ فَرِّجْ عَنِّیْ هُمُوْمِیْ وَاکْشِفْ  
 عَنِّیْ غُمُوْمِیْ وَصَلِّ اللّٰهُمَّ عَلٰی سَيِّدِنَا  
 مُحَمَّدٍ وَسَلِّمْ

फरमाने मुस्तफा ﷺ जो मुझ पर रोजे जुमुआ दुरद शरीफ पढ़ेगा मैं कियामत के दिन उस की शफाअत करूँगा।

जो येह दुआ किसी परचे पर लिख कर सीने पर कफ़न के नीचे रख दे उसे अज़ाबे क़ब्र न हो न मुन्कर नकीर नज़र आएँ और वोह दुआ येह है :

لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَاللَّهُ أَكْبَرُ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا  
شَرِيكَ لَهُ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ لَا  
إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللَّهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيمِ

(फ़तावा र-जविय्या मुखर्रजा, जि.9, स. 108,110)

**म-दनी फूल :** बेहतर येह है कि येह परचा (बल्कि अहद नामा और श-जरा वगैरा) मय्यित के मुंह के सामने क़िब्ला की जानिब (क़ब्र की अन्दरूनी दीवार में) ताक़ खोद कर उस में रखें।

(बहारे शरीअत, जि. 1, हिस्सा : 4, स. 848)

**म-दनी मश्वरा :** कुछ परचे अपने पास रख लीजिये और मुसल्मानों की फ़ौतगी के मवाक़ेअ पर पेश कर के सवाब कमाइये नीज कफ़न फ़रोशों और तज्हीज व तक्फ़ीन करने वाले समाजी इदारों को भी पेश कीजिये कि वोह हर मुसल्मान के लिये कफ़न के साथ एक परचा फ़ी सबीलिल्लाह दे दिया करें।

### (48) दुआ बराए रोशनिये चश्म

**आ-यतुल कुरसी** हर नमाज़ के बा'द एक बार पढ़ी जाए और नमाज़े पन्जगाना की पाबन्दी करे जिन दिनों में औरत को नमाज़ का हुक्म नहीं उन में भी पांचों नमाज़ के वक़्त आ-यतुल कुरसी इस निय्यत से कि अल्लाह غَوْوَحْل की ता'रीफ़ है न इस निय्यत से कि

फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ जिसने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह तआला उस पर दस रहमते भेजता है।

कलामुल्लाह है पढ़ ले और जब इस कलिमे पर पहुँचे لَا يُزِدُهُ حِفْظُهُمَا दोनों हाथों की उंगलियों के पोरे आंखों पर रख कर इस कलिमे को ग्यारह बार कहे फिर दोनों हाथों की उंगलियों पर दम कर के आंखों पर फैर ले।

### (49) फ़र्ज नमाज़ के बा'द की दुआएँ

हर नमाज़ के बा'द पेशानी या'नी सर के अगले हिस्से पर हाथ रख कर पढ़े :

بِسْمِ اللَّهِ الَّذِي لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ الرَّحْمَنُ الرَّحِيمُ  
اللَّهُمَّ أَذْهَبْ عَنِّي الْهَمَّ وَالْحُزْنَ

(مَجْمَعُ الزَّوَائِد ج ١٠ ص ١٤٤ حديث ١٦٩٧)

और हाथ खींच कर माथे तक लाए।

(बहारे शरीअत, जि. अब्बल, हिस्सए सिवुम, स. 539)

तरजमा : अल्लाह غَوْجَل के नाम से जिस के सिवा कोई मा'बूद नहीं, वोह रहमान व रहीम है, ऐ अल्लाह मुझ से ग़म व रन्ज को दूर कर दे।

اللَّهُمَّ أَعِنِّي عَلَى ذِكْرِكَ وَشُكْرِكَ وَحُسْنِ عِبَادَتِكَ

(سُنَنُ أَبِي دَاوُد ج ٢ ص ١٢٣ حديث ١٥٢٢)

तरजमा : ऐ अल्लाह तू अपने जिक्र व शुक्र और हुस्ने

इबादत पर मेरी मदद फरमा।

اللَّهُمَّ أَنْتَ السَّلَامُ وَمِنْكَ السَّلَامُ تَبَارَكْتَ  
يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْإِكْرَامِ

(صَبِيحُ مُسْلِم ص ٢٩٨ حديث ٥٩٢)

फरमाने मुस्तफा ﷺ जो शख्स मुझ पर दुरुदे पाक पढ़ना भूल गया वोह जन्नत का रास्ता भूल गया ।

तरजमा : ऐ अल्लाह غَوْحَل तू सलामती देने वाला है और तेरी ही तरफ से सलामती है तू ब-र-कत वाला है ऐ जलाल व बुजुर्गी वाले ।

### अहद नामा

जो हर नमाज़ (या'नी फर्ज व सुन्नतें वगैरा पढ़ने) के बाद अहद नामा पढ़े, फिरिश्ते उसे लिख कर मोहर लगा कर कियामत के लिये उठा रखे, जब अल्लाह غَوْحَل उस बन्दे को क़ब्र से उठाए, फिरिश्ता वोह नविश्ता (या'नी दस्तावेज़) साथ लाए और निदा की जाए अहद वाले कहां हैं, उन्हें वोह अहद नामा दिया जाए । इमाम हकीम तिरमिज़ी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِ ने इसे रिवायत कर के फरमाया, इमाम तारुस رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِ की वसियत से येह अहद नामा उन के कफ़न में लिखा गया । (الدُّرُ الْمَشْهُور ج ٥ ص ٥٤٢)

अहद नामा येह है :

اَللّٰهُمَّ فَاطِرَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ عَالِمَ الْغَيْبِ  
وَالشَّهَادَةِ الرَّحْمٰنُ الرَّحِيْمُ اِنِّيْ اَعْهَدُ اِلَيْكَ فِيْ  
هٰذِهِ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا بِاَنَّكَ اَنْتَ اللّٰهُ الَّذِيْ لَا اِلٰهَ اِلَّا  
اَنْتَ وَحْدَكَ لَا شَرِيْكَ لَكَ وَاَنْ مُحَمَّدًا عَبْدُكَ  
وَرَسُوْلُكَ فَلَا تُكَلِّبْنِيْ اِلَى نَفْسِيْ فَاَنْتَ اِنْ تُكَلِّبْنِيْ

फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ जिसने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा! अल्लाह तआला उस पर दस रहम भेजता है।

إِلَى نَفْسِي تُقَرِّبُنِي مِنَ الشَّرِّ وَتُبَاعِدُنِي مِنَ الْخَيْرِ  
وَإِنِّي لَا أَتَّقِي إِلَّا بِرَحْمَتِكَ فَأَجْعَلْ رَحْمَتَكَ لِي عَهْدًا  
عِنْدَكَ تَوَدِّدِيهِ إِلَى يَوْمِ الْقِيَمَةِ إِنَّكَ  
لَا تُخْلِفُ الْوَعْدَ

(الْمُتَشَوَّر ج ० ص ५६२)

**म-दनी फूल :** बेहतर येह है कि अहद नामा (बल्कि श-जरा वगैरा) मय्यित के मुंह के सामने क़िल्ला की जानिब (क़ब्र की अन्दरूनी दीवार में) ताक़ खोद कर उस में रखें। (बहारे शरीअत, जि. 1, हिस्सा : 4, स. 848)

### म-दनी मशवरा

रोज़ाना ही सोने से क़ब्र एहतियाती तौबा व तज्दीदे ईमान कर लेना चाहिये । याद रखिये !  
مَعَاذَ اللَّهِ عَزَّوَجَلَّ जिस का कुफ़्र पर ख़ातिमा हुवा वोह हमेशा हमेशा के लिये जहन्नम की आग में जलता और अज़ाब पाता रहेगा ।

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ  
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

## फैज़ाने अवराद

دریغ

### रहमतों की बरसात

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहरो बर صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने रहमत निशान है : “मुझ पर दुरूद शरीफ़ पढ़ो, अल्लाह तअ़ाला तुम पर रहमत भेजेगा।”

(الكامل في ضعفاء الرجال ج ٥ ص ٥٠٥ حديث ١١٤١)

صَلُّوا عَلَى الْخَبِيبِ ا صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

बुजुर्गों से मन्कूल 38 म-दनी वज़ाइफ़

(1) डरावने ख़्वाबों से नजात

“يَا مُتَكَبِّرُ” 21 बार, अक्वल आख़िर एक एक बार

दुरूद शरीफ़ सोते वक़्त पढ़ लेंगे तो إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ डरावने ख़्वाब नहीं आएंगे। (फैज़ाने सुन्नत, बाब आदाबे तअ़ाम, जि. 1, स. 242)

(2) जानवर के काटे का अमल

येह आयते करीमा हर जानवर के काटे के लिये इक्सीर है, ग्यारह बार पढ़ कर काटने की जगह पर दम करे :

أَمْرًا بِرُمُؤْ أَمْرًا فَإِنَّكَ مُبْرَمُونَ (٢٥٠ الزخرف: ٧٩)

फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ जिसने मुझ पर दस मरतबा दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह तआला उस पर सौ रहमतें भेजता है।

### (3) बराउ दफ़उ बवासीर ख़ूनी व बादी

हर किस्म की बवासीर ख़ूनी व बादी के लिये दो रकअत नमाज़ पढ़े पहली रकअत में बा'द अल हम्द शरीफ़ के सूरए अलम नशरह, दूसरी में सूरए फ़ील और सलाम के बा'द सत्तर बार कहे :

اَسْتَغْفِرُ اللهَ رَبِّي مِنْ كُلِّ ذَنْبٍ وَاَتُوبُ اِلَيْهِ  
سُبْحَنَ اللهَ وَبِحَمْدِهِ

चन्द रोज़ इसी तरह करे ان شاء الله تعالى बवासीर दफ़उ हो।

### (4) फ़ालिज व लक्वा

लक्वा व फ़ालिज : सूरए ज़िलज़ाल लोहे (STEEL) के बरतन पर लिख कर धो कर पिलाई जाए।

दीगर तरकीब : सूरए ज़िलज़िलत लोहे (STEEL) के बरतन में लिख कर दें कि मरीज़ उस पर देखे ان شاء الله تعالى सिद्दहत होगी।

### (5) बराउ कुव्वते हाफ़िज़ा

दीनी किताब या इस्लामी सबक पढ़ने से क़बल ज़ैल में दी हुई दुआ (अव्वल आख़िर दुरूदे पाक) पढ़ लीजिये ان شاء الله عزوجل जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा :

फरमाने मुस्तफ़ा ﷺ तुम जहाँ भी हो मुझ पर दुरद पढो कि तुम्हारा दुरद मुझ तक पहुँचता है।

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَاَنْشُرْ عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ  
يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَامِ

तरजमा : ऐ अल्लाह ! غَرْوُحَل ! हम पर इल्मो हिकमत के दरवाजे खोल दे और हम पर अपनी रहमत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ-ज़मत और बुजुर्गी (المُسْتَطْرَف ج ۱ ص ۴۰ دارالفکر بیروت) वाले !

### (6) जेह्न खोलने के लिये

हर रोज़ सबक से पहले इक्तालीस मर्तबा पढ़ कर सबक शुरू करें :

اَلِهِيْ اَنْتَ اِلٰهٌ عَالِمٌ وَّاَنَا عَبْدُكَ جَاهِلٌ اَسْأَلُكَ  
اَنْ تَرْزُقْنِيْ عِلْمًا نَّافِعًا وَفَهْمًا كَامِلًا وَطَمَعًا زَكِيًّا وَ  
قَلْبًا صَفِيًّا حَتّٰى اَعْبُدَكَ وَلَا تُهْدِكُنِيْ بِالْجَهَالَةِ  
بِرَحْمَتِكَ يَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ

### (7) कोद और पीलिया

सूरए बय्यिनह पढ़ कर बरस व यरक़ान (या'नी कोद और पीलिया) वाले पर दम करें और लिख कर गले में डालें। खाने पर दोनों वक्त येह सूरह सहीह ख़्वां (या'नी दुरुस्त पढ़ने वाले) से पढ़वा कर दम कर के खिलाएं खुदा غَرْوُحَل चाहे बहुत ज़ियादा फ़ाएदा हो।



फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ जिसने मुझ पर दस मर्तबा सुब्ह और दस मर्तबा शाम दुरुदे पाक पढ़ा उसे कियामत के दिन मेरी शफ़ाअत मिलेगी।

### (8) वुश्अते रिज़क़

“يَا مُسَبِّبَ الْأَسْبَابِ” पांच सो बार अव्वल व आख़िर दुरुद शरीफ़ 11, 11 बार बा'द नमाज़े इशा क़िब्ला रू बा वुजू नंगे सर ऐसी जगह कि सर और आस्मान के दरमियान कोई चीज़ हाइल न हो, यहां तक की सर पर टोपी भी न हो पढ़ा करें।

### (9) तलाशे मअ़ाश

तलाशे मअ़ाश के लिये सूरए इख़्लास को बिस्मिल्लाह शरीफ़ के साथ एक हज़ार एक बार, अव्वल व आख़िर सो सो मर्तबा दुरुद शरीफ़, उरूजे माह (या'नी चांद की पहली से चौदहवीं तक के ज़माने) में पढ़ना निहायत मुअस्सिर है।

### (10) कभी मोहताज न हो

जो शख्स हर रात में सूरए वाकिअ पढ़ेगा उस को कभी फ़ाका न होगा। (مشكاة المصابيح ج ١ ص ٤٠٩ حديث ٢١٨١)  
 हज़रते ख़्वाजा कलीमुल्लाह साहिब رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ फ़रमाते हैं कि अदाए कर्ज़ और फ़ाका दूर करने के लिये इस को बा'दे मग़रिब पढ़ो। (जनती ज़ेवर, स. 597)

### (11) चोरी से महफूज़ रहे

सूरए तौबा को अपने अस्बाब में रखे (إِنْ شَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ) चोरी से महफूज़ रहेगा।

फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ मुझ पर दुरदे पाक की कसरत करो बेशक येह तुम्हारे लिये त्हा रत है ।

## (12) गुमशुदा शै के मिलने का अमल

चालीस बार सूरए यासीन शरीफ़ सात दिन तक पढ़े ।

## (13) बराउ कज़ाउ हाजात

हदीस शरीफ़ में है हुज़ूर नबिय्ये करीम ﷺ

फ़रमाते हैं कि मुझे एक ऐसी आयत मा'लूम है कि अगर लोग उस पर आमिल हों तो उन की हाजतों को काफ़ी है फिर येह आयते करीमा इर्शाद फ़रमाई । (अदाए कर्ज़ और रोज़ी व रोज़गार के लिये इस की कसरत मुफ़ीद व मुर्जरब है ।)

وَمَنْ يَتَّقِ اللَّهَ يَجْعَلْ لَهُ مَخْرَجًا ۖ وَيَرْزُقْهُ مِنْ  
حَيْثُ لَا يَحْتَسِبُ ۚ وَمَنْ يَتَوَكَّلْ عَلَى اللَّهِ فَهُوَ حَسْبُهُ ۚ  
إِنَّ اللَّهَ بَالِغُ أَمْرِهِ ۖ قَدْ جَعَلَ اللَّهُ لِكُلِّ شَيْءٍ قَدْرًا ۝

(प २८ प्लاق: ३०२)

## (14) हर हाजत व मुराद पूरी होगी

हज़ार बार “يَا شَيْخُ عَبْدِ الْقَادِرِ شَيْئًا لِلَّهِ” पढ़े अव्वल व आख़िर दुरूद शरीफ़ 10, 10 बार पढ़ कर दाहिने हाथ पर दम कर के ज़ेरे कल्ला (रुख़सार) रख कर सो जाए हर हाजत व मुराद पूरी होगी ।

फरमाने मुस्तफा ﷺ जिसने किताब में मुझ पर दुरूदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फिरिस्ते उस के लिये इस्तिगफार करते रहेंगे ।

### (15) बर्फ़ बारी रोक्कने के लिये

लोहे के तवे पर सियाही की तरफ़ (या'नी तवे की उलटी तरफ़) इस दुआ को उंगली से लिख कर आस्मान के नीचे रखे  
 يَا حَافِظُ يَا حَافِظُ : بَرْفِ بَارِي بَنْد हो जाएगी : اِنْ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ

### (16) गाड़ब या भ्रागेहु शरख़ के बुलाने के लिये

«अलिफ़» किसी बुजुर्ग के मज़ार के पास और येह मुम्किन न हो तो मकान के गोशे में बैठ कर आयत :

وَوَجَدَكَ ضَالًّا فَهَدَىٰ ۖ وَوَجَدَكَ عَالًا فَأَغَىٰ ۝١

(नव सो नव्वे बार पढ़े फिर एक बार पूरी सूरए वहुहा पढ़ कर दुआ करे اِنْ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ वोह वापस आ जाएगा ।

«बा» बा'द नमाजे इशा इक्तालीस बार सूरए वहुहा मअ़ बिस्मिल्लाह शरीफ़ के पढ़ कर खड़े हो कर मकान के दो गोशों में अज़ान और दो गोशों में तक्बीर कह कर वापसी के लिये दुआ करे एक हफ़्ते के अन्दर

اِنْ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ वापस आ जाएगा ।

### (17) ज़ह्र क़ अशर न हो

بِسْمِ اللّٰهِ الَّذِي لَا يَضُرُّمَعَ اسْمِهِ شَيْءٌ فِي الْاَرْضِ  
 وَلَا فِي السَّمَاءِ وَهُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ

फरमाने मुस्तफा ﷺ पर कसूरत से दुर्रुद पाक पढ़ा बेशक तुम्हारा मुझ पर दुर्रुद पाक पढ़ना तुम्हारा गुनाही के लिये मग़िफ़रत है।

हमेशा यह दुआ पढ़ कर खाना खाएं और पानी वगैरा पियें तो  
 ۞ جَهْر ۞ का असर दूर हो जाएगा और ज़हर कोई नुक़सान  
 नहीं देगा। (जन्नती ज़ेवर, स. 579)

### (18) बुख़ार से शिफ़ा

जिस को बुख़ार हो सात बार यह दुआ पढ़े :

بِسْمِ اللَّهِ الْكَبِيرِ أَعُوذُ بِاللَّهِ الْعَظِيمِ مِنْ شَرِّ كُلِّ  
 عِرْقٍ نَّعَّارٍ وَمِنْ شَرِّ حَرِّ النَّارِ

(المستدرک للحاکم ج ۵ ص ۵۹۲ حدیث ۸۳۲۴)

अगर मरीज़ खुद न पढ़ सके तो कोई दूसरा नमाज़ी आदमी  
 सात बार पढ़ कर दम कर दे या पानी पर दम कर के पिला दे  
 ۞ جَهْر ۞ बुख़ार उतर जाएगा। एक मर्तबा में बुख़ार न उतरे तो  
 बार बार यह अमल करें। (जन्नती ज़ेवर, स. 580)

### (19) ज़ालिम और शैतान के शर से पनाह केलिये

मुहम्मिदके अलल इत्लाक़ हज़रते सय्यिदुना शैख़ अब्दुल हक़  
 मुहम्मिदसे देहलवी رحمه الله الغنی अपने एक मक्तूब में लिखते हैं :

“जम्ज़ल رحمه الله تعالى عليه” सय्यिदुना इमाम जलालुद्दीन सुयूती عليه  
 जवामेअ” में मुहम्मिदस अबुशशैख़ की किताबुस्सवाब और तारीख़े इब्ने  
 असाकिर से नक़ल करते हैं कि एक रोज़ हज़्जाज बिन यूसुफ़ सक़फ़ी  
 ज़ालिम गवर्नर ने हज़रते सय्यिदुना अनस رضي الله تعالى عنه को मुख़्तलिफ़

फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ जो मुझ पर एक मरतबा दुरूद शरीफ़ पढ़ता है अल्लाह तआला उस के लिये एक क़ोरात अज़्र लिखता है और क़ोरात उहूद पहाड़ जितना है।

अक्साम के 400 घोड़े दिखा कर कहा कि ऐ अनस ! क्या तुम ने अपने साहिब (या'नी रसूलुल्लाह ﷺ) के पास भी इतने घोड़े और येह शानो शौकत देखी है ? हज़रते सय्यिदुना अनस رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने फ़रमाया : खुदा की क़सम ! मैं ने रसूलुल्लाह ﷺ के पास इस से बेहतर चीज़ें देखी हैं और मैं ने हुज़ूरे अकरम ﷺ से सुना है कि घोड़े तीन तरह के हैं, एक वोह घोड़ा जो जिहाद के लिये रखा जाए फिर उस के रखने का सवाब बयान फ़रमाया (येह आम तौर पर हदीस की किताबों में मौजूद है) दूसरा वोह घोड़ा जो अपनी सुवारी के लिये रखा जाता है, तीसरा वोह घोड़ा जो नाम व नुमूद के लिये रखा जाता है इस के रखने से आदमी जहन्नम में जाएगा। ऐ हज़्जाज ! तेरे घोड़े ऐसे ही हैं।

हज़्जाज येह सुन कर आग बगूला हो गया और कहा कि ऐ अनस ! अगर मुझ को इस का लिहाज़ न होता कि तुम ने रसूलुल्लाह ﷺ की खिदमत की है और अमीरुल मुअमिनीन (अब्दुल मलिक बिन मरवान) ने तुम्हारे साथ रिआयत करने की हिदायत की है तो मैं तुम्हारे साथ बहुत बुरा मुआ-मला कर डालता। हज़रते सय्यिदुना अनस رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने फ़रमाया : ऐ हज़्जाज ! खुदा की क़सम ! तू मेरे साथ कोई बद उन्वानी नहीं कर सकता मैं ने रसूलुल्लाह ﷺ से चन्द कलिमात सुने हैं जिन की ब-र-कत से मैं हमेशा अल्लाह तआला की पनाह में रहता हूं और इन कलिमात की

फ़रमाने मुल्ताफ़ा على الله تعالى عليه وآله وسلم जिसने मुझे पर एक बार दुरद पाक पढ़ा अल्लाह तआला उस पर दस रहमते भजता है।

बदौलत किसी ज़ालिम की सख़्ती और किसी शैतान के शर से डरता ही नहीं, हज़ाज इस कलाम की हैबत से **दम बख़ुद** रह गया और सर झुका लिया, थोड़ी देर के बा'द सर उठा कर बोला कि **ऐ अबू हम्ज़ा !**

(येह हज़रते सय्यिदुना अनस की कुन्यत है) येह कलिमात मुझे बता दीजिये। हज़रते सय्यिदुना अनस رضي الله تعالى عنه ने फ़रमाया कि मैं हरगिज़ तुझे न बताऊंगा इस लिये कि तू इस का अहल नहीं है। रावी का बयान है कि जब हज़रते सय्यिदुना अनस رضي الله تعالى عنه का आखिरी वक़्त आ गया तो उन के ख़ादिम हज़रते सय्यिदुना अबान رضي الله تعالى عنه उन के सिरहाने आ कर रोने लगे, हज़रते सय्यिदुना अनस رضي الله تعالى عنه ने फ़रमाया : क्या चाहता है ? हज़रते सय्यिदुना अबान رضي الله تعالى عنه ने अर्ज़ की : वोह कलिमात हमें ता'लीम फ़रमाइये जिन के बताने की हज़ाज ने दर-ख़्वास्त की थी और आप ने इन्कार फ़रमा दिया था। हज़रते सय्यिदुना अनस رضي الله تعالى عنه ने फ़रमाया : लो सीख लो इन को सुब्द व शाम पढ़ना। वोह कलिमात येह हैं :

**दुआए सय्यिदुना अनस رضي الله تعالى عنه**

بِسْمِ اللَّهِ عَلَى نَفْسِي وَدِينِي بِسْمِ اللَّهِ عَلَى أَهْلِي  
وَمَالِي وَوَلَدِي بِسْمِ اللَّهِ عَلَى مَا أَعْطَانِي اللَّهُ اللَّهُ  
رَبِّي لَا أُشْرِكُ بِهِ شَيْئًا اللَّهُ أَكْبَرُ اللَّهُ أَكْبَرُ اللَّهُ  
أَكْبَرُ وَأَعَزُّ وَأَجَلُّ وَأَعْظَمُ وَمَا أَخَافُ وَأَحْذَرُ عَزَّ

फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ जब तुम मुसलीन علیهم السلام पर दुरदे पाक पढ़ो तो मुझ पर भी पढ़ो बेशक मैं तमाम ज़हानों के रब का रसूल हूँ।

جَارِكَ وَجَلَّ ثَنَاءُكَ وَلَا إِلَهَ غَيْرُكَ اللَّهُمَّ إِنِّي  
أَعُوذُ بِكَ مِنْ شَرِّ نَفْسِي وَمِنْ شَرِّ كُلِّ شَيْطَانٍ  
مَّرِيدٍ وَمِنْ شَرِّ كُلِّ جَبَّارٍ عَنِيدٍ فَإِنْ تَوَلَّوْا فَقُلْ  
حَسْبِيَ اللَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَهُوَ رَبُّ  
الْعَرْشِ الْعَظِيمِ إِنَّ وَلِيَّ اللَّهِ الَّذِي نَزَلَ الْكِتَابُ  
وَهُوَ يَتَوَلَّى الصَّالِحِينَ

इस दुआ को तीन मर्तबा सुबह को और तीन मर्तबा शाम को पढ़ना बुजुर्गों का मा'मूल है। (जन्नती ज़ेवर, स. 583, अख़बारुल अख़्यार, स. 292)

सुबह व शाम की ता'रीफ़ : आधी रात के बा'द से ले कर सूरज की पहली किरन चमकने तक सुबह (इस सारे वक़्ते में जो कुछ पढ़ा जाए उसे सुबह में पढ़ना कहेंगे) और इब्तिदाए वक़्ते ज़ोहर से गुरुबे आफ़ताब तक शाम कहलाती है। (इस सारे वक़्ते में जो कुछ पढ़ा जाए उसे शाम में पढ़ना कहेंगे)

## (20) कुव्वते हाफ़िज़ा के लिये

पांचों नमाज़ों के बा'द सर पर दाहिना हाथ रख कर ग्यारह मर्तबा يَا قَوِّی पढ़ें। (जन्नती ज़ेवर, स. 605)

फ़रमान मुस्तफ़ा ﷺ जो मुझ पर राज़ जुम्मा दुर्रद शराफ़ पढ़ेगा मैं क़ियामत के दिन उस को शफ़ाअत करूँगा।

## (21) बीनाई की हिफ़ाज़त के लिये

पांचों नमाज़ों के बा'द ग़्यारह मर्तबा **يَا نُورُ** पढ़ कर दोनों हाथों के पोरों पर दम कर के आंखों पर फैर लीजिये।

(जन्ती ज़ेवर, स. 606)

## (22) ज़बान में लुक्नत

फ़ज़्र की नमाज़ पढ़ कर एक पाक कंकरी मुंह में रख कर येह आयत इक्कीस मर्तबा पढ़िये : (ऐज़न)

رَبِّ اشْرَحْ لِي صَدْرِي ① وَيَسِّرْ لِي أَمْرِي ②  
وَاحْلُلْ عُقْدَةً مِنْ لِسَانِي ③ يَفْقَهُوا قَوْلِي ④

## (23) पेट के दर्द के लिये

येह आयत पानी वग़ैरा पर तीन बार पढ़ कर पिला दीजिये या लिख कर पेट पर बांध दीजिये : (जन्ती ज़ेवर, स. 606)

لَا فِيهَا غَوْلٌ وَلَا هُمْ عَنْهَا يُنْزَفُونَ ⑤ (پ ۲۳ الصّفت: ۴۷)

## (24) तिल्ली बढ जाना

इस आयत को लिख कर तिल्ली की जगह बांधें : (ऐज़न)

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

ذَلِكَ تَخْفِيفٌ مِّن رَّبِّكُمْ وَرَحْمَةٌ ط

(پ ۲ البقرة: ۱۷۸)



फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ जिसने मुझ पर रोज़े जुमुआ दो सौ बार दुरूदे पाक पढ़ा उस के दो सौ साल के गुनाह मुआफ़ होंगे।

## (25) नाफ़ उतर जाना

(अलिफ़) इस आयत को लिख कर नाफ़ की जगह बांधिये :

(जनती ज़ेवर, स. 606)

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

إِنَّ اللَّهَ يُنَسِّكُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ أَنْ تَزُولَا وَلَئِنْ زَالَتَا  
إِنْ أَمْسَكَهُمَا مِنْ أَحَدٍ مِنْ بَعْدِهِ ۚ إِنَّهُ كَانَ حَلِيمًا غَفُورًا ۝

(प २२ फातर: ६१)

(बा) ता हुसूले शिफ़ा रोज़ाना एक बार नाफ़ पर हाथ रख कर अव्वल आखिर एक मर्तबा दुरूद शरीफ़ के साथ ज़ैल की आयात सात बार पढ़ कर दम कीजिये। (येह अमल सगे मदीना का मुजर्रब है)

هُوَ الَّذِي أَنْزَلَ عَلَيْكَ الْكِتَابَ مِنْهُ آيَاتٌ مُحْكَمَاتٌ هُنَّ أُمُّ  
الْكِتَابِ وَأُخَرُ مُتَشَابِهَاتٌ ۚ فَأَمَّا الَّذِينَ فِي قُلُوبِهِمْ زَيْغٌ فَيَتَّبِعُونَ  
مَا تَشَابَهَ مِنْهُ ابْتِغَاءَ الْفِتْنَةِ وَابْتِغَاءَ تَأْوِيلِهِ ۚ وَمَا يَعْلَمُ تَأْوِيلَهُ  
إِلَّا اللَّهُ ۚ وَالرَّسَخُونَ فِي الْعِلْمِ يَقُولُونَ آمَنَّا بِهِ كُلٌّ مِنْ عِنْدِ  
رَبِّنَا وَمَا يَذَّكَّرُ إِلَّا أُولُو الْأَلْبَابِ ۝ رَبَّنَا لَا تَزِرْ وَظِرَّتَنَا بَعْدَ  
إِذْ هَدَيْتَنَا وَهَبْ لَنَا مِنْ لَدُنْكَ رَحْمَةً ۚ إِنَّكَ أَنْتَ الْوَهَّابُ ۝

(प ३ العمرान: ८०७)

फरमाने मुस्तफा ﷺ जो शख्स मुझ पर दुरुदे पाक पढ़ना भूल गया वोह जन्नत का रास्ता भूल गया ।

## (26) बुख़ार

(अलिफ़) अगर बिगैर जाड़े के हो तो येह आयत लिख कर गले में बांधिये और इसी को पढ़ कर दम कीजिये ।

(जन्नती ज़ेवर, स. 606)

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

قُلْنَا يَا رُكُونِي بَرْدًا وَسَلْبًا عَلَىٰ إِبْرَاهِيمَ ۝ (١٩)

(پ ١٧ الانبياء: ٦٩)

(बा) अगर बुख़ार जाड़े के साथ हो तो येह आयत लिख कर गले में बांधे ।

(जन्नती ज़ेवर, स. 606)

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

بِسْمِ اللَّهِ مَجْرَبَهَا وَمُرْسَهَآ إِنَّ رَبِّي لَغَفُورٌ رَّحِيمٌ ۝ (٣)

(پ ١٢ هود: ٤١)

## (27) फोड़ा फुन्सी

पाक साफ़ ढेला पीस कर उस पर येह दुआ तीन मर्तबा पढ़ कर थूके और उस मिट्टी पर थोड़ा पानी छिड़क कर वोह मिट्टी तकलीफ़ की जगह पर दिन में दो चार बार मल लिया करे चाहे फोड़े पर येह मिट्टी लगा कर पट्टी बांध दे ।

(जन्नती ज़ेवर, स. 607)

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

إِنَّهُمْ يَكِيدُونَ كَيْدًا ۝ (١٥) وَأَكِيدُ كَيْدًا ۝ (١٦)

فَهَلْ الْكَافِرِينَ أَهْمُ لَهُمْ رُؤْيَا ۝ (١٤)

(پ ٣٠ الطارق: ١٥-١٧)

फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ जिसने मुझ पर एक बार दुर्रदे पाक पड़ा अल्लाह तआला उस पर दस रहमते भेजता है।

## (28) पागल कुत्ते का काट लेना

ऊपर ज़िक्र की हुई आयत को रोटी या बिस्कुट के चालीस टुकड़ों पर लिख कर एक टुकड़ा रोज़ उस शख्स को खिला दें,   
 اِنْ شَاءَ اللّٰهُ تَعَالٰی उस शख्स को बावला पन और हड़क न होगी।

(जनती ज़ेवर, स. 607)

## (29) बांझ पन

चालीस लोंगें ले कर हर एक पर सात सात बार इस आयत को पढ़ें और जिस दिन औरत हैज़ से पाक हो कर गुस्ल करे उस दिन से एक लोंग रोज़ मर्रा सोते वक़्त खाना शुरू करें और उस पर पानी न पीवे और इस दरमियान में ज़रूर शोहर के साथ तख़ल्लिया करे। आयत ये है।

(जनती ज़ेवर, स. 607)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ۝

اَوْ كُطِبَتْ فِيْ بَحْرِ لُجْجٍ يَّعْشُهُ مَوْجٌ مِّنْ فَوْقِهِ مَوْجٌ  
 مِّنْ فَوْقِهِ سَحَابٌ ۚ طُلبْتُ بَعْضَهَا فَوْقَ بَعْضٍ ۖ  
 اِذَا اَخْرَجَ يَدَا لَمْ يَكْدِرْ لَهَا ۚ وَمَنْ لَّمْ يَجْعَلِ اللّٰهُ  
 لَهُ نُوْرًا فَمَا لَهُ مِنْ نُّوْرِ ۝

(پ- ۱۸ النور ۵۴)

اِنْ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ औलाद मिलेगी।

फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ जिसने मुझ पर दस मरतबा दुरूद पाक पढ़ा अल्लाह तआला उस पर सी रहमते भेजता है।

### (30) अगर पेट में बच्चा टेढ़ा हो गया तो ...

सूरए इन्शिकाक की इब्तिदाई पांच आयात तीन बार पढ़े।

(अव्वल व आखिर तीन मरतबा दुरूद शरीफ़ पढ़े) आयतों के शुरूअ में हर बार بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ पढ़ ले। पढ़ कर पानी पर दम कर के पी ले। रोजाना येह अमल करती रहे। वक़तन फ वक़तन इन आयात का विर्द करती रहे। दूसरा कोई भी दम कर के दे सकता है।  
 ۞ بच्चा सीधा हो जाएगा दर्दे ज़ेह के लिये भी येह अमल मुफ़ीद है।

### (31) हैज़ा

हर खाने पीने की चीज़ पर सूरए क़द्र पढ़ कर दम कर लिया करें ۞ हिफ़ाज़त रहेगी और जिस को मरज़ हो जाए उस को भी किसी चीज़ पर दम कर के खिलाएं पिलाएं ۞ शिफ़ा हासिल होगी।

(जन्नती ज़ेवर, स. 609)

### (32) कै, दर्द, दर्दे शिक्क के लिये

इस आयते करीमा को लिख कर पिलाएं :

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ۞

أَوَلَمْ يَرِ الْإِنْسَانُ أَنَّا خَلَقْنَاهُ مِنْ نُطْفَةٍ فَإِذَا هُوَ خَصِيمٌ مُبِينٌ ۞

(२३: ११)

फरमाने मुस्तफा ﷺ तुम जहाँ भी हो मुझ पर दुरूद पढ़ो कि तुम्हारा दुरूद मुझ तक पहुँचता है।

### (33) दर्दे आ'जा के लिये

नमाज़ के बा'द सात बार येह आयते करीमा :

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

لَا أُنْزِلُنَا هَذَا الْقُرْآنَ عَلَى جَبَلٍ لَّا رَأْيَتَهُ خَاشِعًا مُتَصَدِّعًا مِّنْ خَشْيَةِ  
اللَّهِ ۖ وَتِلْكَ الْأَمْثَالُ نَضْرِبُهَا لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَتَفَكَّرُونَ ۝

(پ ۲۸ الحشر: ۲۱)

पढ़ कर दोनों हाथों पर दम कर के दर्द की जगह पर मले दर्द  
जाता रहेगा । اِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ

### (34) एहतिलाम से हिफाज़त

एहतिलाम से बचने के लिये सूराए नूह सोते वक़्त एक बार पढ़  
कर अपने ऊपर दम करें ।

### (35) आंखें कभी न दुखें

مَرْحَبًا بِحَبِيبِي وَقُرَّةَ عَيْنِي مُحَمَّدٍ بِنِ عَبْدِ اللَّهِ

हज़रते सय्यिदुना इमामे हसन रضى الله تعالى عنه से रिवायत है,  
जो शख्स मुअज़्ज़िन को " أَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا رَسُولُ اللَّهِ " कहता  
सुन कर येह कहे और अपने अंगूठे चूम कर आंखों से लगाए तो न  
कभी वोह अन्धा होगा न ही कभी उस की आंखें दुखेंगी ।

(الْمَقَاصِدُ الْحَسَنَةُ ص ۳۹۱)

फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ जिसने मुझ पर दस मर्तबा सुब्ह और दस मर्तबा शाम दूरदे पाक पढ़ा उसे कियामत के दिन मेरी शफ़ाअत मिलेगी।

(35) घर में म-दनी माहोल बनाने का नुस्खा  
رَبَّنَاهِبْ لَنَا مِنْ أَرْوَاحِنَا وَذُرِّيَّتِنَا قُرَّةَ

أَعْيُنٍ وَاجْعَلْنَا لِلْمُتَّقِينَ إِمَامًا ④ (پ ۱۹ الفرقان: ۷۴)

तर-ज-मए कन्जुल ईमान : ऐ हमारे रब हमें दे हमारी बीबियों और हमारी औलाद से आंखों की ठन्डक और हमें परहेज गारों का पेशवा बना।

हर नमाज़ के बा'द येह दुआ अक्वल व आखिर दुरूद शरीफ़ के साथ एक बार पढ़ लें। اِنْ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ बाल बच्चे सुन्नतों के पाबन्द बनेंगे और घर में म-दनी माहोल काइम होगा।

(मसाइलुल कुरआन , स. 290)

(37) शूगर का इलाज

رَبِّ اَدْخِلْنِيْ مُدْخَلَ صِدْقٍ وَّاَخْرِجْنِيْ مُخْرَجَ صِدْقٍ  
وَاجْعَلْ لِّيْ مِنْ لَّدُنْكَ سُلْطٰنًا صٰدِقًا ⑧

(پ ۱۵ بنی اسرائیل: ۸۰)

तर-ज-मए कन्जुल ईमान : ऐ मेरे रब मुझे सच्ची तरह दाख़िल कर और सच्ची तरह बाहर ले जा और मुझे अपनी तरह से मददगार ग़-लबा दे।

येह कुरआनी दुआ रोज़ाना सुब्ह व शाम तीन तीन बार

फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ मुझ पर दुरदे पाक की कसूरत करो बेशक येह तुम्हारे लिये त्हा रत है ।

(अव्वल व आख़िर तीन तीन बार दुरूद शरीफ़) पढ़ कर पानी पर दम कर के पियें ।

(मुद्दे इलाज : ता हुसूले शिफ़ा)

(38) كَرِّجَا اُتَا رَنَ كَر وَجِي فَا  
اَللّٰهُمَّ اَكْفِنِيْ بِحَلَالِكَ عَنْ حَرَامِكَ وَاَغْنِنِيْ  
بِفَضْلِكَ عَمَّنْ سِوَاكَ

तरजमा : “या अल्लाह عزّوجلّ मुझे हलाल रिज़क अता फ़रमा कर ह़राम से बचा और अपने फ़ज़लो करम से अपने सिवा ग़ैरों से बे नियाज़ कर दे ।” ता हुसूले मुराद हर नमाज़ के बा’द 11, 11 बार और सुब्ह व शाम सो सो बार रोज़ाना (अव्वल व आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़) पढ़िये ।

मरवी हुवा कि एक मुकातब (मुकातब उस गुलाम को कहते हैं जिस ने अपने आका से माल की अदाएगी के बदले आज़ादी का मुआ-हदा किया हुवा हो । (مُخْتَصَرُ الْقُنُوْرى ص १७१) ने हज़रते मुश्किल कुशा, अलिय्युल मुर्तज़ा शेरे खुदा كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ التَّكْوِيْمِ की बारगाह में अर्ज़ की : मैं अपनी किताबत (या’नी आज़ादी की कीमत) अदा करने से आजिज़ हूं मेरी मदद फ़रमाइये । आप كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ التَّكْوِيْمِ ने फ़रमाया : मैं तुम्हें चन्द कलिमात न सिखाऊं जो रसूलुल्लाह ﷺ ने मुझे सिखाए हैं, अगर तुम पर ज-बले सैर (सैर एक पहाड़ का नाम है । ٦١ (النهاية ج ٣ ص ٦١) जितना दैन (या’नी कर्ज़) होगा तो अल्लाह तआला तुम्हारी तरफ़ से अदा कर देगा तुम यूं कहा करो :

“اَللّٰهُمَّ اَكْفِنِيْ بِحَلَالِكَ عَنْ حَرَامِكَ وَاَغْنِنِيْ بِفَضْلِكَ عَمَّنْ سِوَاكَ”

(سُنَنُ التِّرْمِذِي ج ٥ ص ٣٢٩ حديث ٣٥٧٤)

फरमाने मुस्तफा ﷺ जिसने किताब में मुझ पर दुरुद पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फिरश्त उस के लिये इस्तिफ़ार करते रहेंगे ।

## 99 अस्माउ हुस्ना और इन के फ़ज़ाइल

हर विर्द के अक्वल व आखिर एक बार दुरुद शरीफ़ पढ़ लीजिये, फ़ाएदा ज़ाहिर न होने की सूरत में शिक्वा करने के बजाए अपनी कोताहियों की शामत तसव्वुर कीजिये और अल्लाह  $\text{عَزَّوَجَلَّ}$  की मस्लहत पर नज़र रखिये ।

﴿1﴾  $\text{يَا اَللّٰهُ}$  जो हर नमाज़ के बा'द 100 बार पढ़े  $\text{اِنْ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ}$  उस का बातिन कुशादा हो जाएगा ।

﴿2﴾  $\text{هُوَ اللّٰهُ الرَّحِيْمُ}$  जो हर नमाज़ के बा'द 7 बार पढ़ लिया करेगा  $\text{اِنْ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ}$  शैतान के शर से बचा रहेगा और उस का ईमान पर खातिमा होगा ।

﴿3﴾  $\text{يَا قُدُّوْسُ}$  का जो कोई दौराने सफ़र विर्द करता रहे  $\text{اِنْ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ}$  थकन से महफूज़ रहेगा ।

﴿4﴾  $\text{يَا رَحْمٰنُ}$  जो कोई सुब्ह की नमाज़ के बा'द 298 बार पढ़ेगा  $\text{اِنْ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ}$  उस पर बहुत रहम करेगा ।

﴿5﴾  $\text{يَا رَحِيْمُ}$  जो कोई हर रोज़ 500 बार पढ़ेगा  $\text{اِنْ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ}$  दौलत पाएगा और मख़्लूक उस पर मेहरबान और शफ़ीक़ होगी ।

﴿6﴾  $\text{يَا مَلِكُ}$  90 बार जो ग़रीब व नादार रोज़ाना पढ़ा करे  $\text{اِنْ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ}$  ग़ुरबत से नजात पाएगा ।



फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ मुझ पर कसूरत से दुरदे पाक पढ़ो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरदे पाक पढ़ना तुम्हारे गुनाहों के लिये मग़िफ़त है।

﴿7﴾ **يَا سَلَامُ** 111 बार पढ़ कर बीमार पर दम करने से **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ**

शिफ़ा हासिल होगी।

﴿8﴾ **يَا مُؤْمِنُ** जो 115 बार पढ़ कर अपने ऊपर दम करेगा,

**إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** तन्दुरुस्ती पाएगा।

﴿9﴾ **يَا مُهَيِّمُنُ** 29 बार रोज़ाना पढ़ने वाला **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** हर आफ़त

व बला से महफूज़ रहेगा।

﴿10﴾ **يَا عَزِيزُ** 41 बार हाकिम या अफ़सर वग़ैरा के पास जाने से

क़ब्ल पढ़ लीजिये, **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** वोह हाकिम या अफ़सर मेहरबान हो जाएगा।

﴿11﴾ **يَا جَبَّارُ** जो इस का मुसल्लसल विर्द रखेगा अपनी ग़ीबत से

**إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** बचा रहेगा।

﴿12﴾ **يَا مُتَكَبِّرُ** 21 बार रोज़ाना पढ़ लीजिये, डरावने ख़्वाब आते

होंगे तो **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** ख़्वाब में नहीं डरेंगे। (मुद्दे इलाज : ता हुसूले शिफ़ा)

**يَا مُتَكَبِّرُ** ज़ौजा से “मिलाप” से क़ब्ल 10 बार पढ़ लेने वाला

**إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** नेक बेटे का बाप बनेगा।

﴿13﴾ **يَا خَالِقُ** जो 300 बार पढ़े **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** उस का दुश्मन मालूब

होगा।

फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ जो मुझ पर एक मरतबा दुरुद शरीफ़ पढ़ता है अल्लाह तआला उस के लिये एक क़ोरात अज़्र लिखता है और क़ोरात उद्द पहाड़ जितना है।

﴿14﴾ يَا بَارِئُ 10 बार जो कोई हर जुमुआ को पढ़ लिया करे

उस को बेटा अता होगा।

﴿15﴾ يَا مُصَوِّرُ जो बांझ औरत सात रोज़े रखे और इफ़्तार के वक़्त

21 बार الْمُصَوِّرُ पढ़ कर पानी पर दम कर के पी लिया करे,

अल्लाह तआला उस को नेक बेटा अता करेगा

﴿16﴾ يَا غَفَّارُ जो इसे हमेशा पढ़ा करेगा

नफ़्स की बुरी ख़्वाहिशात से छुटकारा पाएगा।

﴿17﴾ يَا فَهَّارُ 100 बार अगर कोई मुसीबत आ पड़े तो पढ़िये,

मुश्किल आसान होगी।

﴿18﴾ يَا وَهَّابُ 7 बार जो रोज़ाना पढ़ा करेगा

मुस्तजाबुद्दा'वात होगा। (या'नी हर दुआ क़बूल हुवा करेगी)

﴿19﴾ يَا رَزَّاقُ जो फ़ज़्र के फ़र्ज़ व सुन्नत के दरमियान 41 दिन

तक 550 बार पढ़ेगा

﴿20﴾ يَا فَتَّاحُ 70 बार जो रोज़ाना बा'द नमाज़े फ़ज़्र दोनों हाथ सीने पर

फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ जो शख्स मुझ पर दुरुदे पाक पढ़ना भूल गया वोह जन्नत का रास्ता भूल गया ।

रख कर पढ़ा करेगा **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** उस के दिल का जंग व मेल दूर होगा ।

**يَا فَتَّاحُ** 7 बार जो रोज़ाना (किसी भी वक़्त दिन में एक मर्तबा)

पढ़ा करेगा, **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** उस का दिल रोशन होगा ।

﴿21﴾ **يَا عَلِيمُ** जो कोई इस इस्म को बहुत पढ़ेगा **अल्लाह** तआला

उस को दीन व दुन्या की मा'रिफ़त अता फ़रमाएगा **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** ।

﴿22﴾ **يَا قَابِضُ** 30 बार जो हर रोज़ पढ़ा करे **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** वोह

दुश्मन पर फ़तह पाएगा ।

﴿23﴾ **يَا بَاسِطُ** जो 40 बार पढ़े **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** खल्क से बे परवाह

होगा ।

﴿24﴾ **يَا خَافِضُ** जो कोई इसे 500 बार पढ़ ले **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** दुश्मन

से अमान में रहेगा ।

﴿25﴾ **يَا رَافِعُ** 20 बार जो रोज़ाना पढ़ा करेगा, **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** उस की

मुराद पूरी होगी ।

﴿26﴾ **يَا مُعِزُّ** जो कोई इसे बा'द नमाज़े इशा शबे जुमुआ

140 बार पढ़े मख़लूक की नज़र में उस की इज़्ज़त व हुरमत और

हैबत बढ़ेगी । **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ**

फ़रमाने मुस्तफ़ा عليه السلام जिसने मुझ पर दस मरतबा दुरूद पाक पढ़ा अल्लाह तआला उस पर सौ रहमत भेजता है।

﴿27﴾ **يَا حَكَمُ** जो पांचों वक़्त हर नमाज़ के बा'द 80 बार पढ़

लिया करे किसी का मोहताज न होगा। إِنَّ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ

﴿28﴾ **يَا بَصِيرُ** 7 बार जो कोई रोज़ाना ब वक़्ते अस्स (या'नी

इब्तिदाए वक़्ते अस्स ता गुरुबे आफ़ताब किसी भी वक़्त) पढ़ लिया करेगा إِنَّ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ अचानक मौत से महफूज़ रहेगा।

﴿29﴾ **يَا سَمِيعُ** 100 बार जो रोज़ाना पढ़े और इस दौरान

गुफ़्त-गू न करे और पढ़ कर दुआ मांगे إِنَّ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ जो मांगेगा पाएगा।

﴿30﴾ **يَا مُدِلُّ** जो कोई 75 बार पढ़ कर सज्दा करे और कहे या

इलाही عَزَّوَجَلَّ फुलां ज़ालिम के शर से मुझे महफूज़ रख, अल्लाह

तआला उसे अमान देगा और अपनी हिफ़ाज़त में रखेगा। إِنَّ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ

﴿31﴾ **يَا عَدْلُ** जो कोई मग़रिब की नमाज़ के बा'द 1000 बार

पढ़ेगा إِنَّ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ आस्मानी बलाओं से नजात पाएगा।

﴿32﴾ **يَا لَطِيفُ** बेटियों के नसीब खुलने और अमराज़ से सिहहत

और मुश्किलात से नजात के लिये हर रोज़ तहिय्यतुल वुजू के बा'द 100 बार पढ़ लिया करे।

﴿33﴾ **يَا خَيْرُ** जो कोई नफ़से अम्मारा के हाथ गरिफ़्तार हो तो हर

रोज़ वज़ीफ़ा कर लिया करे إِنَّ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ नजात पाएगा।

फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ तुम जहाँ भी हो मुझ पर दूरद पढ़ो कि तुम्हारा दूरद मुझ तक पहुँचता है।

﴿34﴾ **يَا حَلِيمٌ** जो कोई इस को कागज़ पर लिख कर फिर इस को धो दे और अपनी खेती पर छिड़क दे, **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** ज़राअत हर आफ़त से हिफ़ाज़त में रहेगी।

﴿35﴾ **يَا عَظِيمٌ** जो 7 दफ़आ पानी पर पढ़ कर दम कर के पानी पी ले **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** उस के पेट में दर्द न हो।

﴿36﴾ **يَا غَفُورٌ** जिस को दर्दे सर या कोई बीमारी या ग़म पेश आ जाए 3 बार **يَا غَفُورٌ** की मुक़त्तआत लिख कर (या'नी इस इस्मे पाक को कागज़ पर लिख कर इस की गीली सियाही पर रोटी का टुकड़ा लगा कर वोह नक्श रोटी में ज़ब्ब कर ले और) खा ले, **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** शिफ़ा पाएगा।

﴿37﴾ **يَا شَكُورٌ** जो कोई 5000 बार रोज़ पढ़ा करेगा **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** क़ियामत के दिन बुलन्द मर्तबा होगा।

﴿38﴾ **يَا عَلِيٌّ** जो वरम (या'नी सूजन) पर 3 बार पढ़ कर दम करे **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** सिह्हत पाएगा।

﴿39﴾ **يَا كَبِيرٌ** जो 9 दफ़आ किसी बीमार पर पढ़ कर दम करे **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** सिह्हत याब हो जाएगा।

﴿40﴾ **يَا حَفِیْظٌ** जो 16 बार हर रोज़ पढ़े **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** हर तरह बहादुर रहे।

फरमाने मुस्तफा ﷺ जिसने मुझ पर दस मतबा सुब्ह और दस मतबा शाम दुदुद पाक पढ़ा उसे कियामत के दिन मेरी शफाअत मिलेगी ।

﴿41﴾ **يَا مُقِيتُ** जिस की आंख सुख हो और दर्द करे 10 बार पढ़ कर दम कर ले ।

﴿42﴾ **يَا حَسِيبُ** जो हर रोज़ 70 बार पढ़ेगा **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** हर आफ़त से महफूज़ रहेगा ।

﴿43﴾ **يَا جَلِيلُ** 10 बार पढ़ कर जो अपने माल व अस्बाब और रक़म वगैरा पर दम कर दे, **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** चोरी से महफूज़ रहेगा ।

﴿44﴾ **يَا كَرِيمُ** अगर अपने बिस्तर में इस को पढ़ते पढ़ते सो जाए तो फ़िरिश्ते उस के लिये दुआ करेंगे । **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ**

﴿45﴾ **يَا رَقِيبُ** जो कोई फोड़े फुन्सी पर 3 बार पढ़ कर फूंक देगा, **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** शिफा हासिल होगी ।

﴿46﴾ **يَا مُجِيبُ** जो कोई 3 बार पढ़ कर दम करेगा **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** दर्दे सर दूर होगा ।

﴿47﴾ **يَا وَاسِعُ** जिस को बिच्छू काट ले वोह 70 बार पढ़ कर दम करे **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** ज़हर असर न करेगा ।

﴿48﴾ **يَا حَكِيمُ** 80 बार जो रोज़ाना पांचों नमाज़ों के बा'द पढ़ लिया करे, **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** किसी का मोहताज न हो ।

﴿49﴾ **يَا وَدُودُ** इस इस्म को 1000 बार खाने पर पढ़ कर

फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ जिसने किताब में मुझ पर दुरूद पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फिरिस्ते उस के लिये इस्तिफ़ार करते रहेंगे ।

जिस जानिब से ना मुवा-फ़क़त हो उसे खिला दें, **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ**  
दुश्मनी ख़त्म हो जाएगी ।

﴿50﴾ **يَا مَجِيدُ** जो गर्मियों में इसे पढ़ेगा **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** प्यास से  
मामून रहेगा ।

﴿51﴾ **يَا بَاعِثُ** जो कोई 7 बार पढ़ कर अपने ऊपर फूँके और  
हाकिम के रू बरू जाए **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** हाकिम मेहरबान हो ।

﴿52﴾ **يَا شَهِيدُ** 21 बार सुब्ह (तुलूए आफ़ताब से पहले पहले) ना  
फ़रमान बच्चे या बच्ची की पेशानी पर हाथ रख कर आस्मान की तरफ़  
मुंह कर के जो पढ़े **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** उस का वोह बच्चा या बच्ची नेक बने ।

﴿53﴾ **يَا حَقُّ** अगर कैदी आधी रात को नंगे सर 108 बार पढ़ेगा,  
**إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** कैद से रिहाई पाएगा ।

﴿54﴾ **يَا وَكِيلُ** 7 बार जो रोज़ाना अ़स्स के वक़्त पढ़ लिया करे  
**إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** आफ़त से पनाह पाए ।

﴿55﴾ **يَا قَوِيُّ** अगर जुमुआ की दूसरी साअ़त में बहुत पढ़ेगा  
**إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** निस्स्यान (या'नी भूलने का मरज़) जाता रहेगा ।

﴿56﴾ **يَا مَتِينُ** जिस बच्चे का दूध छुड़ा दिया गया हो उसे काग़ज़  
पर लिख कर पिला दें, तस्कीन होगी और मां का दूध कम हो तो इसी  
इस्मे पाक को लिख कर पिला दें दूध ज़ियादा होगा ।

फ़रमाने मुस्तफ़ा عليه السلام जो मुझ पर रोज़े जुमुआ दूरद शरीफ़ पढ़ेगा मैं क़ियामत के दिन उस को शफ़ाअत करूँगा।

﴿57﴾ **يَا وَلِيَّ** जो कोई इस इस्म को बहुत पढ़ेगा إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ उस की

जौजा उस की फ़रमां बरदार हो जाएगी।

﴿58﴾ **يَا حَمِيدُ** 90 बार, जिस की गन्दी बातों की आदत न जाती

हो वोह पढ़ कर किसी ख़ाली पियाले या गिलास में दम कर दे। हस्बे

ज़रूरत उसी में पानी पिया करे إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ फ़ोहूश गोई की आदत

निकल जाएगी। (एक बार का दम किया हुवा गिलास बरसों तक चला

सकते हैं)

﴿59﴾ **يَا مُحْيِي** 7 बार पढ़ कर अपने ऊपर दम कर लीजिये,

गेस हो या पेट या किसी भी जगह दर्द हो या किसी उज़्व के जाएअ

हो जाने का ख़ौफ़ हो, إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ फ़ाएदा होगा। (मुद्दे इलाज : ता

हुसूले शिफ़ा, रोज़ाना कम अज़ कम एक बार)

﴿60﴾ **يَا مُمِيتُ** 7 बार रोज़ाना पढ़ कर अपने ऊपर दम कर लिया

कीजिये إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ जादू असर नहीं करेगा।

﴿61﴾ **يَا حَيُّ** जो कोई बीमार हो इस इस्म को 1000 बार पढ़े,

إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ सिहहत पाएगा।

﴿62﴾ **يَا قَيُّوْمُ** सुब्ह के वक़्त जो कोई इस को कसरत से पढ़ेगा

إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ उस का तसर्तुफ़ दिलों में ज़ाहिर होगा, या'नी लोग उस को

दोस्त रखेंगे।

﴿63﴾ **يَا وَاجِدُ** जो कोई खाना खाते वक़्त हर निवाले पर पढ़ा करेगा



फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ जिसने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह तआला उस पर दस रहमते भेजता है।

﴿عَزَّوَجَلَّ﴾ **إِنَّ شَاءَ اللَّهُ** वोह खाना उस के पेट में नूर होगा और बीमारी दूर होगी।

﴿64﴾ **يَا مَاجِدُ** 10 बार पढ़ कर शरबत वगैरा पर दम कर के जो पी लिया करे **إِنَّ شَاءَ اللَّهُ** बीमार न होगा।

﴿65﴾ **يَا وَاحِدُ** 1001 बार, जिस को अकेले में डर लगता हो, तन्हाई में पढ़ ले **إِنَّ شَاءَ اللَّهُ** उस के दिल से खौफ़ जाता रहेगा।

﴿66﴾ **يَا أَحَدُ** जो कोई इस इस्म को 9 मर्तबा पढ़ कर हाकिम के आगे जाए, **إِنَّ شَاءَ اللَّهُ** इज़्ज़त और सरफ़राज़ी पाएगा। जो तन्हा इसे हजार बार पढ़ेगा नेक बन जाएगा। **إِنَّ شَاءَ اللَّهُ**

﴿67﴾ **يَا صَمَدُ** जो इसे 1000 बार पढ़ेगा **إِنَّ شَاءَ اللَّهُ** दुश्मन पर फ़तह पाएगा।

﴿68﴾ **يَا قَادِرُ** जो वुजू के दौरान हर उज़्ब धोते हुए पढ़ने का मा'मूल बना ले **إِنَّ शَاءَ اللَّهُ** दुश्मन उस को इज़्वा नहीं कर सकेगा।

﴿69﴾ **يَا قَادِرُ** 41 बार, मुश्किल आ पड़े तो पढ़ लीजिये **إِنَّ شَاءَ اللَّهُ** आसानी हो जाएगी।

﴿69﴾ **يَا مُقْتَدِرُ** 20 बार जो रोज़ाना पढ़ लिया करेगा **إِنَّ شَاءَ اللَّهُ** रहमतों के साए में रहेगा।

﴿70﴾ **يَا مُقْتَدِرُ** 20 बार, जो नींद से बेदार हो कर पढ़ लिया करेगा उस के हर काम में मददे इलाही शामिल रहेगी।

फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ जो शख़्स मुझ पर दुरुदे पाक पढ़ना भूल गया वोह जन्नत का रास्ता भूल गया ।

﴿70﴾ **يَا مُقَدِّم** जो जंग या किसी ख़ौफ़ की जगह पर बेचैनी की हालत में हो तो वोह इस इस्मे मुबारक की कसरत करे ।

﴿71﴾ **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** 100 बार हर रोज़ पढ़ने वाले के काम पूरे होंगे ।

﴿72﴾ **يَا أَوَّل** 100 बार रोज़ाना पढ़ लिया करेगा **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** उस की ज़ौजा उस से महबूबत करेगी ।

﴿73﴾ **يَا آخِر** जो किसी जगह जाए और इस इस्मे पाक को पढ़ ले **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** वहां इज़्ज़त व तौकीर पाएगा ।

﴿74﴾ **يَا ظَاهِر** दीवार की दीवार पर लिख लीजिये **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** सलामत रहेगी ।

﴿75﴾ **يَا بَاطِن** जो किसी को अमानत सोंपे या ज़मीन में दफ़न करे तो **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** कोई उस में ख़ियानत न कर सकेगा ।

﴿76﴾ **يَا وَآلِي** जो कोई कोरे पियाले पर लिख कर उस में पानी भर कर घर के दरो दीवार पर डाले तो **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** वोह घर आफ़तों से महफूज़ रहेगा ।

﴿77﴾ **يَا مُتَعَالَى** मुशकिल तरीन कामों के लिये इस की कसरत बेहद मुफ़ीद है ।

﴿78﴾ **يَا بَر** जो शख़्स 7 मर्तबा पढ़ कर बच्चे पर दम कर के

फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ जिसने मुझ पर एक बार दूरूदे पाक पढ़ा अल्लाह तआला उस पर दस रहमते भेजता है।

अल्लाह तआला की सिपुर्दगी में दे दे बालिग़ होने तक **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ**

वोह बच्चा बलाओं से महफूज़ रहेगा।

﴿79﴾ **يَا تَوَّابُ** जो कोई चाश्त की नमाज़ के बा'द 360 बार इस को

पढ़ेगा अल्लाह तआला उस को तौ-बतुन्नसूह नसीब फ़रमाएगा। **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ**

﴿80﴾ **يَا مُنْتَقِمُ** दुश्मन को दोस्त बनाने के लिये तीन जुमुआ

तक इस को कसरत से पढ़िये।

﴿81﴾ **يَا عَفُوُّ** जिस के गुनाह बहुत हों वोह इस इस्मे पाक की कसरत

करे अल्लाह तआला अपने फ़ज़ल से उस के तमाम गुनाह बख़्श देगा।

﴿82﴾ **يَا رَءُوفُ** 10 बार, जो किसी मज़्लूम का किसी ज़ालिम

से पीछा छुड़ाना चाहे, पढ़े फिर उस ज़ालिम से बात करे **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ**

वोह ज़ालिम उस की सिफ़ारिश क़बूल कर लेगा।

﴿83﴾ **يَا مَالِكِ الْمُلْكِ** जो इस की कसरत करेगा **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ**

खुशहाल होगा।

﴿84﴾ **يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْإِكْرَامِ** इस की कसरत से खुशहाली

नसीब होगी। इस के साथ दुआ करने से दुआ मक्बूल होगी। **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ**

﴿85﴾ **يَا مُقْسِطُ** शैतानी वस्वसों से बचने के लिये 100 मर्तबा

पढ़ना बहुत मुफ़ीद है। **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ**

फरमाने मुस्तफा صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم जिसने मुझ पर दस मरतबा दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह तआला उस पर सौ रहमते भेजता है।

﴿86﴾ **يَا جَامِعُ** जिस के अजीज व अकारिब जुदा हो गए हों,

चाशत के वक़्त गुस्ल कर के आस्मान की तरफ़ मुंह कर के 10 बार इस इस्म को पढ़े और हर बार में एक उंगली बन्द करता जाए फिर अपने मुंह पर हाथ फैरे إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ थोड़े अरसे में सब जम्अ हो जाएंगे।

﴿87﴾ **يَا غَنِيُّ** रीढ़ की हड्डी, घुटनों, जोड़ों या जिस्म में कहीं भी दर्द हो, चलते फिरते उठते बैठते पढ़ते रहिये إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ दर्द जाता रहेगा।

﴿88﴾ **يَا مُغْنِيُّ** एक बार पढ़ कर हाथों पर दम कर के दर्द की जगह पर मलने से إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ सुकून मिलेगा।

﴿89﴾ **يَا مَانِعُ** 20 बार, बीवी नाराज़ हो तो शोहर और अगर शोहर नाराज़ हो तो बीवी सोने से क़ब्ल बिछोने पर बैठ कर पढ़े إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ सुल्ह हो जाएगी। (मुद्दत : ता हुसूले मुराद)

﴿90﴾ **يَا ضَارُّ** जिसे कोई मन्सब मिले और वोह उस पर काइम रहना चाहे तो वोह हर शबे जुमुआ और अय्यामे बीज (या'नी हर इस्लामी माह की 13,14,15 तारीख़) में 100 बार पढ़े।

﴿91﴾ **يَا نَافِعُ** 20 बार, जो किसी काम को शुरूअ करने से क़ब्ल पढ़ ले إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ वोह काम उस की मरज़ी के मुताबिक़ पूरा होगा।

फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ तुम जहाँ भी हो मुझ पर दुरूद पढ़ो कि तुम्हारा दुरूद मुझ तक पहुँचता है।

﴿92﴾ **يَا نُورُ** जो सात मर्तबा सूरए नूर और 1001 बार पढ़े

उस का दिल रोशन हो जाएगा।

﴿93﴾ **يَا هَادِي** जो कोई आस्मान की तरफ़ मुंह कर के हाथ उठा

कर इस इस्म को कसरत से पढ़े और वोह हाथ अपने मुंह और आंखों पर मल ले

﴿94﴾ **يَا بَدِيعُ** जिस को कोई सख़्त मुहिम दरपेश हो 70,000 बार

पढ़े।

﴿95﴾ **يَا بَاقِي** जो सूरज निकलने से पहले 100 बार रोज़ पढ़ेगा

दुख से महफूज़ रहेगा।

﴿96﴾ **يَا وَارِثُ** जो इस का विर्द करेगा

दराज़ होगी।

﴿97﴾ **يَا رَشِيدُ** जो शख़्स किसी काम की तदबीर न जानता हो वोह

मग़रिब और इशा के दरमियान 1000 बार पढ़े

﴿98﴾ **يَا صَبُورُ** जिस को दर्द या रन्ज या मुसीबत पेश आए

33 बार पढ़े,

﴿99﴾ **يَا مُؤَخَّرُ** जो इस नाम को किसी नमाज़ के बा'द 100 बार

पढ़ेगा

फरमाने मुस्तफा ﷺ जिसने मुझ पर दस मतबा सुब्द और दस मतबा शाम दुरुद पाक पढ़ा उस कियामत के दिन मेरी शफाअत मिलेगी।

## ख़तमे क़ादिरिय्यह

﴿1﴾ दुरुदे गौसिया 111 बार पढ़ें

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا وَمَوْلَانَا مُحَمَّدٍ مَّعْدِنِ  
الْجُوْدِ وَالْكَرَمِ وَالْاِيْمِ وَبَارِكْ وَسَلِّمْ

﴿2﴾ तीसरा कलिमा 111 बार पढ़ें

سُبْحَنَ اللّٰهُ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ وَلَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاللّٰهُ  
اَكْبَرُ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيْمِ

﴿3﴾ सूरए अलम नशरह 111 बार पढ़ें

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اَلَمْ نَشْرَحْ لَكَ صَدْرَكَ ۝ وَوَضَعْنَا عَنكَ وِزْرَكَ ۝  
اَلَمْ نَقْضْ ظَهْرَكَ ۝ وَرَفَعْنَا لَكَ ذِكْرَكَ ۝ فَاِنَّ مَعَ الْعُسْرِ يُسْرًا ۝  
اِنَّ مَعَ الْعُسْرِ يُسْرًا ۝ فَاِذَا فَرَغْتَ فَانصَبْ ۝  
وَإِلٰى رَبِّكَ فَارْغَبْ ۝

﴿4﴾ सू-रतुल इख़्लास 111 बार पढ़ें

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ ۝ اللّٰهُ الصَّمَدُ ۝ لَمْ يَلِدْ  
وَلَمْ يُولَدْ ۝ وَلَمْ يَكُنْ لَّهٗ كُفُوًا اَحَدٌ ۝

फरमाने मुस्तफा ﷺ मुझ पर दुरदे पाक की कसूरत करो बेशक यह तुम्हारे लिये त्हा रत है ।

﴿5﴾ 111 बार يَا بَاقِي أَنْتَ الْبَاقِي

111 बार يَا شَافِي أَنْتَ الشَّافِي

111 बार يَا كَافِي أَنْتَ الْكَافِي

﴿6﴾ 111 बार

يَا رَسُولَ اللَّهِ اُنْظُرْ حَالَنَا يَا حَبِيبَ اللَّهِ اِسْمَعْ قَالَنَا

اِنِّى فِى بَحْرِهِمْ مُغْرَقٌ حُذِّ يَدِى سَهْلٌ لَنَا اَسْكَالَنَا

﴿7﴾ 111 बार

يَا حَبِيبَ الْإِلَهِ حُذِّ يَدِى مَا الْعَجْزِى سِوَاكَ مُسْتَنْدِى

﴿8﴾ 111 बार

فَسَهْلٌ يَا إِلَهَى كُلَّ صَعْبٍ بِحُرْمَةِ سَيِّدِ الْأَبْرَارِ سَهْلٌ

﴿9﴾ 111 बार

يَا صَدِيقُ يَا عَمْرُ يَا عُثْمَانُ يَا حَيْدَرُ

دَفَعُ شَرُّكَ خَيْرُ آوَرُ يَا شَمِئِيرُ يَا شَبَّرُ

﴿10﴾ 111 बार

يَا حَضْرَتُ سُلْطَانِ شَيْخِ سَيِّدِ شَاهِ عَبْدِ الْقَادِرِ

جِيلَانِ شَيْئًا لِلَّهِ اَلْمَدَدُ

فرمانے مستفاد علی اللہ تعالیٰ و سلم جس نے کتاب میں मुझ पर दुरुदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फिरश्त  
उस के लिये इस्तिफार करते रहेंगे।

﴿11﴾ 111 बार

مَا هَمَّهُ مُحْتَاجٌ تَوْحَّاجَتْ رَوْا الْمَدْدُ يَا غَوْثَ اعْظَمَ سَيِّدَا

﴿12﴾ 111 बार

مُشْكِلَاتٍ بَعْدَ دَارِئِمَ مَا الْمَدْدُ يَا غَوْثَ اعْظَمَ يَدِ مَا

﴿13﴾ 111 बार

يَا حَضْرَتُ شَيْخِ مُحَبِّ الدِّينِ مُشْكِلِ كُشَا بِالْخَيْرِ

﴿14﴾ 111 बार

إِمْدَادُكُمْ إِمْدَادُكُمْ أَرْبَدَ عَمَّ أَرَادُكُمْ  
دَرُونِ وَ دُنْيَا شَادُكُمْ يَا غَوْثَ اعْظَمَ دَسْتَكِيرِ

﴿15﴾ 111 बार

يَا حَضْرَتُ غَوْثِ اغْنِنَا بِإِذْنِ اللَّهِ تَعَالَى

﴿16﴾ 111 बार

خُذْ يَدِي يَا شَاهِ جِيلَانِ خُذْ يَدِي شَيْئًا لِلَّهِ أَنْتَ نُورٌ أَحْمَدِي

﴿17﴾ 111 बार

طَفِيلِ حَضْرَتِ دَسْتَكِيرِ دُشْمَنِ هُوَ زَيْرِ

﴿18﴾ सूरए यासीन शरीफ

﴿19﴾ कसीदए गौसिया

﴿20﴾ दुरुदे गौसिया



फरमाने मुस्तफा ﷺ मुझ पर कसूरत से दुरूदे पाक पढो वेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढना तुम्हारे गुनाहों के लिये मागिफरत है।

## कस्सीदए गौसिया

سَقَانِي الْحُبُّ كَأَسَاتِ الْوَصَالِ فَقُلْتُ لِيَخْتَرَنِي نَحْوِي تَعَالَى  
 سَعَتْ وَمَشَتْ لِيَنْحَوِي فِي كُتُوسٍ فَهَمْتُ بِسُكْرَتِي بَيْنَ الْمَوَالِي  
 فَقُلْتُ لِسَائِرِ الْأَقْطَابِ لُمُؤَا بِحَالِي وَادْخُلُوا أَنْتُمْ رِجَالِي  
 وَهُمُؤَا وَاشْرَبُوا أَنْتُمْ جُنُودِي فَسَاقِي الْقَوْمِ بِالْوَافِي مَلَايِي  
 شَرِبْتُمْ فَضْلَتِي مِنْ بَعْدِ سُكْرِي وَلَا نِلْتُمْ عَلَوِي وَاتِّصَالِي  
 مَقَامُكُمْ الْعُلَى جَمْعًا وَلَكِنْ مَقَامِي فَوْقَكُمْ مَا زَالَ عَالِي  
 أَنَا فِي حَضْرَةِ التَّقَرُّبِ وَخِدْيِ يُصَرِّفُنِي وَحَسْبِي دُوَالِ الْجَلَالِ  
 أَنَا الْبَارِي أَشْهَبُ كُلِّ شَيْخٍ وَمَنْ ذَا فِي الرِّجَالِ اعْطَى مِثَالِي  
 كَسَانِي خِلْعَةً بِطَرَارِ عَزْمٍ وَتَوَجَّعْنِي بِتَيْجَانِ الْكَمَالِ  
 وَأَطْلَعْنِي عَلَى سِرِّ قَدِيمٍ وَقَلَّدَنِي وَأَعْطَانِي سُؤَالِي  
 وَلَا نِي عَلَى الْأَقْطَابِ جَمْعًا فَحُكْمِي نَافِذٌ فِي كُلِّ حَالِ  
 فَلَوْ أَلْقَيْتُ سِرِّي فِي بِحَارٍ لَصَارَ الْكُلُّ غَوْرًا فِي الرِّوَالِ  
 وَلَوْ أَلْقَيْتُ سِرِّي فِي جِبَالٍ لَدَكَّتْ وَاخْتَفَتْ بَيْنَ الرِّمَالِ  
 وَلَوْ أَلْقَيْتُ سِرِّي فَوْقَ نَارٍ لَخَبَدَتْ وَانْطَفَتْ مِنْ سِرِّ حَالِي

फरमाने मुस्तफा ﷺ जो मुझ पर एक मरतबा दुर्रद शरीफ पढ़ता है अल्लाह तआला उस के लिये एक कीरात अन्न लिखता है और कीरात उहद पहाड़ जितना है।

وَلَوْ أَلْقَيْتُ سِرِّي فَوْقَ مَيْدٍ      لَقَامَ بِقَدْرَةِ الْمَوْلَى تَعَالَى  
وَمَا مِنْهَا شُهُورٌ أَوْ دُهُورٌ      تَمُرُّ وَتَنْقُضِي إِلَّا آتَالِي  
وَتُخْبِرُنِي بِمَا يَأْتِي وَيَجْرِي      وَتُعَلِّمُنِي فَأَقْصِرُ عَنْ جِدَالِي  
مُرِيدِي هُمْ وَطِبُّ وَاشْطَحْ وَغَنِي      وَافْعَلْ مَا تَشَاءُ فَلَا سُمْ عَالِ  
مُرِيدِي لَا تَخَفُ اللَّهُ رَبِّي      عَطَانِي رِفْعَةً نِلْتُ الْمَنَالِي  
طُبُونِي فِي السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ دُقْتُ      وَشَاءُ وَسُ السَّعَادَةِ قَدْ بَدَأَ لِي  
بِلَادِ اللَّهِ مُلْكِي تَحْتَ حُكْمِي      وَوَقَّتِي قَبْلَ قَلْبِي تَذْ صَفَالِي  
نَظَرْتُ إِلَى بِلَادِ اللَّهِ جَمْعًا      كَخَزْدَلَةٍ عَلَى حُكْمِ اتِّصَالِ  
دَرَسْتُ الْعِلْمَ حَتَّى صِرْتُ قُطْبًا      وَنِلْتُ السَّعْدَ مِنْ مَوَالِي الْمَوَالِي  
فَمَنْ فِي أَوْلِيَاءِ اللَّهِ مِثْلِي      وَمَنْ فِي الْعِلْمِ وَالتَّضَرُّفِ حَالِي  
رَجَالِي فِي هَوَاجِرِهِمْ صِيَامٌ      وَفِي ظُلَمِ اللَّيَالِي كَاللَّيَالِي  
وَكُلُّ وَلِيٍّ لَهُ قَدَمٌ وَآثِي      عَلَى قَدَمِ النَّبِيِّ بَذَرِ الْكَمَالِ  
نَبِيٌّ هَاشِمِيٌّ مَكِّيٌّ حِجَازِيٌّ      هُوَ جَدِّي بِهِ نِلْتُ الْمَوَالِي  
مُرِيدِي لَا تَخَفْ وَاشْ فَإِنِّي      عَزُومٌ قَاتِلٌ عِنْدَ الْقِتَالِ  
أَنَا الْجَبِلِيُّ مُخِي الدِّينِ لَقْبِي      وَأَعْلَامِي عَلَى رَأْسِ الْجِبَالِ

फरमाने मुस्तफा ﷺ जिसने मुझ पर एक बार दूरूदे पाक पढ़ा अल्लाह तआला उस पर दस रहमते भेजता है।

أَنَا الْحَسَنِيُّ وَالْمُخَدَّعُ مَقَامِي وَأَقْدَامِي عَلَى عُنُقِ الرِّجَالِ

وَعَبْدُ الْقَادِرِ الْمَشْهُورِ إِسْمِي وَجَدِّي صَاحِبُ الْعَيْنِ الْكَمَالِ

تَقَبَّلْنِي وَلَا تَرُدُّ سُؤَالِي أَعِثْنِي سَيِّدِي أَنْظِرْ بِحَالِي

फजाइले कसीदए गौशिया मु-तबरक

येह कसीदए मुबा-रका हुजूर सय्यिदुना गौसुल आ'जम, महबूबे सुब्हानी, कुत्बे रब्बानी, शैख अब्दुल कादिर जीलानी महबूबे सुब्हानी, कुत्बे रब्बानी, शैख अब्दुल कादिर जीलानी की ज़बाने फैज़ तरजुमान से अदा हुवा है और हमारे सिलसिलए आलिया कादिरिय्या में इस का विर्द दौलते ज़ाहिरी व बातिनी के हुसूल का सबब है इस के अड्डाईस अशआर हैं। इस कसीदए मुबा-रका का रोज़ाना विर्द बहुत मुफ़ीद है। नीज़

«1» तस्खीरे ख़लाइक के लिये अज़ हृद कार आमद है और कुर्बे खुदा वन्दी के हुसूल का ज़रीआ है।

«2» इस कसीदए मुबा-रका का विर्द कुव्वते हाफ़िज़ा को बढ़ाता है।

«3» इस कसीदए मुबा-रका के पढ़ने वाले को अ-रबी पढ़ने में बसीरत हासिल होती है।

«4» हर मुश्किल व सख़्त काम के लिये चालीस रोज़ पढ़िये  
 اِنْ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ काम्याब होंगे।

«5» जो शख्स इस कसीदए मुबा-रका को अपने सामने रखे और तीन मर्तबा पढ़े मक्बूले बारगाहे गौसियत होगा और हुजूर सय्यिदुना गौसे पाक ﷺ की ज़ियारत फैज़ बिशारत से

مُشَارَفٌ هُوَ اِنْ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ

फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ जब तुम मुसलमानों पर दुर्द पाक पढ़ो तो मुझ पर भी पढ़ो बेशक मैं तमाम ज़हानों के रब का रसूल हूँ।

﴿6﴾ हर मरज़ व तकलीफ़ के लिये तीन बार या पांच बार पढ़ना मुफ़ीद है।

﴿7﴾ बांझ औरत इस क़सीदए मुबा-रका को सहीह ख़्वां से 41 या 21 बार पढ़वा कर पानी पर दम कर के चालीस रोज़ पिये तो हामिला हो जाए और हुज़ूर ग़ौसुल आ'ज़म رَضِيَ اللهُ عَنْهُ की ब-र-कत से बेटा अता होगा। اِنْ شَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ

﴿8﴾ आसेब ज़दा ज़िन्न वाले मरीज़ के लिये रोग़न (या'नी तेल) पर दम कर के उस के जिस्म पर मलें दफ़अ होगा। اِنْ شَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ

﴿9,10﴾ ज़ालिम से नजात पाने के लिये हर रोज़ पढ़िये ख़लासी नसीब होगी यूं ही दुश्मन दफ़अ हो जाएंगे। اِنْ شَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ

### ख़तमे ख़्वाजग़ान

﴿1﴾ 7 बार सू-रतुल फ़ातिहा

﴿2﴾ 100 बार दुरूद शरीफ़

﴿3﴾ 79 बार सूरए अलम नशरह

﴿4﴾ 100 बार सू-रतुल इख़्लास

﴿5﴾ 7 बार सू-रतुल फ़ातिहा

﴿6﴾ 100 बार दुरूदे ख़िज़्री

फरमाने मुस्तफा ﷺ जो मुझ पर रोजे जुमुआ दुरद शरीफ पढ़ेगा मैं कियामत के दिन उस की शफाअत करूँगा।

صَلِّ اللَّهُ عَلَى حَبِيبِهِ مُحَمَّدٍ وَآلِهِ وَبَارِكْ وَسَلِّمْ: خِزْجِي دुरुदे

इस के बा'द सब मिल कर नीचे दिये हुए हर हर कलिमे को 111 बार पढ़ें

اللَّهُمَّ يَا قَاضِيَ الْحَاجَاتِ اللَّهُمَّ يَا كَافِيَ الْمُهَنِّاتِ  
 اللَّهُمَّ يَا حَلَّ الْمُشْكَلاتِ اللَّهُمَّ يَا دَافِعَ الْبَلِيَّاتِ  
 اللَّهُمَّ يَا رَافِعَ الدَّجَاتِ اللَّهُمَّ يَا مُنْزِلَ الْبَرَكَاتِ  
 اللَّهُمَّ يَا شَافِيَ الْأَمْرَاضِ اللَّهُمَّ يَا رَازِقَ الْعِبَادِ  
 اللَّهُمَّ يَا مُعْطِيَ الْخَيْرَاتِ وَالْحَسَنَاتِ اللَّهُمَّ يَا مُجِيبَ الدَّعَوَاتِ  
 اللَّهُمَّ يَا مُسَبِّبَ الْأَسْبَابِ اللَّهُمَّ يَا مُفْتِاحَ الْأَبْوَابِ  
 اللَّهُمَّ يَا خَيْرَ النَّاصِرِينَ اللَّهُمَّ يَا خَيْرَ الْحَافِظِينَ  
 اللَّهُمَّ يَا خَيْرَ الرَّازِقِينَ اللَّهُمَّ يَا غِيَاثَ الْمُسْتَغِيثِينَ

اَعِزَّنِي يَا رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْكَ وَسَلَّم

اَلْمَدَدُ خَوَاهُمْ زِتُو اے شَاهِ نَقْشَبَنْدُ

اَلْمَدَدُ خَوَاهُمْ زِتُو اے غَرِيبِ نَوَا

اَلْمَدَدُ خَوَاهُمْ زِتُو يَا شَهَابَ الدِّينِ سَهْرُورَدِي

يَا رَحْمَتِكَ يَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِينَ

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ  
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

## फैजाने नवाफिल

दुश्मद शरीफ की फज़ीलत

खा-तमुल मुर-सलीन, रहमतुल्लिल आ-लमीन,  
शफ़ीज़ल मुज़िबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन,  
महबूबे रब्बुल आ-लमीन, जनाबे सादिक़े अमीन  
صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने मग़ि़रत निशान है : जब जुमा'रात  
का दिन आता है अल्लाह तआला फ़िरिशतों को भेजता है जिन के  
पास चांदी के काग़ज़ और सोने के क़लम होते हैं वोह लिखते हैं,  
कौन यौमे जुमा 'रात और शबे जुमुआ मुझ पर कसरत से दुरुदे  
पाक पढ़ता है । (كَتَبَ الْعَمَلُ، ج ١، ص ٢٥٠، حديث ٢١٧٤)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

अल्लाह का प्यारा बनने का नुस्खा

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से मरवी है, हुज़ूरे  
पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़लाक صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ फ़रमाते  
हैं कि अल्लाह तआला ने फ़रमाया : “जो मेरे किसी वली से दुश्मनी  
करे, उसे मैं ने लड़ाई का ए'लान दे दिया और मेरा बन्दा जिन चीज़ों  
के ज़रीए मेरा कुर्ब चाहता है उन में मुझे सब से ज़ियादा फ़राइज़ महबूब

फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ जिसे मुझ पर रोज़े जुमुआ दो सौ बार दूरदे पाक पढ़ा उस के दो सौ साल के गुनाह मुआफ़ होंगे।

हैं और नवाफ़िल के ज़रीए कुर्ब हासिल करता रहता है यहां तक कि मैं उसे अपना महबूब बना लेता हूं अगर वोह मुझ से सुवाल करे तो उसे ज़रूर दूंगा और पनाह मांगे तो उसे ज़रूर पनाह दूंगा।”

(صَحِيحُ الْبُخَارِيِّ ج ٤، ص ٢٤٨، حَدِيثُ ٦٥٠٢)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ا صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

## सलातुल्लैल

रात में बा'द नमाज़े इशा जो नवाफ़िल पढ़े जाएं उन को सलातुल्लैल कहते हैं और रात के नवाफ़िल दिन के नवाफ़िल से अफ़ज़ल हैं कि सहीह मुस्लिम शरीफ़ में है : सय्यिदुल मुबल्लिगीन, रहमतुल्लिल आ-लमीन ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : “फ़ज़ों के बा'द अफ़ज़ल नमाज़ रात की नमाज़ है।”

(صَحِيحُ مُسْلِمٍ، ص ॥ ०११، حَدِيثُ ११६३)

## तहज्जुद और रात में नमाज़ पढ़ने का सवाब

अल्लाह तबा-र-क व तआला पारह 21 सू-रतुस्सज्दा आयत नम्बर 16 और 17 में इर्शाद फ़रमाता है :

تَتَجَافَى جُنُوبُهُمْ عَنِ الْمَضَاجِعِ  
يَدْعُونَ رَبَّهُمْ خَوْفًا وَطَمَعًا وَمِمَّا  
رَزَقْنَاهُمْ يُنْفِقُونَ ⑮

فَلَا تَعْلَمُ نَفْسٌ مَّا أُخْفِيَ لَهُم مِّنْ  
قُرَّةِ أَعْيُنٍ ۚ جَزَاءُ مِّمَّا كَانُوا  
يَعْمَلُونَ ⑯

तर-ज-मए कन्जुल ईमान : इन की करवटें जुदा होती हैं ख़्वाब गाहों से और अपने रब को पुकारते हैं डरते और उम्मीद करते और हमारे दिये हुए से कुछ ख़ैरात करते हैं तो किसी जी को नहीं मा'लूम जो आंख की ठण्डक इन के लिये छुपा रखी है सिला इन के कामों का।

फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ जो शख्स मुझ पर दुरुदे पाक पढ़ना भूल गया वोह जन्नत का रास्ता भूल गया ।

सलातुल्लैल की एक किस्म तहज्जुद है कि इशा के बा'द रात में सो कर उठें और नवाफ़िल पढ़ें, सोने से क़बल जो कुछ पढ़ें वोह तहज्जुद नहीं । कम से कम तहज्जुद की दो<sup>2</sup> रकअतें हैं और हुज़ूरे अक्दस ﷺ से आठ तक साबित । (बहारे शरीअत, हिस्सा 4, स. 26,27) इस में क़िराअत का इख़्तियार है कि जो चाहें पढ़ें, बेहतर येह है कि जितना कुरआन याद है वोह तमाम पढ़ लीजिये वरना येह भी हो सकता है कि हर रकअत में सूरए फ़ातिहा के बा'द तीन<sup>3</sup> तीन<sup>3</sup> बार सू-रतुल इख़्लास पढ़ लीजिये कि इस तरह हर रकअत में कुरआने करीम ख़त्म करने का सवाब मिलेगा, ऐसा करना बेहतर है, बहर हाल सूरए फ़ातिहा के बा'द कोई सी भी सूरत पढ़ सकते हैं ।

(मुलख़ब्स अज़ फ़तावा र-ज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 7, स. 447)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ا صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

तहज्जुद शुज़ार के लिये जन्नत के आलीशान बालाख़ाने अमीरुल मुअमिनीन हज़रते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तज़ा सय्यिदुल मुबल्लिगीन, क़ुम् अल्लह त़ाली وَحِبّه اَنْكْرِمْ से रिवायत है कि सय्यिदुल मुबल्लिगीन, रहमतुल्लिल आ-लमीन, ﷺ का फ़रमाने दिल नशीन है : जन्नत में ऐसे बालाख़ाने हैं जिन का बाहर अन्दर से और अन्दर बाहर से देखा जाता है । एक आ'राबी ने उठ कर अर्ज़ की : या रसूलल्लाह ﷺ ! येह किस के लिये हैं ? आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : येह उस के लिये हैं जो नर्म गुफ़्त-गू करे, खाना खिलाए, मु-तवातिर रोज़े रखे, और रात को उठ



फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ जिसने मुझ पर एक बार दुरदे पाक पड़ा अल्लाह तआला उस पर दस रहमते भेजता है।

कर अल्लाह عزوجل के लिये नमाज़ पढ़े जब लोग सोए हुए हों।

(سُنَنُ التِّرْمِذِيِّ ج ٤ ص ٢٣٧ حديث ٢٥٣٥ شُعَبُ الْإِيمَان ج ٣ ص ٤٠٤، حديث ٣٨٩٢)

मुफ़स्सिरे शहीर हकीमुल उम्मत हज़रते मुफ़्ती अहमद यार

ख़ान मिरआतुल मनाजीह जिल्द 2 सफ़हा 260 पर इस हिस्से हदीस “وَسَائِعُ الصَّيَامِ” या’नी “मु-तवातिर रोज़े रखे” की शर्ह करते हुए फ़रमाते हैं : या’नी हमेशा रोज़े रखें सिवा उन पांच दिनों के जिन में रोज़ा हराम है या’नी शव्वाल की यकुम और ज़िल हिज्जह की दसवीं ता तेरहवीं, येह हदीस उन लोगों की दलील है जो हमेशा रोज़े रखते हैं बा’जू ने फ़रमाया कि इस के मा’ना हैं हर महीने में मुसल्लसल तीन रोज़े रखे।

صَلُّوا عَلَى الْخَبِيبِ ا صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

“तहज्जुद गुज़ार” के आठ हुरफ़ की निश्बत से नेक बन्दों और बन्दियों की 8 हिक्कयात

(1) सारी रात नमाज़ पढ़ते रहते

हज़रते सय्यिदुना अब्दुल अज़ीज़ बिन रवाद عليه رمة الله الجواد

रात को सोने के लिये अपने बिस्तर पर आते और उस पर हाथ फैर कर कहते : “तू नर्म है लेकिन अल्लाह عزوجل की क़सम ! जन्नत में तुझ से ज़ियादा नर्म बिस्तर मिलेगा फिर सारी रात नमाज़ पढ़ते रहते।”

(إِحْيَاءُ الْعُلُومِ ج ١ ص ٤٦٧) अल्लाहु रब्बुल इज़ज़त عزوجل की उन पर

फरमाने मुस्तफा ﷺ जिसने मुझे पर दस मरतबा दुरुदे पाक पढ़ा अल्लाह तआला उस पर सो रहमतें भेजता है।

रहमत हो और उन के सदके हमारी मग़िफ़रत हो।

امين بجاہ النبی الامین علی اللہ تعالیٰ علیہ والہ وسلم

बिल यकीं ऐसे मुसल्मान हैं बेहद नादान

जो कि रंगीनिये दुन्या पे मरा करते हैं

(2) शहद की मक्खी की भिनभिनाहट की सी आवाज़ !

मशहूर सहाबी हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह इब्ने मस्ऊद जब लोगों के सो जाने के बा'द उठ कर कियाम (या'नी इबादत) फ़रमाया करते तो उन से सुब्ह तक शहद की मक्खी की सी भिनभिनाहट सुनाई देती। (إِحْيَاءُ الْعُلُومِ، ج १ ص ६१७) अल्लाहु रब्बुल इज़्ज़त की उन पर रहमत हो और उन के सदके हमारी मग़िफ़रत हो।

امين بجاہ النبی الامین علی اللہ تعالیٰ علیہ والہ وسلم

महब्बत में अपनी गुमा या इलाही

न पाऊं मैं अपना पता या इलाही

(3) मैं जन्नत कैसे मांगूं !

हज़रते सय्यिदुना सिलह बिन अश्यम عليه رحمة الله الاكرم सारी रात नमाज़ पढ़ते। जब स-हरी का वक़्त होता तो अल्लाह की बारगाह में अर्ज़ करते : “इलाही ! मेरे जैसा आदमी जन्नत नहीं मांग सकता लेकिन तू अपनी रहमत से मुझे जहन्नम से पनाह अता फ़रमा।” (إِحْيَاءُ الْعُلُومِ، ج १ ص ६१८) अल्लाहु रब्बुल इज़्ज़त की उन पर रहमत

फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ तुम जहाँ भी हो मुझ पर दुरुद पढ़ो कि तुम्हारा दुरुद मुझ तक पहुँचता है।

हो और उन के सदके हमारी मग़ि़रत हो। **امین بجاہ النبی الامین** ﷺ

तेरे ख़ौफ़ से तेरे डर से हमेशा

मैं थर थर रहूँ कांपता या इलाही

#### (4) तुम्हारा बाप ना ग़हानी अज़ाब से डरता है!

हज़रते सय्यिदुना रबीअ बिन ख़ुसैम رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِ की बेटी ने आप ﷺ से अर्ज़ की : “अब्बाजान ! क्या वजह है कि लोग सो जाते हैं और आप नहीं सोते ?” तो इर्शाद फ़रमाया : “बेटी ! तुम्हारा बाप ना ग़हानी अज़ाब से डरता है जो अचानक रात को आ जाए।” (شُعَبُ الْاَيْتَانِ ج ۱ ص ۵۴۳، رقم ۹۸۴) अल्लाहु रब्बुल इज़्ज़त की उन पर रहमत हो और उन के सदके हमारी मग़ि़रत हो।

**امین بجاہ النبی الامین** ﷺ

गर तू नाराज़ हुवा मेरी हलाकत होगी

हाए ! मैं नारे जहन्म में जलूंगा या रब !

#### (5) इबादत के लिये जागने का अजीब अन्दाज़

हज़रते सय्यिदुना सफ़वान बिन सुलैम رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِ की पिंडलियां नमाज़ में ज़ियादा देर खड़े रहने की वजह से सूज गई थीं। आप ﷺ इस क़दर कसरत से इबादत किया करते थे कि बिलफ़र्ज़ आप ﷺ से कह दिया जाता कि कल क़ियामत है तो भी अपनी इबादत में कुछ इज़ाफ़ा न कर सकते (या'नी उन के

फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ जिसने मुझ पर दस मर्तबा सुब्ह और दस मर्तबा शाम दुरदे पाक पढ़ा उसे कियामत के दिन मेरी शफ़ाअत मिलेगी।

पास इबादत में इज़ाफ़ा करने के लिये वक़्त की गुन्जाइश ही न थी। जब सर्दी का मौसिम आता तो आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ मकान की छत पर सोया करते ताकि सर्दी आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ को जगाए रखे और जब गर्मियों का मौसिम आता तो कमरे के अन्दर आराम फ़रमाते ताकि गर्मी और तकलीफ़ के सबब सो न सके (क्यूं कि A.C. कुजा उन दिनों बिजली का पंखा भी न होता था!)। सज्दे की हालत में ही आप का इन्तिक़ाल हुवा। आप दुआ किया करते थे: “**اَعُوْذُ بِاللّٰهِ** मैं तेरी मुलाक़ात को पसन्द करता हूं तू भी मेरी मुलाक़ात को पसन्द फ़रमा।” (अَحَادِيثُ السَّادَةِ الْمُتَّفِقِينَ بِشَرْحِ اَحْيَاءِ عُلُومِ الدِّينِ ج ۱۳ ص ۲۴۷-۲۴۸) **اَللّٰهُ** रब्बुल इज्ज़त **اَعُوْذُ بِاللّٰهِ** की उन पर रहमत हो और उन के सदके हमारी मग़ि़रत हो।

امین بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِينِ ﷺ

अफ़्व कर और सदा के लिये राज़ी हो जा

गर करम कर दे तो जन्नत में रहूंगा या रब !

## (6) रोते रोते नाबीना हो जाने वाली खातून

हज़रते सय्यिदुना ख़व्वास **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** फ़रमाते हैं कि हम रिहला अ़बिदा के पास गए। येह ब कसरत रोज़े रखती थीं और इतना रोतीं कि इन की बीनाई जाती रही और इतनी कसरत से नमाज़ें पढ़ती कि खड़ी न हो सकती थीं, लिहाज़ा बैठ कर ही नमाज़ पढ़ती थीं। हम ने उन्हें सलाम किया फिर **اَللّٰهُ** के अफ़्वो करम का तज़्किरा किया ता कि उन पर मुआ-मला आसान हो जाए।

फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ पर दुरुदे पाक की कसूरत करो बेशक येह तुम्हारे लिये त्हा रत है ।

उन्हों ने येह बात सुन कर एक चीख़ मारी और फ़रमाया : “मेरे नफ़्स का हाल मुझे मा'लूम है और इस ने मेरे दिल को ज़ख़मी कर दिया है और जिगर टुकड़े टुकड़े हो गया है, खुदा की क़सम ! मैं चाहती हूं कि काश ! अल्लाह عزّوجلّ ने मुझे पैदा ही न किया होता और मैं कोई क़ाबिले ज़िक्र शै न होती ।” येह फ़रमा कर दोबारा नमाज़ में मशगूल हो गई । (اخلاء العلوم، ج ۵ ص ۵۲۱ المصنوع) अल्लाहु रब्बुल इज़ज़त عزّوجلّ की उन पर रहमत हो और उन के सदके हमारी मग़िफ़रत हो ।

امين بجاه النبی الامین ﷺ

आह सल्वे ईमां का ख़ौफ़ खाए जाता है

काश ! मेरी मां ने ही मुझ को न जना होता

(7) मौत की याद में भूकी रहने वाली ख़ातून

हज़रते सय्यि-दतुना मुआज़ह अ-दविyyा رحمۃ اللہ علیہा रोज़ाना सुब्ह के वक़्त फ़रमातीं : “(शायद) येह वोह दिन है जिस में मुझे मरना है ।” फिर शाम तक कुछ न खातीं फिर जब रात होती तो कहतीं : “(शायद) येह वोह रात है जिस में मुझे मरना है ।” फिर सुब्ह तक नमाज़ पढ़ती रहतीं. (ऐज़न, स. 151) अल्लाहु रब्बुल इज़ज़त की उन पर रहमत हो और उन के सदके हमारी मग़िफ़रत हो ।

امين بجاه النبی الامین ﷺ

मेरा दिल कांप उठता है कलेजा मुंह को आता है

करम या रब अंधेरा क़ब्र का जब याद आता है

फरमाने मुस्तफा ﷺ जिसने किताब में मुझ पर दुरूद पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फिरश्ते उस के लिये इस्तिफ़ार करते रहेंगे ।

## (8) धिर्या व जारी करने वाला ख़ानदान

قدس سره التوراني हज़रते सय्यिदुना कासिम बिन राशिद शैबानी

कहते हैं कि हज़रते सय्यिदुना जम्आ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ मुहस्सब में ठहरे हुए थे, आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ की जौजा और बेटियां भी हमराह थीं। आप रात को उठे और देर तक नमाज़ पढ़ते रहे। जब स-हरी का वक़्त हुवा तो बुलन्द आवाज़ से पुकारने लगे : “ऐ रात में पड़ाव करने वाले काफ़िले के मुसाफ़िरो ! क्या सारी रात सोते रहोगे ? क्या उठ कर सफ़र नहीं करोगे ?” तो वोह लोग जल्दी से उठ गए और कहीं से रोने की आवाज़ आने लगी और कहीं से दुआ मांगने की, एक जानिब से कुरआने पाक पढ़ने की आवाज़ सुनाई दी तो दूसरी जानिब कोई वुजू कर रहा होता। फिर जब सुब्ह हुई तो आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने बुलन्द आवाज़ से पुकारा : “लोग सुब्ह के वक़्त चलने को अच्छा समझते हैं।” (کِتَابُ تَهْذِيقِ الْکَلِمِ مَعَ مَوْسُوْعَةِ اِسْمِ لِيْنِ اَبِي الدُّنْيَا، ج ۱ ص ۲۶۱ رقم ۷۲) अल्लाहु रब्बुल इज़्ज़त عزّوجلّ की उन पर रहमत हो और उन के सदके हमारी मरिफ़रत हो।

امین بجاو النبی الامین ﷺ

मेरे ग़ौस का वसीला रहे शाद सब कबीला

इन्हें खुल्द में बसाना म-दनी मदीने वाले

صَلُّوا عَلَيَّ الْخَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّد

फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ पर कसूरत से दूरदे पाक पढ़ो बेशक तुम्हारा मुझ पर दूरदे पाक पढ़ना तुम्हारे गुनाहों के लिये मग़िफ़रत है।

## नमाज़े इश्राक़

दो फ़रामैने मुस्तफ़ा ﷺ : ﴿1﴾ जो नमाज़े फ़ज़्र बा जमाअत अदा कर के ज़िक्रुल्लाह करता रहे यहां तक कि आप़ताब बुलन्द हो गया फिर दो रकअतें पढ़ीं तो उसे पूरे हज़ व उम्मा का सवाब मिलेगा। ﴿2﴾ जो शख़्स नमाज़े फ़ज़्र से फ़ारिग होने के बा'द अपने मुसल्ले में (या'नी जहां नमाज़ पढ़ी वहीं) बैठा रहा हत्ता कि इश्राक़ के नफ़ल पढ़ ले सिर्फ़ ख़ैर ही बोले तो उस के गुनाह बख़्शा दिये जाएंगे अगर्चे समुन्दर के झाग से भी ज़ियादा हों। (سُنَنُ أَبِي دَاوُدَ ج ٢ ص ١٠٠ حَدِيثُ ٥٨٦)

हदीसे पाक के इस हिस्से “अपने मुसल्ले में बैठा रहे” की वज़ाहत करते हुए हज़रते सय्यिदुना मुल्ला अली क़ारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِی फ़रमाते हैं : या'नी मस्जिद या घर में इस हाल में रहे कि ज़िक्र या ग़ौरो फ़िक्र करने या इल्मे दीन सीखने सिखाने या “बैतुल्लाह के तवाफ़ में मशगूल रहे” नीज़ “सिर्फ़ ख़ैर ही बोले” के बारे में फ़रमाते हैं : या'नी फ़ज़्र और इश्राक़ के दरमियान ख़ैर या'नी भलाई के सिवा कोई गुफ़्त-गू न करे क्यूं कि येह वोह बात है जिस पर सवाब मुरत्तब होता है। (مَرْقَاةُ ج ٢ ص ٣٩٦ تَحْتَ الْحَدِيثِ ١٣١٧)

नमाज़े इश्राक़ का वक़्त : सूरज तुलूअ होने के कम अज़ कम बीस या पच्चीस मिनट बा'द से ले कर ज़ह्वए कुब्रा तक नमाज़े इश्राक़ का वक़्त रहता है।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ जो मुझ पर एक मरतबा दुर्द शरीफ़ पढ़ता है अल्लाह तआला उस के लिये एक क़ोरात अज़्र लिखता है और क़ोरात उहुद पहाड़ जितना है।

## नमाज़े चाशत की फ़ज़ीलत

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है कि हुजुरे पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक ﷺ ने फ़रमाया : “जो चाशत की दो रकअतें पाबन्दी से अदा करता रहे उस के गुनाह मुआफ़ कर दिये जाते हैं अगर्चे समुन्दर की झाग के बराबर हों।”

(سُنَنِ ابْنِ مَاجَهٗ، ج ۲ ص ۱۵۳، ۱۵۴-حدیث ۱۳۸۲)

**नमाज़े चाशत का वक़्त :** इस का वक़्त आफ़ताब बुलन्द होने से ज़वाल या'नी निस्फुन्नहारे शर-ई तक है और बेहतर येह है कि चौथाई दिन चढ़े पड़े। (बहारे शरीअत, हिस्सा : 4, स. 25) नमाज़े इश्राक़ के फ़ौरन बा'द भी चाहें तो नमाज़े चाशत पढ़ सकते हैं।

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَی مُحَمَّد

## सलातुत्तस्बीह

इस नमाज़ का बे इन्तिहा सवाब है, शहन्शाहे खुश ख़िसाल, पैक़रे हुस्नो जमाल, दाफ़ेए रन्जो मलाल, साहिबे जूदो नवाल, रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल ﷺ ने अपने चचाजान हज़रते सय्यिदुना अब्बास رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से फ़रमाया कि ऐ मेरे चचा ! अगर हो सके तो सलातुत्तस्बीह हर रोज़ एक बार पढ़िये और अगर रोज़ाना न हो सके तो हर जुमुआ को एक बार पढ़ लीजिये और येह भी न हो सके तो हर महीने में एक बार और येह भी न हो सके तो साल में एक बार और येह भी न हो सके तो उम्र में एक बार।

(سُنَنِ ابْنِ کُوْد ج ۲ ص ۴۴، ۴۵-حدیث ۱۲۹۷)



फरमाने मुस्तफा ﷺ जो शक्स मुझ पर दुरुदे पाक पढ़ना भूल गया वोह जन्नत का रास्ता भूल गया ।

## सलातुत्तस्बीह पढ़ने का तरीका

इस नमाज़ की तरकीब यह है कि तक्बीरे तहरीमा के बा'द सना पढ़े फिर पन्तरह<sup>15</sup> मर्तबा येह तस्बीह पढ़े :

”سُبْحَنَ اللَّهِ وَالْحَمْدُ لِلَّهِ وَلَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَاللَّهُ أَكْبَرُ“ फिर  
سُورَةُ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ और اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ  
फ़ातिहा और कोई सूरात पढ़ कर रुकूअ से पहले दस<sup>10</sup> बार येही  
तस्बीह पढ़े फिर रुकूअ करे और रुकूअ में سُبْحَنَ رَبِّيَ الْعَظِيْمُ तीन<sup>3</sup> मर्तबा  
पढ़ कर फिर दस<sup>10</sup> मर्तबा येही तस्बीह पढ़े फिर रुकूअ से सर उठाए  
और اَللّٰهُمَّ رَبَّنَا وَلَكَ الْحَمْدُ और سَمِعَ اللّٰهُ لِمَنْ حَمَدَهُ पढ़ कर फिर खड़े  
खड़े दस<sup>10</sup> मर्तबा येही तस्बीह पढ़े फिर सज्दे में जाए और तीन<sup>3</sup>  
मर्तबा سُبْحَنَ رَبِّيَ الْاَعْلٰی पढ़ कर फिर दस<sup>10</sup> मर्तबा येही तस्बीह पढ़े  
फिर सज्दे से सर उठाए और दोनों<sup>2</sup> सज्दों के दरमियान बैठ कर  
दस<sup>10</sup> मर्तबा येही तस्बीह पढ़े फिर दूसरे<sup>2</sup> सज्दे में जाए और  
سُبْحَنَ رَبِّيَ الْاَعْلٰی तीन<sup>3</sup> मर्तबा पढ़े फिर इस के बा'द येही तस्बीह  
दस<sup>10</sup> मर्तबा पढ़े इसी तरह चार<sup>4</sup> रकअत पढ़े और खयाल रहे कि  
खड़े होने की हालत में सूरा फ़ातिहा से पहले पन्तरह<sup>15</sup> मर्तबा और  
बाक़ी सब जगह येह तस्बीह दस<sup>10</sup> दस<sup>10</sup> बार पढ़े यूं हर रकअत में  
75 मर्तबा तस्बीह पढ़ी जाएगी और चार<sup>4</sup> रकअतों में तस्बीह की  
गिनती तीन<sup>3</sup> सो मर्तबा होगी । (बहारे शरीअत, हिस्सा : 4, स. 32)

तस्बीह उंगलियों पर न गिने बल्कि हो सके तो दिल में शुमार करे वरना  
उंगलियां दबा कर । (ऐज़न, स. 33)

صَلُّوْا عَلٰی الْحَبِيْب ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ जिसने मुझ पर दस मरतबा दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह तआला उस पर सौ रहमतें भेजता है।

## इस्तिख़ारा

हज़रते सय्यिदुना जाबिर बिन अब्दुल्लाह رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا से रिवायत है कि रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम ﷺ हम को तमाम उमूर में इस्तिख़ारा ता'लीम फ़रमाते जैसे कुरआन की सूरत ता'लीम फ़रमाते थे, फ़रमाते हैं : “जब कोई किसी अम्र का कस्द करे तो दो<sup>२</sup> रकअत नफ़ल पढ़े फिर कहे :

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْتَخِیْرُكَ بِعِلْمِكَ وَاسْتَغْفِرُكَ  
بِقُدْرَتِكَ وَاسْأَلُكَ مِنْ فَضْلِكَ الْعَظِیْمِ فَاِنَّكَ  
تَقْدِرُ وَلَا اَقْدِرُ وَتَعْلَمُ وَلَا اَعْلَمُ وَاَنْتَ عَلَامُ الْغُیُوْبِ  
اَللّٰهُمَّ اِنْ كُنْتَ تَعْلَمُ اَنَّ هَذَا الْاَمْرَ خَیْرٌ لِّیْ فِیْ  
دِیْنِیْ وَمَعَاشِیْ وَعَاقِبَةِ اَمْرِیْ اَوْ قَالَ عَاجِلِ اَمْرِیْ  
وَاجِلِهِ فَاقْدِرْهُ لِیْ وَیَسِّرْهُ لِیْ ثُمَّ بَارِكْ لِیْ فِیْهِ وَاِنْ  
كُنْتَ تَعْلَمُ اَنَّ هَذَا الْاَمْرَ شَرٌّ لِّیْ فِیْ دِیْنِیْ وَمَعَاشِیْ  
وَعَاقِبَةِ اَمْرِیْ اَوْ قَالَ فِیْ عَاجِلِ اَمْرِیْ وَاجِلِهِ  
فَاَصْرِفْهُ عَنِّیْ وَاصْرِفْنِیْ عَنْهُ وَاَقْدِرْ لِیْ الْخَیْرَ حَیْثُ  
كَانَ ثُمَّ رَضِّنِیْ بِهٖ

फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ तुम जहाँ भी हो मुझ पर दुरुद पढ़ो कि तुम्हारा दुरुद मुझ तक पहुँचता है।

ऐ अल्लाह (عَزَّوَجَلَّ) मैं तेरे इल्म के साथ तुझ से ख़ैर त़लब करता (करती) हूँ और तेरी कुदरत के ज़रीए से त-लबे कुदरत करता (करती) हूँ और तुझ से तेरा फ़ज़ले अज़ीम मांगता (मांगती) हूँ क्यूं कि तू कुदरत रखता है और मैं कुदरत नहीं रखता (रखती) तू सब कुछ जानता है और मैं नहीं जानता (जानती) और तू तमाम पोशीदा बातों को ख़ूब जानता है ऐ अल्लाह (عَزَّوَجَلَّ) अगर तेरे इल्म में येह अम्र (जिस का मैं क़स्द व इरादा रखता (रखती) हूँ) मेरे दीन व ईमान और मेरी ज़िन्दगी और मेरे अन्जामे कार में दुनिया व आख़िरत में मेरे लिये बेहतर है तो इस को मेरे लिये मुक़द्दर कर दे और मेरे लिये आसान कर दे फिर इस में मेरे वासिते ब-र-कत कर दे। ऐ अल्लाह (عَزَّوَجَلَّ) अगर तेरे इल्म में येह काम मेरे लिये बुरा है मेरे दीन व ईमान मेरी ज़िन्दगी और मेरे अन्जामे कार दुनिया व आख़िरत में तो इस को मुझ से और मुझ को इस से फ़ैर दे और जहाँ कहीं बेहतरी हो मेरे लिये मुक़द्दर कर फिर उस से मुझे राज़ी कर दे।

(صَحِيحُ الْبُخَارِيِّ، ج ١ ص ٣٩٣، حَدِيثُ ١١٦٢، رَدُّ الْمُنْخَارِ، ج ٢ ص ٥٦٩)

أَوْ قَالَ عَاجِلٍ أَمْرٍ में "أَوْ" शके रावी है, फु-क़हा फ़रमाते हैं कि जम्अ करे या'नी यूं कहे : وَعَاقِبَةُ أَمْرِي وَعَاجِلُ أَمْرِي وَإِجْلِهِ : (غَيْبُهُ، ص ٤٣١) मस्अला : हज़ और जिहाद और दीगर नेक कामों में नफ़से फ़ैल के लिये इस्तिख़ारा नहीं हो सकता, हां ता'यीने वक़्त (या'नी वक़्त मुक़र्रर करने) के लिये कर सकते हैं। (ऐज़न)

**नमाज़े इस्तिख़ारा में कौन सी सूरतें पढ़ें**

मुस्तहब येह है कि इस दुआ के अव्वल आख़िर اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ और दुरुद शरीफ़ पढ़े और पहली रकअत में قُلْ يَا أَيُّهَا الْكَافِرُونَ और दूसरी<sup>२</sup> में

फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ जिसने मुझ पर दस मर्तबा सुब्ह और दस मर्तबा शाम दुरुदे पाक पढ़ा उसे कियात के दिन मेरी शफ़ाअत मिलेगी।

اللّٰهُ पढ़े और बा'ज मशाइख़ फ़रमाते हैं कि पहली में

وَرَبَّكَ يَخْلُقُ مَا يَشَاءُ وَيَخْتَارُ ۚ مَا كَانَ لَهُمُ الْخِيَرَةُ ۚ

سُبْحَانَ اللَّهِ وَتَعَالَى عَمَّا يُشْرِكُونَ ① ۝ وَرَبَّكَ يَعْلَمُ مَا تُكِنُّ صُدُورُهُمْ وَمَا

يَعْلَمُونَ ② (پ ۲۰، الْقَصَص: ۶۸، ۶۹)

और दूसरी<sup>२</sup> में

وَمَا كَانَ لَكُمْ مِنْ وَلَا مُؤْمِنًا إِذَا

قَضَى اللَّهُ وَرَسُولُهُ أَمْرًا أَنْ يَكُونَ لَهُمُ الْخِيَرَةُ مِنْ أَمْرِهِمْ ۚ وَمَنْ يَعْصِ اللَّهَ

وَرَسُولَهُ فَقَدْ ضَلَّ صُلًى مُبِينًا ③ (پ ۲۲، الْأَحْزَاب: ३۶)

पढ़े।

(رَدُّ الْمُتَحَرِّجِ २ ص ०७०)

बेहतर यह है कि सात बार इस्तिख़ारा करे कि एक हदीस में  
عَزَّوَجَلَّ है : “ऐ अनस ! जब तू किसी काम का क़स्द करे तो अपने रब  
से उस में सात बार इस्तिख़ारा कर फिर नज़र कर तेरे दिल में क्या  
गुज़रा कि बेशक उसी में ख़ैर है।” (ऐज़न)

और बा'ज मशाइख़े किराम رَحِمَهُمُ اللَّهُ السَّلَام से मन्कूल है कि  
दुआए मज़कूर पढ़ कर बा त़हारत क़िब्ला रू सो रहे अगर ख़्वाब में  
सफ़ेदी या सब्ज़ी देखे तो वोह काम बेहतर है और सियाही या सुर्ख़ी  
देखे तो बुरा है उस से बचे। (ऐज़न)

इस्तिख़ारा का वक़्त उस वक़्त तक है कि एक तरफ़ राय पूरी  
जम न चुकी हो।

(बहारे शरीअत, हिस्सा : 4, स. 32)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ا صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ जिसने किताब में मुझ पर दुरूदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फिरिस्ते उस के लिये इस्तिफ़ार करते रहेंगे।

## सलातुल अव्वाबीन की फ़ज़ीलत

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رضي الله تعالى عنه से रिवायत है कि ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सखावत, पैकरे अ-ज-मतो शराफ़त, महबूबे रब्बुल इज़्ज़त, मोहसिने इन्सानियत صلى الله تعالى عليه وآله وسلم ने फ़रमाया : “जो मग़रिब के बा'द छ<sup>०</sup> रकअतें इस तरह अदा करे कि इन के दरमियान कोई बुरी बात न कहे तो ये छ<sup>०</sup> रकअतें बारह<sup>१२</sup> साल की इबादत के बराबर होंगी।”

(सुनन अर्थि माज़ह, ज २, ص ६० حديث ११६७)

## नमाज़े अव्वाबीन का तरीक़ा

मग़रिब की तीन<sup>३</sup> रकअत फ़र्ज़ पढ़ने के बा'द छ<sup>०</sup> रकअत एक ही निय्यत से पढ़िये, हर दो<sup>२</sup> रकअत पर का'दह कीजिये और इस में अत्तहिय्यात, दुरूदे इब्राहीम और दुआ पढ़िये, पहली, तीसरी<sup>३</sup> और पांचवीं<sup>५</sup> रकअत की इब्तिदा में सना, तअव्वुज व तस्मिया (या'नी अरुजु और बिस्मिल्लाह) भी पढ़िये। छटी<sup>६</sup> रकअत के का'दे के बा'द सलाम फैर दीजिये। पहली दो<sup>२</sup> रकअतें सुन्नते मुअक्कदा हुई और बाकी चार<sup>४</sup> नवाफ़िल। ये है अव्वाबीन (या'नी तौबा करने वालों) की नमाज़। (अल वज़ी-फ़तुल करीमा, स. 24, मुलख़ख़सन) चाहें तो दो<sup>२</sup> दो<sup>२</sup> रकअत कर के भी पढ़ सकते हैं। बहारे शरीअत हिस्सा 4 सफ़हा 15 और 16 पर है : बा'दे मग़रिब छ रकअतें मुस्तहब हैं इन को सलातुल अव्वाबीन कहते हैं, ख़्वाह एक सलाम से सब पढ़े या दो<sup>२</sup> से या तीन<sup>३</sup> से और तीन<sup>३</sup> सलाम से या'नी हर दो<sup>२</sup> रकअत पर सलाम फैरना अफ़ज़ल है।

(दुर्रुमख़्तार, रदालमुख़्तार ज २, ص ६४७)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ जो मुझ पर रोज़ जुमुआ दुरुद शरीफ़ पढ़ेगा मैं क़ियामत के दिन उस को शफ़ाअत करूँगा।

## तहिय्यतुल वुजू

वुजू के बा'द आ'जा खुशक होने से पहले दो<sup>२</sup> रकअत नमाज़ पढ़ना मुस्तहब है। (فَرْغُ الْحَرْجِ، ج २، ص ७१३) हज़रते सय्यिदुना उक्बा बिन अमिर رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है, फ़रमाते हैं कि नबिय्ये करीम, रज़ुफ़रहीम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने फ़रमाया : “जो शख्स वुजू करे और अच्छा वुजू करे और ज़ाहिर व बातिन के साथ मु-तवज्जेह हो कर दो<sup>२</sup> रकअत पढ़े, उस के लिये जन्नत वाजिब हो जाती है।”

(صَحِيحُ مُسْلِمٍ، ص १६६، ح २३६)

गुस्ल के बा'द भी दो<sup>२</sup> रकअत नमाज़ मुस्तहब है। वुजू के बा'द फ़र्ज वगैरा पढ़े तो क़ाइम मक़ाम तहिय्यतुल वुजू के हो जाएंगे। (رَدُّ الْمُحْتَارِ، ج २، ص ७१३) मकरूह वक़्त में तहिय्यतुल वुजू और गुस्ल के बा'द वाली दो<sup>२</sup> रकअतें नहीं पढ़ सकते।

صَلُّوا عَلَى الْخَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

## सलातुल असरार

दुआओं की मक़बूबिय्यत और हाज़तों के पूरा होने के लिये एक मुजर्रब (या'नी आज़मूदा) नमाज़ सलातुल असरार भी है जिस को इमाम अबुल हसन नूरुद्दीन अली बिन जरीर लख्मी शतनोफी ने बहजतुल असरार में और हज़रते मुल्ला अली क़ारी क़ारी رَحْمَةُ اللَّهِ الْبَارِی عَلَيْهِ ने हज़ूरे ग़ौसे और शैख़ अब्दुल हक़ मुहद्दिसे देहलवी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِی ने हज़ूरे ग़ौसे आ'ज़म رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत करते हुए तहरीर फ़रमाया है। इस की तरकीब यह है कि बा'द नमाज़े मग़रिब सुन्नतें पढ़ कर दो<sup>२</sup> रकअत नमाज़ नफ़ल पढ़े और बेहतर यह है कि اَلْحَمْدُ के बा'द हर रकअत में

फरमाने मुस्तफा ﷺ जिसने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह तआला उस पर दस रहमतें भेजता है।

ग्यारह ग्यारह मर्तबा **قُلْ هُوَ اللَّهُ** पढ़े सलाम के बा'द **अल्लाह** की हम्दो सना करे (म-सलन हम्दो सना की निय्यत से सू-रतुल फातिहा पढ़ ले) फिर नबी **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** पर ग्यारह बार दुरूदो सलाम अर्ज करे और ग्यारह बार यह कहे :

**يَا رَسُولَ اللَّهِ يَا نَبِيَّ اللَّهِ اغْنِنِي وَأَمْدُدْنِي فِي قَضَائِ حَاجَتِي يَا قَاضِيَ الْحَاجَاتِ**  
तरजमा : ऐ अल्लाह **عَزَّوَجَلَّ** के रसूल ! ऐ अल्लाह **عَزَّوَجَلَّ** के नबी ! मेरी फरियाद को पहुंचिये और मेरी मदद कीजिये, मेरी हाजत पूरी होने में, ऐ तमाम हाजतों के पूरा करने वाले।

फिर इराक की जानिब ग्यारह कदम चले और हर कदम पर यह कहे :  
**يَا غَوْثَ الثَّقَلَيْنِ يَا كَرِيمَ الطَّرْفَيْنِ اغْنِنِي وَأَمْدُدْنِي فِي قَضَائِ حَاجَتِي يَا قَاضِيَ الْحَاجَاتِ**

(तरजमा : ऐ जिन्न व इन्स के फरियाद रस और ऐ दोनों<sup>2</sup> तरफ़ (या'नी मां बाप दोनों<sup>2</sup> ही की जानिब) से बुजुर्ग ! मेरी फरियाद को पहुंचिये और मेरी मदद कीजिये मेरी हाजत पूरी होने में, ऐ हाजतों के पूरा करने वाले।) फिर हुजुरे अक्दस **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** को वसीला बना कर **अल्लाह** तआला से अपनी हाजत के लिये दुआ मांगे। (अ-रबी दुआओं के साथ तरजमा पढ़ना ज़रूरी नहीं) (बहारे शरीअत, हिस्सा : 4, स. 35, बहजतुल असरार, स. 197)

**हुस्ने निय्यत हो, ख़ता फिर कभी करता ही नहीं**

**आजमाया है यगाना है दोगाना तेरा**

**صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ا صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ**

**सलातुल हाजात**

हज़रते सय्यिदुना हुजैफ़ा **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** से रिवायत है कि  
“जब हुजुरे अकरम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम, रसूले मुहूतशम,  
**शाफ़ेए उमम** **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** को कोई अम्मे अहम पेश आता तो

फरमाने मुस्तफा ﷺ जो शख्स मुझ पर दुरुदे पाक पढ़ना भूल गया वोह जन्नत का रास्ता भूल गया ।

नमाज़ पढ़ते ।”

(سنن أبوداؤد، حلیت ۱۳۱۹ ج ۲ ص ۵۲)

इस के लिये दो या चार रकअत पढ़े । हदीसे पाक में है :

“पहली रकअत में सूरए फातिहा और तीन बार आ-यतुल कुरसी पढ़े और बाकी तीन रकअतों में सूरए फातिहा और **قُلْ هُوَ اللَّهُ** और **قُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ** और **قُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ النَّاسِ** एक एक बार पढ़े, तो येह ऐसी हैं जैसे शबे क़द्र में चार रकअतें पढ़ीं ।” (बहारे शरीअत, हिस्सा : 4, स. 34) मशाइखे किराम **رحمهم الله السلام** फरमाते हैं : कि हम ने येह नमाज़ पढ़ी और हमारी हाजतें पूरी हुई । (ऐज़न) हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन औफी **رضي الله تعالى عنه** से रिवायत है कि हुज़ुरे अक़दस **صلى الله تعالى عليه وآله وسلم** फरमाते हैं : जिस की कोई हाजत अल्लाह **عز وجل** की तरफ़ हो या किसी बनी आदम (या'नी इन्सान) की तरफ़ तो अच्छी तरह वुजू करे फिर दो<sup>2</sup> रकअत नमाज़ पढ़ कर अल्लाह **عز وجل** की सना करे और नबी **صلى الله تعالى عليه وآله وسلم** पर दुरुद भेजे फिर येह पढ़े :

لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ الْحَلِيمُ الْكَرِيمُ سُبْحَانَ اللَّهِ رَبِّ  
الْعَرْشِ الْعَظِيمِ الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ أَسْأَلُكَ  
مُوجِبَاتِ رَحْمَتِكَ وَعَزَائِمَ مَغْفِرَتِكَ وَالْغَنِيْمَةَ مِنْ  
كُلِّ بَرٍّ وَالسَّلَامَةَ مِنْ كُلِّ إِثْمٍ لَا تَدْعُ لِي ذَنْبًا إِلَّا  
عَفَرْتَهُ وَلَا مَهْمًا إِلَّا فَرَجْتَهُ وَلَا حَاجَةَ هِيَ لَكَ رِضًا  
إِلَّا قَضَيْتَهَا يَا أَرْحَمَ الرَّاحِمِينَ

(سنن الترمذی، حلیت ۴۷۸ ج ۲ ص ۲۱)



फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ जिसने मुझ पर एक बार दूरूदे पाक पढ़ा अल्लाह तआला उस पर दस रहमतें भेजता है।

तरजमा : अल्लाह ﷻ के सिवा कोई मा'बूद नहीं जो हलीम व करीम है, पाक है अल्लाह ﷻ मालिक है अर्शे अज़ीम का, हम्द है अल्लाह ﷻ के लिये जो रब है तमाम जहां का, मैं तुझ से तेरी रहमत के अस्वाब मांगता (मांगती) हूं और तलब करता (करती) हूं तेरी बख़्शिश के ज़राएअ और हर नेकी से ग़नीमत और हर गुनाह से सलामती को, मेरे लिये कोई गुनाह बिगैर मग़्फ़िरत न छोड़ और हर ग़म को दूर कर दे और जो हाज़त तेरी रिज़ा के मुवाफ़िक़ है उसे पूरा कर दे ऐ सब मेहरबानों से ज़ियादा मेहरबान।

### नाबीना को आंखें मिल गईं

हज़रते सय्यिदुना उस्मान बिन हुनैफ़ رضی اللہ تعالیٰ عنہ से रिवायत है कि एक नाबीना सहाबी رضی اللہ تعالیٰ عنہ ने बारगाहे रिसालत में हाज़िर हो कर अर्ज़ की : अल्लाह ﷻ से दुआ कीजिये कि मुझे आफ़ियत दे। इर्शाद फ़रमाया : “अगर तू चाहे तो दुआ करूं और चाहे तो सब्र कर और येह तेरे लिये बेहतर है।” उन्होंने ने अर्ज़ की : हुज़ूर ! दुआ फ़रमा दीजिये। उन्हें हुक्म फ़रमाया : कि वुजू करो और अच्छा वुजू करो और दो रकअत नमाज़ पढ़ कर येह दुआ पढ़ो :

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُکَ وَ اَتَوْسَّلُ وَ اَتَوَجَّهْ اِلَیْکَ بِنَبِّیْکَ  
مُحَمَّدٍ نَّبِیِّ الرَّحْمَةِ یَا رَسُوْلَ اللّٰهِ اِنِّیْ تَوَجَّهْتُ بِکَ  
اِلٰی رَبِّیْ فِیْ حَاجَتِیْ هَذِهِ لِتُقْضٰی لِیْ اَللّٰهُمَّ فَشَفِّعْهُ فِیَّ

1: हदीसे पाक में इस जगह “या मुहम्मद” (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم) है। मगर मुजहिदे आ'ज़म, आ'ला हज़रत इमाम अहमद रज़ा ख़ान رحمۃ الرحمن ने “या मुहम्मद” (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم) कहने के बजाए, या रसूलल्लाह (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم) कहने की ता'लीम दी है।)

फरमाने मुस्तफा ﷺ जिसने मुझ पर दस मरतबा दुरुदे पाक पढ़ा अल्लाह तआला उस पर सौ रहमतें भेजता है।

तरजमा : ऐ अल्लाह ! मैं तुझ से सुवाल करता हूं और तवस्सुल करता हूं और तेरी तरफ मु-तवज्जेह होता हूं तेरे नबी मुहम्मद ﷺ के जरीए से जो नबिय्ये रहमत हैं। या रसूलल्लाह ! (ﷺ) मैं हुजूर ﷺ के जरीए से अपने रब की तरफ इस हाजत के बारे में मु-तवज्जेह होता हूं, ताकि मेरी हाजत पूरी हो। “इलाही ! इन की शफाअत मेरे हक में कबूल फरमा।”

सय्यिदुना उस्मान बिन हुनैफ़ رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ फरमाते हैं : “खुदा की कसम ! हम उठने भी न पाए थे, बातें ही कर रहे थे कि वोह हमारे पास आए, गोया कभी अन्धे थे ही नहीं।”

(سُنَنِ ابْنِ مَسَاكَةَ، ج ٢ ص ١٥٦ ح ١٣٨٥ سُنَنِ التِّرْمِذِيِّ، ص ٣٣٦ ج ٥ ح ٣٥٨٩)

الْمُعْجَمُ الْكَبِيرُ، ج ٩ ص ٣٠ ح ٨٣١١، بهار شریعت، حصہ ٢ ص ٣٤)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! शैतान जो येह वस्वसा डालता है कि सिर्फ “या अल्लाह” कहना चाहिये “या रसूलल्लाह” नहीं कहना चाहिये, اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ ﷻ इस हदीसे मुबारक ने शैतान के इस इन्तिहाई खतरनाक वस्वसे को भी जड़ से उखाड़ दिया कि अगर “या रसूलल्लाह” कहना जाइज न होता तो खुद हमारे प्यारे आका मदीने वाले मुस्तफा ﷺ इस की क्यों ता’लीम देते ? बस झूम झूम कर “या रसूलल्लाह” के ना’रे लगाते जाइये।

या रसूलल्लाह के ना’रे से हम को प्यार है

जिस ने येह ना’रा लगाया उस का बेड़ा पार है

صَلُّوا عَلَى الْخَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

फरमाने मुस्तफा ﷺ तुम जहां भी हो मुझ पर दूरद पढ़ो कि तुम्हारा दूरद मुझ तक पहुंचता है।

## गहन की नमाज़

हज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अश्शरी رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से मरवी है कि शहन्शाहे खुश खिसाल, पैकरे हुस्नो जमाल, दाफ़े रन्जो मलाल, साहिबे जूदो नवाल, रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल ﷺ के अहदे करीम (या'नी मुबारक ज़माने) में एक मर्तबा आप़ताब में गहन लगा, आप ﷺ मस्जिद में तशरीफ़ लाए और बहुत तबील कियाम व रुकूअ व सुजूद के साथ नमाज़ पढ़ी कि मैं ने कभी ऐसा करते न देखा और येह फ़रमाया कि अल्लाह عزّوجلّ किसी की मौत व हयात के सबब अपनी येह निशानियां जाहिर नहीं फ़रमाता, बल्कि इन से अपने बन्दों को डराता है, लिहाज़ा जब इन में से कुछ देखो तो ज़िक्र व दुआ व इस्तिफ़ार की तरफ़ घबरा कर उठो। (صَحِيحُ الْبُخَارِيِّ ج ١ ص ٣٦٣ حديث ١٠٥٩) सूरज गहन की नमाज़ सुन्नते मुअक्कदा और चांद गहन की नमाज़ मुस्तहब है।

(فَرْمَنْتَار ج ٣ ص ٨٠)

## गहन की नमाज़ पढ़ने का तरीक़ा

येह नमाज़ और नवाफ़िल की तरह दो रकअत पढ़ें या'नी हर रकअत में एक रुकूअ और दो सज्दे करें न इस में अज़ान है, न इक़ामत, न बुलन्द आवाज़ से क़िराअत, और नमाज़ के बा'द दुआ करें यहां तक कि आप़ताब खुल जाए और दो रकअत से ज़ियादा भी पढ़ सकते

फरमाने मुस्तफा ﷺ जिसने मुझ पर दस मर्तबा सुब्ह और दस मर्तबा शाम दुरूदे पाक पढ़ा उसे कियामत के दिन मेरी शफाअत मिलेगी।

हैं ख्वाह दो, दो रक्अत पर सलाम फैरें या चार पर।

(बहारे शरीअत, हिस्सा : 4, स. 136)

ऐसे वक़्त गहन लगा कि उस वक़्त नमाज़ पढ़ना मम्मूअ है तो नमाज़ न पढ़ें, बल्कि दुआ में मशगूल रहें और इसी हालत में डूब जाए तो दुआ ख़त्म कर दें और मग़ि़रब की नमाज़ पढ़ें।

(الْخَوْفَةُ النَّبَرَةُ، ص १२४، رَدُّ الْمَحْتَارِ، ج ३ ص ७८)

तेज़ आंधी आए या दिन में सख़्त तारीकी छा जाए या रात में ख़ौफ़नाक रोशनी हो या लगातार कसरत से मींह बरसे या ब कसरत ओले पड़ें या आस्मान सुख़ हो जाए या बिज्लियां गिरे या ब कसरत तारे टूटें या त़ाऊन वगैरा वबा फैले या ज़ल्ज़ले आए या दुश्मन का ख़ौफ़ हो या और कोई दहशत नाक अम्र पाया जाए इन सब के लिये दो रक्अत नमाज़ मुस्तहब है। (عَالَمُ الْكِبَرِي، ج १ ص १०३، دُرِّ الْمُحْتَارِ، ج ३ ص ८०، وَغَيْرُهُمَا)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

## नमाज़े तौबा

हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिदीक़ रَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है कि हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़लाक फ़रमाते हैं : “जब कोई बन्दा गुनाह करे फिर वुजू कर के नमाज़ पढ़े फिर इस्तिफ़ार करे, अल्लाह तआला उस के गुनाह बख़्शा देगा।” फिर येह आयत पढ़ी :

फरमाने मुस्तफा ﷺ मुझ पर दुरदे पाक की कसूरत करो बेशक यह तुम्हारे लिये त्हा रह है ।

तर-ज-मए कन्जुल ईमान : और वोह  
 कि जब कोई बे हयाई या अपनी जानों पर  
 जुल्म करें अल्लाह (عَزَّوَجَلَّ) को याद कर  
 के अपने गुनाहों की मुआफी चाहें और  
 गुनाह कौन बख्शो सिवा अल्लाह (عَزَّوَجَلَّ)  
 के ? और अपने किये पर जान बूझ कर  
 अड़ न जाएं ।  
 (سُنَنِ التِّرْمِذِيِّ، ج ۱ ص ۴۱۰ ح ۴۰۶)  
 صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ  
 (پ ۴، ال عمران: ۱۳۵)

### इशा के बा'द दो नफल क्व सवाब

हजरते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन अब्बास رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا  
 से रिवायत है, उन्होंने ने फरमाया : जो इशा के बा'द दो रकअत पढ़ेगा  
 और हर रकअत में सूरए फातिहा के बा'द पन्दरह बार  
 पढ़ेगा अल्लाह तआला उस के लिये जन्नत में दो ऐसे महल ता'मीर  
 करेगा जिसे अहले जन्नत देखेंगे ।  
 (تَفْسِيرُ دُرِّ مَثُورٍ ج ۸ ص ۶۸۱)

﴿ ۱ ﴾ صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ  
 सुन्नते अस्स के बारे में दो फरामैने मुस्तफा  
 “जो अस्स से पहले चार रकअतें पढ़े, अल्लाह तआला उस के बदन  
 को आग पर हराम फरमा देगा ।” (۲۸۱ حديث ۶۱۱)  
 ﴿ ۲ ﴾ “जो अस्स से पहले चार रकअतें पढ़े, उसे आग न छूएगी ।”  
 (لَمَعَنُكَمُ الْكَافِرُ لِلطَّبْرَانِيِّ، ج ۲ ص ۲۳ ح ۲۸۱ حديث ۶۱۱)  
 (لَمَعَنُكَمُ الْآوَسُطُ لِلطَّبْرَانِيِّ، ج ۲ ص ۷۷ حديث ۲۵۸۰)

फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ जिसने किताब में मुझ पर दुरुदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फ़िरिस्ते उस के लिये इस्तिफ़ार करते रहेंगे।

## जोहर के आख़िरी दो नफ़ल के भी क्या कहने

जोहर के बा'द चार रकअत पढ़ना मुस्तहब है कि हदीसे पाक में फ़रमाया : जिस ने जोहर से पहले चार और बा'द में चार पर मुहा-फ़ज़त की अल्लाह तअ़ला उस पर आग़ ह़राम फ़रमा देगा।  
 عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْقَوِيْ (سُنَنِ النَّسَائِي ص ३१० حديث १११२) अल्लामा सय्यिद तहतावी  
 फ़रमाते हैं : सिरे से आग में दाख़िल ही न होगा और उस के गुनाह मिटा दिये जाएंगे और उस पर (हुकूकुल इबाद या'नी बन्दों की हक़ त-लफ़ियों के) जो मुता-लबात हैं अल्लाह तअ़ला उस के फ़रीक़ को राज़ी कर देगा या येह मल्लब है कि ऐसे कामों की तौफ़ीक़ देगा जिन पर सज़ा न हो। (حَاثِيَةُ الطُّحَطَاوِي عَلَى الدَّرَج १ ص २८६) और अल्लामा शामी  
 فَرَمَاتِهِ : उस के लिये बिशारत येह है कि सआदत पर उस का ख़ातिमा होगा और दोज़ख़ में न जाएगा।

(رَدُّ الْمُخْتَار ج २ ص ५६७)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! اِنْحَمِدُوا لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ जहां जोहर की दस रकअत नमाज़ पढ़ लेते हैं वहां आख़िर में मज़ीद दो रकअत नफ़ल पढ़ कर बारहवीं शरीफ़ की निस्बत से 12 रकअत करने में देर ही कितनी लगती है ! इस्तिक़ामत के साथ दो नफ़ल पढ़ने की निय्यत फ़रमा लीजिये।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَى مُحَمَّدٍ

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ  
 مَا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

## फैजाने रोज़ा

بِسْمِ اللَّهِ

### दुरूद शरीफ की फज़ीलत

रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम, रहमते आलम, शाहे बनी आदम, रसूले मुहूतशम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने रहमत निशान है : कियामत के रोज़ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के अर्श के सिवा कोई साया नहीं होगा, तीन शख्स अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के अर्श के साए में होंगे । अर्ज की गई : या रसूलल्लाह صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ वोह कौन लोग होंगे ? इर्शाद फ़रमाया (1) वोह शख्स जो मेरे उम्मती की परेशानी को दूर करे (2) मेरी सुन्नत को ज़िन्दा करने वाला (3) मुझ पर कसरत से दुरूद शरीफ पढ़ने वाला ।

(الْبُدُورُ السَّافِرَةُ فِي أُمُورِ الْآخِرَةِ لِلْسَيُوطِيِّ رَحِمَهُ اللَّهُ ص ١٣١ حَدِيث ٣٦٦)

صَلُّوا عَلَى الْخَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

### नफ़ल रोज़ों के दीनी व दुन्यवी फ़वाइद

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! फ़र्ज रोज़ों के इलावा नफ़ल रोज़ों की भी आदत बनानी चाहिये कि इस में बे शुमार दीनी व दुन्यवी फ़वाइद हैं । और सवाब तो इतना है कि जी चाहता है बस रोज़े रखते ही चले जाएं । मज़ीद दीनी फ़वाइद में ईमान की हिफ़ाज़त, जहन्नम से नजात और जन्नत का हुसूल शामिल हैं और जहां तक दुन्यवी

फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ मुझ पर कसूरत से दूरदे पाक पढ़ो बेशक तुम्हारा मुझ पर दूरदे पाक पढ़ना तुम्हारे गुनाहों के लिये माफ़िफ़रत है।

फ़वाइद का तअल्लुक है तो दिन के अन्दर खाने पीने में सफ़ होने वाले वक्त और अख़राजात की बचत, पेट की इस्लाह और बहुत सारे अमराज से हिफ़ाज़त का सामान है। और तमाम फ़वाइद की अस्ल येह है कि इस से अल्लाह ﷻ राजी होता है।

“मेरे ग़ौसी आ'नम” के ब्यासह हुरूफ़ की निखत से नफ़ली शेजों के फ़ज़ाइल पर मुश्तमिल 11 शिवायात

### (1) जन्नत का अनोखा दरख़्त

हज़रते सय्यिदुना कैस बिन ज़ैद जुहन्नी رضى الله تعالى عنه से रिवायत है, अल्लाह ﷻ के महबूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अनिल उयूब صلى الله تعالى عليه وآله وسلم का फ़रमाने जन्नत निशान है : “जिस ने एक नफ़ली रोज़ा रखा अल्लाह ﷻ उस के लिये जन्नत में एक दरख़्त लगाएगा जिस का फल अनार से छोटा और सेब से बड़ा होगा। वोह (मोम से अलग न किये हुए) शहद जैसा मीठा और (मोम से अलग किये हुए ख़ालिस शहद की तरह) खुश ज़ाएक़ा होगा। अल्लाह ﷻ बरोज़े क़ियामत रोज़ादार को उस दरख़्त का फल खिलाएगा।” (المُعْتَمَلُ كَثِيرٌ ج ١ ص ٣٦٦ حديث ٩٣٥)

### (2) 40 साल का फ़ासिला दोज़ख़ से दूरी

ताजदारे रिसालत, शफ़ीए रोज़े क़ियामत صلى الله تعالى عليه وآله وسلم का फ़रमाने ढारस निशान है : “जिस ने सवाब की उम्मीद रखते हुए एक नफ़ल रोज़ा रखा अल्लाह ﷻ उसे दोज़ख़ से चालीस साल (का फ़ासिला) दूर फ़रमा देगा।” (كَتَرُ الْعَمَالِ ج ٨ ص ٢٥٥ حديث ٢٤١٤٨)



फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ जो मुख पर एक मरतबा दुरूद शरीफ़ पढ़ता है अल्लाह तआला उस के लिये एक कीरात अज़्र लिखता है और कीरात उद्दुद पहाड़ जितना है।

### (3) दोजख़ से 50 साल की मशाफ़त दूरी

अल्लाह ﷻ के प्यारे नबी, मक्की म-दनी ﷺ का फ़रमाने अफ़ि़य्यत निशान है : “जिस ने रिज़ाए इलाही के लिये एक दिन का नफ़ल रोज़ा रखा तो अल्लाह ﷻ उस के और दोजख़ के दरमियान एक तेज़ रफ़्तार सुवार की पचास साला मसाफ़त का फ़ासिला फ़रमा देगा।” (क़त्तलुल मुत्तल ८/२०० हदीथ २६१६)

### (4) ज़मीन भर सोने से भी ज़ियादा सवाब

अल्लाह ﷻ के प्यारे हबीब, हबीबे लबीब, हम गुनाहों के मरीजों के तबीब ﷻ का फ़रमाने रग़बत निशान है : “अगर किसी ने एक दिन नफ़ल रोज़ा रखा और ज़मीन भर सोना उसे दिया जाए जब भी उस का सवाब पूरा न होगा उस का सवाब तो क़ियामत के ही दिन मिलेगा।” (अल्मुसन्द अबी य़ुसुफ़ ५/३०२ हदीथ ६१०६)

### (5) जहन्नम से बहुत ज़ियादा दूरी

हज़रते सय्यिदुना इब्ना बिन अब्दे सु-लमी رضی اللّٰह तَعَالٰی عَنْهُ से मरवी है कि अल्लाह ﷻ के प्यारे रसूल, रसूले मक्बूल, सय्यिदा आमिना के गुलशन के महक्ते फूल ﷻ का फ़रमाने रहमत निशान है : “जिस ने अल्लाह ﷻ की राह में एक दिन का फ़र्ज़ रोज़ा रखा, अल्लाह ﷻ उसे जहन्नम से इतना दूर कर देगा

फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ जिसने मुझे पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह तआला उस पर दस रहमतें भेजता है।

जितना सातों ज़मीनों और आस्मानों के माबैन (या'नी दरमियानी) फ़ासिला है। और जिस ने एक दिन का नफ़ल रोज़ा रखा अल्लाह ﷻ उसे जहन्नम से इतना दूर कर देगा जितना ज़मीनो आस्मान का दरमियानी फ़ासिला है।” (مُعْجَمُ الْكَبِيرِ ج ١٧ ص ١٢٠ حدیث ٢٩٥)

### (6) एक रोज़ा रखने की फ़ज़ीलत

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है कि नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम, महबूबे रब्बे अज़ीम ﷺ का फ़रमाने रहमत निशान है : जो अल्लाह ﷻ की रिज़ा के लिये एक दिन का रोज़ा रखता है अल्लाह ﷻ उसे जहन्नम से इतना दूर कर देता है जितना फ़ासिला एक कव्वा बचपन से बूढ़ा हो कर मरने तक मुसल्लसल उड़ते हुए तै कर सकता है।

(مُسْنَدُ إِمَامِ أَحْمَدَ بْنِ حَنْبَلٍ ج ٣ ص ٦١٩ حدیث ١٠٨١)

### (7) बेह्तरीन अमल

हज़रते सय्यिदुना अबू उमामा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाते हैं मैं ने अर्ज़ की : “या रसूलल्लाह ﷺ ! मुझे कोई अमल बताइये।” इर्शाद फ़रमाया : “रोज़े रखा करो क्यूं कि इस जैसा अमल कोई नहीं।” मैं ने फिर अर्ज़ की, “मुझे कोई अमल बताइये।” फ़रमाया : “रोज़े रखा करो क्यूं कि इस जैसा कोई अमल नहीं।” मैं ने फिर अर्ज़ की, “मुझे कोई अमल बताइये।” फ़रमाया : “रोज़े रखा करो क्यूं कि” इस का कोई मिस्ल नहीं।” (سُنَنِ النَّسَائِيِّ ج ٤ ص ١٦٦)

फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ जब तुम मुसलमानों पर दुर्रदे पाक पढ़ो तो मुझ पर भी पढ़ो बेशक मैं तमाम जहानों के रब का रसूल हूँ।

## (8) रोज़े रखो तन्दुरुस्त हो जाओगे

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رضي الله تعالى عنه से रिवायत है कि सरकारे मदीना, राहते क़ल्बो सीना, फ़ैज़ गन्जीना, साहिबे मुअत्तर पसीना صلى الله تعالى عليه وآله وسلم ने फ़रमाया : जिहाद किया करो खुद कफ़ील हो जाओगे, रोज़े रखो तन्दुरुस्त हो जाओगे और सफ़र किया करो ग़नी (या'नी मालदार) हो जाओगे।"

(المُعْتَمُ الْأَوْسَطُ ج ٦ ص ١٤٦ حديث ٨٣١٢)

## (9) सोने के दस्तर ख़्वान

हज़रते सय्यिदुना अबू दर्दा رضي الله تعالى عنه ने फ़रमाया : रोज़ादार का हर बाल उस के लिये तस्बीह करता है, बरोजे क़ियामत अर्श के नीचे रोज़ेदारों के लिये मोतियों और जवाहिर से जड़ा हुवा सोने का ऐसा दस्तर ख़्वान बिछाया जाएगा जो इहातए दुन्या के बराबर होगा, इस पर किस्म किस्म के जन्नती खाने, मशरूब और फल फ़ूट होंगे वोह खाएं पियेंगे और ऐशो इशरत में होंगे हालां कि लोग सख़्त हिसाब में होंगे। (الْفَرْدَوْسُ بِمَأْوَرِ الْحَطَابِ ج ٥ ص ٤٩٠ حديث ٨٨٥٣)

## (10) हड्डियां तस्बीह करती हैं

हज़रते सय्यिदुना बुरैदा رضي الله تعالى عنه से मरवी है कि नबिय्ये रहमत, शफ़ीए उम्मत, मालिके जन्नत, महबूबे रब्बुल इज़ज़त صلى الله تعالى عليه وآله وسلم ने (हज़रते सय्यिदुना) बिलाल رضي الله تعالى عنه से

फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ जो मुझ पर रोज़े जुमुआ दूरद शरीफ़ पढ़ेगा मैं क़ियामत के दिन उस को शफ़ाअत करूँगा।

फ़रमाया, “ऐ बिलाल (رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ) ! आओ नाश्ता करें।” तो (हज़रते सय्यिदुना) बिलाल (رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ) ने अर्ज़ की, “मैं रोज़े से हूँ। तो रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया : “हम अपना रिज़्क खा रहे हैं और बिलाल (رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ) का रिज़्क जन्नत में बढ़ रहा है।” फिर फ़रमाया, ऐ बिलाल ! क्या तुम्हें मा'लूम है कि जितनी देर तक रोज़ादार के सामने खाना खाया जाता है तो उस की हड्डियां तस्बीह करती हैं और मलाएका उस के लिये इस्तिग़्फ़ार करते रहते हैं।”

(सुन्न अिन माजह ज २ व ३४८ حديث १७६९)

## (11) रोज़े की हालत में मरने की फ़ज़ीलत

उम्मुल मुअमिनीन हज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीका रَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا से रिवायत है, सरकारे मदीनए मुनव्वरह, सुल्ताने मक्कए मुकर्रमा ﷺ ने फ़रमाया : जो रोज़े की हालत में मरा, अल्लाह तआला क़ियामत तक के लिये उस के हिसाब में रोज़े लिख देगा। (अल्फ़रदुसु बमा'नुर ऱिख़ाब ज ३ व ५०६-५०७ حديث ०००७)

## नेक काम के दौरान मरने की सज़ाअदत

خُش नसीब है वोह मुसलमान जिसे रोज़े की हालत में मौत आए। बल्कि किसी भी नेक काम के दौरान मौत आना निहायत ही अच्छी अलामत है। म-सलन बा वुजू या दौराने नमाज़ मरना, सफ़रे मदीना के दौरान बल्कि मदीनए मुनव्वरह में रूह क़ब्ज़ होना, दौराने हज़ मक्कए मुकर्रमा, मिना, मुज्दलिफ़ा या अ-रफ़ात शरीफ़ में फ़ौतगी, दा 'वते इस्लामी के सुन्नतों की तरबिय्यत

फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ जिसने मुझ पर रोज़े जुमुआ दो सौ बार दुरदे पाक पढ़ा उस के दो सौ साल के गुनाह मुआफ़ होंगे।

के म-दनी क़ाफ़िले में अशिक़ाने रसूल के हमराह सुन्नतों भरे सफ़र के दौरान दुन्या से रुख़्सत होना, येह सब ऐसी अज़ीम सआदतें हैं कि सिर्फ़ खुश नसीबों ही को हासिल होती हैं। इस सिल्सिले में सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان की नेक तमन्नाएं बयान करते हुए हज़रते सय्यिदुना ख़ै-समा رَضِيَ اللّهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाते हैं : सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان इस बात को पसन्द करते थे कि इन्तिक़ाल किसी अच्छे काम म-सलन हज़, उम्रह, ग़ज़वह (जिहाद), र-मज़ान के रोज़े वग़ैरा के बा'द हो।

### कालू चाचा की ईमान अपरोज़ वफ़ात

अच्छे काम के दौरान मौत से हम आगोश होने की सआदत मुक़द्दर वालों ही का हिस्सा है। इस ज़िम्न में तब्लीगे कुरआनो सुन्नत की आलमगीर ग़ैर सियासी तहरीक, दा'वते इस्लामी के इज्तिमाई ए'तिकाफ़ की एक म-दनी बहार मुला-हज़ा फ़रमाइये और ज़िन्दगी भर के लिये दा'वते इस्लामी के म-दनी माहोल से वाबस्ता रहने का अज़्मे मुसम्मम कर लीजिये। चुनान्चे मदी-नतुल औलिया अहमदआबाद शरीफ़ (गुजरात, अल हिन्द) के कालू चाचा (उम्र तक्रीबन 60 बरस) र-मज़ानुल मुबारक (सि. 1425 हि., 2004) के आख़िरी अशरे में शाही मस्जिद (शाहे आलम, अहमदआबाद शरीफ़) में होने वाले तब्लीगे कुरआनो सुन्नत की आलमगीर ग़ैर सियासी तहरीक, दा'वते इस्लामी के इज्तिमाई ए'तिकाफ़ में मो'तकिफ़ हो गए। यूं तो येह पहले ही से दा'वते इस्लामी के म-दनी माहोल

फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ जो शख्स मुझ पर दुरुदे पाक पढ़ना भूल गया वोह जन्नत का रास्ता भूल गया ।

से वाबस्ता थे मगर आशिक़ाने रसूल के साथ इज्तिमाई ए'तिकाफ़ में शुमूलिय्यत पहली ही बार नसीब हुई थी । ए'तिकाफ़ में बहुत कुछ सीखने का मौक़अ मिला और साथ ही साथ दा'वते इस्लामी के 72

म-दनी इन्आमात में से पहली सफ़ में नमाज़ पढ़ने की तरगीब वाले दूसरे म-दनी इन्आम का ख़ूब ज़ब्बा मिला । चुनान्चे उन्होंने ने पहली सफ़ में नमाज़ पढ़ने की आदत बना ली । 2 शव्वालुल मुकर्रम

या'नी ईदुल फ़ित्र के दूसरे रोज़ तीन दिन के म-दनी काफ़िले में आशिक़ाने रसूल के हमराह सुन्नतों भरा सफ़र किया । म-दनी काफ़िले से वापसी के पांच या छ दिन के बा'द या'नी 11 शव्वालुल

मुकर्रम सि. 1425 हि. (2004) को किसी काम से बाज़ार जाना हुवा, मस्रूफ़िय्यत भी थी मगर ताख़ीर की सूरत में पहली सफ़ फ़ैत हो जाने का ख़दशा था । लिहाज़ा सारा काम छोड़ कर मस्जिद का रुख़ किया

और अज़ान से क़ब्ल ही मस्जिद में पहुंच गए, वुजू कर के जूँ ही खड़े हुए कि गिर पड़े, कलिमा शरीफ़ और दुरुदे पाक पढ़ते हुए उन की रूह क-फ़से उन्सुरी से परवाज़ कर गई । **إِنَّا لِلّٰهِ وَإِنَّا إِلَيْهِ رَاجِعُونَ**

इज्तिमाई ए'तिकाफ़ की ब-र-कत से म-दनी इन्आमात के दूसरे म-दनी इन्आम पहली सफ़ में नमाज़ पढ़ने के मिले हुए ज़ब्बे ने कालू चाचा को इन्तिक़ाल के वक़्त बाज़ार की

ग़फ़लत भरी फ़ज़ाओं से उठा कर मस्जिद की रहमत भरी फ़ज़ाओं में पहुंचा दिया और कैसी खुश नसीबी कि आख़िरी वक़्त कलिमा व दुरुद नसीब हो गया । **سُبْحَنَ اللّٰه !** और जिस को मरते वक़्त कलिमा

फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ जिसने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह तआला उस पर दस रहमतें भेजता है।

शरीफ़ नसीब हो जाए **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** उस का क़ब्रो हशर में बेड़ा पार है।  
 चुनान्चे नबिय्ये रहमत, शफीए उम्मत, मालिके जन्नत, महबूबे रब्बुल  
 इज़्ज़त **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** का फ़रमाने जन्नत निशान है : जिस का  
 आख़िरी कलाम **لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ** हो, वोह दाख़िले जन्नत होगा।  
 (سُنَنِ أَبِي كَلُودٍ ج ٣ ص ٢٥٥ حديث ٢١١٦) मज़ीद दा'वते इस्लामी के  
 म-दनी माहोल की ब-र-कत सुनिये : चुनान्चे इन्तिक़ाल के चन्द  
 रोज़ बा'द उन के फ़रजन्द ने ख़्वाब में देखा कि मर्हूम कालू चाचा  
 सफ़ेद लिबास में मल्बूस सर पर सब्ज़ सब्ज़ इमामा शरीफ़ का ताज  
 सजाए मुस्कराते हुए फ़रमा रहे हैं : बेटा ! दा'वते इस्लामी के  
 म-दनी कामों में लगे रहो कि इसी म-दनी माहोल की ब-र-कत  
 से मुझ पर करम हुवा है।

मौत फ़ज़ले **خُذُّوا** से हो ईमान पर, म-दनी माहोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़  
**خُذُّوا** की रहमत से पाओगे जन्नत में घर, म-दनी माहोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

**صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ**

## हर माह तीन रोज़े रखने का शवाब

हर म-दनी माह (या'नी सिने हिजरी के महीने) में कम अज़  
 कम तीन<sup>3</sup> रोज़े हर इस्लामी भाई और इस्लामी बहन को रख ही लेने  
 चाहियें। इस के बे शुमार दुन्यवी और उख़वी फ़वाइद व फ़ज़ाइल  
 हैं। बेहतर येह है कि येह रोज़े “अय्यामे बीज” या'नी चांद की 13,  
 14 और 15 तारीख़ को रखे जाएं।

फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ जिसने मुझ पर दस मरतबा दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह तआला उस पर सो रहमते भेजता है ।

## “या रब्बे मुहम्मद” के आठ हुरूफ़ की निश्बत से अय्यामे बीज के रोज़ों के मु-तअल्लिक 8 रिवायात

(1) उम्मुल मुअमिनीन हज़रते सय्यि-दतुना हफ़सा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا से रिवायत है, अल्लाह ﷻ के प्यारे हबीब ﷺ चार चीज़ों को नहीं छोड़ते थे (1) आशूरा और (2) अ-श-रए जुल हिज्जा और (3) हर महीने में तीन<sup>3</sup> दिन के रोज़े और (4) फ़ज्र (के फ़र्ज) से पहले दो रकअतें (या'नी दो सुन्नतें) । (سُنَنُ النَّسَائِي ج ٤ ص ٢٢٠)

(2) हज़रते सय्यिदुना इब्ने अब्बास رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا से रिवायत है कि तबीबों के तबीब, अल्लाह ﷻ के हबीब ﷺ चार अय्यामे बीज में बिगैर रोज़े के न होते न सफ़र में न हज़र (या'नी कियाम) में । (سُنَنُ النَّسَائِي ج ٤ ص ١٩٨)

(3) उम्मुल मुअमिनीन हज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीका رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا रिवायत फ़रमाती हैं : “मेरे सरताज, साहिबे मे'राज ﷺ एक महीने में हफ़्ता, इतवार और पीर का जब कि दूसरे माह मंगल, बुध और जुमा रात का रोज़ा रखा करते ।” (سُنَنُ التِّرْمِذِي ج ٢ ص ١٨٦ حديث ٧٤٦)

(4) हज़रते सय्यिदुना उस्मान बिन अबू आस رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाते हैं : “मैं ने सरकारे दो आलम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी



फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ तुम जहाँ भी हो मुझ पर दूरद पड़ो कि तुम्हारा दूरद मुझ तक पहुँचता है।

आदम, रसूले मुहत्तशम ﷺ को फ़रमाते सुना, “जिस तरह तुम में से किसी के पास लड़ाई में बचाव के लिये ढाल होती है उसी तरह रोज़ा जहन्नम से तुम्हारी ढाल है और हर माह तीन दिन रोज़े रखना बेहतरीन रोज़े हैं।”

(صَحِيحُ ابْنِ حَزْمَةَ ج ۳ ص ۳۰۱ حدیث ۲۱۲۰)

(5) हर महीने में तीन दिन के रोज़े ऐसे हैं जैसे दहर या'नी (हमेशा) के रोज़े।

(صَحِيحُ الْبُخَارِيِّ ج ۱ ص ۶۴۹ حدیث ۱۹۷۰)

(6) र-मज़ान के रोज़े और हर महीने में तीन दिन के रोज़े सीने की ख़राबी को दूर करते हैं।

(مُسْتَدْرَأُ إِمَامِ أَحْمَد ج ۹ ص ۳۶ حدیث ۲۳۱۳۲)

(7) जिस से हो सके हर महीने में तीन रोज़े रखे कि हर रोज़ा दस गुनाह मिटाता और गुनाह से ऐसा पाक कर देता है जैसा पानी कपड़े को।

(الْمُعْتَمَدُ الْكَبِيرُ ج ۲ ص ۳۰ حدیث ۶۰)

(8) जब महीने में तीन रोज़े रखने हों तो 13, 14 और 15 को रखो।

(سُنَنِ النَّسَائِيِّ ج ۴ ص ۲۲)

“मुस्तफ़ा” के पांच हुरूफ़ की निस्बत से पीर शरीफ़ और जुमा'रात के रोज़ों के मु-तअल्लिक 5 रिवायात

(1) हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से मरवी है, रसूलुल्लाह ﷺ फ़रमाते हैं : पीर और जुमा'रात को आ'माल पेश होते हैं तो मैं पसन्द करता हूँ कि मेरा अमल उस वक़्त पेश हो कि मैं रोज़ादार हूँ।

(سُنَنِ التِّرْمِذِيِّ ج ۲ ص ۱۸۷ حدیث ۷۴۷)

फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ जिसने मुझ पर दस मर्तबा सुबह और दस मर्तबा शाम दूरूद पाक पढ़ा उसे क़ियामत के दिन मेरी शफ़ाअत मिलेगी ।

(2) **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** के महबूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अनिल उयूब **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** पीर शरीफ़ और जुमा 'रात को रोज़े रखा करते थे इस के बारे में अर्ज़ की गई तो फ़रमाया, इन दोनों दिनों में **अल्लाह** तआला हर मुसलमान की मग़ि़रत फ़रमाता है मगर वोह दो शख़्स जिन्हों ने बाहम जुदाई कर ली है उन की निस्बत मलाएका से फ़रमाता है इन्हें छोड़ दो यहां तक कि सुल्ह कर लें ।

(سُنَنِ ابْنِ مَاجَه ج ٢ ص ٣٤٤ حديث ١٧٤٠)

(3) **उम्मुल मुअमिनीन** हज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीका **رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا** रिवायत फ़रमाती हैं : मेरे सरताज, साहिबे मे'राज **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** पीर और जुमा 'रात के रोज़े का खास ख़याल रखते थे ।

(سُنَنِ التِّرْمِذِي ج ٢ ص ١٨٦ حديث ٧٤٥)

(4) हज़रते सय्यिदुना अबू क़तादा **رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ** फ़रमाते हैं, सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार, रसूलों के सालार, नबियों के सरदार **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** से पीर शरीफ़ के रोज़े का सबब दरयाफ़्त किया गया तो फ़रमाया, इसी में मेरी विलादत हुई, इसी में मुझ पर वह्य नाज़िल हुई ।

(صَحِيح مُسْلِم ص ٥٩١ حديث ١١٦٢)

(5) हज़रते सय्यिदुना उसामा बिन ज़ैद **رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا** के गुलाम **رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ** से मरवी है, फ़रमाते हैं कि सय्यिदुना उसामा बिन ज़ैद **رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ** सफ़र में भी पीर और जुमा 'रात का रोज़ा तर्क नहीं फ़रमाते थे । मैं ने उन की बारगाह में अर्ज़ की, कि क्या वजह

फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ मुझ पर दुरदे पाक की कसूरत करो बेशक येह तुम्हारे लिये त्हा रत है ।

है कि आप ﷺ इस बड़ी उम्र में भी पीर और जुमा 'रात का रोज़ा रखते हैं ? फ़रमाया, रसूलुल्लाह ﷺ पीर और जुमा 'रात का रोज़ा रखा करते थे । मैं ने अर्ज की, या रसूलुल्लाह ﷺ ! क्या वजह है कि आप ﷺ पीर और जुमा 'रात का रोज़ा रखते हैं ? तो इर्शाद फ़रमाया : लोगों के आ'माल पीर और जुमा 'रात को पेश किये जाते हैं ।

(شُعَبُ الْإِيمَان ج ٣ ص ٣٩٢ حديث ٣٨٥٩)

### कीने की ता'रीफ़

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इन अहादीसे मुबा-रका से मा'लूम हुवा कि पीर शरीफ़ और जुमा 'रात को बारगाहे खुदान्दी में बन्दों के आ'माल पेश किये जाते हैं और इन दोनों<sup>2</sup> अय्याम में अल्लाह ﷻ अपनी रहमत से मुसल्मानों की मग़िफ़रत फ़रमा देता है । मगर आपस में किसी दुन्यवी सबब से जुदाई करने वालों को नहीं बख़्शा जाता । वाक़ेई येह बेहद तश्वीश की बात है । आज के दौर में शायद ही कोई कीने से महफूज़ हो । दिल की छुपी हुई दुश्मनी को कीना कहते हैं लिहाज़ा हमें ग़ौर कर के जिस जिस मुसल्मान का दिल में कीना बैठ गया हो उस को दूर करना चाहिये । खुसूसन ख़ानदानी झगड़े हों तो खुद आगे बढ़ कर सुल्ह की तरकीब बनानी चाहिये, इख़लास के साथ कामिल कोशिश के बा वुजूद भी अगर जुदाई ख़त्म करने में नाकामी हुई तो पहल करने वाला अल्लाह ﷻ बरी हो जाएगा । बहर हाल पीर शरीफ़ और जुमा 'रात को हमारे मीठे

फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ जिसने किताब में मुझ पर दुरुदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फिरिश्ते उस के लिये इस्तिफ़ार करते रहेंगे ।

मीठे आका ﷺ रोज़ा रखा करते थे । पीर शरीफ़ के रोज़े का एक सबब अपनी विलादत भी बताया, गोया ताजदारे रिसालत, माहे नुबुव्वत, मालिके कौसर व जन्नत महबुबे रब्बुल इज्जत ﷺ हर पीर शरीफ़ को रोज़ा रख कर अपना यौमे विलादत मनाया करते थे ।

صَلُّوا عَلَى الْخَبِيبِ ا صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

“जन्नत” के तीन<sup>3</sup> हूस्नफ़ की निश्चत से बुध और जुमा’ रात के रोज़ों के 3 फ़ज़ाइल

(1) हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا

से रिवायत है अल्लाह के प्यारे रसूल, रसूले मक्बूल, सय्यिदह आमिना के गुलशन के महक्ते फूल ﷺ का फ़रमाने बिशारत निशान है, जो बुध और जुमा’ रात को रोज़े रखे उस के लिये जहन्नम से आज़ादी लिख दी जाती है । (مُسْنَدُ أَبِي يَعْلَى ج ५ ص ११० حديث ५१०)

(2) हज़रते सय्यिदुना मुस्लिम बिन अब्दुल्लाह क-रशी

رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ अपने वालिदे मुकर्रम رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत करते हैं कि उन्होंने ने बारगाहे रिसालत ﷺ में या तो खुद अर्ज की या किसी और ने दरयाफ़्त किया, या रसूलल्लाह ﷺ में हमेशा रोज़ा रखूं ? सरकार ﷺ ख़ामोश रहे । फिर दूसरी मरतबा अर्ज की, फिर ख़ामोशी इख़्तियार फ़रमाई । तीसरी बार

फरमाने मुस्तफा ﷺ मुझ पर कसरत से दुरूदे पाक पढ़ो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे गुनाहों के लिये मग़्फ़रत है।

पूछने पर इस्तिफ़सार फ़रमाया कि रोज़े के मु-तअल्लिक किस ने सुवाल किया ? अर्ज़ की, मैं ने या नबिय्यल्लाह ﷺ ! तो जवाबन इर्शाद फ़रमाया, बेशक तुझ पर तेरे घर वालों का हक़ है तू र-मज़ान और उस से मुत्तसिल महीने (शव्वाल) और हर बुध और जुमा 'रात को रोज़ा रख कि अगर तू ऐसा करेगा तो गोया तूने हमेशा के रोज़े रखे। (شُعَبُ الْإِيمَان ج ٣ ص ٣٩٥ حديث ٣٨٦٨)

(3) “जिस ने र-मज़ान, शव्वाल, बुध और जुमा 'रात का रोज़ा रखा तो वोह दाख़िले जन्नत होगा।”

(السُّنَنُ الْكُبْرَى لِلنَّسَائِي ج ٢ ص ١٤٧ حديث ٢٧٧٨)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

“करम” केतीन 3 हुस्फ़क्की निख़त से

बुध, जुमा' रात और जुमुआ के रोज़ों के 3 फ़ज़ाइल

(1) हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا

से रिवायत है, सुल्ताने दो जहान, रहमत अल-मियान का फ़रमाने जन्नत निशान है, जिस ने बुध, जुमा 'रात व जुमुआ का रोज़ा रखा अल्लाह तआला उस के लिये जन्नत में एक मकान बनाएगा जिस का बाहर का हिस्सा अन्दर से दिखाई देगा और अन्दर का बाहर से।

(مَجْمَعُ الزَّوَايِد ج ٣ ص ٤٥٢ حديث ٥٢٠٤)

फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ जो मुझ पर एक मरतबा दूरद शरीफ़ पढ़ता है अल्लाह तआला उस के लिये एक क़ीरात अज़्र लिखता है और क़ीरात उहद पहाड़ जितना है।

(2) हज़रते सय्यिदुना अनस رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है कि अल्लाह عزّوجلّ उस के लिये (या'नी बुध, जुमा 'रात व जुमुआ के रोज़े रखने वाले के लिये जन्नत में) मोती और याकूत व ज़बर्जद का महल बनाएगा। और उस के लिये दोज़ख़ से बराअत (या'नी आज़ादी) लिख दी जाएगी। (شُعَبُ الْإِيمَان ج ۳ ص ۳۹۷ حدیث ۳۸۷۳)

(3) हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह इब्ने उमर رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا की रिवायत में है, जो इन तीन दिनों के रोज़े रखे फिर जुमुआ को थोड़ा या ज़ियादा तसद्दुक़ (या'नी ख़ैरात) करे तो जो गुनाह किये हैं बख़्श दिये जाएंगे और ऐसा हो जाएगा जैसे उस दिन कि अपनी मां के पेट से पैदा हुवा था। (الْمُعْتَمَدُ الْكَبِيرُ ج ۱۲ ص ۲۶۶ حدیث ۱۲۳۰۸)

صَلُّوا عَلَى الْكَئِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

“या नूर” के पांच हुरूफ़ की निश्बत से  
जुमुआ के रोज़ों के मु-तअल्लिक 5 फ़ज़ाइल

(1) सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, फैज़ गन्जीना  
रखा तो अल्लाह عزّوجلّ उसे आख़िरत के दस दिनों के बराबर अज़्र अता फ़रमाएगा और उन की ता'दाद अय्यामे दुन्या की तरह नहीं है।”

(شُعَبُ الْإِيمَان ج ۳ ص ۳۹۳ حدیث ۳۸۶۲)

मगर तन्हा जुमुआ का रोज़ा न रखा जाए इस के साथ

फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ जो शख्स मुझ पर दुरुदे पाक पढ़ना भूल गया वोह जन्नत का रास्ता भूल गया ।

जुमा 'रात या हफ़्ता मिला लेना चाहिये । (तन्हा जुमुआ का रोज़ा रखने की मुमा-न-अत की रिवायत आगे आ रही है)

(2) हज़रते सय्यिदुना अबू उमामा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से मरवी है कि मदीने के ताजवर, शफीए रोज़े महशर, महबूबे रब्बे अक्बर ﷺ का फ़रमाने रूह परवर है, “जिस ने जुमुआ अदा किया (या'नी नमाज़े जुमुआ अदा की) और इस दिन का रोज़ा रखा और मरीज़ की इयादत की, और जनाज़े के साथ गया और निकाह की गवाही दी तो उस के लिये जन्नत वाजिब हो गई ।”

(الْمُعْتَمَدُ الْكَبِيرُ ۸ ص ۹۷ حدیث ۷۴۸۴)

(3) हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से मरवी है, रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : “जिस ने रोज़े की हालत में यौमे जुमुआ की सुब्ह की और मरीज़ की इयादत की और जनाज़े के साथ गया और स-दका किया तो उस ने अपने लिये जन्नत वाजिब कर ली ।”

(شُعَبُ الْإِيمَان ج ۳ ص ۳۹۴ حدیث ۳۸۶۴)

(4) हज़रते सय्यिदुना जाबिर बिन अब्दुल्लाह رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से मरवी है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया : जिस ने बरोज़े जुमुआ रोज़ा रखा और मरीज़ की इयादत की और मिस्कीन को खाना खिलाया और जनाज़े के हमराह चला तो उसे चालीस साल के गुनाह लाहिक न होंगे ।

(شُعَبُ الْإِيمَان ج ۳ ص ۳۹۴ حدیث ۳۸۶۵)

(5) हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से मरवी है, सरकारे मदीना ﷺ बहुत कम जुमुआ का

फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ जिसने मुझ पर दस मरतबा दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह तआला उस पर सौ रहमतें भेजता है।

रोज़ा तर्क फ़रमाते थे।

(شُعَبُ الْإِيمَان ج ٣ ص ٣٩٤ حديث ٣٨٦٥)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जिस तरह आशूरा के रोज़े के पहले या बा'द में एक रोज़ा रखना है इसी तरह जुमुआ में भी करना है क्यूं कि खुसूसियत के साथ तन्हा जुमुआ या सिर्फ़ हफ़ता का रोज़ा रखना मक्क़रूहे तन्ज़ीही (या'नी ना पसन्दीदा) है। हां अगर किसी मख़सूस तारीख़ को जुमुआ या हफ़ता आ गया तो तन्हा जुमुआ या हफ़ता का रोज़ा रखने में कराहत नहीं। म-सलन 15 शा'बानुल मुअज़्ज़म, 27 र-जबुल मुरज्ज़ब वगैरा।

صَلُّوا عَلَى الْكَئِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

“फ़ज़ल” के तीन<sup>3</sup> हुस्नफ़ की निस्बत से तन्हा जुमुआ का रोज़ा रखने की मुमा-न-अत की 3 रिवायात

(1) हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ रिवायत करते हैं, मैं ने ताजदार मदीनए मुनव्वरह, सरदार मक्कए मुकर्रमा صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ को फ़रमाते हुए सुना, “तुम में से कोई हरगिज़ जुमुआ का रोज़ा न रखे मगर येह कि इस के पहले या बा'द में एक दिन मिला ले।”

(صَحِيحُ الْبُخَارِيِّ ج ١ ص ٦٥٣ حديث ١٩٨٥)

(2) हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ नबिय्ये करीम, रऊफ़रहीम عَلَيْهِ أَفْضَلُ الصَّلَوةِ وَالتَّسْلِيمِ से रिवायत करते हुए फ़रमाते हैं कि आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इर्शाद फ़रमाया : रातों में से शबे जुमुआ को कियाम के लिये खास न करो और न ही दिनों के दौरान यौमे



फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ तुम जहाँ भी हो मुझ पर दुरूद पढ़ो कि तुम्हारा दुरूद मुझ तक पहुँचता है।

जुमुआ को रोज़े के साथ खास करो मगर येह कि तुम ऐसे रोज़े में हो जो तुम्हें रखना हो। (صحيح مسلم ५७६ حديث ११६६)

(3) हज़रते सय्यिदुना अमिर बिन लुदैन अशअरी رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है कि मैं ने रसूलुल्लाह ﷺ को फ़रमाते हुए सुना, “जुमुआ का दिन तुम्हारे लिये ईद है इस दिन रोज़ा मत रखो मगर येह कि इस से पहले या बा’द में भी रोज़ा रखो।”

(الترغيب والترهيب ج २ ص ८१ حديث १०९२)

इन तीनों अहदीस से मा’लूम हुवा कि तन्हा ज़ुमुआ का रोज़ा न रखना चाहिये। हां अगर कोई खास वजह हो म-सलन २७ र-जबुल मुरज्जब ज़ुमुआ को हो गई तो अब रखने में हरज नहीं।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

हफ़्ता और इतवार के रोज़े के फ़ज़ाइल पर मुश्तमिल दो शिवायात

हज़रते सय्यि-दतुना उम्मे स-लमा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا से मरवी है कि रसूलुल्लाह ﷺ हफ़्ता और इतवार का रोज़ा रखा करते और फ़रमाते, “येह दोनों (हफ़्ता और इतवार) मुशिरकीन की ईद के दिन हैं और मैं चाहता हूँ कि इन की मुखा-लफ़्त करूं।”

(ابن حزيمة ج ३ ص ३१८ حديث २१६७)

तन्हा हफ़्ता का रोज़ा रखना मन्अ है। चुनान्चे हज़रते सय्यिदुना

फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ जिसने मुझ पर दस मर्तबा सुब्ह और दस मर्तबा शाम दुरुदे पाक पढ़ा उसे क़ियामत के दिन मेरी शफ़ाअत मिलेगी।

अब्दुल्लाह बिन बुसर رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ अपनी बहन رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا से रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इश्ाद फ़रमाया : “हफ़्ते के दिन का रोज़ा फ़र्ज रोज़ों के इलावा मत रखो।” हज़रते सय्यिदुना इमाम अबू ईसा तिरमिज़ी رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाते हैं कि येह हदीस हसन है और यहां मुमा-न-अत से मुराद किसी शख्स का हफ़्ते के रोज़े को ख़ास कर लेना है कि यहूदी उस दिन की ता'जीम करते हैं। (مُسْنَدُ التِّرْمِذِيِّ ج ٢ ص ١٨٦ حديث ٧٤٤)

صَلُّوا عَلَى الْخَبِيبِ ا صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

## “या सुल्ताने मदीना” के बारह हुरूफ़ की निश्बत से रोज़ा नफ़ल के 12 म-दनी फूल

(1) मां बाप अगर बेटे को नफ़ल रोज़े से इस लिये मन्अ करें कि बीमारी का अन्देशा है तो वालिदैन की इताअत करे।

(رَدُّ الْمُحْتَار ج ٣ ص ٧٨)

(2) शोहर की इजाज़त के बिगैर बीवी नफ़ल रोज़ा नहीं रख सकती।

(دُرِّ الْمُخْتَار، رَدُّ الْمُخْتَار ج ٣ ص ٧٧)

(3) नफ़ल रोज़ा क़स्दन शुरू करने से पूरा करना वाजिब हो जाता है अगर तोड़ेगा तो क़ज़ा वाजिब होगी।

(دُرِّ الْمُخْتَار ج ٣ ص ٧٣)

(4) नफ़ल रोज़ा जान बूझ कर नहीं तोड़ा बल्कि बिला इख़्तियार टूट गया म-सलन औरत को रोज़े के दौरान हैज़ आ गया तो रोज़ा टूट गया मगर क़ज़ा वाजिब है।

(ऐज़न, स. 374)

फरमाने मुस्तफ़ा ﷺ जिसने किताब में मुझ पर दुरूदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फिरश्ते उस के लिये इस्तिफ़ार करते रहेंगे।

(5) नफ़ल रोज़ा बिला उज़्र तोड़ना ना जाइज़ है। मेहमान के साथ अगर मेज़बान न खाएगा तो उसे या'नी मेहमान को ना गवार गुज़रेगा। या मेहमान अगर खाना न खाए तो मेज़बान को अज़ियत होगी तो नफ़ल रोज़ा तोड़ने के लिये येह उज़्र है बशर्ते कि येह भरोसा हो कि इस की क़ज़ा रख लेगा और येह भी शर्त है कि ज़हूवए कुब्रा से पहले तोड़े बा'द को नहीं। (दُرْمُخْتَار، رَدُّ الْمُخْتَار ج ३ ص ६७०)

(6) वालिदैन् की ना राज़गी के सबब अस्स से पहले तक नफ़ल रोज़ा तोड़ सकता है। बा'दे अस्स नहीं। (दُرْمُخْتَار، رَدُّ الْمُخْتَار ج ३ ص ६७७)

(7) अगर किसी इस्लामी भाई ने दा'वत की तो ज़हूवए कुब्रा से कब्ल रोज़ा नफ़ल तोड़ सकता है मगर क़ज़ा वाजिब है। (दُرْمُخْتَار ج ३ ص ६७७)

(8) इस तरह निय्यत की, कि “कहीं दा'वत हुई तो रोज़ा नहीं और न हुई तो है।” येह निय्यत सहीह नहीं, बहर हाल रोज़ादार नहीं। (आलम गीरी, जि. 1 स. 195)

(9) मुलाज़िम या मज़दूर अगर नफ़ली रोज़ा रखें तो काम पूरा नहीं कर सकते तो “मुस्ताजिर” (या'नी जिस ने मुला-ज़मत या मज़दूरी पर रखा है) की इजाज़त ज़रूरी है। और अगर काम पूरा कर सकते हैं तो इजाज़त की ज़रूरत नहीं। (दُرْمُخْتَار ج ३ ص ६७८)

(10) हज़रते सय्यिदुना दावूद علی نبینا وعلیه السّلوٰة و السّلام एक दिन छोड़ कर एक दिन रोज़ा रखते थे। इस तरह रोज़े रखना “सौमे

फरमाने मुस्तफा ﷺ जो मुझ पर रोजे जुमुआ दुरुद शरीफ पढ़ेगा मैं कियामत के दिन उस की शफाअत करूँगा।

दावूदी" कहलाता है और हमारे लिये येह अफ़ज़ल है। जैसा कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अफ़ज़ल रोज़ा मेरे भाई दावूद (عليه السلام) का रोज़ा है कि वोह एक दिन रोज़ा रखते और एक दिन न रखते और दुश्मन के मुक़ाबले से फ़िरार न होते थे।"

(سُنَنُ التِّرْمِذِي ج ٢ ص ١٩٧ حديث ٧٧٠)

(11) हज़रते सय्यिदुना सुलैमान ﷺ तीन<sup>३</sup> दिन महीने के शुरूअ में, तीन<sup>३</sup> दिन वस्त में और तीन<sup>३</sup> दिन आख़िर में रोज़ा रखा करते थे और इस तरह महीने के अवाइल, अवासित और अवाख़िर में रोज़ादार रहते थे।

(كَتَبُ الْعَمَال ج ٨ ص ٣٠٤ حديث ٢٤٦٢٤)

(12) सारा साल रोजे रखना मक्रूहे तन्ज़ीही है।

(دُرِّمُخْتَار ج ٣ ص ٣٣٧)

या रब्बे मुस्तफ़ा ﷺ हमें ज़िन्दगी, सिद्दहत और फुरसत को ग़नीमत जानते हुए ख़ूब ख़ूब नफ़ली रोजे रखने की सआदत अता फ़रमा, उन्हें क़बूल भी कर और हमारी और हमारे मीठे मीठे महबूब ﷺ की सारी उम्मत की मग़ि़रत फ़रमा।

أَمِينُ بَجَاةِ النَّبِيِّ الْأَمِينِ ﷺ

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ا صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ  
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

## मुबारक महीने

### दुसरे शरीफ की फज़ीलत

हज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رضي الله تعالى عنه से रिवायत है कि  
शफ़ीउल मुज़िबीन, रहमतुल्लिल आ-लमीन صلى الله تعالى عليه وآله وسلم का  
इशदि दिल नशीन है :

مَنْ صَلَّى عَلَى حِينِ يُضِيحُ

عَشْرًا وَحِينَ يُمَسِي عَشْرًا

أَذْرَكَهُ شَفَاعَتِي يَوْمَ الْقِيَامَةِ

तरजमा : जिस ने मुझ पर सुबह व शाम

दस<sup>10</sup> दस<sup>10</sup> मर्तबा दुरूदे पाक पढ़ा

वोह क़ियामत के दिन मेरी शफ़ाअत को

पाएगा ।

(مُحْتَمَعُ الزَّوَالِدِ ج ١٠ ص ١٦٣-١٦٢ حديث ١٧٠٢٢)

صَلُّوا عَلَى الْخَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

### मुहर्रमुल हराम

इस्लामी साल माहे मुहर्रमुल हराम से शुरू होता है । येह  
बहुत ही अ-ज़मत व ब-र-कत वाला महीना है, जो हमें सब्रो ईसार  
का दर्स देता है । इस माहे मुबारक में इबादत करने और रोज़ा रखने  
के बारे में मु-तअद्दद फ़ज़ाइल वारिद हुए हैं, नीज़ इसी माह में यौमे  
आशूरा जो अपनी खुसूसिय्यात में मुम्ताज़ है ।

**फरमाने मुस्तफा** ﷺ जिसने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह तआला उस पर दस रहमते भेजता है ।

## ੨-ਮਜ਼ਾਨ ਕੋ ਬਾ'ਦ ਅਫ਼ਜ਼ਲ ਰੋਜ਼ੇ

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है  
हुजुरे अकरम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम, रसूले मुहूतशम,  
शाफ़ेए उमम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ फ़रमाते हैं : “र-मज़ान के बा’द  
मुह्ररम का रोज़ा अफ़ज़ल है और फ़र्ज़ के बा’द अफ़ज़ल नमाज़  
सलातुल्लैल (या’नी रात के नवाफ़िल) है।

(صَحِيحُ مُسْلِمٍ ص ٥٩١ حَدِيثُ ١١٦٣)

एक महीने के रोजों के बराबर

तबीबों के तबीब, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के हबीब, हबीबे लबीब  
 صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने रहमत निशान है: मुहर्रम के हर दिन का  
 रोजा एक महीने के रोजों के बराबर है (الْمُعْتَمِدُ الصَّغِيرُ لِلطَّبْرَانِيِّ ج ٢ ص ٧١)

“उस हूँ मैं इन्हीं हैं दर पे लाखों सलाम” के पच्चीस  
हज़ारों की निश्चित से आशूरा के वाकें होने वाले

## 25 અહમ વાકિઆત

(1) 10 मुहर्मुल हुराम अशूरा के रोज़ हज़रते सय्यिदुना आदम सफ़िय्युल्लाह عَلَى نَبِينَا وَعَلَيْهِ السَّلَام की तौबा क़बूल की गई (2) इसी दिन उन्हें पैदा किया गया (3) इसी दिन उन्हें जन्नत में दाख़िल किया गया (4) इसी दिन अर्श (5) कुर्सी (6) आस्मान (7) ज़मीन (8) सूरज (9) च़ांद (10) सितारे और (11) जन्नत पैदा किये गए (12) इसी दिन हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम खलीलुल्लाह عَلَى نَبِينَا وَعَلَيْهِ السَّلَام

फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ जो शख्स मुझ पर दुरुदे पाक पढ़ना भूल गया वोह जन्नत का रास्ता भूल गया ।

पैदा हुए (13) इसी दिन उन्हें आग से नजात मिली (14) इसी दिन हज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह ﷺ और आप की उम्मत को नजात मिली और फ़िराऔन अपनी कौम समेत गर्क हुवा (15) हज़रते सय्यिदुना ईसा रूहुल्लाह ﷺ पैदा किये गए (16) इसी दिन उन्हें आस्मानों की तरफ़ उठाया गया (17) इसी दिन हज़रते सय्यिदुना नूह ﷺ की कशती कोहे जूदी पर ठहरी (18) इसी दिन हज़रते सय्यिदुना सुलैमान ﷺ को मुल्के अज़ीम अता किया गया (19) इसी दिन हज़रते सय्यिदुना यूनस ﷺ मछली के पेट से निकाले गए (20) इसी दिन हज़रते सय्यिदुना या'कूब ﷺ की बीनाई का जो'फ़ दूर हुवा (21) इसी दिन हज़रते सय्यिदुना यूसुफ़ ﷺ गहरे कूएं से निकाले गए (22) इसी दिन हज़रते सय्यिदुना अय्यूब ﷺ की तक्लीफ़ रफ़अ की गई (23) आस्मान से ज़मीन पर सब से पहली बारिश इसी दिन नाज़िल हुई और (24) इसी दिन का रोज़ा उम्मतों में मशहूर था यहां तक कि येह भी कहा गया कि इस दिन का रोज़ा माहे र-मज़ानुल मुबारक से पहले फ़र्ज था फिर मन्सूख़ कर दिया गया (مُكَاشَفَةُ الْقُلُوبِ ص १००) (25) इमामुल हुमाम, इमामे अली मक़ाम, इमामे अर्श मक़ाम, इमामे तिश्ना काम सय्यिदुना इमामे हुसैन رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ को मअ़ शहज़ादगान व रु-फ़का तीन दिन भूका रखने के बा'द इसी आशूरा के रोज़ दशते करबला में इन्तिहाई सफ़फ़ाकी के साथ शहीद किया गया ।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

फरमाने मुस्तफ़ा ﷺ जिसने मुझ पर एक बार दुरूद पाक पढ़ा अल्लाह तआला उस पर दस रहमते भेजता है।

## आशूरा के दिन अहलो इयाल पर खर्च करने की ब-रकत

हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन मस्क़द सहाबी رضي الله تعالى عنه कहते हैं कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहरो बर صلى الله تعالى عليه وآله وسلم ने फ़रमाया है कि जो शख्स आशूरा के दिन अपने बाल बच्चों के खाने पीने में ख़ूब ज़ियादा फ़राखी और कुशा-दगी करेगा या'नी ज़ियादा खाना तय्यार करा कर ख़ूब पेट भर के खिलाएगा अल्लाह तआला साल भर तक उस के रिज़क में वुसूत और ख़ैरो ब-र-कत अता फ़रमाएगा।

(مَائِثَتٌ مِنَ السُّنَّةِ، شَهْرُ الْمُحَرَّمِ ص १७)

## शाश साल अमराज से हिफ़ाज़त

मुफ़स्सिरे शहीर हकीमुल उम्मत हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عليه رَحْمَةُ الْخَنَانِ फ़रमाते हैं, मुह्रम की नवी<sup>9</sup> और दस्वी<sup>10</sup> को रोज़ा रखे तो बहुत सवाब पाएगा। बाल बच्चों के लिये दस्वी<sup>10</sup> मुह्रम को ख़ूब अच्छे अच्छे खाने पकाए तो إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ साल भर तक घर में ब-र-कत रहेगी। बेहतर है कि खिचड़ा पका कर हज़रते शहीदे करबला सय्यिदुना इमामे हुसैन رضي الله تعالى عنه की फ़ातिहा करे बहुत मुजरब (या'नी मुअस्सर व आज़्मूदा) है। इसी तारीख़ या'नी 10 मुह्रम हुराम को गुस्ल करे तो तमाम साल إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ बीमारियों से अम्न में रहेगा क्यूं कि इस दिन आबे ज़मज़म तमाम पानियों में पहुंचता है (روح البیان، ६७، ص १६२، کوسر) सरवरे काएनात, शाहे मौजूदात صلى الله تعالى عليه وآله وسلم ने इशार्द फ़रमाया : जो शख्स यौमे आशूरा



फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ जिसने मुझ पर दस मरतबा दुरुदे पाक पढ़ा अल्लाह तआला उस पर सो रहमते भेजता है।

इस्मद सुरमा आंखों में लगाए तो उस की आंखें कभी भी न दुखेंगी।

(شُعَبُ الْإِيمَانِ ج ٣ ص ٣٦٧ حديث ٣٧٩٧)

صَلُّوا عَلَى الْخَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

## आशूरा की खैरात की ब-रकत

आशूरा के रोज़ मुल्के “रै” में काज़ी साहिब के पास एक साइल आ कर अर्ज़ गुज़ार हुवा : मैं एक बहुत नादार व इयाल दार आदमी हूं आप को यौमे आशूरा का वासिता ! मेरे लिये दो सैर रोटी, पांच सैर गोश्त, और दस दिरहम का इन्तिज़ाम फ़रमा दीजिये, अल्लाह तआला आप की इज़्ज़त में ब-र-कत दे। काज़ी साहिब ने कहा : ज़ोहर के बा'द आना। फ़कीर ज़ोहर के बा'द आया तो कहा : अस्स के बा'द आना। वोह अस्स के बा'द पहुंचा तब भी कुछ नहीं दिया ख़ाली हाथ ही टरखा दिया। फ़कीर का दिल टूट गया। वोह रन्जीदा रन्जीदा एक नस्रानी (क्रिस्चेन) के पास पहुंचा और उस से कहा : आज के मुक़द्दस दिन के सदके मुझे कुछ दे दो। उस ने पूछा : आज कौन सा दिन है ? जवाब दिया : आज यौमे आशूरा है। येह कहने के बा'द आशूरा के कुछ फ़ज़ाइल बयान किये। उस ने सुन कर कहा आप ने बहुत ही अ-ज़मत वाले दिन का वासिता दिया, अपनी ज़रूरत बयान कीजिये। साइल ने उस से भी वोही ज़रूरत बयान कर दी। उस आदमी ने दस बोरी गेहूं, सो सैर गोश्त और बीस दिरहम पेश करते हुए कहा : येह आप के

फरमाने मुस्तफा ﷺ तुम जहां भी हो मुझ पर दुरुद पढ़ो कि तुम्हारा दुरुद मुझ तक पहुंचता है।

अहलो इयाल के लिये ज़िन्दगी भर हर माह इस दिन की फ़ज़ीलत व हुरमत के सद्के मुक़रर है। रात को काज़ी साहिब ने ख़्वाब में देखा कोई कह रहा है नज़र उठा कर देख ! जब नज़र उठाई तो दो आलीशान महल नज़र आए, एक चांदी और सोने की ईंटों का और दूसरा सुख़ याकूत का था। काज़ी ने पूछा : येह दोनों महल किस के हैं ? जवाब मिला, अगर तुम साइल की ज़रूरत पूरी कर देते तो येह तुम्हें मिलते मगर चूँकि तुम ने उसे धक्के खिलाने के बा वुजूद भी कुछ न दिया इस लिये अब येह दोनों महल फुलां नस्रानी (क्रिस्वेन) के लिये हैं। काज़ी साहिब बेदार हुए तो बहुत परेशान थे। सुब्द हुई तो नस्रानी (क्रिस्वेन) के पास गए और उस से दर्याफ़्त किया कि कल तुम ने कौन सी “नेकी” की है ? उस ने पूछा, आप को कैसे इल्म हुवा ? काज़ी साहिब ने अपना ख़्वाब सुनाया, और पेशकश की, कि मुझे से एक लाख दिरहम ले लो और कल की “नेकी” मुझे बेच दो ! नस्रानी ने कहा : मैं रूए ज़मीन की सारी दौलत ले कर भी इसे फ़रोख़्त नहीं करूंगा, रब्बुल इज़्ज़त جَلَّ جَلَّ की रहमत व इनायत बहुत ख़ूब है। लीजिये मैं मुसल्मान होता हूं येह कह कर उस ने पढ़ा, يَا نَبِيَّ اَشْهَدُ اَنْ لَا اِلَهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ, मैं गवाही देता हूं अल्लाह عزوجل के सिवा कोई इबादत के लाइक नहीं और गवाही देता हूं मुहम्मद उस के बन्दए खास और उस के रसूल हैं।

(رَوْضُ الرِّيَاضِينَ ص १०२)

फरमाने मुस्तफा ﷺ जिसने मुझ पर दस मर्तबा सुब्ह और दस मर्तबा शाम दुरूदे पाक पढ़ा उसे क्रियामत के दिन मेरी शफाअत मिलेगी।

## शबे आशूरा की नफ़ल नमाज़

आशूरा की रात में चार रकअत नमाज़ नफ़ल इस तरकीब से पढ़े कि हर रकअत में अल हम्द के बा'द आ-यतुल कुरसी एक बार और सूरए इख़्लास तीन तीन बार पढ़े और नमाज़ से फ़ारिग़ हो कर एक सो मर्तबा सूरए इख़्लास पढ़े। गुनाहों से पाक होगा और बिहिश्त में बे इन्तिहा ने'मते मिलेंगी। (जन्नती ज़ेवर, स. 157)

## “हुसैन” के चार हुस्नफ़ की निश्चत से आशूरा के रोज़े के 4 फ़ज़ाइल”

(1) हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا का इर्शादि गिरामी है, “रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ जब मदी-नतुल मुनव्वरह رَاحَهُمُ اللهُ شَرْفًاو تَعْظِيمًا में तशरीफ़ लाए, यहूद को आशूरा के दिन रोज़ादार पाया तो इर्शाद फ़रमाया : येह क्या दिन है कि तुम रोज़ा रखते हो ? अर्ज की : येह अ-ज़मत वाला दिन है कि इस में मूसा और उन की क़ौम को अल्लाह तआला ने नजात दी और फिरअौन और उस की क़ौम को डबो दिया। लिहाज़ा मूसा ने बतौरै शुक्राना इस दिन का रोज़ा रखा, तो हम भी रोज़ा रखते हैं। इर्शाद फ़रमाया : मूसा عَلَيْهِ السَّلَام की मुवा-फ़क़त करने में ब निश्चत तुम्हारे हम ज़ियादा हक़दार और ज़ियादा करीब हैं। तो सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने खुद भी रोज़ा रखा और इस का हुक़म भी फ़रमाया।” (صَحِيحُ الْبُخَارِيِّ ج ١ ص ٦٥٦ حديث ٢٠٠٤)

(2) हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا

फरमाने मुस्त्फा ﷺ मुझ पर दुरंदे पाक की कसूरत करो बेशक यह तुम्हारे लिये त्हाहरत है।

फरमाते हैं, “मैं ने सुल्ताने दो जहान, शहन्शाहे कौनो मकान, रहमते अ-लमियान ﷺ को किसी दिन के रोज़े को और दिन पर फज़ीलत दे कर जुस्त-जू फरमाते न देखा मगर यह कि आशूरा का दिन और यह कि र-मज़ान का महीना।”

(صَحِيحُ الْبُخَارِيِّ ج ١ ص ٦٥٧ حديث ٢٠٠٦)

(3) नबिय्ये रहमत, शफ़ीए उम्मत, शहन्शाहे नुबुव्वत, ताजदारे रिसालत ﷺ ने इर्शाद फरमाया : यौमे आशूरा का रोज़ा रखो और इस में यहूदियों की मुखा-लफ़्त करो, इस से पहले या बा'द में भी एक दिन का रोज़ा रखो।

(مُسْنَدُ إِمَامِ أَحْمَد ج ١ ص ٥١٨ حديث ٢١٥٤)

या'नी आशूरा का रोज़ा जब भी रखें तो साथ ही नवी<sup>9</sup> या ग्यारहवीं<sup>11</sup> मुहर्रमुल हुराम का रोज़ा भी रख लेना बेहतर है।

(4) हज़रते सय्यिदुना अबू क़तादा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है, रसूलुल्लाह ﷺ फरमाते हैं : मुझे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ पर गुमान है कि आशूरा का रोज़ा एक साल क़ब्ल के गुनाह मिटा देता है।

(صَحِيحُ مُسْلِمٍ ص ٥٩٠ حديث ١١٦٢)

हुआए आशूरा

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

يَا قَائِلَ تَوْبَةٍ اَدَمَ يَوْمَ عَاشُورَاءَ

फरमाने मुस्तफा ﷺ जिसने किताब में मुझ पर दुरुदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फिरस्ते उस के लिये इस्तिफार करते रहेंगे।

يَا فَارِجْ كَرْبِ ذِي النُّونِ يَوْمَ عَاشُورَاءَ  
 يَا جَامِعَ شَمْلِ يَعْقُوبَ يَوْمَ عَاشُورَاءَ  
 يَا سَامِعَ دَعْوَةِ مُوسَى وَهَارُونَ يَوْمَ عَاشُورَاءَ  
 يَا مُغِيثَ إِبْرَاهِيمَ مِنَ النَّارِ يَوْمَ عَاشُورَاءَ  
 يَا رَافِعَ إِدْرِيسَ إِلَى السَّمَاءِ يَوْمَ عَاشُورَاءَ  
 يَا مُجِيبَ دَعْوَةِ صَالِحٍ فِي النَّاقَةِ يَوْمَ عَاشُورَاءَ  
 يَا نَاصِرَ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ  
 يَوْمَ عَاشُورَاءَ يَا رَحْمَنَ الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ وَرَحِيحَهُمَا  
 صَلَّى عَلَى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَعَلَى آلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ  
 وَصَلَّى عَلَى جَمِيعِ الْأَنْبِيَاءِ وَالْمُرْسَلِينَ وَأَقْضِ  
 حَاجَاتِنَا فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ وَأَطْلُ عُمْرَنَا فِي  
 طَاعَتِكَ وَمَحَبَّتِكَ وَرِضَاكَ وَأَحْيَا حَيَاةً طَيِّبَةً  
 وَتَوَفَّنَا عَلَى الْإِيمَانِ وَالْإِسْلَامِ بِرَحْمَتِكَ يَا أَرْحَمَ  
 الرَّاحِمِينَ ۝ اللَّهُمَّ بَعْرِ الْحَسَنِ وَأَخِيهِ وَأُمِّهِ وَأَبِيهِ  
 وَجَدِّهِ وَبَنِيهِ فَزَجِّعْنَا مَا نَحْنُ فِيهِ ۝

फरमाने मुस्तफा ﷺ मुझ पर कसूरत से दुरुद पाक पढ़ा बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरुद पाक पढ़ना तुम्हारे गुनाहों के लिये मरिफत है।

## फिर सात बार पढ़े

سُبْحَانَ اللَّهِ مَلَأَ الْمِيزَانَ وَمُنْتَهَى الْعِلْمِ  
وَمَبْدَأُ الرِّضَى وَزِينَةُ الْعَرْشِ لَا مَلْجَأَ وَلَا مَنْجَأَ مِنْ  
اللَّهِ إِلَّا إِلَيْهِ سُبْحَانَ اللَّهِ عَدَدَ الشَّفْعِ وَالْوَتْرِ  
وَعَدَدَ كَلِمَاتِ اللَّهِ الثَّامَاتِ كُلِّهَا نَسْأَلُكَ السَّلَامَةَ  
بِرَحْمَتِكَ يَا أَرْحَمَ الرَّاحِمِينَ وَهُوَ حَسْبُنَا وَنِعْمَ  
الْوَكِيلُ نِعْمَ الْمَوْلَى وَنِعْمَ النَّصِيرُ وَلَا حَوْلَ وَلَا  
قُوَّةَ إِلَّا بِاللَّهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيمِ صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى  
سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَعَلَى آلِهِ وَصَحْبِهِ وَعَلَى الْمُؤْمِنِينَ  
وَالْمُؤْمِنَاتِ وَالْمُسْلِمِينَ وَالْمُسْلِمَاتِ عَدَدَ ذَرَّاتِ  
الْجُودِ وَعَدَدَ مَعْلُومَاتِ اللَّهِ وَالْحَمْدُ لِلَّهِ  
رَبِّ الْعَالَمِينَ

रबीउन्नूर शरीफ़

दुरूद शरीफ़ की फज़ीलत

जिस ने मुझ पर दस मर्तबा दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह तआला

उस पर सो रहमतें नाज़िल फ़रमाता है। (الرَّغِيب وَالتَّرْهِيْب ج ٢ ص ٣٢٢)

صَلُّوا عَلَى النَّبِيِّ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

फरमाने मुस्तफ़ा ﷺ जो मुझ पर एक मरतबा दुर्द शरीफ़ पढ़ता है अल्लाह तआला उस के लिये एक कीरात अज़्र लिखता है और कीरात उहद पहाड़ जितना है।

माहे रबीउन्नूर शरीफ़ तो क्या आता है हर तरफ़ मौसिमे बहार आ जाता है। मीठे मीठे मक्की म-दनी मुस्तफ़ा ﷺ के दीवानों में खुशी की लहर दौड़ जाती है। बूढ़ा हो या जवान हर हकीकी मुसलमान गोया दिल की ज़बान से बोल उठता है :

निसार तेरी चहल पहल पर हज़ार ईदें रबीउल अव्वल

सिवाए इब्नीस के जहां में सभी तो खुशियां मना रहे हैं

जब काएनात में कुफ़्रो शिर्क और वहूशतो बर-बरिय्यत का

घुप अंधेरा छाया हुवा था। बारह रबीउन्नूर शरीफ़ को मक्कए मुकर्रमा में हज़रते सय्यि-दतुना आमिना رضى الله تعالى عنها के मकाने रहमत निशान से एक ऐसा नूर चमका जिस ने सारे आलम को जगमग जगमग कर दिया। सिसक्ती हुई इन्सानियत की आंख जिन की तरफ़ लगी हुई थी वोह ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सखावत, पैकरे अ-ज़-मतो शराफ़त, महबूबे रब्बुल इज़्ज़त, मोहसिने इन्सानिय्यत ﷺ तमाम आ-लमीन के लिये रहमत बन कर मादरे गेती पर जल्वा गर हुए।

ﷺ

मुबारक हो कि ख़तुल मुर-सलीं तशरीफ़ ले आए

ﷺ

जनाबे रहमतुल्लिल आ-लमीं तशरीफ़ ले आए

सुब्हे बहारां

खा-तमुल मुर-सलीन, रहमतुल्लिल आ-लमीन,

शफ़ीउल मुज़िबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन,

महबूबे रब्बुल आ-लमीन, जनाबे सादिको अमीन ﷺ

फरमाने मुस्तफ़ा ﷺ जिसने मुझ पर एक बार दूरदे पाक पढ़ा अल्लाह तआला उस पर दस रहमतें भेजता है।

करारे हर क़ल्बे महज़ूनो ग़मगीन बन कर 12 रबीउन्नूर शरीफ़ को सुब्हे सादिक् के वक़्त जहां में तशरीफ़ लाए और आ कर बे सहारों, ग़म के मारों, दुख्यारों, दिल फ़िगारों और दर दर की ठोकरें खाने वाले बेचारों की शामे ग़रीबां को “सुब्हे बहारां” बना दिया।

मुसल्मानो ! सुब्हे बहारां मुबारक

ﷺ  
वोह बरसाते अन्वार सरकार आए

मो 'जिज़ात

12 रबीउन्नूर शरीफ़ को अल्लाह عزّوجلّ के नूर

ﷺ की दुनिया में जल्वा गरी होते ही कुफ़्रो जुल्मत के बादल छट गए, शाहे ईरान किस्सा के महल पर ज़लज़ला आया, चौदह कुंगुरे गिर गए। ईरान का जो आतश कदा एक हजार साल से शो'ला ज़न था वोह बुझ गया, दरियाए सावह खुश्क हो गया, का'बे को वज्द आ गया और बुत सर के बल गिर पड़े।

तेरी आमद थी कि बैतुल्लाह मुजरे को झुका

तेरी हैबत थी कि हर बुत थरथरा कर गिर गया

ताजदारे रिसालत ﷺ जहां में फ़ज़लो रहमत

बन कर तशरीफ़ लाए और यकीनन अल्लाह عزّوجلّ की रहमत के नुज़ूल का दिन खुशी व मुसर्रत का दिन होता है। चुनान्वे अल्लाह



फरमाने मुस्तफा ﷺ जब तुम मुसलीन علیہم السلام पर दुर्दे पाक पढ़ो तो मुझ पर भी पढ़ो बेशक मैं तमाम जहानों के रब का रसूल हूँ।

तबा-र-क व तआला इर्शाद फरमाता है :

قُلْ بِفَضْلِ اللَّهِ وَبِرَحْمَتِهِ  
فَبِذَلِكَ فَلْيَفْرَحُوا هُوَ  
خَيْرٌ مِّمَّا يَجْمَعُونَ ﴿٥٧﴾  
(پ ۱۱ یونس: ۵۷)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : तुम फरमाओ अल्लाह (عَزَّوَجَلَّ) ही के फ़ज़ल और इसी की रहमत और उसी पर चाहिये कि खुशी करें। वोह उन के सब धन दौलत से बेहतर है।

अल्लाहु अक्बर ! रहमते खुदा वन्दी पर खुशी मनाने का कुरआने करीम हुक्म दे रहा है। और क्या हमारे प्यारे आका ﷺ से बढ़ कर भी कोई अल्लाह (عَزَّوَجَلَّ) की रहमत है ? देखिये मुकद्दस कुरआन में साफ़ साफ़ ए'लान है :

وَمَا أَرْسَلْنَاكَ إِلَّا رَحْمَةً  
لِّلْعَالَمِينَ ﴿١٠٧﴾ (پ ۱۷ الانبیاء: ۱۰۷)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और हम ने तुम्हें न भेजा मगर रहमत सारे जहान के लिये।

## शबे क़द्र से भी अफ़ज़ल रात

हज़रते सय्यिदुना शैख़ अब्दुल हक़ मुहद्दिसे देहलवी ﷺ फ़रमाते हैं, “बेशक सरवरे आलम ﷺ की शबे विलादत शबे क़द्र से भी अफ़ज़ल है क्यूं कि शबे विलादत सरकारे मदीना ﷺ के इस दुनिया में जल्ला गर होने की रात है जब कि लै-लतुल क़द्र सरकार ﷺ को अता कर्दा शब है। और जो रात जुहूरे जाते सरवरे काएनात ﷺ की वजह से मुशरफ़ हो वोह उस रात से ज़ियादा शरफ़ व इज़ज़त वाली

फ़रमाने मुस्तफ़ा صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم जो मुझ पर रोजे जुमुआ दुरूद शरीफ़ पढ़ेगा मैं कियामत के दिन उस की शफाअत करूँगा।

है जो मलाएका के नुज़ूल की बिना पर मुशरफ़ है।

(مَا بَيَّتَ مِنَ السُّنَّةِ ص ७३ باب المدینہ کراچی)

## जश्ने विलादत मनाने क्व सवाब

शैख़ अब्दुल हक़ मोहम्मिसे देहलवी علیہ رحمۃ اللہ القوی फ़रमाते हैं, सरकारे मदीना صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم की विलादत की रात खुशी मनाने वालों की जज़ा येह है कि अल्लाह तआला उन्हें फ़ज़लो करम से जन्नातुन्नईम में दाख़िल फ़रमाएगा। मुसलमान हमेशा से महफ़िले मीलाद मुन्ज़किद करते आए हैं और विलादत की खुशी में दा'वतें देते, खाने पकवाते और ख़ूब स-दका व ख़ैरात देते आए हैं। ख़ूब खुशी का इज़हार करते और दिल खोल कर खर्च करते हैं नीज़ आप صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآलہ وسلم की विलादते बा सआदत के ज़िक्र का एहतिमाम करते हैं और अपने मकानों को सजाते हैं और इन तमाम अफ़आले ह-सना की ब-र-कत से उन लोगों पर अल्लाह عزّوجلّ की रहमतों का नुज़ूल होता है।

(مَا بَيَّتَ مِنَ السُّنَّةِ ص ७३ باب المدینہ کراچی)

<small>صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم</small>	<small>صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم</small>
महबूबे रब्बे अक्बर तशरीफ़ ला रहे हैं	आज अब्बिया के सरवर तशरीफ़ ला रहे हैं
<small>صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآलہ وسلم</small>	<small>صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآलہ وسلم</small>
क्यूं है फ़ज़ा मुअत्तर ! क्यूं रोशनी है घर घर	अच्छ ! हबीबे दावर तशरीफ़ ला रहे हैं
<small>صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآलہ وسلم</small>	<small>صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآलہ وسلم</small>
ईदों की ईद आई रहमत खुदा की लाई	जूदो सखा के पैकर तशरीफ़ ला रहे हैं
<small>صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآलہ وسلم</small>	<small>صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآलہ وسلم</small>
हूरें लगीं तराने ना'तों के गुन-गुनाने	हूरो मलक के अफ़सर तशरीफ़ ला रहे हैं
<small>صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآलہ وسلم</small>	<small>صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآलہ وسلم</small>
जो शाहे बहरो बर हैं नबियों के ताजवर हैं	वोह आमिना तेरे घर तशरीफ़ ला रहे हैं

अत्तर अब खुशी से फूले नहीं समाते

दुनिया में इन के दिलवर तशरीफ़ ला रहे हैं

फरमाने मुस्तफा ﷺ जिसने मुझ पर रोजे जुमुआ दो सौ बार दुरुदे पाक पढ़ा उस के दो सौ साल के गुनाह मुआफ होंगे।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! माहे रबीउन्नूर शरीफ में खूब इज्तिमाए जिक्रो ना 'त कीजिये। इस माह में दुरुदे पाक की खूब कसरत फरमाइये। खूब खूब नवाफिल पढ़ कर और दीगर नेक काम कर के आकाए मदीना, करारे कल्बो सीना ﷺ की बारगाहे बेकस पनाह में ईसाले सवाब कीजिये।

## र-जबुल मुरज्जब

### जन्नत की नहर

हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहुरो बर ﷺ ने इर्शाद फरमाया : “जन्नत में एक नहर है जिसे “रजब” कहा जाता है जो दूध से ज़ियादा सफ़ेद और शहद से ज़ियादा मीठी है तो जो कोई रजब का एक रोज़ा रखे तो अल्लाह عزّوجلّ उसे इस नहर से सैराब करेगा।”

(شُعَبُ الْإِيمَان ج ۳ ص ۳۶۷ حديث ۳۸۰۰)

### जन्नत का महल

हज़रते सय्यिदुना अबू क़िलाबा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाते हैं रजब के रोज़ादारों के लिये जन्नत में एक महल है।”

(شُعَبُ الْإِيمَان ج ۳ ص ۳۶۸ حديث ۳۸۰۲)

## सत्ताईशवीं शब की फज़ीलत

रजब में एक रात है कि इस में नेक अमल करने वाले को सो बरस की नेकियों का सवाब है और वोह रजब की सत्ताईशवीं

फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ जो शख्स मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना भूल गया वोह जन्नत का रास्ता भूल गया ।

शब है । जो इस में बारह रकअत इस तरह पढ़े कि हर रकअत में सूरए फ़ातिहा और कोई सी एक सूरत और हर दो रकअत पर अत्तहिय्यात पढ़े और बारह पूरी होने पर सलाम फ़ैरे, इस के बा'द 100 बार येह पढ़े :

سُبْحَنَ اللّٰهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ وَلَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَاللّٰهُ اَكْبَرُ इस्तिग़फ़ार सो बार, दुरूद शरीफ़ सो बार पढ़े और अपनी दुन्या व आख़िरत से जिस चीज़ की चाहे दुआ मांगे और सुब्ह को रोज़ा रखे तो अल्लाह तअ़ाला उस की सब दुआएं क़बूल फ़रमाए सिवाए उस दुआ के जो गुनाह के लिये हो ।

(شُعَبُ الْإِيمَان ج ٣ ص ٢٧٤ حديث ٣٨١٢)

### सत्ताईशवीं रजब के रोजे की फज़ीलत

मेरे आका आ 'ला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत, वलिय्ये ने 'मत, अज़ीमुल ब-र-कत, अज़ीमुल मर्तबत, परवानए शम्स रिसालत, मुजहिदे दीनो मिल्लत, हामिये सुन्नत, माहिये बिदअत, अ़ालिमे शरीअत, पीरे तरीक़त, बाइसे ख़ैरो ब-र-कत, हज़रते अ़ल्लामा मौलाना अलहाज अल हाफ़िज़ अल क़ारी शाह इमाम अहमद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं कि फ़वाइदे हनाद में हज़रते सय्यिदुना अनस رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ से मरवी है कि नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम عَلَيْهِ السَّلَام ने इर्शाद फ़रमाया : “सत्ताईस रजब को मुझे नुबुव्वत अ़ता हुई जो इस दिन का रोज़ा रखे और इफ़्तार के वक़्त दुआ करे दस बरस के गुनाहों का कफ़ारा हो ।”

(फ़तावा र-ज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 10 स. 648)

फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ जिसने मुझ पर एक बार दूरूदे पाक पढ़ा अल्लाह तआला उस पर दस रहमते भेजता है।

## सो साल के रोज़े का सवाब

हज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से मरवी है, अल्लाह عزّوجلّ के महबूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अनिल उयूब ﷺ का फ़रमाने जीशान है : “रजब में एक दिन और रात है जो उस दिन रोज़ा रखे और रात को क़ियाम (इबादत) करे तो गोया उस ने सो साल के रोज़े रखे और येह रजब की सताईस तारीख़ है। इसी दिन मुहम्मद ﷺ को अल्लाह (شُعَبُ الْإِيمَان ج ۳ ص ۲۷۴-حدیث ۲۸۱۱) ने मबऊस फ़रमाया।”

## शा 'बानुल मुअज़्ज़म

### आका का महीना

रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम, शाफ़ेए उमम ﷺ का शा 'बानुल मुअज़्ज़म के बारे में फ़रमाने मुकर्रम है, शा 'बान मेरा महीना है और र-मज़ानुल मुबारक, अल्लाह عزّوجلّ का महीना है।

(الجامع الصغير الحديث ۴۸۸۹ ص ۳۰۱)

## २-मज़ान के बा'द कौन सा महीना अफ़ज़ल है ?

हज़रते सय्यिदुना अनस رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाते हैं, दो आलम के मालिको मुख्तार, मक्की म-दनी सरकार, महबूबे परवर्द गार ﷺ की बारगाहे बेकस पनाह में अर्ज़ की गई कि र-मज़ान के बा'द कौन सा रोज़ा अफ़ज़ल है ? इर्शाद फ़रमाया :

फरमाने मुस्तफा ﷺ जिसने मुझ पर दस मरतबा दुरुदे पाक पढ़ा अल्लाह तआला उस पर सो रहमतें भेजता है।

“ता’जीमे र-मज़ान के लिये शा’बान का।” फिर अर्ज की गई, कौन सा स-दका अफ़ज़ल है? फ़रमाया : र-मज़ान के माह में स-दका करना। (سُنَنِ التِّرْمِذِيِّ ج ٢ ص ١٤٦ حديث ٦٦٣)

### पन्दरहवीं शब में तजल्ली

उम्मुल मुअमिनीन हज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिदीका रज़ी से रिवायत है, ताजदारे रिसालत, सरापा रहमत, महबूबे रब्बुल इज़्ज़त ﷺ ने फ़रमाया : अल्लाह عزّوجلّ शा’बान की पन्दरहवीं<sup>15</sup> शब में तजल्ली फ़रमाता है। इस्तिफ़ार (या’नी तौबा) करने वालों को बख़्श देता और तालिबे रहमत पर रहम फ़रमाता और अदावत वालों को जिस हाल पर है उसी पर छोड़ देता है।”

(شُعَبُ الْإِيمَان ج ٣ ص ٣٨٣ حديث ٣٨٣)

### भलाइयों वाली रातें

उम्मुल मुअमिनीन हज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिदीका रज़ी रिवायत फ़रमाती हैं : मैं ने नबिय्ये करीम, रऊफ़रहीम ﷺ को फ़रमाते हुए सुना, अल्लाह عزّوجلّ (खास तौर पर) चार<sup>4</sup> रातों में भलाइयों के दरवाजे खोल देता है १) बक़र ईद की रात २) ईदुल फ़ित्र की रात ३) शा’बान की पन्दरहवीं<sup>15</sup> रात कि इस रात में मरने वालों के नाम और लोगों का रिज़्क और (इस साल) हज़ करने वालों के नाम लिखे जाते हैं ४) अ-रफ़ा (नव जुल हिज्जा) की रात, अज़ाने (फ़ज़्र) तक। (الْأَلْمَشُور ج ٧ ص ٤٠٢)

फरमाने मुस्तफ़ा ﷺ तुम जहाँ भी हो मुझ पर दूरद पढ़ो कि तुम्हारा दूरद मुझ तक पहुँचता है।

## मग़रिब के बा'द छ नवाफ़िल

मग़रिब के फ़र्ज़ व सुन्नत वग़ैरा के बा'द छ रकअत

ख़ुसूसी नवाफ़िल अदा करना मा'मूलाते औलियाए किराम

से है। मग़रिब के फ़र्ज़ व सुन्नत वग़ैरा अदा कर के

छ रकअत नफ़ल दो दो रकअत कर के अदा कीजिये। पहली दो

रकअतें शुरूअ करने से क़ब्ल येह अर्ज़ कीजिये : या अल्लाह

अता फ़रमा। दूसरी दो रकअतें शुरूअ करने से क़ब्ल अर्ज़ कीजिये :

या अल्लाह ! इन दो रकअतों की ब-र-कत से मुझे दराजिये उम्र बिलखैर

मेरी हिफ़ाज़त फ़रमा। तीसरी दो रकअतें शुरूअ करने से क़ब्ल

इस तरह अर्ज़ कीजिये : या अल्लाह ! इन दो रकअतों की

ब-र-कत से मुझे सिर्फ़ अपना मोहताज रख और ग़ैरों की मोहताजी

से बचा। हर दो रकअत के बा'द इक्कीस बार ﷻ या एक

बार सूरए यासीन पढ़िये बल्कि हो सके तो दोनों ही पढ़ लीजिये,

येह भी हो सकता है कि एक इस्लामी भाई यासीन शरीफ़

बुलन्द आवाज़ से पढ़ें और दूसरे ख़ामोशी से सुनें, इस में येह

ख़याल रखिये कि दूसरा इस दौरान ज़बान से यासीन शरीफ़ न

पढ़े। रात शुरूअ होते ही सवाब का अम्बार लग

जाएगा। हर बार यासीन शरीफ़ के बा'द दुआए निस्फ़े शा'बान

भी पढ़िये :

फरमाने मुस्तफा ﷺ जिसने मुझ पर दस मर्तबा सुबह और दस मर्तबा शाम दुरुद पाक पढ़ा उसे कियामत के दिन मेरी शफाअत मिलेगी ।

## हुआए निरफे शा'बानुल मुअज्जम

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

اَللّٰهُمَّ يَا ذَا التَّوْنِ وَلَا يَسُنُّ عَلَيْهِ يَا ذَا الْجَلَالِ  
وَالْاِكْرَامِ يَا ذَا الطُّوْلِ وَالْاِنْعَامِ لَا اِلَهَ اِلَّا اَنْتَ ظَهَرَ  
الْاٰجِئِيْنَ وَجَارَ الْمُسْتَجِيْرِيْنَ وَاَمَانُ الْخَافِيْنَ  
اَللّٰهُمَّ اِنْ كُنْتَ كَتَبْتَنِيْ عِنْدَكَ فِيْ اَمْرِ الْكِتٰبِ شَقِيًّا  
اَوْ مَحْرُوْمًا اَوْ مَطْرُوْدًا اَوْ مُقْتَرًا عَلٰى فِي الرِّزْقِ قَامِحُ  
اَللّٰهُمَّ بِفَضْلِكَ شَقَاوَتِيْ وَحِرْمَانِيْ وَطَرْدِيْ وَاَقْتِتَارِ  
رِزْقِيْ وَاَثِمْتَنِيْ عِنْدَكَ فِيْ اَمْرِ الْكِتٰبِ سَعِيْدًا مَّرْرُوْقًا  
مُّوَفَّقًا لِلْخَيْرٰتِ فَاِنَّكَ قُلْتَ وَقَوْلِكَ الْحَقُّ فِي  
كِتَابِكَ الْمُنَزَّلِ عَلٰى لِسَانِ نَبِيِّكَ الْمُرْسَلِ يَمْحُو  
اللّٰهُ مَا يَشَاءُ وَيُثَبِّتُ وَعِنْدَهُ اَمْرُ الْكِتٰبِ الْهٰمِ  
بِالتَّجَلِّيِ الْاَعْظَمِ فِيْ لَيْلَةِ الْيَصْفِ مِنْ شَهْرِ  
شَعْبَانَ الْمُكْرَمِ الَّتِي يُفَرِّقُ فِيْهَا كُلَّ اَمْرٍ حَكِيْمٍ  
وَيُبَيِّرُ اَنْ تَكْشِفَ عَنَّا مِنَ الْبَلَاءِ وَالْبَلَوِّ مَا نَعْلَمُ  
وَمَا لَا نَعْلَمُ وَاَنْتَ بِهٖ اَعْلَمُ اِنَّكَ اَنْتَ الْاَعَزُّ  
الْاَكْرَمُ وَصَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَعَلٰى  
اٰلِهِ وَاَصْحَابِهٖ وَسَلَّمُ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝



फरमाने मुस्तफा ﷺ पर दुरूदे पाक की कसरत करो बेशक यह तुम्हारे लिये त्हा रत है ।

तरजमा : अल्लाह ﷻ के नाम से शुरूअ जो बहुत मेहरबान रहमत वाला । ऐ अल्लाह ﷻ ! ऐ एहसान करने वाले कि जिस पर एहसान नहीं किया जाता ! ऐ बड़ी शानो शौकत वाले ! ऐ फज़्लो इन्आम वाले ! तेरे सिवा कोई मा'बूद नहीं । तू परेशान हालों का मददगार, पनाह मांगने वालों को पनाह और खौफ़जदों को अमान देने वाला है । ऐ अल्लाह ﷻ ! अगर तू अपने यहां उम्मुल किताब (लौहे महफूज़) में मुझे शकी (बद बख़्त), महरूम, धुत्कारा हुवा और रिज़्क में तंगी दिया हुवा लिख चुका हो तो ऐ अल्लाह ﷻ ! अपने फज़ल से मेरी बद बख़ती, महरूमी, ज़िल्लत और रिज़्क की तंगी को मिटा दे और अपने पास उम्मुल किताब में मुझे खुश बख़्त रिज़्क दिया हुवा और भलाइयों की तौफ़ीक़ दिया हुवा सब्त (तहरीर) फ़रमा दे । कि तूने ही तेरी नाज़िल की हुई किताब में तेरे ही भेजे हुए नबी ﷺ की ज़बान पर फ़रमाया और तेरा (येह) फ़रमाना हक़ है कि, “अल्लाह ﷻ जो चाहे मिटाता है और साबित करता (लिखता) है और अस्ल लिखा हुवा उसी के पास है ।” (क़नज़ुलआयान १३, १४, १५: ३९)

खुदाया अल्लाह ﷻ ! तजल्लिये आ'ज़म के वसीले से जो निस्फ़े शा'बानुल मुकर्रम की रात में है कि जिस में बांट दिया जाता है जो हिक्मत वाला काम और अटल कर दिया जाता है । (या अल्लाह !)

मुसीबतों और रन्जिशों को हम से दूर फ़रमा कि जिन्हें हम जानते और नहीं भी जानते जब कि तू इन्हें सब से ज़ियादा जानने वाला है । बेशक तू सब से बढ़ कर अज़ीज़ और इज़्ज़त वाला है । अल्लाह तआला हमारे सरदार मुहम्मद ﷺ पर और आप ﷺ के आलो अस्हाब رضی الله تعالى عنهم पर दुरूदो सलाम भेजे । सब ख़ूबियां सब ज़हानों के पालने वाले अल्लाह ﷻ के लिये हैं ।

फरमाने मुल्ताफा على الله تعالى ولا يؤمنه जिसने किताब में मुझ पर दुर्दुदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फिरिश्ते उस के लिये इस्तिगफार करते रहेंगे।

## क़ब्र पर मोम बत्तियां जलाना

शबे बराअत में इस्लामी भाइयों का क़ब्रिस्तान जाना सुन्नत है (इस्लामी बहनों को शरअन इजाज़त नहीं) क़ब्रों पर मोम बत्तियां नहीं जला सकते हां अगर तिलावत वगैरा करना हो तो ज़रूरतन उजाला हासिल करने के लिये क़ब्र से हट कर मोमबत्ती जला सकते हैं। इसी तरह हाज़िरीन को खुशबू पहुंचाने की निय्यत से क़ब्र से हट कर अगर बत्तियां जलाने में हरज नहीं। मज़ाराते औलिया رحمته الله تعالى पर चादर चढ़ाना और इस के पास चराग़ जलाना जाइज़ है कि इस तरह लोग मु-तवज्जेह होते और उन के दिलों में अ-ज़मत पैदा होती और वोह हाज़िर हो कर इक्तिसाबे फ़ैज़ करते हैं। अगर औलिया और अ़वाम की क़ब्रें यक्सां रखी जाएं तो बहुत सारे दीनी फ़वाइद ख़त्म हो कर रह जाएं।

## आतश बाज़ी हशाम है

अफ़सोस ! आतश बाज़ी की नापाक रस्म अब मुसल्मानों में ज़ोर पकड़ती जा रही है, मुसल्मानों का करोड़ हा करोड़ रूपिया हर साल आतश बाज़ी की नज़्र हो जाता है। और आए दिन येह ख़बरे आती हैं कि फुलां जगह आतश बाज़ी से इतने घर जल गए और इतने आदमी झुलस कर मर गए वगैरा वगैरा। इस में जान का ख़तरा, माल की बरबादी और मकान में आग लगने का अन्देशा है, फिर येह काम अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ना फ़रमानी भी है। हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान फ़रमाते हैं, “आतश बाज़ी बनाना, बेचना, ख़रीदना

फरमाने मुस्तफा ﷺ मुझ पर कसूरत से दूरदे पाक पढ़ो बेशक तुम्हारा मुझ पर दूरदे पाक पढ़ना तुम्हारे गुनाहों के लिये मरिफत है।

और खरीदवाना, चलाना और चलवाना सब हुराम है।”

(इस्लामी ज़िन्दगी, स. 78)

तुझ को शा'बाने मुअज़्ज़म का खुदाया वासिता

बरख़ा दे रब्बे मुहम्मद तू मेरी हर इक ख़ता

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

र-मज़ानुल मुबारक

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

अल्लाह عزّوجلّ के महबूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अनिल

उयूब صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने त़क़रूब निशान है, “बेशक बरोज़े क़ियामत लोगों में से मेरे क़रीब तर वोह होगा जो मुझ पर सब से ज़ियादा दुरूद भेजे।” (سُنَنِ تَرْمِذِي ج ٢ ص ٢٧ ح ٤٨٤)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! खुदाए रहमान का करोड़

हा करोड़ एहसान कि उस ने हमें माहे र-मज़ान जैसी अज़ीमुशशान ने'मत से सर-फ़राज़ फ़रमाया। माहे र-मज़ान के फ़ैज़ान के क्या कहने ! इस की तो हर घड़ी रहमत भरी है। इस महीने में अज़्रो सवाब बहुत ही बढ़ जाता है। नफ़ल का सवाब फ़र्ज के बराबर और फ़र्ज का सवाब सत्तर<sup>70</sup> गुना कर दिया जाता है। बल्कि इस महीने में तो रोज़ादार का सोना भी इबादत में शुमार किया जाता है। अर्श उठाने वाले फ़िरिश्ते रोज़ादारों की दुआ पर आमीन कहते हैं और एक हदीसे पाक के

फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ जो मुझ पर एक मरतबा दूरद शरीफ़ पढ़ता है अल्लाह तआला उस के लिये एक क़ारात अज़्र लिखता है और क़ीरात उहूद पहाड़ जितना है।

मुताबिक़ “र-मज़ान के रोज़ादार के लिये दरिया की मछलियां इफ़्तार तक दुआए मग़ि़रत करती रहती हैं।”

(التَّوْبَةُ وَالتَّوْبَةُ ج ٢ ص ٥٥ حديث ٦)

## सोने के दरवाजे वाला महल

हज़रते सय्यिदुना अबू सईद खुदरी رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है, मक्की म-दनी सुल्तान, रहमते आ-लमियान صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने रहमत निशान है : “जब माहे र-मज़ान की पहली रात आती है तो आस्मानों के दरवाजे खोल दिये जाते हैं और आख़िर रात तक बन्द नहीं होते। जो कोई बन्दा इस माहे मुबारक की किसी भी रात में नमाज़ पढ़ता है तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस के हर सज्दे के इवज़ (या'नी बदले में) उस के लिये पन्दरह सो नेकियां लिखता है और उस के लिये जन्नत में **सुर्ख़ याकूत का घर** बनाता है। जिस में साठ हज़ार दरवाजे होंगे। और हर दरवाजे के पट सोने के बने होंगे जिन में याकूते सुर्ख़ जड़े होंगे। पस जो कोई माहे र-मज़ान का पहला रोज़ा रखता है तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ महीने के आख़िर दिन तक उस के गुनाह मुआफ़ फ़रमा देता है, और उस के लिये सुब्ह से शाम तक सत्तर हज़ार फ़िरिश्ते दुआए मग़ि़रत करते रहते हैं। रात और दिन में जब भी वोह सज्दा करता है उस के हर सज्दे के इवज़ (या'नी बदले) उसे (जन्नत में) एक एक ऐसा दरख़्त अता किया जाता है कि उस के साए में घुड़ सुवार पांच सो बरस तक चलता रहे।”

(شُعَبُ الْإِيمَان ج ٣ ص ٣١٤ حديث ٣٦٣٥)

फरमाने मुस्तफा ﷺ जो शख्स मुझ पर दुरुदे पाक पढ़ना भूल गया वोह जन्नत का रास्ता भूल गया ।

سَيَحْنُ اللَّهُ غَوْجُلُ मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! खुदाए हन्नानो

मन्नान का किस क़दर अज़ीम एहसान है कि उस ने हमें अपने हबीबे जीशान, रहमते आ-लमियान ﷺ के तुफ़ैल ऐसा माहे र-मज़ान अता फ़रमाया कि इस माहे मुकर्रम में जन्नत के तमाम दरवाज़े खुल जाते हैं । और नेकियों का अज़्र ख़ूब ख़ूब बढ़ जाता है । बयान कर्दा हदीस के मुताबिक़ र-मज़ानुल मुबारक की रातों में नमाज़ अदा करने वाले को हर एक सज़्दे के बदले में पन्दरह सो नेकियां अता की जाती हैं नीज़ जन्नत का अज़ीमुश्शान महल मज़ीद बर आं । इस हदीसे मुबारक में रोज़ादारों के लिये येह बिशारते उज़्मा भी मौजूद है कि सुब्ह ता शाम सत्तर हज़ार फ़िरिश्ते उन के लिये दुआए मग़ि़रत करते रहते हैं ।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! तब्लीगे कुरआनो

सुन्नत की आलमगीर ग़ैर सियासी तहरीक, दा'वते इस्लामी के म-दनी माहोल से वाबस्ता अशिक़ाने रसूल की सोहबत हासिल होने की सूरत में माहे र-मज़ानुल मुबारक की ब-र-कतें लूटने का बहुत ज़ेहन बनता है वरना बुरी सोहबतों में रह कर इस मुबारक महीने में भी अक्सर लोग गुनाहों में पड़े रहते हैं । आइये ! गुनाहों के दलदल में धंसे हुए एक फ़नकार का वाक़िआ पढ़िये जिसे दा'वते इस्लामी के म-दनी माहोल ने म-दनी रंग चढ़ा दिया । चुनान्चे

फरमाने मुस्तफा ﷺ जिसने मुझे पर दस मरतबा दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह तआला उस पर सो रहू मर्वे भेजता है ।

## मैं फ़नकार था

ओरंगी टाऊन (बाबुल मदीना कराची) के एक इस्लामी भाई के बयान का लुब्बे लुबाब है : अफ़सोस सद करोड़ अफ़सोस ! मैं एक फ़नकार था, म्यूज़ीकल प्रोग्राम्ज़ और फंक्शनज़ करते हुए जिन्दगी के अनमोल अवकात बरबाद हुए जा रहे थे, क़ल्बो दिमाग़ पर ग़फ़लत के कुछ ऐसे पर्दे पड़े हुए थे कि न नमाज़ की तौफ़ीक़ थी न ही गुनाहों का एहसास । सहराए मदीना टोल प्लाज़ा सुपर हाइवे बाबुल मदीना कराची में बाबुल इस्लाम सत्ह पर होने वाले तीन रोज़ा सुन्नतों भरे इज्तिमाअ (सि. 1424 हि., सि. 2003 ई.) में हाज़िरी के लिये एक ज़िम्मादार इस्लामी भाई ने इन्फ़िरादी कोशिश कर के तरगीब दिलाई । ज़हे नसीब ! उस में शिर्कत की सआदत मिल गई । तीन रोज़ा इज्तिमाअ के इख़िताम पर रिक्कत अंगेज़ दुआ में मुझे अपने गुनाहों पर बहुत ज़ियादा नदामत हुई, मैं अपने जज़्बात पर काबू न पा सका, फूट फूट कर रोया, बस रोने ने काम दिखा दिया ! الْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ मुझे दा'वते इस्लामी का म-दनी माहोल मिल गया । और मैं ने रक्सो सुरूद की महफ़िलों से तौबा कर ली और म-दनी काफ़िलों में सफ़र को अपना मा'मूल बना लिया । 25 दिसम्बर 2004 को मैं जब म-दनी काफ़िले में सफ़र पर रवाना हो रहा था कि छोटी हमशीरा का फ़ोन आया, भर्साई हुई आवाज़ में उन्होंने ने अपने यहां होने वाली नाबीना बच्ची की विलादत

फरमाने मुस्ताफा ﷺ तुम जहां भी हो मुझ पर दुरुद पढ़ो कि तुम्हारा दुरुद मुझ तक पहुंचता है।

की ख़बर सुनाई और साथ ही कहा, डॉक्टरों ने कह दिया है कि इस की आंखें रोशन नहीं हो सकतीं। इतना कहने के बा'द बन्द टूटा और छोटी बहन सदमे से बिलक बिलक कर रोने लगी। मैं ने येह कह कर ढारस बंधाई कि **م-दनी काफ़िले** में दुआ करूंगा। मैं ने म-दनी काफ़िले में खुद भी बहुत दुआएं कीं और म-दनी काफ़िले वाले आशिकाने रसूल से भी दुआएं करवाई। जब म-दनी काफ़िले से पलटा तो दूसरे ही दिन छोटी बहन का मुस्कराता हुवा फ़ोन आया और उन्होंने ने खुशी खुशी येह ख़बरे फ़रहत असर सुनाई कि **الحمد لله غُورُحَل** मेरी नाबीना बेटी महक की आंखें रोशन हो गई हैं और डॉक्टरज़ तअज्जुब कर रहे हैं कि येह कैसे हो गया ! क्यूं कि हमारी डॉक्टरी में इस का कोई इलाज ही नहीं था। येह बयान देते वक़्त **الحمد لله غُورُحَل** मुझे बाबुल मदीना कराची में अलाकाई मुशा-वरत के एक रुकन की हैसियत से दा'वते इस्लामी के म-दनी कामों के लिये कोशिशें करने की सआदतें हासिल हैं।

आफ़तों से न डर, रख करम पर नज़र

रोशन आंखें मिलें, काफ़िले में चलो

आप को डॉक्टर, ने गो मायूस कर

भी दिया मत डरें, काफ़िले में चलो

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! दा'वते

इस्लामी का म-दनी माहोल कितना प्यारा प्यारा है। इस के दामन में

फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ जिसने मुझ पर दस मतबा सुब्द और दस मतबा शाम दुरूद पाक पढ़ा उसे क़ियामत के दिन मेरी शफ़ाअत मिलेगी।

आ कर मुआशरे के न जाने कितने ही बिगड़े हुए अफ़राद बा किरदार बन कर सुन्नतों भरी बा इज़्ज़त ज़िन्दगी गुज़ारने लगे नीज़ म-दनी काफ़िलों की बहारें भी आप के सामने हैं। जिस तरह म-दनी काफ़िलों में सफ़र की ब-र-कत से बा'जों की दुन्यवी मुसीबत रुख़्सत हो जाती है। **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** इसी तरह ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, सरापा रहमत, शफ़ीए उम्मत **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** की शफ़ाअत से आख़िरत की आफ़त भी राहत में ढल जाएगी।

टूट जाएंगे गुनहगारों के फ़ौरन कैदो बन्द

**صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ**  
हशर को खुल जाएगी ताक़त रसूलुल्लाह की

## पांच खुसूसी करम

हज़रते सय्यिदुना जाबिर बिन अब्दुल्लाह **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** से रिवायत है कि रहमते आ-लमियान, सुल्ताने दो जहान, शहन्शाहे कौनो मकान, हबीबे रहमान **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** का फ़रमाने ज़ी शान है : “मेरी उम्मत को माहे र-मज़ान में **पांच चीज़ें** ऐसी अता की गई जो मुझ से पहले किसी नबी **عَلَيْهِ السَّلَام** को न मिलीं : **﴿1﴾** जब र-मज़ानुल मुबारक की पहली रात होती है तो **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** उन की तरफ़ रहमत की नज़र फ़रमाता है और जिस की तरफ़ **अल्लाह** की तरफ़ रहमत फ़रमाए उसे कभी भी अज़ाब न देगा **﴿2﴾** शाम के वक़्त उन के मुंह की बू (जो भूक की वजह से होती है) **अल्लाह** तअ़ाला के नज़्दीक मुश्क की खुशबू से भी बेहतर है **﴿3﴾** फ़िरिशते



फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ जिसने किताब में मुझ पर दुर्दुदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फ़िरिश्ते उस के लिये इस्तिग़फ़ार करते रहेंगे।

हर रात और दिन उन के लिये मग़ि़रत की दुआएं करते रहते हैं

﴿4﴾ अल्लाह तआला जन्नत को हुक्म फ़रमाता है, “मेरे (नेक) बन्दों के लिये मुज़य्यन (या’नी आरास्ता) हो जा अन्क़रीब वोह दुन्या की मशक्क़त से मेरे घर और करम में राहत पाएंगे

﴿5﴾ जब माहे र-मज़ान की आख़िरी रात आती है तो अल्लाह عزّوجلّ सब की मग़ि़रत फ़रमा देता है। कौम में से एक शख़्स ने खड़े हो कर अर्ज़ की, या रसूलल्लाह ﷺ क्या येह लै-लतुल क़द्र है ?

इर्शाद फ़रमाया : “नहीं क्या तुम नहीं देखते कि मज़्दूर जब अपने कामों से फ़ारिग़ हो जाते हैं तो उन्हें उजरत दी जाती है।”

(التَّوْبَةُ وَالتَّوْبَةُ ج ٢ ص ٥٦ حديث ٧)

## सगीरा गुनाहों का कफ़ारा

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رضی اللّٰهُ تعالیٰ عنہ से मरवी है, हुज़ूरे पुरनूर, शाफ़ेए यौमुन्नुशूर ﷺ का फ़रमाने पुर सुरूर है, “पांचों नमाज़ें, और जुमुआ अगले जुमुआ तक और माहे र-मज़ान अगले माहे र-मज़ान तक गुनाहों का कफ़ारा हैं जब तक कि कबीरा गुनाहों से बचा जाए।” (صحيح مسلم ج ١ ص ١٤٤ حديث ٢٣٣)

## तौबा का तरीक़ा

र-मज़ानुल मुबारक में रहमतों की छमाछम बारिशें और गुनाहे सगीरा के कफ़ारे का सामान हो जाता है। गुनाहे कबीरा तौबा से मुआफ़ होते हैं। तौबा करने का तरीक़ा

फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ जो मुझ पर राज़ जुमुआ दूरद शरीफ़ पढ़ेगा मैं कियामत के दिन उस को शफ़ाअत करूँगा ।

येह है कि जो गुनाह हुवा ख़ास उस गुनाह का ज़िक्क़र कर के दिल की बेज़ारी और आइन्दा उस से बचने का अहद कर के तौबा करे । म-सलन झूट बोला, तो बारगाहे खुदा वन्दी عَزَّوَجَلَّ में अर्ज करे, या अल्लाह ! عَزَّوَجَلَّ मैं ने जो येह झूट बोला इस से तौबा करता हूं और आइन्दा नहीं बोलूंगा । तौबा के दौरान दिल में झूट से नफ़रत हो और “आइन्दा नहीं बोलूंगा” कहते वक़्त दिल में येह इरादा भी हो कि जो कुछ कह रहा हूं ऐसा ही करूंगा जभी तौबा है । अगर बन्दे की हक़ त-लफ़ी की है तो तौबा के साथ साथ उस बन्दे से मुआफ़ करवाना भी ज़रूरी है ।

صَلُّوا عَلَى الْخَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

تَوْبُوا إِلَى اللَّهِ ! اسْتَغْفِرُ اللَّهَ

صَلُّوا عَلَى الْخَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

हर शब साठ हजार की बरिश्शश

हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह इब्ने मस्ऊद رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है कि शहन्शाहे जीशान, मक्की म-दनी सुल्तान, रहमते आ-लमियान, महबूबे रहमान صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने रहमत निशान है, “र-मज़ान शरीफ़ की हर शब आस्मानों में सुब्हे सादिक़ तक एक मुनादी येह निदा करता है, “ऐ अच्छाई मांगने वाले ! मुकम्मल कर (या'नी अल्लाह तआला की इताअत की तरफ़ आगे बढ़) और खुश हो जा । और ऐ शरीर ! शर से बाज़ आ जा

फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ जिसने मुझ पर एक बार दुर्रदे पाक पढ़ा अल्लाह तआला उस पर दस रहमतें भेजता है।

और इब्रत हासिल कर। है कोई मग़िफ़रत का तालिब ! कि उस की तलब पूरी की जाए। है कोई तौबा करने वाला ! कि उस की तौबा क़बूल की जाए। है कोई दुआ मांगने वाला ! कि उस की दुआ क़बूल की जाए। है कोई साइल ! कि उस का सुवाल पूरा किया जाए। अल्लाह तआला र-मज़ानुल मुबारक की हर शब में इफ़्तार के वक़्त साठ हज़ार गुनाहगारों को दोज़ख़ से आज़ाद फ़रमा देता है। और ईद के दिन सारे महीने के बराबर गुनाहगारों की बख़्शिश की जाती है।”

(الْمَشْهُور ج ١ ص ٤٤٦)

मदीने के दीवानो ! र-मज़ानुल मुबारक की जल्वा गरी तो क्या होती है, हम ग़रीबों के वारे न्यारे हो जाते हैं। अल्लाह तआला के फ़ज़्लो करम से रहमत के दरवाज़े खोल दिये जाते हैं और ख़ूब मग़िफ़रत के परवाने तक्सीम होते हैं। काश ! हम गुनहगारों को ब तुफ़ैले माहे र-मज़ान, सरवरे कौनो मकान, मक्की म-दनी सुल्तान, रहमते आ-लमियान, महबूबे रहमान ﷺ के रहमत भरे हाथों जहन्नम से रिहाई का परवाना मिल जाए। इमामे अहले सुन्नत ﷺ बारगाहे रिसालत ﷺ में अर्ज करते हैं :

तमन्ना है फ़रमाइये रोज़े महशर

येह तेरी रिहाई की चिड्डी मिली है

फरमाने मुस्तफा ﷺ जो शख्स मुझ पर दुरुदे पाक पढ़ना भूल गया वोह जन्नत का रास्ता भूल गया ।

## रोज़ाना दस लाख गुनहगारों की दोज़ख़ से रिहाई

अल्लाह तआला की इनायतों, रहमतों और बख़्शिशों का तज़्किरा करते हुए एक मौक़अ पर सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार, रसूलों के सालार, नबियों के सरदार, बि इज़्ने परवर्द गार दो आलम के मालिको मुख़्तार, शहन्शाहे अबरार ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : “जब र-मज़ान की पहली रात होती है तो अल्लाह तआला अपनी मख़्लूक की तरफ़ नज़र फ़रमाता है और जब अल्लाह عزّوجلّ किसी बन्दे की तरफ़ नज़र फ़रमाए तो उसे कभी अज़ाब न देगा । और हर रोज़ दस लाख (गुनहगारों) को जहन्नम से आज़ाद फ़रमाता है और जब उन्तीसवीं रात होती है तो महीने भर में जितने आज़ाद किये उन के मज्मूए के बराबर उस एक रात में आज़ाद फ़रमाता है । फिर जब ईदुल फ़ित्र की रात आती है । मलाएका खुशी करते हैं और अल्लाह عزّوجلّ अपने नूर की खास तजल्ली फ़रमाता है और फ़िरिश्तों से फ़रमाता है, “ऐ गुरौहे मलाएका ! उस मज्दूर का क्या बदला है जिस ने काम पूरा कर लिया ?” फ़िरिश्ते अर्ज़ करते हैं, “उस को पूरा पूरा अज़्र दिया जाए ।” अल्लाह तआला फ़रमाता है, “मैं तुम्हें गवाह करता हूँ कि मैं ने उन सब को बख़्शा दिया ।”

(کَثرُ الْعَمَالِ ج ۸ ص ۲۱۹ حدیث ۲۳۷۰۲)

## जुम्हूआ की हर घड़ी में दस लाख की मग़िफ़रत

हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास رضی اللہ تعالیٰ عنہما से

फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ जिसने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह तआला उस पर दस रहमते भेजता है।

रिवायत है कि महबूबे रब्बुल आ-लमीन, सय्यिदुल अम्बियाए वल मुर-सलीन, शफ़ीज़ल मुज़िबीन, जनाबे रहमतुल्लिल आ-लमीन ﷺ का फ़रमाने दिल नशीन है, “अल्लाह عَزَّوَجَلَّ माहे र-मज़ान में रोज़ाना इफ़तार के वक़्त दस लाख ऐसे गुनहगारों को जहन्नम से आज़ाद फ़रमाता है जिन पर गुनाहों की वजह से जहन्नम वाजिब हो चुका था, नीज़ शबे जुमुआ और रोज़े जुमुआ (या'नी जुमा'रात को गुरुबे आफ़ताब से ले कर जुमुआ के गुरुबे आफ़ताब तक) की हर हर घड़ी में ऐसे दस दस लाख गुनहगारों को जहन्नम से आज़ाद किया जाता है जो अज़ाब के हक़दार क़रार दिये जा चुके होते हैं।”

(कَنْزُ الْعَمَالِ ج ٨ ص ٢٢٣-حدیث ٢٢٧١)

इस्य़ां से कभी हम ने कनारा न किया पर तूने दिल आजुर्दा हमारा न किया  
हम ने तो जहन्नम की बहुत की तज्वीज़ लेकिन तेरी रहमत ने गवारा न किया

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बयान कर्दा अहादीसे

मुबा-रका में रब्बुल अनाम عَزَّوَجَلَّ के किस क़दर अज़ीमुश्शान इन्आम व इकराम का ज़िक्र है। سُبْحَانَ اللَّهِ عَزَّوَجَلَّ ! र-मज़ानुल मुबारक में रोज़ाना दस लाख ऐसे गुनहगारों की बख़्शिश हो जाया करती है जो अपने गुनाहों के सबब जहन्नम के हक़दार क़रार पा चुके होते हैं। नीज़ शबे जुमुआ और रोज़े जुमुआ की तो हर हर घड़ी में दस दस लाख गुनहगार अज़ाबे नार से आज़ाद क़रार दिये जाते हैं। और फिर

फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ जिसने मुझ पर दस मरतबा दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह तआला उस पर सौ रहमतें भेजता है।

र-मज़ानुल मुबारक की आखिरी शब की तो क्या ख़ूब बहार है कि सारे माहे र-मज़ान में जितने बख़्शे गए थे उस के शुमार के बराबर गुनहगार उस एक रात में अज़ाबे नार से नजात पाते हैं। ऐ काश ! अल्लाह तआला हम गुनहगारों और बदकारों को भी इन मग़िफ़रत याफ़्तगान में शामिल कर ले।

امين بجاؤ النبی الامین ﷺ

जब कहा इस्यां से मैं ने सख़्त लाचारों में हूं  
जिन के पल्ले कुछ नहीं है उन ख़रीदारों में हूं  
तेरी रहमत के लिये शामिल गुनहगारों में हूं  
बोल उठी रहमत न घबरा मैं मददगारों में हूं  
صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّد

ख़र्च में कुशा-दगी करो

हज़रते सय्यिदुना ज़मुरह رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से मरवी है कि नबियों के सुल्तान, सरवरे ज़ीशान, रहमते आ-लमियान, सरदारे दो जहान, महबूबे रहमान صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने ब-र-कत निशान है: “माहे र-मज़ान में घर वालों के ख़र्च में कुशा-दगी करो क्यूं कि माहे र-मज़ान में ख़र्च करना अल्लाह तआला की राह में ख़र्च करने की तरह है।” (الْحَامِعُ الصَّغِيرُ ص १६२ حديث २७१६)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! माहे र-मज़ान के फ़ज़ाइल

फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ तुम जहाँ भी हो मुझ पर दूरद पढ़ो कि तुम्हारा दूरद मुझ तक पहुँचता है।

से कुतुबे अहदादीस मालामाल हैं। र-मजानुल मुबारक में इस क़दर ब-र-कतें और रहमतें हैं कि हमारे प्यारे प्यारे आका, मक्के मदीने वाले मुस्तफ़ा ﷺ ने यहां तक इर्शाद फ़रमाया, “अगर बन्दों को मा’लूम होता कि र-मजान क्या है तो मेरी उम्मत तमन्ना करती कि काश ! पूरा साल र-मजान ही हो।”

(صَحِيحُ ابْنِ حَزِيمَةَ ج ٣ ص ١٩٠ حَدِيثُ ١٨٨٦)

मदीना : तफ़्सीली मा’लूमात के लिये फ़ैज़ाने सुन्नत के बाब फ़ैज़ाने र-मजान का मुता-लआ कीजिये।

## शव्वालुल मुकर्रम

“ईद” के तीन हुरूप की निश्चत से  
शश ईद के रोज़ों के तीन फ़ज़ाइल  
नौ मौलूद की तरह गुनाहों से पाक

हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन उमर رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا से रिवायत है, नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहरो बर ﷺ फ़रमाते हैं : “जिस ने र-मजान के रोज़े रखे फिर छ दिन शव्वाल में रखे तो गुनाहों से ऐसे निकल गया जैसे आज ही मां के पेट से पैदा हुवा है।”

(مَجْمَعُ الزَّوَائِدِ ج ٣ ص ٤٢٥ حَدِيثُ ٥١٠٢)

## गोया उम्र भर का रोज़ा रखा

हज़रते सय्यिदुना अबू अय्यूब رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत

फरमाने मुस्तफा ﷺ जिसने मुझ पर दस मर्तबा सुब्ह और दस मर्तबा शाम दुरूदे पाक पढ़ा उसे कियामत के दिन मेरी शफाअत मिलेगी।

है, सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार ﷺ का फरमाने मुश्कबार है : “जिस ने र-मजान के रोजे रखे फिर इन के बा'द छ शव्वाल में रखे। तो ऐसा है जैसे दहर का (या'नी उम्र भर के लिये) रोजा रखा।” (صحيح مسلم ص ५९२ حديث ११६)

### साल भर रोजे रखे

हजरते सय्यिदुना सौबान رضى الله تعالى عنهم से रिवायत है, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया : “जिस ने ईदुल फ़ित्र के बा'द (शव्वाल में) छ रोजे रख लिये तो उस ने पूरे साल के रोजे रखे कि जो एक नेकी लाएगा उसे दस मिलेंगी।

(سنن ابن ماجه ج २ ص ३३३ حديث १७१०)

### जुल हिज्जतिल हराम

### इब्तिदाई दस दिन की फज़ीलत

बा'ज अहादीसे मुबा-रका के मुताबिक ज़ुल हिज्जतिल हराम का पहला अ-शरह (या'नी इब्तिदाई दस दिन) र-मजानुल मुबारक के बा'द सब दिनों से अफ़ज़ल है।

“अल्लाह” के चार हुरूफ़ की निस्बत से अ-श-रए ज़ुल हिज्जतिल हराम के मु-तअल्लिक 4 रिवायात नेकियां करने के पसन्दीदा तरीन अय्याम

सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार, महबूबे रब्बे ग़फ़ार



फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ पर दुरूदे पाक की कसूरत करो बेशक येह तुम्हारे लिये त़हारत है ।

ﷺ का फ़रमाने नूर बार है : “इन दस दिनों से ज़ियादा किसी दिन का नेक अमल अल्लाह ﷻ को महबूब नहीं ।” सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने अर्ज की, “या रसूलल्लाह ! ﷺ और न राहे खुदा ﷻ में जिहाद ? फ़रमाया, “और न राहे खुदा ﷻ में जिहाद, मगर वोह कि अपने जानो माल ले कर निकले फिर उन में से कुछ वापस न लाए (या’नी सिर्फ़ वोह मुजाहिद अफ़ज़ल होगा जो जानो माल कुरबान करने में काम्याब हो गया)

(صَحِيحُ الْبُخَارِيِّ ج ١ ص ٣٣٣ حديث ٩٦٩)

### शबे क़द्र के बराबर फज़ीलत

हदीसे पाक में है, “अल्लाह ﷻ को अ-श-ए जुल हिज्जा से ज़ियादा किसी दिन में अपनी इबादत किया जाना पसन्दीदा नहीं इस के हर दिन का रोज़ा एक साल के रोज़ों और हर शब का कियाम शबे क़द्र के बराबर है ।”

(سُنَنِ التِّرْمِذِيِّ ج ٢ ص ١٩٢ حديث ٧٥٨)

### अ-रफ़ा का रोज़ा

हज़रते सय्यिदुना अबू क़तादा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है, सुल्ताने मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, फ़ैज़ गन्जीना, साहिबे मुअत्तर पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना ﷺ का फ़रमाने बा क़रीना है : “मुझे अल्लाह ﷻ पर गुमान है कि अ-रफ़ा (या’नी 9 जुल हिज्जतिल हुराम ) का रोज़ा एक साल क़ब्ल और एक साल बा’द के गुनाह मिटा देता है ।”

(صَحِيحُ مُسْلِمٍ ص ٥٩٠ حديث ١٩٦)

फ़रमाने मुस्त्फा ﷺ जिसने किताब में मुझ पर दूरद पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फ़िरश्ते उस के लिये इस्तिफ़ार करते रहेंगे ।

## एक रोज़ा हजार रोज़ों के बराबर

उम्मुल मुअमिनीन हज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिदीका  
 رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا से रिवायत है, नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर,  
 दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहरो बर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इशाद  
 फ़रमाया : “अ-रफ़ा (या'नी 9 जुल हिज्जतिल हराम) का रोज़ा  
 हजार रोज़ों के बराबर है ।” (شُعَبُ الْإِيمَان ج ۳ ص ۳۰۷ حدیث ۳۷۶) मगर  
 हज करने वाले पर जो अ-रफ़ात में है उसे अ-रफ़ा (या'नी 9 जुल  
 हिज्जतिल हराम) के दिन रोज़ा मक्रूह है कि हज़रते सय्यिदुना इब्ने  
 खुजैमा رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ हज़रते सय्यिदुना अबू हरैरा رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से  
 रावी कि हुज़ूर पुरनूर, शाफ़ेए यौमुन्नुशूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने  
 अ-रफ़ा के दिन (या'नी 9 जुल हिज्जतिल हराम के रोज़ हाजी को)  
 अ-रफ़ात में रोज़ा रखने से मन्अ फ़रमाया ।

(صَحِيحُ ابْنِ حُرَيْمَةَ ج ۳ ص ۲۹۲ حدیث ۲۱۰)

صَلُّوْا عَلٰی الْحَبِیْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ  
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

## मुखलिफ म-दनी फूल

### दुरूद शरीफ की फज़ीलत

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से मरवी है कि नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّی اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने मुश्क़बार है :

مَنْ صَلَّى

عَلَى وَاحِدَةٍ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ عَشْرَ صَلَوَاتٍ وَحُطَّتْ عَنْهُ عَشْرُ خَطِيئَاتٍ  
وَرُفِعَتْ لَهُ عَشْرُ دَرَجَاتٍ

या 'नी जिस ने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा, अल्लाह तआला उस पर दस रहमतें भेजता है और उस के दस गुनाह मुआफ़ किये जाएंगे और उस के दस द-रजे बुलन्द किये जाएंगे।”

(مشكاة المصابيح ج ١ ص ١٨٩ حديث ٩٢٢)

صَلُّوا عَلَى الْخَبِيبِ ! صَلَّی اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

“मुजद्विदे आ' ज़म मौलाना इमाम अहमद रज़ा” के पच्चीस हुरूफ़ की निश्बत से ख़जूर के 25 म-दनी फूल

﴿1﴾ तबीबों के तबीब, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के हबीब, हबीबे लबीब صَلَّی اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने सिद्दहत निशान है, “आलिया” (या'नी मदीनए मुनव्वरह में मस्जिदे कुबा शरीफ की जानिब एक जगह का नाम)

फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ मुझ पर कसूरत से दुरुदे पाक पढ़ो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरुदे पाक पढ़ना तुम्हारे गुनाहों के लिये मग़्फ़िरत है।

की अज़्वा (मदीनाए मुनव्वरह की सब से अज़ीम खजूर का नाम) में हर बीमारी से शिफ़ा है। अल्लामा बदरुद्दीन ऐनी ह-नफी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِ की रिवायत के मुताबिक़ “सात रोज़ तक रोज़ाना सात अदद अज़्वा खजूर खाना जुज़ाम (या'नी कोढ़) को रोकता है।”

(عُمْدَةُ الْفَارَى ج ٤ ص ٤٤٦)

﴿2﴾ मीठे मीठे आक़ा मक्की म-दनी मुस्तफ़ा ﷺ صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है, अज़्वा खजूर जन्नत से है, इस में ज़हर से शिफ़ा है।

(سُنَنِ التِّرْمِذِيِّ ج ٤ ص ١٧ حديث ٢٠٧٣)

बुख़ारी शरीफ़ की रिवायत के मुताबिक़ जिस ने नहार मुंह अज़्वा खजूर के सात दाने खा लिये उस दिन उसे जादू और ज़हर भी नुक़सान न दे सकेंगे।

(صَحِيحُ الْبُخَارِيِّ ج ٣ ص ٥٤٠ حديث ٥٤٤٥)

क्या हदीस में बताया हुआ इलाज हर एक कर सकता है?

अहादीसे मुबा-रका में बयान कर्दा इलाज भी अपनी मरज़ी से नहीं करने चाहिए। बेशक सरकारे मदीना ﷺ के फ़रामीने वाला शान हक़, हक़ और हक़ ही हैं। मगर जो इलाज नबियों के सरताज, साहिबे मे'राज ﷺ के फ़रामीने वाला शान हक़, हक़ और हक़ ही हैं। मगर जो इलाज नबियों के सरताज, साहिबे मे'राज ﷺ ने तजवीज़ फ़रमाए हैं हो सकता है वोह ख़ास ख़ास मौक़ओं मौसिमों की मुनासि-बतों और मख़्सूस लोगों के मिज़ाजों और तबीअतों के मुवाफ़िक़ हों जैसा कि हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَرَحْمَةُ الْخَلَاءِ इस हदीसे पाक “فِي الْحَبَّةِ السُّودَاءِ شِفَاءٌ مِنْ كُلِّ دَاءٍ إِلَّا السَّامَ.” या'नी काला दाना (कलोंजी) में मौत के सिवा हर बीमारी से शिफ़ा है” के तहत फ़रमाते

फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ जो मुझ पर एक मरतबा दुरुद शरीफ़ पढ़ता है अल्लाह तआला उस के लिये एक क़ीरात अज़्र लिखता है और क़ीरात उहद पहाड़ जितना है।

हैं : हर मरज़ (में शिफ़ा) से मुराद हर बल्ग़मी और रुतूबत के अमराज़ में (शिफ़ा है), क्यूं कि कलोंजी गर्म और खुश्क होती है लिहाज़ा मरतूब (या'नी तरी वाली) और सर्दी की बीमारियों में मुफ़ीद होगी। आगे चल कर मज़ीद फ़रमाते हैं : यहां मुराद अरब की आ़म बीमारियां हैं (مرتب) या'नी कलोंजी अरब की आ़म बीमारियों में मुफ़ीद है। ख़याल रहे कि अह़ादीसे शरीफ़ा की दवाएं किसी हाज़िक़ तबीब (या'नी माहिर तबीब) की राय से इस्ति'माल करनी चाहिएं (अहले अरब को तजवीज़ कर्दा दवाएं) सिर्फ़ (अपनी) राय से इस्ति'माल न करें कि हमारे (तबई) मिज़ाज अहले अरब के (तबई) मिज़ाज से जुदागाना हैं। (मिरआत, जि. 6 स. 216, 217 ज़ियाउल कुरआन पब्लीकेशन्ज़ मर्कजुल औलिया लाहोर) साथों साथ येह भी ख़ास ताकीद है कि इस किताब में दिया हुवा कोई भी नुस्खा अपने तबीब से मश्वरा किये बिगैर इस्ति'माल न किया जाए अगर्चे येह नुस्खा उसी बीमारी के लिये हो जिस से आप दो चार हों। इस की बुन्यादी वजह येह है कि लोगों की तबई कैफ़िय्यात जुदा जुदा होती हैं, एक ही दवा किसी के लिये आबे हयात का काम दिखाती है तो किसी के लिये मौत का पयाम लाती है। लिहाज़ा आप की जिस्मानी कैफ़िय्यात से वाकिफ़ आप का मरख़ूस तबीब ही बेहतर तै कर सकता है कि आप को कौन सा नुस्खा मुवाफ़िक़ हो सकता है और कौन सा नहीं। क्यूं कि किताब में इलाज के तरीके बयान करना और है जब कि किसी ख़ास मरीज़ का इलाज करना और।

﴿3﴾ सय्यिदुना अबू हुरैरा رضى الله تعالى عنه से रिवायत है, खज़ूर खाने

फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ जिसने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह तआला उस पर दस रहमतें भेजता है।

से कूलन्ज (या'नी बड़ी अंतड़ी का दर्द) नहीं होता।

(كَثُرَ الْعَمَالُ ج. १०, ص १२ حديث २८१९)

﴿4﴾ तबीबों के तबीब, अल्लाह ﷻ के हबीब, हबीबे लबीब का फ़रमाने शिफ़ा निशान है, नहार मुंह खजूर खाओ इस से पेट के कीड़े मर जाते हैं। (الْحَامِيعُ الصَّغِيرُ ص ३९८ حديث ६३९६)

﴿5﴾ हज़रते सय्यिदुना रबीअ बिन ख़सीम رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाते हैं :  
“मेरे नज़्दीक हामिला के लिये खजूर से और मरीज़ के लिये शहद से बेहतर किसी चीज़ में शिफ़ा नहीं।” (الْذُّرُ الْمُنْتَوَرُ ج. ५, ص ५००)

﴿6﴾ सय्यिदी मुहम्मद अहमद ज़हबी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ फ़रमाते हैं, हामिला को खजूरें खिलाने से إِن شَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ लड़का पैदा होगा जो कि ख़ूब सूरत बुर्द बार और नर्म मिजाज़ होगा।

﴿7﴾ जो फ़ाक़े की वजह से कमज़ोर हो गया हो उस के लिये खजूर बहुत मुफ़ीद है क्यूं कि येह ग़िज़ाइय्यत से भरपूर है। इस के खाने से जल्द तवानाई बहाल हो जाती है। लिहाज़ा खजूर से इफ़तार करने में येह हिक्मत भी है।

﴿8﴾ रोज़े में फ़ौरन बर्फ़ का ठन्डा पानी पी लेने से गेस, तब्खीरे मे'दा और जिगर के वरम का सख़्त ख़तरा है। खजूर खा कर ठन्डा पानी पीने से नुक्सान का ख़तरा टल जाता है, मगर सख़्त ठन्डा पानी पीना हर वक़्त नुक्सान देह है।

﴿9﴾ खजूर और खीरा या ककड़ी, नीज़ खजूर और तरबूज़ एक साथ

फरमाने मुस्तफ़ा ﷺ जब तुम मुसलीन عليهم السلام पर दुरदे पाक पढो तो मुझ पर भी पढो बेशक मैं तमाम जहानों के रब का रसूल हूँ।

खाना सुन्नत है। इस में भी हिक्मतों के म-दनी फूल हैं। اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ। हमारे अमल के लिये तो इस का सुन्नत होना ही काफ़ी है। अतिब्बा का कहना है कि इस से जिन्सी व जिस्मानी कमजोरी और दुबला पन दूर होता है। हृदीसे पाक में है सरकारे मदीना ﷺ का फरमाने सिद्दहत बुन्याद है : कि मख़खन को खजूर के साथ मिला कर खाओ और पुरानी के साथ नई खजूरें मिला कर खाओ क्यूं कि शैतान किसी को ऐसा करता देखता है तो अफ़सोस करता है और कहता है कि पुरानी के साथ नई खजूर खा कर आदमी तनू मन्द (या'नी मज़बूत जिस्म वाला) हो गया। (سنن ابن ماجه ج ٤ ص ٣٩ حديث ٣٣٣)

«10» खजूर खाने से पुरानी कब्ज़ दूर होती है।

«11» दमा, दिल, गुर्दा, मसाना, पित्ता और आंतों के अमराज़ में खजूर मुफ़ीद है। येह बलग़म ख़ारिज करती, मुंह की खुश्की को दूर करती, कुव्वते बाह बढ़ाती और पेशाब आवर है।

«12» दिल की बीमारी और काला मोतिया के लिये खजूर को गुठली समेत कूट कर खाना मुफ़ीद है।

«13» खजूर को भिगो कर इस का पानी पी लेने से जिगर की बीमारियां दूर होती हैं। दस्त की बीमारी में भी येह पानी मुफ़ीद है। (रात को भिगो कर सुब्ह नहार मुंह इस का पानी पियें मगर भिगोने के लिये फ़्रीज़र में न रखें।)

«14» खजूर को दूध में उबाल कर खाना बेहतरीन मुक़व्वी (या'नी ताक़त देने वाली) ग़िज़ा है। येह ग़िज़ा बीमारी के बा'द की कमजोरी दूर करने के लिये बेहद मुफ़ीद है।

«15» खजूर खाने से ज़ख़्म जल्दी भरता है।

फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ जो मुझ पर राज़ जुमुआ दुरूद शरीफ़ पढ़ेगा मैं क़ियामत के दिन उस को शफ़ाअत करूँगा।

﴿16﴾ यरक़ान (या'नी पीलिया) के लिये खजूर बेहतरीन दवा है।

﴿17﴾ ताज़ा पकी हुई खजूरें सफ़रा (या'नी "पित" जिस में कै के ज़रीए कड़वा पानी निकलता है) और तेज़ाबिय्यत को ख़त्म करती हैं।

﴿18﴾ खजूर की गुठलियों को आग में जला कर इस का मन्जन बना लीजिये। येह दांतों को चमकदार और मुंह की बदबू को दूर करता है।

﴿19﴾ खजूर की जली हुई गुठलियों की राख लगाने से ज़ख़्म का खून बन्द होता और ज़ख़्म भर जाता है।

﴿20﴾ खजूर की गुठलियों को आग में डाल कर धूनी लेना बवासीर के मस्सों को खुशक करता है।

﴿21﴾ खजूर के दरख़्त की जड़ों या पत्तों की राख से मन्जन करना दांतों के दर्द के लिये मुफ़ीद है। जड़ों या पत्तों को पानी में उबाल कर इस से कुल्लियां करना भी दांतों के दर्द में फ़ाएदा मन्द है।

﴿22﴾ जिस को खजूर खाने से किसी किस्म का नुक्सान (side effect) होता हो तो अनार का रस, या ख़शखाश या काली मिर्च के साथ इस्ति'माल करे إِنَّ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ फ़ाएदा होगा।

﴿23﴾ अध पकी और पुरानी खजूरें बयक वक़्त खाना नुक्सान देह है। इसी तरह खजूर के साथ अंगूर या किश्मिश या मुनक्का मिला कर खाना, खजूर और अन्जीर बयक वक़्त खाना, बीमारी से उठते ही कमज़ोरी में ज़ियादा खजूरें खाना और आंखों की बीमारी में खजूरें



फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ जिसने मुझ पर रोज़े जुमुआ दो सौ बार दुरूदे पाक पढ़ा उस के दो सौ साल के गुनाह मुआफ़ होंगे।

खाना मुज़िर या'नी नुक़सान देह है।

《24》 एक वक़्त में 5 तोला (या'नी तक्रीबन 60 ग्राम) से ज़ियादा खजूरें न खाएं। पुरानी खजूर खाते वक़्त खोल कर अन्दर से देख लीजिये क्यूं कि इस में बा'ज़ अवक़ात सुरसुरियां (या'नी छोटे छोटे लाल कीड़े) होती हैं लिहाज़ा साफ़ कर के खाइये। जिस खजूर में कीड़े होने का गुमान हो उस को साफ़ किये बिगैर खाना मकरूह है। (عون المعبود ج १ ص २६१) बेचने वाले चमकाने के लिये अक्सर सरसों का तेल लगा देते हैं। लिहाज़ा बेहतर येह है कि खजूरों को चन्द मिनट के लिये पानी में भिगो दें। ताकि मख़ख़यों की बीट, और मैल कुचैल छूट जाए। फिर धो कर इस्ति'माल फ़रमाएं। दरख़्त की पकी हुई खजूरें ज़ियादा मुफ़ीद होती हैं।

《25》 मदीनए मुनव्वरह رَاٰهَا اللّٰهُ شَرْفًاوَتَعْظِيْمًا की खजूरों की गुठलियां मत फेंकिये। किसी अदब की जगह डाल दीजिये या दरिया बुर्द फ़रमा दीजिये, बल्कि हो सके तो सरौते से बारीक टुकड़ियां कर के डिबिया में डाल कर जेब में रख लीजिये और छालिया की जगह इस्ति'माल कर के इस की ब-र-कतें लूटिये। कोई चीज़ ख़्वाह दुन्या के किसी भी ख़ित्ते की हो जब मदीनए मुनव्वरह رَاٰهَا اللّٰهُ شَرْفًاوَتَعْظِيْمًا की फ़ज़ाओं में दाख़िल हुई तो मदीने की हो गई लिहाज़ा उश्शाक़ उस का अदब करते हैं।

(फ़ैज़ाने सुन्नत बाब : फ़ैज़ाने र-मज़ान, जि. 1, स. 1018)

फरमाने मुस्तफा ﷺ जो शख्स मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना भूल गया वोह जन्नत का रास्ता भूल गया ।

“शरीअत व सुन्नत की पाबन्दी करने में नजात है” केतीस हुरफ़ की  
निस्बत से 30 ग़-लतियों की निशान देही

- 《1》 इस खयाल में हमेशा मगन रहना कि जवानी और तन्दुरुस्ती हमेशा रहेगी ।
- 《2》 मुसीबतों में बे सब्र बन कर चीख व पुकार करना ।
- 《3》 अपनी अक्ल को सब से बढ़ कर समझना ।
- 《4》 दुश्मन को हकीर (कमज़ोर) समझना ।
- 《5》 बीमारी को मा'मूली समझ कर शुरूअ में इलाज न करना ।
- 《6》 अपनी राय पर अमल करना और दूसरों के मश्वरों को ठुकरा देना ।
- 《7》 किसी बदकार को बार बार आजमा कर भी उस की चापलूसी में आ जाना ।
- 《8》 बेकारी में खुश रहना और रोज़ी की तलाश न करना ।
- 《9》 अपना राज़ किसी दूसरे को बता कर उसे पोशीदा रखने की ताकीद करना ।
- 《10》 आमदनी से ज़ियादा खर्च करना ।
- 《11》 लोगों की तक्लीफ़ में शरीक न होना और उन से इमदाद की उम्मीद रखना ।
- 《12》 एक दो ही मुलाकात में किसी शख्स की निस्बत कोई अच्छी या बुरी राय काइम कर लेना ।
- 《13》 वालिदैन् की खिदमत न करना और औलाद से खिदमत की उम्मीद रखना ।
- 《14》 किसी काम को इस खयाल से अधूरा छोड़ देना कि फिर किसी वक़्त मुकम्मल कर लिया जाएगा ।

फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ जिसने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह तआला उस पर दस रहमते भेजता है ।

«15» हर शख़्स से बदी करना और लोगों से अपने लिये नेकी की तवक्कोअ रखना ।

«16» गुमराहों की सोहबत में उठना बैठना ।

«17» कोई अमले सालेह की तल्कीन करे तो उस पर ध्यान न देना ।

«18» खुद हराम व हलाल का खयाल न करना और दूसरों को भी इस राह पर लगाना ।

«19» झूठी क़सम खा कर झूट बोल कर धोका दे कर अपनी तिजारत को फ़रोग देना ।

«20» इल्मे दीन और दीनदारी को इज़्ज़त न समझना ।

«21» खुद को दूसरों से बेहतर समझना ।

«22» फ़कीरों और साइलों को अपने दरवाज़े से धक्का दे कर भगा देना ।

«23» ज़रूरत से ज़ियादा बात चीत करना ।

«24» अपने पड़ोसियों से बिगाड़ रखना ।

«25» बादशाहों और अमीरों की दोस्ती पर ए'तिबार करना ।

«26» ख़्वाह म ख़्वाह किसी के घरेलू मुआ-मलात में दख़ल देना ।

«27» बिगैर सोचे समझे बात करना ।

«28» तीन दिन से ज़ियादा किसी का मेहमान बनना ।

«29» अपने घर का भेद दूसरों पर जाहिर करना ।

«30» हर शख़्स के सामने अपने दुख दर्द बयान करना ।

(जन्नती ज़ेवर, स. 557)

फरमाने मुस्तफा ﷺ जिसने मुझ पर दस मरतबा दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह तआला उस पर सो रहमतें भेजता है।

## 49 इन्तिहाई कर आमद म-दनी फूल

《1》 रात को दरवाजा बन्द करते वक्त घर के अन्दर अच्छी तरह देखभाल कर लीजिये कि कोई अजनबी या कुत्ता, बिल्ली अन्दर तो नहीं रह गया येह आदत डाल लेने से اِنَّ شَاءَ اللّٰهُ غَوَّعَلْ घर में कोई नुकसान नहीं होगा।

《2》 घर और घर के तमाम सामानों को साफ़ सुथरा रखिये और हर चीज़ को उस की जगह पर रखिये।

《3》 सब घर वाले आपस में तै कर लें कि फुलां चीज़ फुलां जगह पर रहेगी फिर सब घर वाले इस के पाबन्द हो जाएं कि जब उस चीज़ को वहां से उठाएं तो इस्ति'माल कर के फिर उसी जगह रख दें ताकि हर आदमी को बिगैर पूछे और बिला ढूंडे वोह मिल जाया करे और ज़रूरत के वक्त तलाश करने की हाजत न पड़े।

《4》 घर के तमाम बरतनों को धो, मांझ कर किसी अलमारी या ताक़ पर उलटा कर के रख दीजिये और फिर दोबारा उस बरतन को इस्ति'माल करना हो तो फिर उस बरतन को बिगैर धोए इस्ति'माल मत कीजिये।

《5》 कोई जूठा बरतन या गिज़ा या दवा लगा हुवा बरतन हरगिज़ हरगिज़ न रख दिया करें, जूठे या गिज़ाओं और दवाओं से आलूदा बरतनों में जरासीम पैदा होते हैं और तरह तरह की बीमारियों के पैदा होने का ख़तरा रहता है।

《6》 अंधेरे में बिला देखे हरगिज़ हरगिज़ पानी न पियें न खाना खाएं।

《7》 घर या आंगन के रास्ते में चारपाई या कुरसी या कोई बरतन या

فَرَمَانُهُ مُسْتَفَا عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ تُمْ جَهَانَ بِي هُوَ مُسْجِدٍ عَلَى دُرُودٍ بِدَوِّ كِي تُمْهَارَا دُرُودٍ مُسْجِدٍ تَكِ بِهَنْدَتَا هَيْ ।

कोई सामान मत डाल दिया करें ऐसा करने से बा'ज दफ़आ रोज़ की आदत के मुताबिक़ बे खटके चले आने वाले को ठोकर ज़रूर लगती है और बा'ज मर्तबा तो सख़्त चोटें भी लग जाती हैं ।

«8» सुराही के मुंह या लोटे की टूटी से मुंह लगा कर हरगिज़ कभी पानी न पियें क्यूं कि अव्वलन तो येह ख़िलाफ़े तहज़ीब है दूसरा येह ख़तरा है कि सुराही या टूटी में कोई कीड़ा मकोड़ा छुपा हो और वोह पानी के साथ पेट में चला जाए ।

«9» हफ़्ता या दस दिनों में एक दिन घर की मुकम्मल सफ़ाई के लिये मुक़र्रर कर लीजिये उस दिन पूरे मकान की सफ़ाई कर लीजिये ।

«10» दिन रात बैठे रहना या पलंग पर सोए या लैटे रहना तन्दुरुस्ती के लिये बेहद नुक़सान देह है । इस्लामी भाइयों को साफ़ और खुली हवा में कुछ चल फिर लेना और इस्लामी बहनों को कुछ मेहनत का काम हाथ से कर लेना तन्दुरुस्ती के लिये बहुत ज़रूरी है ।

«11» जिस जगह चन्द आदमी बैठे हों उस जगह बैठ कर न थूकें न खन्कार निकालें न नाक साफ़ करें कि ख़िलाफ़े तहज़ीब भी है और दूसरों के लिये घिन पैदा करने वाली चीज़ है ।

«12» दामन या आंचल या आस्तीन से नाक साफ़ न करें न हाथ मुंह इन चीज़ों से पोंछें क्यूं कि येह गन्दगी है और तहज़ीब के ख़िलाफ़ भी ।

«13» जूती और कपड़ा या बिस्तर इस्ति'माल से पहले झाड़ लिया करें मुम्किन है कोई मूज़ी जानवर बैठा हो जो बे ख़बरी में आप को डस ले ।

फरमाने मुस्तफा ﷺ जिसने मुझ पर दस मर्तबा सुब्द और दस मर्तबा शाम दुरूदे पाक पढ़ा उसे कियामत के दिन मेरी शफाअत मिलेगी ।

﴿14﴾ छोटे बच्चों को खिलाते बहलाते कभी हरगिज़ हरगिज़ उछाल उछाल कर न खिलाएं खुदा न ख़्वास्ता हाथ से छूट गया तो बच्चे की जान ख़तरे में पड़ जाएगी ।

﴿15﴾ बीच दरवाजे में न बैठा करें सब आने जाने वालों को तकलीफ़ होगी और खुद आप भी तकलीफ़ उठाएंगे ।

﴿16﴾ अगर पोशीदा जगहों में किसी के फोड़ा फुन्सी या दर्द व वरम हो तो उस से येह मत पूछिये कि कहां है ? इस से ख़्वाह म ख़्वाह उस को शरमिन्दगी होगी ।

﴿17﴾ बैतुल ख़ला या गुस्लख़ाने से कमर बन्द या तहबन्द या साढ़ी बांधते हुए बाहर न निकलें बल्कि अन्दर ही से बांध कर बाहर निकलें ।

﴿18﴾ जब आप से कोई शख़्स कोई बात पूछे तो पहले उस का जवाब दीजिये इस के बा'द ही दूसरा काम कीजिये ।

﴿19﴾ जो बात किसी से कहें या किसी का जवाब दें तो साफ़ साफ़ बोलें और इतनी आवाज़ से बोलें कि सामने वाला अच्छी तरह सुन और समझ ले ।

﴿20﴾ अगर किसी के बारे में कोई पोशीदा बात किसी से कहनी हो और वोह शख़्स उस मजलिस में मौजूद हो तो आंख या हाथ से बार बार उस की तरफ़ इशारा मत कीजिये कि नाहक़ उस शख़्स को तरह तरह के शुबुहात होंगे ।

फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ मुझ पर दुरुदे पाक की कसूरत करो बेशक यह तुम्हारे लिये त़हारत है ।

«21» किसी को कोई चीज़ देनी हो तो अपने हाथ से उस के हाथ में दीजिये या बरतन में रख कर उस के सामने पेश कीजिये, दूर से फेंक कर कोई चीज़ किसी को मत दीजिये कि शायद उस के हाथ में न पहुंच सके और ज़मीन पर गिर कर टूट फूट जाए या ख़राब हो जाए ।

«22» अगर किसी को पंखा करें तो इस का ख़याल रखें कि उस के सर या चेहरा या बदन के किसी हिस्से में पंखा लगने न पाए और पंखे को इतने ज़ोर से भी न झला करें कि खुद आप या दूसरे परेशान हो जाएं ।

«23» मैले कपड़े जो धोबी के यहां जाने वाले हों उन को घर में इधर उधर पड़े या बिखरे हुए ज़मीन पर न रहने दें बल्कि मकान के किसी कोने में लकड़ी का एक मा'मूली बोक्स रख लीजिये और सब मैले कपड़ों को उसी में जम्अ करते रहिये ।

«24» अपने ऊनी कपड़ों को कभी कभी धूप में सुखा लिया करें और किताबों को भी ताकि कीड़े मकोड़े कपड़ों और किताबों को काट कर ख़राब न कर सकें ।

«25» जहां कोई आदमी बैठा हो वहां गर्दों गुबार वाली चीज़ों को न झाड़ें ।

«26» किसी दुख या परेशानी या ग़म और बीमारी वगैरा की ख़बरों को हरगिज़ उस वक़्त तक नहीं कहना चाहिये जब तक कि उस की ख़ूब अच्छी तरह तहकीक़ न हो जाए ।

«27» खाने पीने की कोई चीज़ खुली मत रखिये हमेशा ढांक कर रखा कीजिये और मक्खियों के बैठने से बचाइये ।

फरमाने मुस्तफा ﷺ जिसने किताब में मुझ पर दुरूद पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फिरश्त उस के लिये इस्तिफार करते रहेंगे।

﴿28﴾ दौड़ कर, मुंह ऊपर उठा कर नहीं चलना चाहिये इस में ठोकर लगने, किसी से टकरा जाने वगैरा के बहुत से ख़तरात हैं।

﴿29﴾ चलने में पाउं पूरा उठाया करें और पूरा पाउं ज़मीन पर रखा करें पन्जों या एड़ी के बल चलना या पाउं घसीटते हुए चलना येह तहज़ीब के ख़िलाफ़ है।

﴿30﴾ कपड़ा पहने पहने नहीं सीना चाहिये।

﴿31﴾ हर किसी पर अन्धा भरोसा मत कर लिया करें जब तक किसी को हर तरह से बार बार आजमा न लें उस का ए'तिबार मत कर लिया करें ख़ास कर अक्सर शहरों में बहुत सी औरतें कोई हज़्जिन साहिबा बनी हुई का'बे का ग़िलाफ़ लिये हुए, कोई ता'वीज़ गन्डे झाड़ फूंक करती हुई घरों में घुसती फिरती हैं और औरतों के मज्मअ में बैठ कर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ व रसूल ﷺ की बातें करती हैं, ख़बरदार ! ख़बरदार ! इन औरतों को हरगिज़ हरगिज़ घरों में आने ही मत दीजिये दरवाज़े ही से वापस कर दीजिये। ऐसी औरतों ने बहुत से घरों का सफ़ाया कर डाला है इन औरतों में बा'ज़ चोरों और डाकूओं की मुख़िब भी हुवा करती हैं जो घर के अन्दर घुस कर सारा माहोल देख लेती हैं फिर चोरों और डाकूओं को उन के घरों का हाल बता देती हैं।

﴿32﴾ जहां तक हो सके कोई सौदा सामान उधार मत मंगाया करें और अगर मजबूरी से मंगाना ही पड़ जाए तो दाम पूछ कर तारीख़ के साथ लिख लीजिये और जब रुपिया आप के पास आ जाए तो फ़ौरन अदा



फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ मुझ पर कसूरत से दुर्रदे पाक पढ़ो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुर्रदे पाक पढ़ना तुम्हारे गुनाहों के लिये मग़िफ़रत है।

कर दीजिये ज़बानी याद पर भरोसा मत कीजिये।

«33» जहां तक हो सके खर्च चलाने में बहुत ज़ियादा किफ़ायत से काम लीजिये और रुपिया पैसा बहुत ही इन्तिज़ाम से उठाइये बल्कि जितना खर्च के लिये आप को मिले उस में से कुछ न कुछ बचा लिया कीजिये।

«34» जो औरतें बहुत से घरों में आया जाया करती हैं जैसे धोबन, काम वालियां वगैरा उन के सामने हरगिज़ हरगिज़ अपने घर के इख़िलाफ़ और झगड़ों को मत बयान करें क्यूं कि अक्सर ऐसी औरतें घरों की बातें दस घरों में कहती फिरती हैं।

«35» कोई शख्स तुम्हारे दरवाज़े पर आ कर आप के घर के किसी फ़र्द का दोस्त या रिश्तेदार होना ज़ाहिर करे तो हरगिज़ उस को अपने मकान के अन्दर मत बुलाइये न उस का कोई सामान अपने घर में रखिये न अपना कोई कीमती सामान उस के सिपुर्द कीजिये।

«36» महबूबत में अपने बच्चों को बिला भूक के खाना मत खिलाइये न इस्सर कर के ज़ियादा खिलाओ कि इन दोनों सूरतों में बच्चे बीमार हो जाते हैं जिस की तकलीफ़ आप को और बच्चों दोनों को भुगतनी पड़ सकती है।

«37» बच्चों के सर्दी गरमी के कपड़ों का खास तौर पर ध्यान लाज़िमी है बच्चे सर्दी गरमी लगने से बीमार हो जाया करते हैं।

«38» बच्चों को मां बाप बल्कि दादा का नाम भी (बल्कि घर का एड्रेस भी) याद करा दीजिये और कभी कभी पूछा कीजिये ताकि याद

फरमाने मुस्तफा ﷺ जो मुझ पर एक मरतबा दुरूद शरीफ पढ़ता है अल्लाह तआला उस के लिये एक क़ोरात अज़ लिखता है और क़ोरात उहुद पहाड़ जितना है।

रहे, इस में येह फ़ाएदा है कि अगर खुदा न ख़्वास्ता बच्चा खो जाए और कोई उस से पूछे कि तेरे बाप का क्या नाम है ? तेरे मां बाप कौन हैं ? (तुम्हारा घर कहां है) तो अगर बच्चे को नाम व पता वगैरा याद होंगे तो बता देगा फिर कोई न कोई उस को आप के पास पहुंचा देगा या आप को बुला कर बच्चा आप के सिपुर्द कर देगा और अगर बच्चे को मां बाप का नाम (व पता) याद न रहा तो बच्चा येही कहेगा कि मैं अब्बा या अम्मां का बच्चा हूं कुछ ख़बर नहीं कि कौन अब्बा ? कौन अम्मां ?

«39» इस्लामी बहनें छोटे बच्चों को अकेला छोड़ कर घर से बाहर न चली जाया करें कि ऐसा भी हुवा है कि एक औरत बच्चे के आगे खाना रख कर बाहर चली गई। बहुत से कव्वों ने बच्चे के आगे का खाना छीन कर खा लिया और चोंच मार मार कर बच्चे की आंख भी फोड़ डाली। इसी तरह एक बच्चे को बिल्ली ने अकेला पा कर इस क़दर नोच डाला कि बच्चा मर गया।

«40» किसी को ठहराने या खाना खिलाने पर बहुत ज़ियादा इस्सार मत कीजिये बा'ज मरतबा इस में मेहमान को उलझन या तकलीफ़ हो जाती है फिर सोचिये कि भला ऐसी महबबत से क्या फ़ाएदा जिस का अन्जाम नफ़रत और बदनामी हो।

«41» वज़ या ख़तरे वाली कोई चीज़ किसी आदमी के ऊपर से उठा कर मत दिया करें खुदा न ख़्वास्ता वोह चीज़ हाथ से छूट कर आदमी के ऊपर गिर पड़ी तो इस का अन्जाम कितना ख़तरनाक होगा ?

फ़रमाने मुस्तफ़ा علی اللہ تعالیٰ و سلم جیو شاک्स मुझ पर दुरुदे पाक पढ़ना भूल गया वोह जन्त का रास्ता भूल गया ।

«42» किसी बच्चे या शागिर्द को सज़ा देनी हो तो मिट्टी, लकड़ी या लात घूँसा से मत मारें खुदा न ख़्वास्ता अगर किसी नाजुक जगह चोट लग जाए तो कितनी बड़ी मुसीबत सर पर आ पड़ेगी !

«43» अगर आप किसी के घर मेहमान बन कर जाएं और खाना खा चुके हों तो हस्बे हाल जाते ही घर वालों से कह दें कि हम खाना खा कर आए हैं क्यूं कि घर वाले लिहाज़ की वजह से बिगैर पूछे और चुपके चुपके खाना तय्यार कर लेंगे और जब खाना सामने आ गया तो आप ने कह दिया कि हम तो खाना खा कर आए हैं सोचिये कि उस वक्त घर वालों को कितना अफ़सोस होगा ?

«44» मकान में अगर रक़म या ज़ेवर वगैरा दफ़्न कर रखा है तो अपने घर वालों में से जिस पर भरोसा हो उस को बता दीजिये वरना शायद तुम्हारा अचानक इन्तिफ़ाल हो जाए तो वोह ज़ेवर या रक़म हमेशा ज़मीन ही में रह जाएगी । (इसी तरह दीगर खुफ़्या अम्वाल व अमानात व दस्तावेज़ात के बारे में किसी को ए'तिमाद में ले लेना मुफ़ीद है)

«45» मकान में जलता चराग़ या आग छोड़ कर बाहर मत चले जाइये चराग़ और आग को मकान से निकलते वक्त बुझा देना चाहिये ।

«46» इतना ज़ियादा मत खाइये कि चूरन की जगह भी पेट में बाक़ी न रह जाए ।

«47» जहां तक मुम्किन हो रात को मकान में तन्हा मत रहें खुदा जाने रात में क्या इन्तिफ़ाक़ पड़ जाए ? लाचारी और मजबूरी की तो और बात है मगर जब तक हो सके मकान में रात को अकेले नहीं

फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ जिसने मुझ पर दस मरतबा दुरुदे पाक पढ़ा अल्लाह तआला उस पर सौ रहमते भेजता है।

सोना चाहिये।

«48» अपने हुनर पर नाज़ मत कीजिये।

«49» बुरे वक़्त का कोई साथी नहीं होता इस लिये सिर्फ़ खुदा पर भरोसा रखिये।

(जन्नती ज़ेवर, स. 558 मुलख़ब्सन)

“मोहतात आदमी सदा सुख़्शी” के सोलह हुरफ़ की निश्बत से

16 घरेलू इलाज और कर आमद म-दनी फूल

«1» पलंग की पाइंती की जानिब अजवाइन (एक देसी दवा) की पोटलियां बांधने से إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ उस पलंग के खटमल भाग जाएंगे।

«2» अगर मच्छर दानी मुयस्सर न हो और गर्मियों के मौसिम में मच्छर ज़ियादा तंग करें तो बिस्तर पर जा ब जा तुलसी (नामी पौदे) के पत्ते फैला दीजिये إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ मच्छर भाग जाएंगे।

«3» लकड़ी में कील ठोकते हुए लकड़ी के फटने का ख़तरा हो तो उस कील को पहले साबून में ठोकने के बा'द लकड़ी में ठोकना चाहिये إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ इस तरह लकड़ी नहीं फटेगी।

«4» काग़ज़ी लीमूं (पतले छिलके वाला लीमूं) का रस अगर दिन में चन्द बार पी लें إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ मलेरिया का हम्ला नहीं होगा।

فرمانے مستفاد علی اللہ عز و جل و سلم तुम जहां भी हो मुझ पर दुरद पढ़ो कि तुम्हारा दुरद मुझ तक पहुंचता है।

«5» लू से बचने के लिये तेज़ धूप में सफ़र करते वक़्त जेब में एक पियाज़ रख लेना चाहिये।

«6» हैज़ा (नामी ख़तरनाक बीमारी) के हम्ले से बचने के लिये सिरका, लीमूँ और पियाज़ का ब कसरत इस्ति'माल करना चाहिये।

«7» सब्ज़ियों को जल्द गलाने और आटे में ख़मीर जल्द आने के लिये ख़रबूज़ के छिलकों को ख़ूब सुखाएं और उस को बारीक पीस कर सफूफ़ (या'नी पावडर) तय्यार कर लें फिर इसी सफूफ़ को सब्ज़ियों में जल्द गलाने के लिये डालें और आटे में ख़मीर जल्द आने के लिये थोड़ा सफूफ़ आटे में डाल दिया करें।

«8» रोगने जैतून (OLIVE OIL) दांतों पर मलने से मसूढ़े और हिलते हुए दांत मज़बूत हो जाते हैं।

«9» हिचकी आ रही हो तो लोंग खा लेने से बन्द हो जाती है।

«10» सर में जूएं पड़ जाएं तो सते पोदीना (या'नी पोदीना का अरक़) साबून के पानी में हल कर के सर में डालें और सर को ख़ूब धोएं दो तीन मर्तबा ऐसा करने से إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ सब जूएं मर जाएंगी।

«11» लीमूँ की फांक (टुकड़ा) चेहरे पर कुछ दिनों मलने और फिर साबून से धो लेने से चेहरे के कील महासे दूर हो जाते हैं।

फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ जिसने मुझ पर दस मर्तबा सुब्ह और दस मर्तबा शाम दुरदे पाक पढ़ा उसे किया मत के दिन मेरी शफ़ाअत मिलेगी ।

﴿12﴾ पैदल चलने की वजह से अगर पाउं में थकन ज़ियादा मा'लूम हो तो नमक मिले हुए गर्म पानी में कुछ देर पाउं रख देने से थकावट दूर हो जाती है ।

﴿13﴾ लीमूं को अगर भोबल (या'नी गर्म रैत) में गर्म कर के या गरमा गर्म पतीले के अन्दर चावलों के ऊपर कुछ देर रखने के बा'द निचोड़ें तो اِنْ شَاءَ اللّٰهُ غُذُوْهُ अरक आसानी के साथ ज़ियादा निकलेगा ।

﴿14﴾ आग से जल जाएं तो बदन के जले हुए मक़ाम पर फ़ौरन रोशनाई लगाएं या चूना का पानी डालें या बरोध (बरगद के दरख़्त) का तेल लगाएं या शकर सफ़ेद पानी में घोल कर लगाएं ।

﴿15﴾ सांप या कोई ज़हरीला जानवर काट ले तो काटने की जगह से ज़रा ऊपर फ़ौरन किसी मज़बूत धागे से कस कर बांध दीजिये और मरीज़ को सोने मत दीजिये । येह फ़ोरी तरकीब कर के फिर डॉक्टर से रुजूअ कीजिये ।

﴿16﴾ अगर कोई संखिया (नामी ख़तरनाक ज़हर) या अफ़यून या धतूरा (एक पौदा जिस का बीज नशा आवर होता है) खा ले तो फ़ौरन सोया (एक खुशबूदार साग का नाम) का बीज दो तोला आध सैर पानी में पका कर उस में पाव भर घी एक तोला नमक मिला कर नीम गर्म पिलाएं और कै कराएं जब ख़ूब कै हो जाए तो दूध पिलाएं और अगर दूध से भी कै हो जाए तो बहुत अच्छा है और मरीज़ को सोने न दें اِنْ شَاءَ اللّٰهُ غُذُوْهُ मरीज़ सिहहत याब हो जाएगा ।

(जन्नती ज़ेवर, स. 565)

फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ जिसने किताब में मुझ पर दुरुदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फिरश्ते उस के लिये इस्तिफ़ार करते रहेंगे।

**सांप, बिच्छू, कनखजूरा औऱ च्यूटियों से नजात के तरीके**

**सांप :** एक पाव नोशादर को पांच सैर पानी में घोल कर घर के तमाम बिलों सूराखों और कोनों में छिड़क दें अगर घर में सांप होगा तो भाग जाएगा और कभी कभी येह पानी छिड़कते रहें तो उस मकान में सांप नहीं आएगा। **ان شاء الله عزوجل**

**दूसरी तरकीब** येह है कि घर के बिलों और दूसरे सब सूराखों में राई डाल दें **ان شاء الله عزوجل** सांप फ़ौरन मर जाएगा और अगर अपने आस पास राई डाल कर सोएं तो **ان شاء الله عزوجل** सांप क़रीब नहीं आ सकता।

**बिच्छू :** मूली का अरक़ अगर बिच्छू के ऊपर डाल दिया जाए तो **ان شاء الله عزوجل** बिच्छू मर जाएगा और अगर बिच्छू के सूराख में मूली के चन्द टुकड़े डाल दिये जाएं तो बिच्छू सूराख से बाहर नहीं निकल सकेगा बल्कि सूराख के अन्दर ही **ان شاء الله عزوجل** हलाक हो जाएगा।

**दूसरी तरकीब** येह है कि चिरचिट्ठा घास की जड़ अगर बिछोने पर रख दी जाए तो बिच्छू बिस्तर पर नहीं चढ़ सकेगा। अगर बिच्छू डंक मार दे तो बहरोज़ा का तेल लगाएं या चिरचिट्ठा की जड़ घिस कर लगाएं **ان شاء الله عزوجل** ज़हर उतर जाएगा।

**कनखजूरा :** अगर किसी के बदन में चिमट जाए या कान में घुस जाए तो शकर उस के ऊपर डालें फ़ौरन ही उस के पाउं खाल में से बाहर निकल जाएंगे और अगर पियाज़ का अरक़ कनखजूरा के

फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ जो मुझ पर रोज़ जुमुआ दुरूद शरीफ़ पढ़ेगा मैं क़ियामत के दिन उस को शफ़ाअत करूँगा।

ऊपर डाल दें तो वोह जगह भी छोड़ देगा और फिर फ़ौरन ही मर जाएगा और अगर उस के पाउं चुभने से ज़ख़्म हो गया है तो पियाज़ तवे पर भुलभुला कर उस के ज़ख़्म पर बांधना इक्सीर है।

**पिस्सू** (एक परदार ज़हरीला कीड़ा जिस के काटने से खुजली होती है) : इन्द्राइन के फल या इस की जड़ पानी में भिगो कर तमाम घर में पानी छिड़क दीजिये **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** उस मकान से पिस्सू भाग जाएंगे।

**च्यूंटियां** : हींग (एक दरख़्त का बदबूदार गूंद जो पन्सारी से मिल सकता है) से भाग जाती हैं।

**कपड़ों और किताबों का कीड़ा** : **अफ़्सन्तीन** (नामी दवा) या पोदीना या लीमूं के छिलके या नीम के पत्ते या काफूर कपड़ों और किताबों में रख दें तो **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** कपड़े और किताबें कीड़ों के खाने से महफूज़ रहेंगी।

(जन्तती ज़ेवर, स. 567)

**“अल्लाह की रहमत” केदश हुस्नफ़की निस्बत से**

**ज़मानउ हम्ल की 10 उहतियातें और तदबीरें**

﴿1﴾ हम्ल के ज़माने में औरत को इस का खयाल रखना बहुत ज़रूरी है कि ऐसी सक्कील (या'नी वज़्नी) ग़िज़ाएं न खाए जिस से क़ब्ज़ पैदा हो जाए और अगर ज़रा भी पेट में गिरानी (बोझ) मा'लूम हो तो एक दो वक़्त रोटी चावल न खाए बल्कि सिर्फ़ शोरबा में घी डाल कर पी



फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ जिसने मुझ पर एक बार दुर्रदे पाक पढ़ा अल्लाह तआला उस पर दस रहमते भेजता है।

ले या दो तीन तोला मुनक्का या एक हड़ का मुरब्बा खा ले।

﴿2﴾ हामिला औरत इस बात का खयाल रखे कि चलने में पाउं जोर से ज़मीन पर न पड़े और न दौड़ कर चले, इसी तरह ऊंची जगह से नीचे को एक दम झटके के साथ न उतरे, इसी तरह सीढ़ी पर दौड़ कर न चढ़े बल्कि आहिस्ता आहिस्ता चढ़े ग़रज़ इस बात का खयाल रखे कि पेट न ज़ियादा हिले और न पेट को झटका लगने दे न भारी बोझ उठाए न कोई सख़्त मेहनत का काम करे न ग़म और गुस्सा करे न दस्त लाने वाली दवाएं खाए न ज़ियादा खुशबू सूंघे।

﴿3﴾ हामिला औरत को चलने फिरने की आदत रखनी चाहिये क्यूं कि हर वक़्त बैठे और लैटे रहने से बादी और सुस्ती बढ़ती है, मे'दा ख़राब हो जाता है और कब्ज़ की शिकायत पैदा हो जाती है।

﴿4﴾ हामिला औरत को शोहर के पास नहीं सोना चाहिये खुसूसन चौथे महीने से पहले और सातवें महीने के बा'द बहुत ज़ियादा एहतियात की ज़रूरत है।

﴿5﴾ अगर हामिला औरत को कै आने लगे तो पोदीना की चटनी या कागज़ी लीमूं इस्ति'माल करें।

﴿6﴾ अगर हम्ल की हालत में खून आने लगे तो “कुर्स कुहरबा” खाएं और फ़ौरन लेडी डॉक्टर से इलाज कराएं।

फरमाने मुस्तफा ﷺ जो शख्स मुझ पर दुरुदे पाक पढ़ना भूल गया वोह जन्मत का रास्ता भूल गया ।

﴿7﴾ अगर हम्मल गिर जाने की आदत हो तो उस औरत को चार महीने तक फिर सातवें महीने के बा'द बहुत ज़ियादा एहतियात रखने की ज़रूरत है, गर्म गिज़ाओं से बिल्कुल परहेज़ रखे और बेहतर है कि लंगोट बांधे रहे और बिल्कुल कोई बोझ न उठाए और न मेहनत का कोई काम करे और अगर हम्मल गिरने के कुछ आसार जाहिर हों म-सलन पानी जारी हो जाए या खून गिरने लगे तो फ़ौरन ही लेडी डॉक्टर से रुजूअ करना चाहिये ।

﴿8﴾ अगर खुदा न ख़्वास्ता हामिला को मिट्टी (मुल्तानी मिट्टी औरतें शौक से खाती हैं और येह नुक़सान देह है) खाने की आदत हो तो इस आदत को छुड़ाना ज़रूरी है और अगर मिट्टी की बहुत ही हिर्स हो तो निशास्ता की टिक्यां या त़बाशीर (एक सफ़ेद रंग की दवाई जो बांस की गांठों से निकलती है) खाया करे इस से मिट्टी की आदत छूट जाती है ।

﴿9﴾ अगर हामिला की भूक बन्द हो जाए तो मिठाई और मुरग़न (या'नी तेल घी वाली) गिज़ाएं छुड़ा दीजिये और सादा गिज़ाएं खिलाइये और अगर पेट में दर्द और रियाह (गेस) मा'लूम हो तो "नमक सुलैमानी" या "जवारिश कमोनी" खिलाइये बहर हाल तेज़ दवाओं के इस्ति'माल और इन्जेक्शन से बचना बेहतर है ऐसी हालत में इलाज से बेहतर परहेज़ और एहतियात है ।

﴿10﴾ बा'ज़ हामिला औरतों के पैरों पर वरम आ जाता है येह कोई ख़तरनाक चीज़ नहीं है विलादत के बा'द खुद ब खुद येह वरम जाता रहता है ।

(जन्तती ज़ेवर, स. 568)

﴿11﴾ हामिला को जब नवां महीना शुरूअ हो जाए तो बहुत ज़ियादा

फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ जिसने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह तआला उस पर दस रहमतें भेजता है।

एहतियात करने कराने की ज़रूरत है उस वक़्त में हामिला को ताक़त पहुंचाने की ज़रूरत है लिहाज़ा मुन्दरिजए जैल तदबीरों का ख़ास तौर पर ख़याल रखना चाहिये। रोज़ाना ग्यारह अदद बादाम हस्बे ज़रूरत मिस्री में पीस कर चटाइये और दो अदद नारियल और शकर दोनों को हावन दस्ता में कूट कर सफूफ़ (पावडर) बना लीजिये और दो तोला रोज़ाना खिलाइये, गाय का दूध जिस क़दर हज़्म हो सके पिलाइये, मक्खन वगैरा भी खिलाएं इन सब दवाओं की वजह से बच्चा आसानी से पैदा होता है।

«12» जब विलादत का वक़्त आ जाए और दर्दे ज़ेह शुरू हो जाए तो बाएं हाथ में मिक्नातीस (MAGNET) लेने से और बाई रान में मूंगे की जड़ (सुर्ख रंग की बारीक बारीक शाखों की मानिन्द एक पथ्थर जो समुन्दर से निकाला जाता है, पन्सारी की दुकान से शाखे मरजान के नाम से मिलता है) बांधने से बच्चा पैदा होने में आसानी होती है।

«13» पैदाइश के वक़्त किसी होशियार दाई या लेडी डॉक्टर को ज़रूर बुला लेना चाहिये अनाड़ी दाइयों की ग़लत तदबीरों से अक्सर ज़च्चा व बच्चा को नुक़सान पहुंच जाता है।

«14» पैदाइश के बा'द ज़च्चा के बदन में तेल की मालिश बहुत मुफ़ीद है जैसा कि पुराना तरीक़ा है कि विलादत के बा'द चन्द दिनों तक मालिश कराई जाती है येह बहुत ही मुफ़ीद है।

«15» जिस औरत के दूध बहुत कम होता हो अगर वोह दूध आसानी के साथ हज़्म कर सकती हो तो उस को रोज़ाना दूध पीना चाहिये और मुर्ग़ वगैरा का मुर्ग़ग़न शोरबा और गाजर का हल्वा वगैरा उम्दा ग़िज़ाएं

फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ जिसने मुझ पर दस मरतबा दुरूद पाक पढ़ा अल्लाह तआला उस पर सौ रहमतें भेजता है।

हैं और पांच माशा कलोंजी और पांच माशा तोदरी (एक किस्म का बीज जो पन्सार की दुकान से मिल जाता है) सुख् दूध में पीस कर पिलाएं।

(जन्नती ज़ेवर, स. 570)

“शहीदे क़बला अली अशगर” के सोलह हुरूफ़ की निखत

से दूध पीते बच्चों के लिये 16 म-दनी फूल

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बच्चों को अमराज़ से बचाने

के लिये शुरूअ में की जाने वाली एहतिyायती तदाबीर काफ़ी सूद मन्द हो सकती हैं इस ज़िम्न में 16 म-दनी फूल मुला-हज़ा फ़रमाइये :

《1》 बच्चा या बच्ची पैदा होने के फ़ौरन बा'द يَابَرُ सात बार

(अव्वल आख़िर एक बार दुरूद शरीफ़) पढ़ कर अगर बच्चे को दम

कर दिया जाए तो اِنْ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ बालिग़ होने तक आफ़तों से हिफ़ाज़त

में रहेगा 《2》 पैदाइश के बा'द बच्चे को पहले नमक मिले हुए नीम

गर्म पानी से नहलाइये फिर सादा पानी से गुस्ल दीजिये तो اِنْ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ

बच्चा फोड़े फुन्सी की बीमारियों से महफूज़ रहेगा 《3》 नमक मिले

हुए पानी से बच्चों को कुछ दिनों तक नहलाते रहिये कि येह बच्चों की

तन्दुरुस्ती के लिये बेहद मुफ़ीद है। और नीज़ 《4》 नहलाने के बा'द

बदन पर सरसों के तेल की मालिश बच्चों की सिहहत के लिये इक्सीर

है 《5》 बच्चों को दूध पिलाने से पहले रोज़ाना दो तीन मरतबा एक

उंगली शहद चटा देना काफ़ी फ़ाएदा मन्द है 《6》 ख़्वाह झूले में

फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ तुम जहाँ भी हो मुझ पर दुरूद पढ़ो कि तुम्हारा दुरूद मुझ तक पहुँचता है।

झुलाएं या बिछोने पर सुलाएं या गोद में खिलाएं हर हाल में बच्चों का सर ऊंचा रखिये सर नीचा और पाउं ऊंचे न होने दीजिये कि नुक्सान देह है ﴿7﴾ विलादत के बा'द बहुत तेज़ रोशनी वाली जगह में रखने से बच्चे की निगाह कमज़ोर हो जाती है ﴿8﴾ जब बच्चे के मसूढ़े सख़्त हो जाएं और दांत निकलते मा'लूम हों तो मसूढ़ों पर मुर्ग़ की चरबी मला करें और ﴿9﴾ रोज़ाना एक दो मर्तबा मसूढ़ों पर शहद मला करें और बच्चे के सर और गरदन पर तेल की मालिश करना मुफ़ीद है ﴿10﴾ जब दूध छुड़ाने का वक़्त आए और बच्चा खाने लगे तो ख़बरदार ! ख़बरदार ! उस को कोई सख़्त चीज़ न चबाने दीजिये, बहुत ही नर्म और जल्द हज़्म होने वाली ग़िज़ाएं खिलाइये ﴿11﴾ गाय या बकरी का दूध भी पिलाते रहिये ﴿12﴾ हस्बे हैसियत बच्चों को इस उम्र में अच्छी ख़ूराक दीजिये कि इस उम्र में जो कुछ ताक़त बदन में आ जाएगी वोह अगर बच्चा ज़िन्दा रहा तो اِنْ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ तमाम उम्र काम आएगी ﴿13﴾ बच्चों को बार बार ग़िज़ा नहीं देनी चाहिये। जब तक एक ग़िज़ा हज़्म न हो जाए दूसरी ग़िज़ा हरगिज़ मत दीजिये ﴿14﴾ टोफ़ियां, मिठाई और खटाई की आदत से बचाना बहुत बहुत बहुत ज़रूरी है कि येह चीज़ें बच्चों की सिद्दहत के लिये बहुत ही नुक्सान देह हैं ﴿15﴾ बच्चों को सूखे मेवे और ताज़ा फल खिलाना बहुत ही अच्छा है ﴿16﴾ ख़तना जितनी छोटी उम्र में हो जाए बेहतर है तक्लीफ़ भी कम होती और ज़ख़्म भी जल्दी भर जाता है।

फरमाने मुस्तफा ﷺ जिसने मुझ पर दस मर्तबा सुबह और दस मर्तबा शाम दूरूद पाक पढ़ा उसे कियामत के दिन मेरी शफाअत मिलेगी।

“मदीना” के पांच हुरूफ़ की निश्बत से बुख़ार के

5 म-दनी इलाज

لَا يَرْوَن فِيْهَا شِمْسًا وَلَا زَهْرًا

(प: २९, अल्मुन: १३)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : न उस में

धूप देखेंगे न ठिठर (या'नी सख़्त सर्दी)

(1) येह आयते करीमा सात बार (अव्वल आख़िर एक बार दुरूद शरीफ़) पढ़ कर दम कीजिये **बुख़ार** की शिद्दत में नुमायां कमी महसूस होगी और मरीज़ सुकून महसूस करेगा।

(2) हज़रते सय्यिदुना इमाम जा'फ़रे सादिक़ رضي الله تعالى عنه फ़रमाते हैं, “सू-रतुल फ़ातिहा 40 बार (अव्वल आख़िर एक बार दुरूद शरीफ़) पढ़ कर पानी पर दम कर के बुख़ार वाले के चेहरे पर छींटे मारिये **बुख़ार** चला जाएगा।”

(3) **सरकारे** नामदार, मदीने के ताजदार صلى الله تعالى عليه وآله وسلم को बुख़ार था तो हज़रते सय्यिदुना जिब्रईले अमीन عليه الصلوة والسلام ने येह दुआ पढ़ कर दम किया था :

بِسْمِ اللَّهِ أَرْقِيكَ مِنْ كُلِّ شَيْءٍ يُؤْذِيكَ مِنْ شَرِّ كُلِّ نَفْسٍ أَوْ عَيْنٍ  
حَاسِدٍ ط اللَّهُ يَشْفِيكَ بِسْمِ اللَّهِ أَرْقِيكَ (तरजमा : अल्लाह के नाम

से आप पर दम करता हूँ हर उस बीमारी के लिये जो आप को ईज़ा देती है और दूसरों के शर और हसद करने वालों की बुरी नज़र से। अल्लाह

फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ मुझ पर दुरूदे पाक की कसरत करो बेशक यह तुम्हारे लिये त़हारत है।

عَزَّوَجَلَّ आप को शिफ़ा अता फ़रमाए। मैं आप पर अल्लाह के नाम से दम करता हूँ।” (صحيح مسلم ص २०२ رقم الحديث २१८६)

बुख़ार के मरीज़ को बिला तरजमा सिर्फ़ अ-रबी में दुआ (अव्वल आख़िर एक बार दुरूद शरीफ़) पढ़ कर दम कर दीजिये।

(4) बुख़ार वाला ब कसरत بِسْمِ اللَّهِ الْكَبِيرِ पढ़ता रहे।

(5) हृदीसे पाक में है, जब तुम में से किसी को बुख़ार आ जाए तो उस पर तीन दिन तक सुब्ह के वक़्त ठन्डे पानी के छींटे मारे जाएं। (المُسْتَذْرَكُ لِلْحَاكِمِ ج ० ص २८२ رقم حديث ७०१०)

## “अजमेरी” के छ हुरूप की निश्चत से आधे सर के दर्द के 6 इलाज

(1) अगर किसी को आधे सर का दर्द हो तो एक बार सू-रतुल इख़लास (अव्वल आख़िर एक बार दुरूद शरीफ़) पढ़ कर दम कीजिये। हस्बे ज़रूरत तीन बार, सात बार या ग्यारह बार इसी तरह दम कीजिये। ग्यारह का अदद पूरा होने से क़ब्ल ही اِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ आधे सर का दर्द ठीक हो जाएगा।

(2) जब दर्द हो रहा हो उस वक़्त सूँठ (या'नी सूखी हुई अदरक जो के पन्सारी या'नी देसी दवा वालों से मिल सकती है) को थोड़े से पानी में घिस कर सूँठ का घिसा हुवा हिस्सा पेशानी पर मलने से اِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ आधे सर का दर्द जाता रहेगा।

फरमाने मुस्तफ़ा ﷺ जिसने किताब में मुझ पर दुरूद पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फिरश्ते उस के लिये इस्तिफ़ार करते रहेंगे ।

(3) ख़ुश्क धनिया के थोड़े दाने और थोड़ी सी किश्मिश मटके के ठण्डे या सादा पानी में चन्द घण्टे भिगो कर पीने से फ़ाएदा होगा ।

(4) गर्म दूध में देसी घी मिला कर पीने से भी फ़ाएदा होता है ।

(5) नारियल का पानी पीने से आधा सीसी (या'नी आधे सर का दर्द) और पूरे सर के दर्द में कमी आती है ।

(6) नीम गर्म पानी के बड़े बरतन में नमक डाल कर दोनों पाउं 12 मिनट के लिये उस में डाले रहें إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ फ़ाएदा हो जाएगा । (ज़रूरतन वक़्त में कमी बेशी कर लीजिये ।)

“मक्क़ शरीफ़” के शात हुस्नफ़ की निश्बत से  
दर्दे सर के 7 म-दनी इलाज

(1) لَا يَصَدَّعُونَ عَنْهَا وَلَا يُزْفُونَ (तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : न उन्हें दर्दे सर हो न होश में फ़र्क़ आए । ۲۷ الروايعه ۱۹) येह आयते करीमा तीन बार (अव्वल आख़िर एक बार दुरूद शरीफ़) पढ़ कर दर्दे सर वाले पर दम कर दीजिये । إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ फ़ाएदा हो जाएगा ।



फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ मुझ पर कसरत से दुरूद पाक पढ़ो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूद पाक पढ़ना तुम्हारे गुनाहों के लिये मग़्फ़रत है।

(2) सू-रतुन्नास सात बार (अव्वल आख़िर एक बार दुरूद शरीफ़) पढ़ कर सर पर दम कीजिये, और पूछिये, अगर अभी दर्द बाकी हो तो दूसरी बार भी इसी तरह दम कीजिये। अगर अब भी दर्द हो तो तीसरी बार भी इसी तरह दम कीजिये। पूरे सर का दर्द हो या आधे सर का कैसा ही शदीद दर्द हो तीन बार में **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** जाता रहेगा।

(3) पूरे सर का दर्द हो या शक्कीका (या'नी आधे सर का दर्द) बा'द नमाज़े अस्स सू-रतुत्तकासुर एक बार (अव्वल आख़िर एक बार दुरूद शरीफ़) पढ़ कर दम कीजिये। **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** दर्द में इफ़ाका होगा।

(4) ज़बान पर एक चुटकी नमक रख कर 12 मिनट के बा'द एक गिलास पानी पी लें। सर में कैसा ही दर्द हो **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** इफ़ाका हो जाएगा। (हाई ब्लड प्रेशर के मरीज़ येह इलाज न करें कि उन के लिये नमक का इस्ति'माल नुक़सान देह होता है)

(5) एक कप पानी में एक चम्मच हल्दी डाल कर जोश दे कर पीने या भाप लेने से **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** सर का दर्द दूर हो जाएगा। (सालन वगैरा में हल्दी ज़रूर इस्ति'माल कीजिये, रोज़ाना चुटकी भर (या'नी तक़रीबन एक ग्राम) हल्दी खाने वाला **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** केन्सर से महफूज़ रहेगा)

(6) देसी घी में तली हुई, गर्मा गर्म ताज़ा जलेबियां तुलूए आफ़ताब से कब्ल खाने से **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** दर्दे सर में आराम आ जाएगा।

फरमाने मुस्तफा ﷺ जो मुझ पर एक मरतबा दुरूद शरीफ पढ़ता है अल्लाह तआला उस के लिये एक कीरात अन्न लिखता है और कीरात उहुद पहाड़ जितना है।

(7) कभी इत्तिफाकिया दर्दे सर हो जाए तो खाना खाने के बा'द डिस्प्रीन (DISPRIN) की दो टिक्या पानी में घोल कर पी लीजिये।  $\text{إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ}$  ठीक हो जाएगा। (हर तरह के दर्द की टिक्या खाना खाने के बा'द ही इस्ति'माल की जाए कि खाली पेट नुक्सान देह है)

**म-दनी मश्वरह :** अगर दवाओं से दर्दे सर ठीक न होता हो तो आंखें टेस्ट करवा लीजिये। अगर नज़र कमज़ोर हो तो ऐनक पहनने से दर्दे सर ठीक हो जाएगा। फिर भी ठीक न हो तो दिमाग़ के खुसूसी डॉक्टर (NEUROLOGIST) से रूजूअ करना ज़रूरी है। इस में कोताही बा'ज़ अवकात सख़्त नुक्सान देह साबित होती है।

### बद हज़मी के दो म-दनी इलाज

«1» जिस शख्स को बद हज़मी की शिकायत हो और वोह इस आयते करीमा को पढ़ कर अपने हाथ पर दम कर के उसे अपने पेट पर फैरे और खाने वगैरा पर दम कर के खाना खाया करे  $\text{إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ}$  बद हज़मी की शिकायत दूर हो जाएगी। अल्लाह तबा-र-क व तआला पारह 29 सू-रतुल मुर-सलात की 43 और 44वीं आयते मुबा-रका में इर्शाद फरमाता है :

كُلُوا وَاشْرَبُوا هَنِيئًا بِمَا كَسَبْتُمْ  
تَعْمَلُونَ ۖ إِنَّكَ لَكِ نَجْرِي  
الْحَسَنِينَ ۖ

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** खाओ और पियो रचता हुवा अपने आ'माल का सिला बेशक नेकों को हम ऐसा ही बदला देते हैं।

«2» इमाम कमालुद्दीन दमैरी رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ बा'ज़ उ-लमाए किराम

फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ जिसने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह तआला उस पर दस रहमतें भेजता है।

से नक्ल फ़रमाते हैं, जिस ने खाना ज़ियादा खा लिया और बद हज़्मी का खौफ़ हो वोह अपने पेट पर हाथ फ़ैरता हुवा तीन मर्तबा येह कहे :

اللَّيْلَةُ لَيْلَةُ عَيْدِي يَا كَرِشِي  
وَرَضِيَ اللَّهُ عَنْ سَيِّدِي إِبْنِي  
عَبْدِ اللَّهِ الْقَرَشِي

तरजमा : ऐ मेरे मे'दे आज की रात  
मेरी ईद की रात है और अल्लाह  
(غُرُوحْل) राज़ी हो हमारे सरदार हज़रते  
अबू अब्दुल्लाह क-रशी से।

और अगर दिन का वक़्त हो तो اللَّيْلَةُ لَيْلَةُ عَيْدِي की जगह الْيَوْمُ يَوْمُ عَيْدِي कहे।

(حَيَاةُ الْحَيَوَانِ الْكُبْرَى ج ١ ص ٤٦٠)

## कब्ज़ के तिब्बी इलाज

बद हज़्मी के कई इलाज हैं मिन जुम्ला येह कि (1) कब्ज़ हो तो दो एक वक़्त का फ़ाका कर ले إِنَّ شَاءَ اللَّهُ غُرُوحْل पेट का बोझ कम हो जाएगा और मे'दे को आराम भी मिलेगा (2) मुनासिब मिक्दार में पपीता खा ले (3) इसपगोल का छिलका एक या तीन चम्मच पानी से फांक ले अगर इस से काम न चले तो हस्बे ज़रूरत उस की मिक्दार बढ़ा ले। अगर अक्सर कब्ज़ रहती हो तो हफ़्ते में दो एक बार इसी तरह करे (4) पिसी हुई हड़ चाय का आधा चम्मच सोते वक़्त पानी से लीजिये हो सके तो कम अज़ कम चार माह तक रोज़ाना इस्ति'माल कीजिये إِنَّ شَاءَ اللَّهُ غُرُوحْل कब्ज़ के साथ साथ बहुत सारी बीमारियों बल्कि हाफ़िज़े के लिये भी मुफ़ीद पाएंगे।

फरमाने मुस्तफ़ा ﷺ जब तुम मुसलीन علیہم السلام पर दुरद पाक पढ़ो तो मुझ पर भी पढ़ो बेशक मैं तमाम जहानों के रब का रसूल हूँ।

## कब्ज़ के चार इलाज

“कूतुल कुलूब” जिल्द 2, सफ़हा 365, पर नक़ल है कि 6 घन्टे से कब्ज़ अगर खाना निकल जाए तब भी मे’दा बीमार और अगर 24 घन्टे से ज़ियादा वक़्त तक ख़ारिज न हो तब भी समझ लीजिये कि मे’दा बीमार है। जोड़ों का दर्द पेट की हवा रोकने का नतीजा है। जिस तरह नहर का चलता पानी अगर रोक दिया जाए तो नहर के कनारों को नुक़सान होता और कनारे टूट कर पानी बहने लगता है। इसी तरह पेशाब रोकने से जिस्म को नुक़सान होता है।

(قُوْتُ الْقُلُوبِ ج ٢ ص ٣٦٥)

अपना हाज़िमा दुरुस्त रखिये, वरना मोटापे का इलाज मुश्किल है, सब्जियों और फलों का इस्ति’माल कीजिये। अगर कब्ज़ रहती हो तो १) चार, पांच अदद बीज समेत पक्के अमरूद या २) मुनासिब मिक्दार में पपीता खा लीजिये إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ पेट साफ़ हो जाएगा। ३) हर चौथे दिन तीन चार चम्मच इसपगोल की भूसी या एक चम्मच कोई सा भी हाज़िम चूरन पानी के साथ निगल लीजिये। إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ पेट की सफ़ाई होती रहेगी। रोज़ रोज़ अगर इसपगोल या हाज़िम चूरन इस्ति’माल किया जाए तो अक्सर बे असर हो जाता है नीज़ ४) अगर आप का डॉक्टर इजाज़त दे तो हर दो या तीन माह बा’द पांच दिन तक सुब्ह व शाम एक एक टिक्या ग्रामेक्स 400 मिली ग्राम GRAMEX400mg (Metronidazole) इस्ति’माल कीजिये। इसे कब्ज़, बद हज़्मी वगैरा अमराज़ और पेट की इस्लाह के लिये إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ बेहतरीन दवा पाएंगे। मगर जब भी येह टिक्या लेना

फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ जो मुझ पर रोज़े जुमुआ दुरुद शरीफ़ पढ़ेगा मैं क़ियामत के दिन उस की शफ़ाअत करूँगा।

शुरूअ करें तो मुसल्लसल पांच दिन पूरे करना ज़रूरी है। ख़ाली पेट में भी ले सकते हैं।

## बे वक़्त नींद चढ़ने का इलाज

एक गिलास पानी (नीम गर्म हो तो ज़ियादा बेहतर) में एक चम्मच शहद मिला कर नहार मुंह (या'नी कुछ खाने से क़ब्ल) और रोज़ा हो तो इफ़्तार के वक़्त बिला नागा मुस्तक़िल इस्ति'माल कीजिये मोटापा और बहुत सी बीमारियों बिल खुसूस पेट के अमराज से **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** हिफ़ाज़त होगी, बेहतर येह है कि इस में एक वरना आधा लीमूं भी निचोड़ लिया करें तो **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** फ़वाइद ज़ाइद हो जाएंगे। अगर मुता-लआ करते करते या इज्तिमाअ वग़ैरा में बैठे बैठे बे वक़्त नींद चढ़ती होगी तो **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** इस से भी नजात मिलेगी।

## मोटापे का सब से बेहतरीन इलाज

सब से बेहतरीन इलाज अल्लाह **عَزَّوَجَلَّ** के हबीब, हबीबे लबीब, तबीबों के तबीब **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** का तज्वीज़ फ़रमूदा है : “भूक के तीन हिस्से कर लिये जाएं एक हिस्सा ग़िज़ा एक हिस्सा पानी और एक हिस्सा हवा।” अगर खाने में येह तरीक़ा अपना लिया जाए तो **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** न कभी बदन मोटा होगा न कभी गेस, बादी, पेट में गड़बड़, कब्ज़ वग़ैरा अ़रिज़ा।

## खांसी का इलाज

रोज़ाना किशमिश के 40 दाने (अगर मुवाफ़िक़ आते हों तो दुगने करने में भी हरज नहीं) और तीन अ़दद बादाम ले कर उस पर 11

फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ जिसने मुझ पर रोज़ जुमुआ दो सौ बार दूरद पाक पढ़ा उस के दो साल के गुनाह मुआफ़ होंगे।

बार दुरूद शरीफ़ पढ़ कर दम कर के खा लीजिये इस के ऊपर दो घन्टे तक पानी न पियें। **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** खांसी में बहुत फ़ाएदा होगा। बलग़म निकलेगा और मज़ीद नहीं बनेगा। (ज़रूरतन किशमिश की ता'दाद बढ़ा दीजिये) बहुत छोटे बच्चों के लिये हस्बे ज़रूरत मिक्दार कुछ कम कर दीजिये। ता हुसूले शिफ़ा इलाज जारी रखिये।

### हिफ़ाज़ते हम्ल के 2 संहानी इलाज

﴿1﴾ **لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ** 11 बार किसी रिकाबी (या कागज़) पर लिख कर धो कर औरत को पिला दीजिये **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** हम्ल की हिफ़ाज़त होगी। जिस औरत को दूध न आता हो या कम आता हो **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** उस के लिये भी येह अमल मुफ़ीद है। चाहें तो एक ही दिन पिलाएं या कई रोज़ तक रोज़ाना ही लिख कर पिलाएं हर तरह से इख़्तियार है।  
 ﴿2﴾ **يَا حَيُّ يَا قَيُّوْمُ** 111 बार किसी कागज़ पर लिख कर हामिला के पेट पर बांध दीजिये और विलादत के वक़्त तक बांधे रहिये। (ज़रूरतन कुछ देर के लिये खोलने में हरज नहीं) **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** हम्ल भी महफूज़ रहेगा और बच्चा भी सिद्दहत मन्द पैदा होगा।

### इर्कुन्निसा के 2 संहानी इलाज

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इर्कुन्निसा की पहचान येह है कि इस में चट्टे (या'नी रान के जोड़) से ले कर पाउं के टख़ने तक शदीद दर्द होता है येह मरज़ बरसों तक पीछा नहीं छोड़ता।

फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ जो शख्स मुझ पर दुरुदे पाक पढ़ना भूल गया वोह जन्त का रास्ता भूल गया ।

﴿1﴾ दर्द के मक़ाम पर हाथ रख कर अव्वल आख़िर दुरुद शरीफ़, सू-रतुल फ़ातिहा एक बार और सात मर्तबा येह दुआ पढ़ कर दम कर दीजिये : اَللّٰهُمَّ اَذْهَبْ عَنِّيْ سَوْءًا اَجِدُ : (ऐ अल्लाह यमूख़ी सात बार पढ़ कर गेस हो या पीठ या पेट में तकलीफ़ या इर्कुन्सि या किसी भी जगह दर्द हो या किसी उज़्ज के जाएअ हो जाने का ख़ौफ़ हो, अपने ऊपर दम कर दीजिये اِنْ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ फ़ाएदा होगा । (मुद्दते इलाज : ता हुसूले शिफ़ा)

### मुंह की बदबू का इलाज

अगर किसी चीज़ के खाने के सबब मुंह में बदबू आती हो तो हरा धनिया चबा कर खाइये नीज़ गुलाब के ताज़ा या सूखे हुए फूलों से दांत मांझिये اِنْ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ फ़ाएदा होगा । हां अगर पेट की ख़राबी की वजह से बदबू आती हो तो “कम ख़ोरी” की सआदत हासिल कर के भूक की ब-र-कतें लूटने से اِنْ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ टांगों और बदन के मुख़तलिफ़ हिस्सों के दर्द, कब्ज़, सीने की जलन, मुंह के छाले, बार बार होने वाले नज़्ले, खांसी और गले के दर्द, मसूढ़ों में खून आना वगैरा बहुत सारे अमराज़ के साथ साथ मुंह की बदबू से भी जान छूट जाएगी । भूक बाकी रहे इस तरह से कम खाने में 80 फ़ीसद अमराज़ से बचत हो सकती है । (तफ़्सीली

फ़रमाने मुस्तफ़ा عليه السلام जिसने मुझ पर एक बार दुरूद पाक पढ़ा अल्लाह तआला उस पर दस  
रहूमते भेजता है।

मा'लूमात के लिये फ़ैज़ाने सुन्नत के बाब "पेट का कुफ़्ले मदीना" का  
मुता-लअ़ा फ़रमाइये) अगर नफ़्स की हिर्स का इलाज हो जाए तो कई  
जिस्मानी और रूहानी अमराज़ खुद ही दम तोड़ जाएं।

रज़ा नफ़्स दुश्मन है दम में न आना  
कहां तुम ने देखे हैं चंदराने वाले  
मुंह की बढबू का म-दनी इलाज  
اللَّهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ عَلَى النَّبِيِّ الطَّاهِرِ.

मुन्द-र-जाए बाला दुरूद शरीफ़ मौक़अ ब मौक़अ एक ही  
सांस में ग्यारह मरतबा पढ़ लीजिये إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ मुंह की बढबू  
जाइल हो जाएगी। एक ही सांस में पढ़ने का बेहतर तरीक़ा येह है  
कि मुंह बन्द कर के आहिस्ता आहिस्ता नाक से सांस लेना शुरू  
कीजिये और मुम्किन हद तक हवा फ़ेफ़ड़ों में भर लीजिये। अब  
दुरूद शरीफ़ पढ़ना शुरू कीजिये। चन्द बार इस तरह मश्क़  
करेंगे तो सांस टूटने से क़व्ल إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ मुकम्मल ग्यारह बार दुरूद  
शरीफ़ पढ़ने की तरकीब बन जाएगी। मज़क़ूरा तरीक़े पर नाक से  
गहरा सांस ले कर मुम्किन हद तक रोक रखने के बा'द मुंह से  
ख़ारिज करना सिद्दह़त के लिये इन्तिहाई मुफ़ीद है। दिन भर में जब  
जब मौक़अ मिले बिल खुसूस खुली फ़ज़ा में रोज़ाना चन्द बार तो  
ऐसा कर ही लेना चाहिये।



फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ जिसने मुझ पर दस मरतबा दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह तआला उस पर सौ रहमते भेजता है।

## मुंह की बदबू मा'लूम करने का तरीका

अगर मुंह में कोई तग़य्युरे राइहा (या'नी बदबू) हो तो जितनी बार मिस्वाक और कुल्लियों से इस (बदबू) का इज़ाला (या'नी दूर करना मुम्किन) हो (उतनी बार कुल्लियां वगैरा करना) लाज़िम है, इस के लिये कोई हद मुकर्रर नहीं। बदबूदार कसीफ़ (गाढ़ा) बे एहतियाती का हुक्का पीने वालों को इस का ख़याल (रखना) सख़्त ज़रूरी है और उन से ज़ियादा सिगरेट वाले को कि इस की बदबू मुक्कब तम्बाकू से सख़्त तर और ज़ियादा देर पा है और इन सब से ज़ा़द अशद ज़रूरत तम्बाकू खाने वालों को है जिन के मुंह में उस का ज़िम (या'नी धूएं के बजाए खुद तम्बाकू ही) दबा रहता है और मुंह अपनी बदबू से बसा देता है। ये सब लोग वहां तक मिस्वाक और कुल्लियां करें कि मुंह बिल्कुल साफ़ हो जाए और बू का अस्लन निशान न रहे और इस का इम्तिहान यूं है कि हाथ अपने मुंह के करीब ले जा कर मुंह खोल कर जोर से तीन बार हल्क़ से पूरी सांस हाथ पर लें और मअन (फ़ौरन) सूंधें। बिगैर इस के अन्दर की बदबू खुद कम महसूस होती है और जब मुंह में बदबू हो तो मस्जिद में जाना हराम, नमाज़ में दाख़िल होना मन्अ। وَاللّٰهُمَّ اَعِزِّ الْبَاهِدِي

(फ़तावा र-ज़विय्या तख़्ज़ीज शुदा, जि. अब्वल, स. 623)

## मुंह की सफ़ाई का तरीका

जो मिस्वाक और खाने के बा'द ख़िलाल की सुन्नत अदा नहीं करते और दांतों की सफ़ाई करने में सुस्त होते हैं अक्सर उन के मुंह बदबूदार होते हैं। सिर्फ़ रस्मी तौर पर मिस्वाक और ख़िलाल का

फरमाने मुस्तफ़ा ﷺ तुम जहाँ भी हो मुझ पर दुरूद पढ़ो कि तुम्हारा दुरूद मुझ तक पहुँचता है।

तिन्का दांतों से मस कर देना काफ़ी नहीं होता। मसूढ़े ज़ख्मी न हों इस एहतियात के साथ मुम्किन सूरत में ग़िज़ा का एक एक ज़रा दांतों से निकालना होगा वरना दांतों के दरमियान ग़िज़ाई अज्ज़ा पड़े पड़े सड़ते और सख़्त सड़ांद का बाइस बनते रहेंगे। दांतों की सफ़ाई का एक तरीक़ा येह भी है कि कोई चीज़ खाने और चाय वगैरा पीने के बा'द और इस के इलावा भी जब जब मौक़अ मिले म-सलन बैठे बैठे कोई काम कर रहे हैं उस वक़्त पानी का घूंट मुंह में भर लें और जुम्बिशें देते रहें या'नी हिलाते रहें, इस तरह मुंह का कचरा और मैल कुचैल साफ़ होता रहेगा। सादा पानी भी चल जाएगा और अगर नमक वाला नीम गर्म पानी हो तो येह إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ बेहतरीन “माउथ वॉश” साबित होगा।

दिल में नूरे ईमान पाने का एक सबब

हृदीसे पाक में है, “जिस शख्स ने गुस्सा

जब्त कर लिया बा वुजूद इस के कि वोह गुस्सा नाफ़िज़ करने पर कुदरत रखता है اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ उस के दिल को सुकून व ईमान से भर देगा।”

(الحامع الصغير للسيوطي ص ٥٤١-حديث ٨٩٩٧)

फरमाने मुस्तफा ﷺ जिसने मुझ पर दस मर्तबा सुब्द और दस मर्तबा शाम दुरुदे पाक पढ़ा उसे कियामत के दिन मेरी शफाअत मिलेगी।

## इलाज बिल गिज़ा केमन्जूम म-दनी फूल

जहां तक काम चलता हो गिज़ा से  
अगर तुझ को लगे जाड़ों में सर्दी  
जो हो महसूस मे'दे में गिरानी  
अगर खूं कम बने बलगम ज़ियादा  
जो बद हज़्मी में तू चाहे इफ़ाका  
जो पेचिश है तो पेच इस तरह कस ले  
जिगर के बल पे है इन्सान जीता  
जिगर में हो अगर गरमी, दही खा  
थकन से हों अगर उज़्ज़ात ढीले  
जो ताक़त में कमी होती है महसूस  
ज़ियादा गर दिमागी है तेरा काम  
अगर हो दिल की कमज़ोरी का एहसास  
जो दुखता है गला, नज़्ज़े के मारे  
अगर है दर्द से दांतों के बेकल  
शिफ़ा चाहे अगर खांसी से जल्दी  
जो कानों में अगर तकलीफ़ होवे  
जो टाइफ़ॉइड से चाहे रिहाई  
ज़ियाबेतिस् अगर तुझ को जो मारे  
तू चिश्ती, नक्शबन्दी, कादिरि है  
तू आ जा सुन्नतों के इत्तिमाअ में  
अगर हो तेरे दिल पे ग़म की यल्लार  
जो है दिल फ़िक्के दुन्या से परेशां  
अगर आफ़त कोई आ जाए तुझ पर  
दुरुदे पाक तू हर दम पढ़ा कर  
तू हुब्बे आल व अस्हाबे नबी से

वहां तक चाहिये बचना दवा से  
तो इस्ति'माल कर अन्डे की ज़र्दी  
तो चख ले सोंफ़ या अदरक का पानी  
तो खा गाजर, चने, शलगम ज़ियादा  
तो कर ले एक या दो वक़्त फ़ाका  
मिला कर दूध में लीमूं का रस ले  
अगर जो'फ़े जिगर है, खा पपीता  
अगर आंतों में खुश्की है, तो घी खा  
तो फ़ौरन दूध गरमा गर्म पी ले  
तो फिर मुल्तानी मिस्री की डली चूस  
तो खाया कर मिला कर शहद बादाम  
मुरब्बा आमला खा, और अनन्नास  
तो कर नमकीन पानी से ग़रारे  
तो उंगली से मसूहों पर नमक मल  
तो पी ले दूध में थोड़ी सी हल्दी  
तो सरसों तेल फाहे से निचोड़े  
बदल पानी के गन्ना चूस भाई  
तो जामुन ताज़ा खा, और ले नज़ारे  
तू ह-नफ़ी, शाफ़ेई या मालिकी है  
हो नफ़अ दीनो दुन्या की मताअ में  
तो म-दनी काफ़िलों में कर सफ़र यार  
तो कर यादे खुदा से दिल को शादां  
तो दिल से या रसूलल्लाह कहा कर  
सभी अमराज़ की इस से दवा कर  
दिल आबाद कर मत डर किसी से

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ  
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

## फैजाने ईसाले सवाब

بِسْمِ اللَّهِ

### निफ़ाक़ व नार से नजात

हज़रते सय्यिदुना इमाम सखावी عَلَيْهِ اللَّهُ تَعَالَى نَصْلًا फ़रमाते हैं : सरकारे दो आलम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इर्शाद फ़रमाया :  
“जिस ने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक भेजा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस पर दस रहमतें नाज़िल फ़रमाता है और जो मुझ पर दस बार दुरूदे पाक भेजे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस पर सो रहमतें नाज़िल फ़रमाता है और जो मुझ पर सो बार दुरूदे पाक भेजे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस की दोनों आंखों के दरमियान लिख देता है कि यह बन्दा निफ़ाक़ और दोज़ख़ की आग से बरी है और क़ियामत के दिन उस को शहीदों के साथ रखेगा ।”

(الْقَوْلُ الْبَلِيعُ ص २३३ مؤسسة الريان بيروت)

है सब दुआओं से बढ़ कर दुआ दुरूदो सलाम

कि दफ़अ करता है हर इक बला दुरूदो सलाम

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जिन के वालिदैन या उन में से कोई एक फ़ौत हो गया हो तो उन को चाहिये कि उन की तरफ़ से ग़फ़लत न करे, उन की क़ब्रों पर भी हाज़िरी देता रहे और ईसाले सवाब भी करता रहे । इस ज़िम्न में सुल्ताने मदीना صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के 5

फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ पर दुरदे पाक की कसरत करो बेशक यह तुम्हारे लिये त्हा़रत है ।

फ़रामीने रहमत निशान मुला-हज़ा फ़रमाएं :

### (1) मक्बूल हज़ का सवाब

“जो ब निय्यते सवाब अपने वालिदैन् दोनों या एक की क़ब्र की ज़ियारत करे, हज़्जे मक्बूल के बराबर सवाब पाए और जो ब कसरत इन की क़ब्र की ज़ियारत करता हो, फ़िरिश्ते उस की क़ब्र की (या’नी जब येह फ़ौत होगा) ज़ियारत को आएँ ।”

(کَثرُ الْعَمَالِ ج ۱۶ ص ۲۰۰ حدیث ۴۵۰۳۶)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

### (2) दस हज़ का सवाब

जो अपनी मां या बाप की तरफ़ से हज़ करे उन की (या’नी मां या बाप की) तरफ़ से हज़ अदा हो जाए उसे (या’नी हज़ करने वाले को) मज़ीद दस हज़ का सवाब मिले । (دارِ قُطْنِي ج ۲ ص ۳۲۹ حدیث ۲۵۸۷)

जब कभी سُبْحَنَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ की सआदत हासिल हो तो फ़ौत शुदा मां या बाप की निय्यत कर लें ता कि उन को भी हज़ का सवाब मिले, आप का भी हज़ हो जाए बल्कि मज़ीद दस हज़ का सवाब हाथ आए । अगर मां या वालिद में से कोई इस हाल में फ़ौत हो गया कि उन पर हज़ फ़र्ज़ हो चुकने के बा वुजूद वोह न कर पाए थे तो अब औलाद को हज़्जे बदल का शरफ़ हासिल करना चाहिये । हज़्जे बदल के तफ़्सीली अहकाम के लिये “रफ़ीकुल ह-रमैन” (मत्बूआ मक-त-बतुल मदीना) का मुता-लआ फ़रमाएं ।

फरमाने मुस्तफा ﷺ जिसने किताब में मुझ पर दुरुदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फिर उस के लिये इस्तिफार करते रहेंगे।

### (3) वालिदैन् की तरफ़ से खैरात

“जब तुम में से कोई कुछ नफ़ल खैरात करे तो चाहिये कि उसे अपने मां बाप की तरफ़ से करे कि इस का सवाब उन्हें मिलेगा और इस के (या'नी खैरात करने वाले के) सवाब में कोई कमी भी नहीं आएगी।”

(شُعَبُ الْإِيمَان ج ٦ ص ٢٠٥ حديث ٧٩١١)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

### (4) रोज़ी में बे ब-र-कती की वजह

“बन्दा जब मां बाप के लिये दुआ तर्क कर देता है उस का रिज़क क़ाअ हो जाता है।”

(كَتَبُ الْعَمَال ج ١٦ ص ٢٠١ حديث ٤٥٥٤٨)

### (5) जुमुआ के जियारते क़ब्र की फज़ीलत

जो शख्स जुमुआ के रोज़ अपने वालिदैन् या उन में से किसी एक की क़ब्र की जियारत करे और उस के पास सू-रए यासीन पढ़े, बख़्श दिया जाए।

(ابن عَدَى فِي الْكَابِل ج ٦ ص ٢٦٠)

लाज रख ले गुनाहगारों की नाम रहमान है तेरा या रब !

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रहमत बहुत बड़ी है जो मुसल्मान दुनिया से रुख़सत हो जाते हैं उन के लिये भी उस ने अपने फज़लो करम के दरवाज़े खुले ही रखे हैं, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रहमते बे पायां से मु-तअल्लिक एक रिवायत पढ़िये और झूमिये !

फरमाने मुस्तफा ﷺ मुझ पर कसरत से दुरूदे पाक पढो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढना तुम्हारे गुनाह के लिये मग़िफ़रत है।

## कफ़न फट गए

अल्लाह ﷻ के नबी हज़रते सय्यिदुना अरमियाअ कुछ ऐसी कब्रों के पास से गुज़रे जिन में अज़ाब हो रहा था। एक साल बा'द जब फिर वहीं से गुज़र हुवा तो अज़ाब ख़त्म हो चुका था। उन्होंने ने बारगाहे खुदा वन्दी ﷻ में अर्ज़ की, या अल्लाह ﷻ! क्या वजह है कि पहले इन को अज़ाब हो रहा था अब ख़त्म हो गया? आवाज़ आई, “ऐ अरमियाअ! इन के कफ़न फट गए, बाल बिखर गए और कब्रें मिट गई तो मैंने इन पर रहम किया और ऐसे लोगों पर मैं रहम किया ही करता हूँ।” (شرحُ الصُّدُور ص ३१३)

अल्लाह की रहमत से तो जन्नत ही मिलेगी

ऐ काश ! महल्ले में जगह उन के मिली हो

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

“क२म” के तीन हुरुफ़ की निश्बत शे

ईशाले सवाब के 3 ईमान अपरोज़ फ़जाइल

### (1) दुआओं की ब-२-क़त

मदीने के ताजदार ﷺ का फ़रमाने मग़िफ़रत निशान है, मेरी उम्मत गुनाह समेत क़ब्र में दाख़िल होगी और जब निकलेगी तो बे गुनाह होगी क्यूं कि वोह मुअमिनीन की दुआओं से बख़्श दी जाती हैं। (المُعْتَمُ الْأَوْسَطُ ج १ ص ५०९ حديث १८७९)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

फरमाने मुस्तफा ﷺ जो मुझ पर एक मरतबा दुरद शरीफ पढ़ता है अल्लाह तआला उस के लिये एक कौरात अज़ लिखता है और कौरात उहुद पहाड़ जितना है।

## (2) ईसाले सवाब क इन्तिज़ार !

सरकारे नामदार ﷺ का इशादे मुश्कबार है, मुर्दे का हाल क़ब्र में डूबते हुए इन्सान की मानिन्द है कि वोह शिद्दत से इन्तिज़ार करता है कि बाप या मां या भाई या किसी दोस्त की दुआ उस को पहुंचे और जब किसी की दुआ उसे पहुंचती है तो उस के नज़दीक वोह दुनिया व मा फ़ीहा (या'नी दुनिया और इस में जो कुछ है) से बेहतर होती है। अल्लाह ﷻ क़ब्र वालों को उन के ज़िन्दा मु-त-अल्लिकीन की तरफ़ से हदिय्या किया हुवा सवाब पहाड़ों की मानिन्द अता फ़रमाता है, ज़िन्दों का हदिय्या (या'नी तोहफ़ा) मुर्दों के लिये “दुआए मग़ि़रत करना है”।

(شُعَبُ الْإِيمَان ج ٦ ص ٢٠٣-حديث ٧٩٠٥)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! ﷺ عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

## (3) दूसरों के लिये दुआए मग़ि़रत करने की फ़ज़ीलत

“जो कोई तमाम मोमिन मर्दों और औरतों के लिये दुआए मग़ि़रत करता है, अल्लाह ﷻ उस के लिये हर मोमिन मर्द व औरत के इवज़ एक नेकी लिख देता है।”

(مَجْمَعُ الزَّوَايِد ج ١٠ ص ٣٥٢-حديث ١٧٥٩٨)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! ﷺ عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

## अरबों नेकियां कमाने का आसान नुस्खा

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! झूम जाइए ! अरबों, खरबों नेकियां कमाने का आसान नुस्खा हाथ आ गया ! ज़ाहिर है इस वक़्त रूए ज़मीन पर करोड़ों मुसलमान मौजूद हैं और करोड़ों बल्कि



फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ जो शख्स मुझ पर दुरुदे पाक पढ़ना भूल गया वोह जन्नत का रास्ता भूल गया ।

अरबों दुनिया से चल बसे हैं । अगर हम सारी उम्मत की मग़ि़रत के लिये दुआ करेंगे तो **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** हमें अरबों, ख़रबों नेकियों का खज़ाना मिल जाएगा । मैं अपने लिये और तमाम मुअमिनीन व मुअमिनात के लिये दुआ तहरीर कर देता हूँ । (अव्वल आख़िर दुरूद शरीफ़ पढ़ लें)

**إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** ढेंरो नेकियां हाथ आएंगी ।

یا'नी ऐ अल्लाह ! मेरी और हर मोमिन व मोमिना की मग़ि़रत फ़रमा ।

امین بِجَاهِ النَّبِيِّ الْأَمِينِ ﷺ

आप भी ऊपर दी हुई दुआ को अ-रबी या उर्दू या दोनों ज़बानों में अभी और हो सके तो रोज़ाना पांचों नमाज़ों के बा'द भी पढ़ने की आदत बना लीजिये ।

बे सबब बख़्शा दे, न पूछ अमल नाम ग़फ़़ार है तेरा या रब !

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

## नूरानी लिबास

एक बुजुर्ग ने अपने मर्हूम भाई को ख़्वाब में देख कर पूछा, “क्या ज़िन्दा लोगों की दुआ तुम लोगों को पहुंचती है ?” तो उन्होंने ने जवाब दिया, “हां **अल्लाह عَزَّوَجَلَّ** की क़सम वोह नूरानी लिबास की सूरत में आती है उसे हम पहन लेते हैं ।” (شَرْحُ الصُّنُورِ ص ३०५)

जल्वाए यार से हो क़ब्र आबाद वहशते क़ब्र से बचा या रब !

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

फरमाने मुस्तफा ﷺ जिसने मुझ पर दस मरतबा दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह तआला उस पर सो रहमतें भेजता है।

## नूरानी तबाक

“जब कोई शख्स मय्यित को ईसाले सवाब करता है तो जिब्रईल عليه السلام उसे नूरानी तबाक में रख कर क़ब्र के कनारे खड़े हो जाते हैं और कहते हैं “ऐ क़ब्र वाले ! येह हदिय्या (तोहफ़ा) तेरे घर वालों ने भेजा है क़बूल कर।” येह सुन कर वोह खुश होता है और उस के पड़ोसी अपनी महरूमी पर ग़मगीन होते हैं। (ऐज़न स. 308)

क़ब्र में आह ! घुप अंधेरा है फ़ज़ल से कर दे चांदना या रब !

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

## मुर्दों की ता'दाद के बराबर अज़्र

जो क़ब्रिस्तान में ग्यारह बार सू-रए इख़्लास पढ़ कर मुर्दों को उस का ईसाले सवाब करे तो मुर्दों की ता'दाद के बराबर ईसाले सवाब करने वाले को इस का अज़्र मिलेगा।

(كَشَفُ الْخِفَاء ج ٢ ص ٢٥٢ حديث ٢٦٢٩)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

## अहले कुबूर सिफ़ारिश करेंगे

शफ़ीए मुजरिमान صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने शफ़ाअत निशान है, “जो क़ब्रिस्तान से गुज़रा और उस ने सू-रतुल फ़ातिहा, सू-रतुल इख़्लास और सू-रतुल कासुर पढ़ी। फिर येह दुआ मांगी, “या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मैं ने जो कुछ कुर्आन पढ़ा उस का सवाब मोमिन मर्द व औरत दोनों को पहुंचा। तो वोह क़ब्र वाले क़ियामत के रोज़ इस (ईसाले सवाब करने वाले) के सिफ़ारिशी होंगे।” (شَرْحُ الصُّلُور ص ३११)

फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ तुम जहाँ भी हो मुझ पर दूरद पड़ो कि तुम्हारा दूरद मुझ तक पहुँचता है।

हर भले की भलाई का सदका इस बुरे को भी कर भला या रब !

صَلُّوا عَلَى الْكَئِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّد

### सू-रए इख़्लास का सवाब

हज़रते सय्यिदुना हम्माद मक्की عَلَيْهِ اللَّهُ تَعَالَى फ़रमाते हैं, मैं एक रात मक्काए मुकर्रमा के क़ब्रिस्तान में सो गया। क्या देखता हूँ कि क़ब्र वाले हल्का दर हल्का खड़े हैं मैंने उन से इस्तिफ़सार किया, “क्या क़ियामत काइम हो गई ?” उन्होंने ने कहा, “नहीं बात दर अस्ल यह है कि एक मुसलमान भाई ने सू-रतुल इख़्लास पढ़ कर हम को ईसाले सवाब किया तो वोह सवाब हम एक साल से तक्सीम कर रहे हैं”।  
(شرحُ الصُّلُورُ ص ३१२)

سَبَقَتْ رَحْمَتِي عَلَى غَضَبِي تूने जब से सुना दिया या रब !

आसरा हम गुनाह गारों का और मज़बूत हो गया या रब !

صَلُّوا عَلَى الْكَئِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّد

### उम्मे सा'द के लिये कूआं

हज़रते सय्यिदुना सा'द बिन उबादा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने अर्ज की, “या रसूलल्लाह ﷺ मेरी मां इन्तिक़ाल कर गई हैं। (मैं उन की तरफ़ से स-दका करना चाहता हूँ) कौन सा स-दका अफ़ज़ल रहेगा ? सरकार ﷺ ने फ़रमाया, “पानी”। चुनान्वे उन्होंने ने एक कूआं खुदवाया और कहा, “येह उम्मे सा'द رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا के लिये है।”  
(سُنَنِ أَبِي دَاوُدَ ج २ ص १८० حديث १६८۱ دارالفکر بیروت)

फरमाने मुस्तफा ﷺ जिसने मुझ पर दस मर्तबा सुब्ह और दस मर्तबा शाम दुरुद पाक पढ़ा उसे कियामत के दिन मेरी शफाअत मिलेगी।

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! सय्यिदुना सा'द رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ का**

कहना कि येह कूआं उम्मे सा'द رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ के लिये है। इस के मा'ना येह है कि येह कूआं सा'द رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ की मां के ईसाले सवाब के लिये है। इस से येह भी मा'लूम हुवा कि मुसल्मानों का गाय या बकरे वगैरा को बुजुर्गों की तरफ मन्सूब करना म-सलन : येह कहना कि “येह सय्यिदुना गौसे पाक رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ का बकरा है”। इस में कोई हरज नहीं कि इस से मुराद भी येही है कि येह बकरा गौसे पाक رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ के ईसाले सवाब के लिये है। और कुरबानी के जानवर को भी तो लोग एक दूसरे ही की तरफ मन्सूब करते हैं। म-सलन कोई अपनी कुरबानी की गाय लिये चला आ रहा हो और अगर आप उस से पूछें, कि किस की गाय है ? तो उस ने येही जवाब देना है, “मेरी गाय है” जब येह कहने वाले पर ए'तिराज नहीं तो “गौसे पाक का बकरा” कहने वाले पर भी कोई ए'तिराज नहीं हो सकता। हकीकत में हर शै का मालिक अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ही है और कुरबानी की गाय हो या गौसे पाक का बकरा, हर ज़बीहा के ज़ब्द के वक्त अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का नाम लिया जाता है। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ वस्वसों से नजात बरख़ो।

امين بِجاءِ النَّبِيِّ الامين ﷺ

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَى مُحَمَّد

फरमाने मुस्तफा ﷺ जिसने किताब में मुझ पर दुर्रद पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फिरिखते उस के लिये इस्तिफ़ार करते रहेंगे।

**“दीन खैर ख़्वाही क्व नाम है” के अद्वारह हुरूपकी निखत से ईसाले सवाब के 18 म-दनी फूल**

**मदीना 1 :** फ़र्ज, वाजिब, सुन्नत, नफ़ल, नमाज़, रोज़ा, ज़कात, हज़, बयान, दर्स, म-दनी काफ़िले में सफ़र, म-दनी इन्आमात, नेकी की दा'वत, दीनी किताब का मुता-लआ, म-दनी कामों के लिये इन्फ़रादी कोशिश वगैरा हर नेक काम का ईसाले सवाब कर सकते हैं।

**मदीना 2 :** मय्यित का तीजा, दसवां, चालीसवां और बरसी करना अच्छा है कि येह ईसाले सवाब के ही ज़राएअ हैं। शरीअत में तीजे वगैरा के अ-दमे जवाज़ (या'नी ना जाइज़ होने) की दलील न होना खुद दलीले जवाज़ है और मय्यित के लिये ज़िन्दों का दुआ करना कुरआने करीम से साबित है जो कि ईसाले सवाब की अस्ल है। चुनान्वे

وَالَّذِينَ جَاءُوا مِنْ بَعْدِهِمْ يَقُولُونَ  
رَبَّنَا اغْفِرْ لَنَا وَلِإِخْوَانِنَا الَّذِينَ  
سَبَقُونَا بِالْإِيمَانِ

(प २८ चर् १०)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** और वोह जो उन के बा'द आए अर्ज करते हैं, ऐ हमारे रब (غزوخل) हमें बख़्श दे और हमारे भाइयों को जो हम से पहले ईमान लाए।

**मदीना 3 :** तीजे वगैरा का खाना सिर्फ़ उसी सूरत में मय्यित के छोड़े हुए माल से कर सकते हैं जब कि सारे वु-रसा बालिग़ हों और सब के सब इजाज़त भी दें अगर एक भी वारिस ना बालिग़ है तो सख़्त ह़राम है। हां बालिग़ अपने हिस्से से कर सकता है।

(मुलख़्बस अज़ बहारे शरीअत, जि. 1, हिस्सा : 4, स. 822)

फैरमान मुस्तफा ﷺ जो मुझ पर रोज़ जुमुआ दुरूद शरीफ पढ़ेगा मैं क़ियामत के दिन उसे को शफ़ाअत करूँगा।

**मदीना 4 :** मय्यित के घर वाले अगर तीजे का खाना पकाएं तो (मालदार न खाएं) सिर्फ़ फु-क़राअ को खिलाएं। (ऐज़न, स. 853)

**मदीना 5 :** एक दिन के बच्चे को भी ईसाले सवाब कर सकते हैं, उस का तीजा, वगैरा भी करने में हरज नहीं।

**मदीना 6 :** जो ज़िन्दा हैं उन को भी बल्कि जो मुसल्मान अभी पैदा नहीं हुए उन को भी पेशगी (एडवान्स में) ईसाले सवाब किया जा सकता है।

**मदीना 7 :** मुसल्मान जिन्नात को भी ईसाले सवाब कर सकते हैं।

**मदीना 8 :** ग्यारहवीं शरीफ़, र-जबी शरीफ़ (या'नी 22 र-जबुल मुरज्जब को सय्यिदुना इमाम जा'फ़रे सादिक़ رضی اللہ تعالیٰ عنہ के कूंडे करना) वगैरा जाइज़ है। कूंडे ही में खीर खिलाना ज़रूरी नहीं दूसरे बरतन में भी खिला सकते हैं। इस को घर से बाहर भी ले जा सकते हैं।

**मदीना 9 :** बुजुर्गों की फ़ातिहा के खाने को ता'ज़ीमन "नज़रो नियाज़" कहते हैं और येह नियाज़ तबरूक है इसे अमीर व ग़रीब सब खा सकते हैं।

**मदीना 10 :** ईसाले सवाब के खाने में मेहमान की शिर्कत शर्त नहीं घर के अप्पाद अगर खुद ही खा लें जब भी कोई हरज नहीं।

**मदीना 11 :** रोज़ाना जितनी बार भी खाना खाएं उस में अगर किसी न किसी बुजुर्ग के ईसाले सवाब की निय्यत कर लें तो

फरमाने मुस्तफा ﷺ जिसने मुझ पर एक बार दुरंदे पाक पढ़ा अल्लाह तआला उस पर दस रहमते भेजता है।

मदीना ही मदीना। म-सलन : नाश्ते में नियत करें, आज के नाश्ते का सवाब सरकारे मदीना ﷺ और आप के जरीए तमाम अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام को पहुंचे। दोपहर को नियत करें, अभी जो खाना खाएं (या खाया) उस का सवाब सरकारे गौसे आ ज़म और तमाम औलियाए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان को पहुंचे, रात को नियत करें, अभी जो खाएं उस का सवाब इमामे अहले सुन्नत इमाम अहमद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمَنِ और हर मुसल्मान मर्द व औरत को पहुंचे।

मदीना 12 : खाने से पहले ईसाले सवाब करें या खाने के बा'द, दोनों तरह दुरुस्त है।

मदीना 13 : हो सके तो हर रोज़ (नफ़अ पर नहीं बल्कि) अपनी बिकरी का एक फ़ीसद और मुला-ज़मत करने वाले तन-ख़्वाह का माहाना कम अज़ कम तीन फ़ीसद सरकारे गौसे पाक ﷺ की नियाज़ के लिये निकाल लिया करें। इस रक़म से दीनी किताबें तक्सीम करें या किसी भी नेक काम में खर्च करें إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ इस की ब-र-कतें खुद ही देखेंगे।

मदीना 14 : मस्जिद या मद्रसा का क़ियाम स-द-क़ए जारिया और ईसाले सवाब का बेहतरीन जरीआ है।

मदीना 15 : दास्ताने अजीब, शहज़ादे का सर, दस बीबियों की कहानी और जनाबे सय्यिदह की कहानी वगैरा सब मन घड़त क़िस्से हैं, इन्हें हरगिज़ न पढ़ा करें। इसी तरह एक पेम्फ़्लेट बनाम “वसियत नामा” लोग तक्सीम करते हैं जिस में किसी “शैख़ अहमद” का ख़्वाब

फरमाने मुस्तफा ﷺ जो शख्स मुझ पर दुरुदे पाक पढ़ना भूल गया वोह जन्नत का रास्ता भूल गया ।

दर्ज है येह भी जा'ली है इस के नीचे मख्सूस ता'दाद में छपवा कर बांटने की फ़ज़ीलत और न तक्सीम करने के नुक्सानात वगैरा लिखे हैं इन का भी ए'तिबार न करें ।

**मदीना 16 :** जितनों को भी ईसाले सवाब करें **اَللّٰهُمَّ** की रहमत से उम्मीद है कि सब को पूरा मिलेगा । येह नहीं कि सवाब तक्सीम हो कर टुकड़े टुकड़े मिले ।

(رَدُّ الْمُحْتَار ج ٣ ص ١٨٠ دار المعرفة، بهار شریعت ج ١ ص ٨٥٠ مختصاً)

**मदीना 17 :** ईसाले सवाब करने वाले के सवाब में कोई कमी वाक़ेअ नहीं होती बल्कि येह उम्मीद है कि इस ने जितनों को ईसाले सवाब किया उन सब के मज्मूअ के बराबर इस को सवाब मिले । म-सलन : कोई नेक काम किया जिस पर इस को दस नेकियां मिलीं अब इस ने दस मुदों को ईसाले सवाब किया तो हर एक को दस दस नेकियां पहुंचेंगी जब कि ईसाले सवाब करने वाले को एकसो दस और अगर एक हजार को ईसाले सवाब किया तो इस को दस हजार दस । **وَعَلَىٰ هَذَا الْقِيَاسُ**

(बहारे शरीअत, जि. 1, हिस्सा : 4, स. 850)

**मदीना 18 :** ईसाले सवाब सिर्फ़ मुसल्मान को कर सकते हैं । काफ़िर या मुर्तद को ईसाले सवाब करना या इस को मर्हूम कहना कुफ़्र है ।

## ईसाले सवाब का तरीका

ईसाले सवाब (या'नी सवाब पहुंचाना) के लिये दिल में निय्यत कर लेना काफ़ी है, म-सलन आप ने किसी को एक रुपिया ख़ैरात दिया या एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ा या किसी को एक सुन्नत बताई



फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ जिसने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह तआला उस पर दस रहमते भेजता है।

या नेकी की दा'वत दी या सुन्नतों भरा बयान किया। अल ग़रज़ कोई भी नेकी की आप दिल ही दिल में इस तरह निय्यत कर लें म-सलन :

“अभी मैं ने जो सुन्नत बताई इस का सवाब सरकार ﷺ को पहुंचे।” **إِنْ شَاءَ اللَّهُ تَوَحَّل** सवाब पहुंच जाएगा। मज़ीद जिन जिन की निय्यत करेंगे उन को भी पहुँचेगा। दिल में निय्यत होने के साथ साथ ज़बान से कह लेना सुन्नते सहाबा **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمْ** है जैसा कि अभी हदीसे सा'द **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** में गुज़रा कि उन्होंने ने कूआं खुदवा कर फ़रमाया, “येह उम्मे सा'द के लिये है।”

### ईशाले सवाब का मुरव्वजा तरीका

आज कल मुसलमानों में खुसूसन खाने पर जो फ़ातिहा का तरीका राइज है वोह भी बहुत अच्छा है जिन खानों का ईसाले सवाब करना है वोह सारे या सब में से थोड़ा थोड़ा खाना नीज़ एक गिलास में पानी भर कर सब को सामने रख लें।

अब

**أَعُوذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ**

पढ़ कर एक बार

**بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ**

**قُلْ يَا أَيُّهَا الْكَافِرُونَ ۝ لَا أَعْبُدُ مَا تَعْبُدُونَ ۝ وَلَا أَنْتُمْ عِبُدُونَ  
مَا أَعْبُدُ ۝ وَلَا أَنَا عَابِدٌ مَا عَبَدْتُمْ ۝ وَلَا أَنْتُمْ عِبُدُونَ  
مَا أَعْبُدُ ۝ لَكُمْ دِينُكُمْ وَلِيَ دِينِ ۝**

फरमाने मुस्तफा ﷺ जिसने मुझ पर दस मरतबा दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह तआला उस पर सौ रहम त भेजता है।

तीन बार

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ  
قُلْ هُوَ اللَّهُ أَحَدٌ ۝ اللَّهُ الصَّمَدُ ۝ لَمْ يَلِدْ  
وَلَمْ يُولَدْ ۝ وَلَمْ يَكُنْ لَهُ كُفُوًا أَحَدٌ ۝

एक बार

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ  
قُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ ۝ مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ ۝ وَمِنْ شَرِّ غَاسِقٍ إِذَا  
وَقَبَ ۝ وَمِنْ شَرِّ النَّفَّاثَاتِ فِي الْعُقَدِ ۝ وَمِنْ شَرِّ حَاسِدٍ إِذَا حَسَدَ ۝

एक बार

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ  
قُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ النَّاسِ ۝ مَلِكِ النَّاسِ ۝ إِلَهِ النَّاسِ ۝  
مِنْ شَرِّ الْوَسْوَاسِ الْخَنَّاسِ ۝ الَّذِي يُوَسْوِسُ فِي صُدُورِ النَّاسِ ۝  
مِنَ الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ ۝

एक बार

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ  
أَلْحَسَدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ۝ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ۝  
مَلِكِ يَوْمِ الدِّينِ ۝ إِيَّاكَ تَعْبُدُ وَإِيَّاكَ نَسْتَعِينُ ۝  
اهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيمَ ۝ صِرَاطَ الَّذِينَ أَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ  
غَيْرِ الْمَغْضُوبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّالِّينَ ۝

फरमाने मुस्तफा ﷺ तुम जहां भी हो मुझ पर दूरद पढो कि तुम्हारा दूरद मुझ तक पहुंचता है।

एक बार

الَّذِينَ لَا يَرْجُونَ فِيهِ هُدًى لِّلْمُتَّقِينَ ۝ الَّذِينَ يُؤْمِنُونَ  
بِالْغَيْبِ وَيُقِيمُونَ الصَّلَاةَ وَمِمَّا رَزَقْنَاهُمْ يُنفِقُونَ ۝ وَالَّذِينَ يُؤْمِنُونَ  
بِمَا أُنزِلَ إِلَيْكَ وَمَا أُنزِلَ مِن قَبْلِكَ ۝ وَبِالْآخِرَةِ هُمْ يُوقِنُونَ ۝  
أُولَٰئِكَ عَلَىٰ هُدًى مِّن رَّبِّهِمْ ۖ وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ۝

पढ़ने के बा'द येह पांच आयात पढ़िये :-

﴿1﴾ وَاللَّهُمَّ إِلَهٌ وَاحِدٌ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ الرَّحْمَنُ الرَّحِيمُ ۝

(प १ बقرة: १६३)

﴿2﴾ إِنَّ رَحْمَتَ اللَّهِ قَرِيبٌ مِّنَ الْمُحْسِنِينَ ۝ (प ८ अعراف: ५६)

﴿3﴾ وَمَا أَرْسَلْنَاكَ إِلَّا رَحْمَةً لِّلْعَالَمِينَ ۝ (प १७ الانبياء: १०७)

﴿4﴾ مَا كَانَ مُحَمَّدٌ أَبَا أَحَدٍ مِّن رِّجَالِكُمْ وَلَكِن رَّسُولَ اللَّهِ وَخَاتَمَ

النَّبِيِّينَ ۖ وَكَانَ اللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمًا ۝ (प २२ الاحزاب: ४०)

﴿5﴾ إِنَّ اللَّهَ وَمَلَائِكَتَهُ يُصَلُّونَ عَلَى النَّبِيِّ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا صَلُّوا

عَلَيْهِ وَسَلِّمُوا تَسْلِيمًا ۝ (प २२ الاحزاب: ५६)

फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ जिसने मुझ पर दस मर्तबा सुब्द और दस मर्तबा शाम दूरदे पाक पढ़ा उसे कियामत के दिन मेरी शफ़ाअत मिलेगी।

अब दुरुद शरीफ़ पढ़िये :

صَلَّى اللّٰهُ عَلَى النَّبِيِّ الْأُمِّيِّ وَالْهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ  
وَسَلَّمَ صَلَوةً وَسَلَامًا عَلَيْكَ يَا رَسُولَ اللّٰهِ  
سُبْحَنَ رَبِّكَ رَبِّ الْعِزَّةِ عَمَّا يَصِفُونَ ○ وَسَلَّمَ عَلَى  
الْمُرْسَلِينَ ○ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ○

अब हाथ उठा कर फ़ातिहा पढ़ाने वाला बुलन्द आवाज़ से  
“अल फ़ातिहा” कहे। सब लोग आहिस्ता से सू-रतुल फ़ातिहा पढ़ें।  
अब फ़ातिहा पढ़ाने वाला इस तरह ए’लान करे, “मीठे मीठे  
इस्लामी भाइयो ! आप ने जो कुछ पढ़ा है उस का सवाब मुझे दे  
दीजिये”। तमाम हज़िरीन कह दें, “आप को दिया।” अब फ़ातिहा  
पढ़ाने वाला ईसाले सवाब कर दे। ईसाले सवाब के अल्फ़ज़ लिखने से  
क़ब्ल इमामे अहले सुन्नत आ’ला हज़रत मौलाना शाह अहमद रज़ा  
﷞ फ़ातिहा से क़ब्ल जो सू-रतें वग़ैरा पढ़ते थे वोह  
तहरीर करता हूँ।

आ’ला हज़रत رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالَى عَنْهُ का फ़ातिहा का तरीक़ा  
एक बार

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○  
الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ○ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○  
مَلِكِ يَوْمِ الدِّينِ ○ اِيَّاكَ تَعْبُدُ وَاِيَّاكَ تَسْتَعِيْنُ ○  
اهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ ○ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ  
غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّالِّينَ ○

करमाने मुस्तफा ﷺ पर दुरदे पाक की कसूरत करो बेशक येह तुम्हारे लिये त्हातरत है ।

एक बार

اللَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ الْحَيُّ الْقَيُّومُ ۚ لَا تَأْخُذُهُ سِنَّةٌ وَلَا نَوْمٌ ۚ  
لَهُ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ۚ مَنْ ذَا الَّذِي يَشْفَعُ عِنْدَهُ  
إِلَّا بِإِذْنِهِ ۚ يَعْلَمُ مَا بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ ۚ وَلَا يُحِيطُونَ  
بِشَيْءٍ مِّنْ عِلْمِهِ إِلَّا بِمَا شَاءَ ۚ وَسِعَ كُرْسِيُّهُ السَّمَوَاتِ  
وَالْأَرْضَ ۚ وَلَا يَئُودُهُ حِفْظُهُمَا ۚ وَهُوَ الْعَلِيُّ الْعَظِيمُ ۝

तीन बार

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ۝

قُلْ هُوَ اللَّهُ أَحَدٌ ۝ اللَّهُ الصَّمَدُ ۝ لَمْ يَلِدْ  
وَلَمْ يُولَدْ ۝ وَلَمْ يَكُنْ لَهُ كُفُوًا أَحَدٌ ۝

ईसाले सवाब के लिये दुआ का तरीका

या अल्लाह عزوجل जो कुछ पढ़ा गया (अगर खाना वगैरा है तो इस तरह से भी कहें) और जो कुछ खाना वगैरा पेश किया गया है बल्कि आज तक जो कुछ टूटा फूटा अमल हो सका है उस का सवाब हमारे नाकिस अमल के लाइक नहीं बल्कि अपने करम के शायाने शान महमत फरमा । और इसे हमारी जानिब से अपने प्यारे महबूब, दानाए गुयूब ﷺ की बारगाह में नज़्र पहुंचा, सरकारे मदीना عليهم السلام से तमाम अम्बियाए किराम

फरमान मुस्तफा ﷺ जिसने किताब में मुझ पर दुरूदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फिरश्ते उस के लिये इस्तिफ़ार करते रहेंगे।

तमाम सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان तमाम औलियाए इज़ामِ اللَّهِ رَحْمَتُهُ की जनाब में नज़्र पहुंचा। सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के तवस्सुत से सय्यिदुना आदम सफ़ियुल्लाह عَلَيْهِ السَّلَام से ले कर अब तक जितने इन्सान व जिन्नात मुसल्मान हुए या कियामत तक होंगे सब को पहुंचा इस दौरान जिन जिन बुजुर्गों को खुसूसन ईसाले सवाब करना है उन का नाम भी लेते जाएं। अपने मां बाप और दीगर रिश्तेदारों और अपने पीरो मुर्शिद को ईसाले सवाब करें। (फ़ौत शुदगान में से जिन जिन का नाम लेते हैं उन को खुशी हासिल होती है।)

अब हस्बे मा'मूल दुआ ख़त्म कर दें। (अगर थोड़ा थोड़ा खाना और पानी निकाला था तो वोह दूसरे खानों और पानी में डाल दें।)

### ख़बरदार !

जब भी आप के यहां नियाज़ या किसी किस्म की तक़रीब हो, जमाअत का वक़्त होते ही कोई मानेए शर-ई न हो तो इन्फ़िरादी कोशिश के ज़रीए तमाम मेहमानों समेत नमाज़े बा जमाअत के लिये मस्जिद का रुख़ करें। बल्कि ऐसे अवकात में दा'वत ही न रखें कि बीच में नमाज़ आए और सुस्ती के बाइस مَعَاذِ اللّٰهِ عَوْجَل जमाअत फ़ौत हो जाए। दोपहर के खाने के लिये बा'द नमाज़े ज़ोहर और शाम के खाने के लिये बा'द नमाज़े इशा मेहमानों को बुलाने में ग़ालिबन बा जमाअत नमाज़ों के लिये आसानी है। मेज़बान, बावर्ची, खाना तक्सीम करने वाले वग़ैरा सभी को चाहिये

फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ मुझ पर कसूरत से दूरदे पाक पढ़ो बेशक तुम्हारा मुझ पर दूरदे पाक पढ़ना तुम्हारे गुनाहों के लिये मग़्फ़िरत है।

कि वक़्त हो जाए तो सारा काम छोड़ कर बा जमाअत नमाज़ का एहतियाम करें। बुजुर्गों की “नियाज़” की मसरूफ़ियत में अल्लाह की “नमाज़े बा जमाअत” में कोताही बहुत बड़ी ग़-लती है।

### मज़ार पर हाज़िरी का तरीक़ा

बुजुर्गों के पास क़दमों की तरफ़ से हाज़िर होना चाहिये, पीछे से आने की सूरत में उन्हें मुड़ कर देखने की ज़हमत होती है। लिहाज़ा मज़ारे औलिया पर भी पाइंती (क़दमों) की तरफ़ से हाज़िर हो कर क़िब्ले को पीठ और साहिबे मज़ार के चेहरे की तरफ़ रुख़ कर के कम अज़ कम चार हाथ (दो गज़) दूर खड़ा हो और इस तरह सलाम अर्ज़ करे,

السَّلَامُ عَلَيْكَ يَا وَلِيَّ اللَّهِ وَرَحْمَةُ اللَّهِ وَبَرَكَاتُهُ

एक बार सू-रतुल फ़ातिहा और 11 बार सू-रतुल इख़्लास (अव्वल आख़िर एक बार दुरूद शरीफ़) पढ़ कर हाथ उठा कर ऊपर दिये हुए तरीक़े के मुताबिक़ (साहिबे मज़ार का नाम ले कर भी) ईसाले सवाब करे और दुआ मांगे, “अहूसनुल विआअ” में है, वली के कुर्ब में दुआ क़बूल होती है।

इलाही वासिता कुल औलिया का मेरा हर एक पूरा मुद्दा हो

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

फरमाने मुस्तफा ﷺ जो मुझ पर एक मरतबा दूरद शरीफ पढ़ता है अल्लाह तआला उस के लिये एक क़ौरात अज़ लिखता है और क़ौरात उहुद पहाड़ जितना है।

## बुजुर्गाने दीन رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْكَ के उर्स की तारीखें

नम्बर शमार	अस्माए गिरामी	रेहलत
1	हज़रते सय्यिदुना उमर फ़रूके आ'ज़म رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ	यकुम मुह्रमुल ह़राम
2	हज़रते सय्यिदुना शैख़ शहाबुद्दीन عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ	यकुम मुह्रमुल ह़राम
3	हज़रते सय्यिदुना इमाम अबुल हसन बहकारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ	यकुम मुह्रमुल ह़राम
4	हज़रते सय्यिदुना मा'रूफ़ कर्खी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ	2 मुह्रमुल ह़राम
5	हज़रते सय्यिदुना ख़्वाजा हसन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ	4 मुह्रमुल ह़राम
6	हज़रते सय्यिदुना फ़रीदुद्दीन गन्जे शकर عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ	5 मुह्रमुल ह़राम
7	सय्यिदुशु-हदा हज़रते सय्यिदुना इमामे हुसैन رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ	10 मुह्रमुल ह़राम
8	हज़रते सय्यिदुना सय्यिद आले बरकात عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ	10 मुह्रमुल ह़राम
9	शहज़ादए आ'ला हज़रत हुज़ूर मुफ़्तये आ'ज़म رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ	14 मुह्रमुल ह़राम
10	हज़रते सय्यिदुना इमाम ज़ैनुल अबिदीन رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ	18 मुह्रमुल ह़राम
11	हज़रते सय्यिदुना सय्यिद अहमद जीलानी قَدَسَ سرور النوراني	19 मुह्रमुल ह़राम
12	हज़रते सय्यिदुना शैख़ मुहम्मद बहाउद्दीन ज़-करिया मुल्तानी قَدَسَ سرور النوراني	7 स-फ़रुल मुज़प्फ़र
13	हज़रते अल्लामा फ़ज़ले हक़ खैर आबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ	12 स-फ़रुल मुज़प्फ़र



फरमाने मुस्तफा ﷺ जिसने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह तआला उस पर दस रहमतें भेजता है।

14	हज़रते सय्यिदुना सय्यिद अहमद कालपवी عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْفَوْی	19 स-फ़रुल मुज़प्फ़र
15	हज़रते सय्यिदुना इमाम अहमद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرُّحْمَن	25 स-फ़रुल मुज़प्फ़र
16	हज़रते सय्यिदुना सय्यिद हसन बग़दादी رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ	26 स-फ़रुल मुज़प्फ़र
17	हज़रते सय्यिदुना मुजद्दिदे अल्फे सानी قَدَسَ سره العزرائی	28 स-फ़रुल मुज़प्फ़र
18	हज़रते सय्यिदुना पीर महर अली शाह साहिब عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْوَحَّاب	28 स-फ़रुल मुज़प्फ़र
19	हज़रते ख़्वाजा बहाउद्दीन नक्शबन्दी عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْفَوْی	3 रबीउल अव्वल
20	हज़रते सय्यिदुना इमाम हसन मुज्जबा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ	5 रबीउल अव्वल
21	हज़रते सय्यिदुना ख़्वाजा कुतुबुद्दीन बख़्तियार काकी عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْبَاقِ	14 रबीउल अव्वल
22	हज़रते अल्लामा सुलैमान जजूली عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْوَلِی	16 रबीउल अव्वल
23	हज़रते सय्यिदुना सय्यिद शाह आले अहमद अच्छे मियां عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى	17 रबीउल अव्वल
24	हज़रते अल्लामा मुफ़्ती वकारुद्दीन عَلَيْهِم رَحْمَةُ اللهِ الشَّيْخِین	20 रबीउल अव्वल
25	हज़रते सय्यिदुना मुह्युद्दीन عَلَيْهِ رَحْمَةُ السَّیِّدِین	22 रबीउल अव्वल
26	हज़रते सय्यिदुना शैख़ अब्दुल हक़ मुहद्दिसे देहलवी عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْفَوْی	22 रबीउल अव्वल
27	हज़रते सय्यिदुना इमाम मालिक عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْبَاقِ	7 रबीउल आख़िर
28	हज़रते सय्यिदुना इमाम अहमद बिन हम्बल عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى	9 रबीउल आख़िर

फरमाने मुस्तफा ﷺ जब तुम मुसलमान ﷺ पर दुर्दे पाक पढ़ो तो मुझ पर भी पढ़ो बेशक मैं तमाम जहान के रब का रसूल हूँ।

29	सय्यिदुना गौसे आ'जम शैख अब्दुल कादिर जीलानी قدس سره و آرائی	11 रबीउल आखिर
30	हजरते सय्यिदुना इब्राहीम एरजी عليه و خفة الغوی	15 रबीउल आखिर
31	हजरते सय्यिदुना मुल्ला अब्दुरहमान जामी قدس سره و السامی	19 रबीउल आखिर
32	सय्यिदुना शाह औलादे रसूल رحمه الله تعالى عليه	26 रबीउल आखिर
33	हजरते सय्यिदुना शाह रुक्ने आलम علیه رحمۃ اللہ الاکرم	7 जुमादिल ऊला
34	हुज्जतुल इस्लाम हजरते मौलाना हामिद रजा खान عليه و خفة الغمان	17 जुमादिल ऊला
35	हजरते सय्यिदुना इब्राहीम अदहम علیه رحمۃ اللہ الاکرم	26 जुमादिल ऊला
36	सय्यिदुना हुज्जतुल इस्लाम इमाम मुहम्मद गजाली عليه و خفة الغالی	14 जुमादिल उख्रा
37	हजरते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक رضی اللہ تعالیٰ عنہ	22 जुमादिल उख्रा
38	हजरते सय्यिदुना इमाम शैख अब्दुल वाहिद عليه رحمۃ اللہ الماحد	26 जुमादिल उख्रा
39	हजरते सय्यिदुना इमाम शाफेई عليه و خفة الغوی	र-जबुल मुरज्जब
40	हजरते सय्यिदुना इमाम काजिम رضی اللہ تعالیٰ عنہ	5 र-जबुल मुरज्जब
41	हजरते सय्यिदुना ख्वाजा मुईनुद्दीन अजमेरी عليه و خفة الغوی	6 र-जबुल मुरज्जब
42	हजरते सय्यिदुना सय्यिद मूसा رضی اللہ تعالیٰ عنہ	13 र-जबुल मुरज्जब
43	हजरते सय्यिदुना इमाम जा'फरे सादिक رضی اللہ تعالیٰ عنہ	15 र-जबुल मुरज्जब

फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ जो मुझ पर रोज़े जुमुआ दूरद शरीफ़ पढ़ेगा मैं कियामत के दिन उस को शफ़ाअत करूँगा।

44	हज़रते सय्यिदुना मौलाना शफ़ीअ ओकाड़वी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ	21 र-जबुल मुरज्जब
45	हज़रते सय्यिदुना काज़ी ज़ियाउद्दीन मा'रुफ़ बजिया عَلَيْهِ اللّٰهُ تَعَالٰی	22 र-जबुल मुरज्जब
46	हज़रते सय्यिदुना इमाम न-ववी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ	24 र-जबुल मुरज्जब
47	हज़रते सय्यिदुना इमाम जुनैद बग़दादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ	27 र-जबुल मुरज्जब
48	हज़रते सय्यिदुना अबू सालेह عَلَيْهِ اللّٰهُ	27 र-जबुल मुरज्जब
49	शैखुल हदीस हज़रते सय्यिदुना मौलाना सरदार अहमद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ	1 शा'बानुल मुअज़्ज़म
50	हज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म अबू हनीफ़ा عَلَيْهِ اللّٰهُ	2 शा'बानुल मुअज़्ज़म
51	हज़रते सय्यिदुना इमाम अबुल फ़रह तरतूसी عَلَيْهِ اللّٰهُ	3 शा'बानुल मुअज़्ज़म
52	हज़रते सय्यिदुना सय्यिद मुहम्मद कालपवी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ	6 शा'बानुल मुअज़्ज़म
53	हज़रते सय्यिदुना इमाम अबू सईद मख़ज़ूमि عَلَيْهِ اللّٰهُ تَعَالٰی	7 शा'बानुल मुअज़्ज़म
54	हज़रत पीर सय्यिद जमाअत अली शाह عَلَيْهِ اللّٰهُ تَعَالٰی	7 शा'बानुल मुअज़्ज़म
55	हज़रते सय्यिदुना ला'ल शहबाज़ क़लन्दर عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ	18 शा'बानुल मुअज़्ज़म
56	हज़रते सय्यि-दतुना फ़ाति-मतुज्ज़हरा رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی	3 र-मजानुल मुबारक
57	मुफ़स्सिरे शहीर मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ	3 र-मजानुल मुबारक
58	हज़रते सय्यिदुना इमाम सरी सक़ती عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ	13 र-मजानुल मुबारक

फरमाने मुस्तफा ﷺ जिसने मुझ पर रोज़े जुमुआ दो सौ बार दुरूदे पाक पढ़ा उस के दो सौ साल के गुनाह मुआफ होंगे।

59	हज़रते सय्यिदुना शाह हम्ज़ा رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ	14 र-मज़ानुल मुबारक
60	हज़रते सय्यिदुना बा यज़ीद बिस्तामी تَدْرِسُ السَّامِي	14 र-मज़ानुल मुबारक
61	हज़रते सय्यिदुना सय्यिद आले मुहम्मद عَلِيهِ رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ	16 र-मज़ानुल मुबारक
62	हज़रते सय्यिदुना मौला अली رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى وَحَقُّهُ	21 र-मज़ानुल मुबारक
63	हज़रते सय्यिदुना इमाम रज़ा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ	21 र-मज़ानुल मुबारक
64	हज़रते मौलाना हसन रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْخَلَاءِ	22 र-मज़ानुल मुबारक
65	हज़रते सय्यिदुना शैख़ ज़मालुद्दीन औलिया رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ	1 शव्वालुल मुकर्रम
66	हज़रते अल्लामा सय्यिद अहमद सईद काज़िमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْغَوَى	3 शव्वालुल मुकर्रम
67	हज़रते सय्यिदुना शैख़ सा'दी عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْغَوَى	5 शव्वालुल मुकर्रम
68	हज़रते सय्यिद अब्दुरज़्ज़ाक عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرِّزَاقِ	6 शव्वालुल मुकर्रम
69	हज़रते सय्यिदुना अमीर हम्ज़ा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ	15 शव्वालुल मुकर्रम
70	हज़रते सय्यिदुना सय्यिद अबुल बरक़त सय्यिद अहमद कादिरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْغَوَى	20 शव्वालुल मुकर्रम
71	हज़रते सय्यिदुना सय्यिद हसनी जीलानी قَدَسَ سِرُّهُ الْوَرَأَنِي	23 शव्वालुल मुकर्रम
72	हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद भिकारी رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ	9 जी का'दह
73	हज़रते सय्यिदुना सय्यिद फ़ज्रुल्लाह رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ	14 जी का'दह

फरमाने मुस्तफा ﷺ जो शख्स मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना भूल गया वोह जन्नत का रास्ता भूल गया ।

74	हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह शाह गाज़ी رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ	20 जी का'दह
75	हज़रते सय्यिदुना मौलाना नकी अली ख़ान رَحْمَةُ الْخَنَانِ عَلَيْهِ	29 जी का'दह
76	हज़रते सय्यिदुना ज़ियाउद्दीन म-दनी عليه رَحْمَةُ اللَّهِ الْغَنَى	4 ज़िल हिज्जा
77	हज़रते सय्यिदुना इमाम बाकर رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ	7 ज़िल हिज्जा
78	हज़रते सय्यिदुना शैख़ बहाउद्दीन عليهم رَحْمَةُ اللَّهِ الْبَرِّ	11 ज़िल हिज्जा
79	हज़रते सय्यिदुना उस्माने ग़नी رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ	18 ज़िल हिज्जा
80	हज़रते सय्यिदुना सय्यिद शाह आले रसूल رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ	18 ज़िल हिज्जा
81	हज़रते सय्यिदुना इमाम अबू बक्र शिब्ली رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ	27 ज़िल हिज्जा

### एह्तियाती तजदीदे ईमान कब कब करें ?

म-दनी मश्वरा है रोजाना कम अज़ कम एक बार म-सलन सोने से क़ब्ल (या जब चाहें) एह्तियाती तौबा व तजदीदे ईमान कर लीजिये और अगर ब आसानी गवाह दस्त-याब हों तो मियां बीवी तौबा कर के घर के अन्दर ही कभी कभी एह्तियातन तजदीदे निकाह की तरकीब भी कर लिया करें । मां, बाप, बहन, भाई और औलाद वगैरा आक़िल व बालिग़ मुसल्मान मर्द व औरत निकाह के गवाह बन सकते हैं । एह्तियाती तजदीदे निकाह बिल्कुल मुफ़्त है इस के लिये महर की भी जरूरत नहीं ।

# મઆખજો મરાજેઝ

નમ્બર શુમાર	નામ	કિતાબ મત્બૂઆ	નમ્બર શુમાર	નામ	કિતાબ મત્બૂઆ
1	કુરઆને પાક	જિયાઝલ કુરઆન પક્લીકેશન્જ લાહોર	21	મખ્મુઝ્જુવાઇદ	દારુલ ફિક્ર બૈરૂત
2	તર-ખાફ કન્જુલ ઈમાન	જિયાઝલ કુરઆન પક્લીકેશન્જ લાહોર	22	કન્બુલ ઝમ્માલ	દારુલ કુતુબિલ ઈલ્મિયા બૈરૂત
3	તપ્સીરે અદુરૂલ મન્સૂર	દારુલ ફિક્ર બૈરૂત	23	અતરગીબ વત્તરહીબ	દારુલ ફિક્ર બૈરૂત
4	અતપ્સીરુલ કબીર	દારો પહ્યાઇતુરાસિલ અ-રબી બૈરૂત	24	અસ્સુ-નનુલ કુબ્રા	દારુલ કુતુબિલ ઈલ્મિયા બૈરૂત
5	રુહુલ મઆની	દારો પહ્યાઇતુરાસિલ અ-રબી બૈરૂત	25	અલ જામિઅમ્મીન લિસ્યુયૂતી	દારુલ કુતુબિલ ઈલ્મિયા બૈરૂત
6	તપ્સીરે ઇને કસીર	દારુલ કુતુબિલ ઈલ્મિયા બૈરૂત	26	અલ મુસ્તદક અલસ્યદ્દીન	દારુલ મા'રિફહ બૈરૂત
7	તપ્સીરે રુહુલ બયાન	કોષ્ટા	27	મુસ્નદારમી	બાબુલ મદીના કરાચી
8	ખુષાઇનુલ ઇરફાન	જિયાઝલ કુરઆન પક્લીકેશન્જ લાહોર	28	ફિરદૌસુલ અશ્બાર	દારુલ ફિક્ર બૈરૂત
9	તપ્સીરે નૂરુલ ઇરફાન	જિયાઝલ કુરઆન પક્લીકેશન્જ લાહોર	29	અલ બદૂસ્સાફિરહ	મુઅસિસ-સતુલ કુતુબિસ્સફાફિયહ
10	સહીહુલ બુખારી	દારુલ કુતુબિલ ઈલ્મિયા બૈરૂત	30	સહીહ ઇને હબ્બાન	દારુલ કુતુબિલ ઈલ્મિયા બૈરૂત
11	સહીહ મુસ્લિમ	દારો ઇને હજમ બૈરૂત	31	મુસ્નદે ઇમામ અહમદ	દારુલ ફિક્ર બૈરૂત
12	સુ-નનુતિરમિઝી	દારુલ ફિક્ર બૈરૂત	32	મિશ્કાતુલ મસાબીહ	દારુલ કુતુબિલ ઈલ્મિયા બૈરૂત
13	સુ-નનુનસાઈ	દારુલ જીલ બૈરૂત	33	હિલ્યતુલ ઔલિયા	દારુલ કુતુબિલ ઈલ્મિયા બૈરૂત
14	સુ-નનો અબી દાવ્દ	દારો પહ્યાઇતુરાસિલ અ-રબી બૈરૂત	34	અલ મુન્નદે અબી બ'લા	દારુલ કુતુબિલ ઈલ્મિયા બૈરૂત
15	સુ-નનો ઇને માજહ	દારુલ મા'રિફહ બૈરૂત	35	મુસન્ફઝને અબી શૈબા	દારુલ ફિક્ર બૈરૂત
16	શુ-અબુલ ઈમાન	દારો મક્કતુલ મુકર્રમહ	36	સહીહ ઇને ખુઝૈમા	અલ મક્તબુલ ઇસ્લામી બૈરૂત
17	મુઅત્તા ઇમામ માલિક	દારુલ મા'રિફહ બૈરૂત	37	અ-મલુલ યામિ વલ્લેલહ	દારુલ કિતાબુલ અ-રબી
18	અલ મો'જમુલ કબીર	દારો પહ્યાઇતુરાસિલ અ-રબી બૈરૂત	38	ફત્હુલ બારી	દારુલ કુતુબિલ ઈલ્મિયા બૈરૂત
19	અલ મો'જમુલ ઔસત	દારુલ કુતુબિલ ઈલ્મિયા બૈરૂત	39	મિરઆતુલ મનાઝીહ	જિયાઝલ કુરઆન લાહોર
20	અલ મો'જમુસ્સગીર	દારુલ કુતુબિલ ઈલ્મિયા બૈરૂત	40	અલ મુન્નબહાત લિલ અક્કાબી	પિશાવર

मदीनतुल  
मुनव्वरहमक्कतुल  
मुकरमहजन्नतुल  
बकीअमदीनतुल  
मुनव्वरहमक्कतुल  
मुकरमहजन्नतुल  
बकीअजन्नतुल  
बकीअमक्कतुल  
मुकरमहमदीनतुल  
मुनव्वरहमदीनतुल  
मुनव्वरहमक्कतुल  
मुकरमहजन्नतुल  
बकीअमदीनतुल  
मुनव्वरहमक्कतुल  
मुकरमहजन्नतुल  
बकीअ

सम्बर शुमार	नाम	किताब मत्वूआ	सम्बर शुमार	नाम	किताब मत्वूआ
41	दुरें मुख्तार	दारुल मा'रिफह बैरूत	60	अल ह-सनु वल हुसैन	अल मक-त-बतुल अस्त्रिया बैरूत
42	रहुल मुह्तार	दारुल मा'रिफह बैरूत	61	अहसनुल विआअ	मक-त-बतुल मदीना बाबुल मदीना कराची
43	फतावा आलमगीरी	कोएटा	62	शम्मुल मआरिफ मुतरजम	कोएटा
44	अल जौ-ह-रतुन्नय्यरह	बाबुल मदीना कराची	63	जन्नतो ज़ेवर	बाबुल मदीना कराची
45	गुन्यतुल मु-तमल्ली	सुहैल एकेडमी मकंबुल औलिया लाहोर	64	अल बामितु फ़ैदु-अम्नअ	दारुल कुतुबिल इल्मिया बैरूत
46	फतावा र-ज्विय्या	रजा फ़ाउन्डेशन लाहोर	65	एहयाउल इलुमिदीन	दारे सादिर बैरूत
47	बहारे शरीअत	मक-त-बतुल मदीना बाबुल मदीना कराची	66	अल कौलुल बदीअ	मुअस्सि-सतुरय्यान बैरूत
48	मुख्तसरुल कदूरी	मक-तबए ज़ियाइया रावल पिन्डी	67	तारीखे बग़दाद	दारुल कुतुबिल इल्मिया बैरूत
49	अख़बारुल अख़्यार	फ़ारूक एकडमी गम्बट खैरपूर	68	मुका-श-फतुल कुलूब	दारुल कुतुबिल इल्मिया बैरूत
50	अल मक़सिदुल ह-सना	दारुल किताबुल अ-रबी	69	राहतुल कुलूब	शब्बीर विरादज़ लाहोर
51	मा स-ब-त मिनस्सुनह मुतरजम	लाहोर	70	अल वज़ै-फ़तुल क़ीमा	इदारए तहकीक़ाते इमाम अहमद रजा
52	रौजुर्रियाहीन	दारुल कुतुबिल इल्मिया बैरूत	71	किताबुल कबाइर	पिशावर
53	अल खैरातुल हिसान	बाबुल मदीना कराची	72	मसाइलुल कुरआन	रूमी पब्लीकेशनज़ लाहोर
54	किताबुल अज़मह	दारुल कुतुबिल इल्मिया बैरूत	73	इस्लामी ज़िन्दगी	मक-त-बतुल मदीना बाबुल मदीना कराची
55	कशफुल गुम्मह	दारुल कुतुबिल इल्मिया बैरूत	74	श-अए क़ादिरिय्यह र-ज्विय्यह	मक-त-बतुल मदीना बाबुल मदीना कराची
56	जिलाउल अफ़हाम	दारुल कुतुबिल इल्मिया बैरूत	75	मल्फूजोते आ'ला हज़त	फ़रीद बुक स्टोल लाहोर
57	अफ़ज़लुस्स-लबात	दारुस्समर अ-रफ़ा	76	आ'माले रजा	मदीनतुल औलिया मुलतान
58	अल मुस्तरफ़	दारुल फ़िक्क बैरूत	77	तम्बीहुल गाफ़िलीन	पिशावर
59	मुतालिउल मुसरीत	मकंबुल औलिया लाहोर	78	फ़ैज़ाने सुन्नत	मक-त-बतुल मदीना बाबुल मदीना